405
~~406~~

Bhāgavata
11th Skandha.
(Hindi.)

Josihara.
Sudamapura
1944. Samvat.
1888.

॥श्रीगणेशायनमः॥श्रीहयग्रीवायनमः॥श्रीभाग
वतएकादशकीभाषालिख्यते॥चौपई॥ संतदाससु
तगुरकेचरणं॥तीनकौगहैसुद्रिढकरिसरणं॥ तातै
उपजैग्यानवीचारा॥छूटैभ्रमकर्मवीवहारा॥१॥ बहो
रोजगतजंजनमंनहीआउ॥ तीनकौनीजानंदपदपाउ
तीनकीक्रपाहिरदैधरौ॥ लोकहीतार्थभाषाकरौ॥२
श्रीभगवानवीरंचिहीभाष्यौ॥सोवीरंचीनारदसूं
भाष्यौ॥ सोईनारदव्यासहीसमझायो॥ व्यासवरनीक
रीसुकहीपढायौ॥३॥सोसुषकह्यौपरीछतआगै॥ छू
टौद्वैतसुपनज्यौजागै॥सोहीसूतअजहूवीस्तरै॥ सह

स्वअगसी रिषीमधरै ॥ ४ ॥ श्रीभगवंतआपएह भाष्यौ ॥
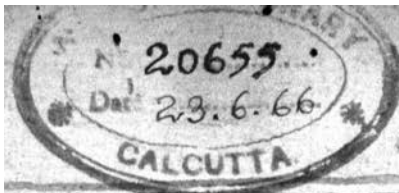
ताते नांम भागवंत राष्यौ ॥ अथमीलनकौ पंथ द्रावतायै ॥ या मारगि बहुत निहरीपायै ॥ ५ ॥ दोहा ॥ व्यासदेवजो भागवंत ॥ भाष्या द्वादसस्कंध ॥ तीनमै एकादसकहौ ॥ नैनलहैज्यौ अंध ॥ ६ ॥ चौपई ॥ एकादसऐकतीसअ ध्याये ॥ तिनकौ बैहारो कहूं सुनाये ॥ जदुकुलनासप्र थमैगायै ॥ बहुत भांतिवैरागउपायै ॥ ७ ॥ हरीपुरपं थकहैा पुनि चारी ॥ जंनकदिज्ञोगेस्वर नवीचारी ॥ सो नारदवसुदेवद्दीकहैौ ॥ पायौ ज्ञान परमपद लहौ ॥ ८ ॥ छठैब्रह्मउधवप्रस्ताव ॥ नेहसकरीनीज ज्ञानसुनाव ॥ द

हू जादव बिनास बिस्तार ॥ ऐ कतीसग्यांननीज सार ॥
ए ॥ श्री सुकदेव करतउरंचा ॥ स्रोता नृप तिउडिगत
डिउरंत्ता ॥ तब सुकजी एह कीयो बीचारा ॥ ग्यांन वीन
नहीं उधारा ॥ १० ॥ तातै ब्रह्मग्यांन समझाउ ॥ प्रथमही
दृढ वैराग उपाउ ॥ पंषी उडे पंषजैहै जैसे ॥ ग्यांनी वैराग
मी लैहरि उरैसे ॥ ११ ॥ राजा सत्नो जगत्य सत्य जैसे ॥ जीनस
ला गिन्ह मतन र उरैसे ॥ छपे कोटी छुपन जादव ॥ जैसो घ
न घमडी चहूंदीस जादव ॥ १२ ॥ तिनिको वो हूतत्नां तिवी
स्तारा ॥ गन तिकरत लहै को पारा ॥ नवनंउ आपनो कव
लास कीउरै ॥ नव निध जांहां बसे रालीउरै ॥ १३ ॥ बहूरी

स्वधर्मसित्त्रामगाई॥ वैहैजांहांनव्यापैकांई॥ तिनकी
समताकौनवतांउ॥ तीनलोकमैकोहैनपाउ॥२४॥
तीनकीबातअबकहौंतऐसी॥ पलकमांहिसुपन
कीजैसी॥ चारघरीमैसबहीसहारे॥ जौंबूदबूदापवनके
मारे॥२५॥ रामकृष्णतांहांकौनतकहारे॥ आपहीआपसं
कल्पसहारे॥ वीअआपकौकीनोव्याज॥ एसबकृष्ण
देवकेकाज॥२६॥ सोकनककूबेरागजनायो॥ उधादिहा
रासंमुझायो॥ प्रथमत्तीमअर्जुनदेअनी॥ इष्टनृपति
अरुसेनाहनी॥२७॥ इहीबीधीअकोजारउतासौ॥ नां
मरूपजसकौबीस्तारसौ॥ जाकूगहीपहूचैभवपार

॥ आगे जे जे जन हैं हीं अपार ॥१८॥ बहुत भांती कहीं
अद्भुत कर्म ॥ थापो जगत्य भागवत धर्म ॥ यां बीधा
सब के कार्ज सवारे ॥ तब हरजी वैकुंठ पधारे ॥१९॥ दोहा
॥ ऐसी सुनी अद्भुत कथा ॥ जदुकुल कौं द्विज श्राप ॥ प
रूकरी राजा तां हं ॥ लषी वे तिन को पाप ॥२०॥ राजा उ
वाच ॥ चौपई ॥ ते तो वीप्र जगत्य ते सारे ॥ परमहंसनी अ
रू सेवक न्यारे ॥ वीप्र को पकीनो कैसो प्रूर्ण ॥ जाते नास भ
यो सब तूर्ण ॥२१॥ कौन नीमत आपसो कौन ॥ कहौ कि
पा करी करुणा भोवन ॥ ऐक मना जादव ते सारे ॥ आपै
आपू कवन वी धि मारे ॥२२॥ श्रीशुक उवाच ॥ नृकौ

न्तारउतारंनकाजा ॥ ऋापैं न्त्रवतारली ऋोव्रजराजा
॥ वहूवीधिन्नकौं न्तारउतारयौ ॥ नवमनमैगोपालवी
च्यारो ॥ २३ ॥ जोलगी हैजादवकुलसारयौ ॥ तोलगीनं
दिन्नन्तारउतारयौ ॥ मंमत्र्राधिनरहैऐसारे ॥ तातेन्नी
जकरवंननतनमारे ॥ २४ ॥ दूजोकोईसकैनमारी ॥ तातैको
जैजतंनबीचारी ॥ ज्यौंवहूबासबदैवंनमांही ॥ पवंनर
निमतपाइ घसषाई ॥ २५ ॥ ऋापऋापमैंत्र्रग्नीउपावै ॥ ता
सलागिसकलजरीजावै ॥ त्यौंहीहंपवंनहीजऋाप ॥ के
भत्र्रग्नीतांहांऋापहीऋाप ॥ २६ ॥ करीवीस्तारदोहीसहा
रा ॥ ऐहहरएऋोछ्रह्म बीचारा ॥ ऋाऐसकलरुघोवृरत्रो

न.नीकटहैत्रकरवाओगौन ॥ २७ ॥ कण्वअंगिराविस्वा
मीत्र ॥ इवासात्रगृ अंगस्तअत्री ॥ कसपवामदेवअरु
नारद ॥ औरबहूतरिषिवहूतवीसारद ॥ २८ ॥ तोहांसबै
मूनीस्रषस्रवैसे ॥ जदूकूमारतांहांछलकरीपैसे ॥ सांम
हांवीनतात्रेषवनायौ ॥ बस्त्रादिकनीउदरअधिका
यौ ॥ २९ ॥ अतीवीनतीकरीचरणनिलागें ॥ सहैप्रस्न
षेरतीनआगें ॥ ऐहवीनताप्रछैद्विजराजा ॥ सूनमूषहे
तलागेअतीलाजा ॥ ३० ॥ नीकटप्रसवआयोयाकौ ॥ क
रौवीचारआपमैताकौ ॥ तूमत्रकालदरसीसबजांनौ ॥
काहाजनैसोहमहींवषांनौ ॥ ३१ ॥ तबकरीक्रोधबचंन

तेजनै ॥ कुलनासमूसलएहजेने ॥ नातै तूमबहूमदसु
माते ॥ दुषबुधीहावेसबयाते ॥ ३२ ॥ बैनसूनंतत्रअतिजें
मंनआयो ॥ तबहीताउदरछुटकायो ॥ देष्योतांहांजोह
कौमूसल ॥ तबतीनजांनैनांहीकूसल ॥ ३३ ॥ तेसब
बहूतजोतिपीछतायें ॥ लीऐमूसलराजापैआयें ॥
उग्रसेनसौबोलेबैनां ॥ अतीनतंहीतोरैनैनां ॥ ३४
॥ सुन्यौआपअरुमूसलदेष्यौ ॥ जीवसबनीगयोकर
रीलेष्यौ ॥ मूसलरेतचूरनकरवायो ॥ कछअरहोस
मूदबहायो ॥ ३५ रेतरह्योसतीअतीतूछ ॥ ताकूनीग
लगयोऐकमछ ॥ तेचूरनसैहैरनीकेमारे ॥ आयैतिरजं

ये न्हाम्हतारे ॥३६॥ मोंवा ऐक जालबी स्तास्यौ ॥ औरनी संगम

छुते पास्यौ ॥ ताके उदर लोह सो पायो ॥ व्याधि ऐक सो बांन

बनायो ॥३७॥ हरजी बात सकल सो जांनी ॥ बहुत चली हि

दै मां हम मांनी ॥ जदपी जोग अनर्थ करनै ॥ परी मन मै ही स

कल सहरनै ॥३८॥ दोहा ॥ ऐ हू वैराग नी रषी औ ॥ ग्यांनका

है जस्हक देव ॥ ग्यांन कहै अब जो लहै ॥ नारद स्व वसुदेव ॥

३९॥ इति श्री भागवते माहापूराणे एकादस सार स्तुति ता

मे एकादस स्कंधे जदुकुल श्राप नीरूपणी नाम प्रथमो

अध्याय: ॥१॥ श्री सुक उवाच ॥ द्वारामती आप मांहे पा

लक ॥ तांहां नदहम्प्राप कौतालक ॥ नारद तांहां नीरंतर आवै

॥ रुषभदेवकौ दरसन पावै ॥ १ ॥ जीवनमुक्त जैनीत जाकौ ।
बंध्यौ जीवत जैकौ ताकौ ॥ जाकै सकललोक मै काल ॥ जांहां
तांहां नीसदिन बेहाल ॥ २ ॥ मानवतन इन्द्र नसो राजा ॥ बतन ह
री सेवाको साजा ॥ वेहै जाहि ब्रह्मास्वराजा ॥ रुषभदेव सेवाकी
काजा ॥ ३ ॥ ऐसि देह जा ग्पवै तै पावै ॥ हरी की सेवा कूं छोटकावै ॥
पल मां मीरै काल के पास ॥ हरी कु पावे हरी के दास ॥ ४ ॥ एक दी
नां वसुदेव के भौना ॥ नारद की ओ क्रिपा करी गोनां ॥ तीन बहु
बिधि पूजा बीस्तारी ॥ तापीछै बांनी उचारी ॥ ५ ॥ वसुदेव उव
च ॥ हे प्रभुजी तुम्हारे आगमन ॥ सब देही कौ सूषकौ भवन ॥
॥ उपमा तूमै कौ नकी दिजे ॥ जिनके दरसन सकल नये छिजे

५

है ॥ और देव देवै सुष दुष कौं ॥ तुम से साध प्रगट पर सुष कौं ॥ ६ ॥
जिनके हृदै बिराजै राम ॥ तिन तै होहि कौन नहि काम ॥ ७ ॥
ऐसे फलदायक सब देवा ॥ तेतौ लहै जि तिकरै सेवा ॥ ज्यों
करले दरपन कौं कोई ॥ आप करे आन्ना सै सोई ॥ ८ ॥ तुम से
साधु सदा सुषदाई ॥ जिन कि महिमा कहि न जाई ॥ जद्यपि
दरसमैं नयौ कृतार्थ ॥ तऊ देवत थापी हितारथ ॥ ९ ॥ जेन्ना
गवत धरम सुनि जीव ॥ जनम मरण तजी पावै पीव ॥ जिन
आचरण नि तुम कौं देव ॥ हरि प्रसन्न सौ न्नासौ जेव ॥ १० ॥ पुर
व जनम सब मैं करी ॥ माया मोह्यो समुझि नहि परी ॥ तब
मैं हरी हि पुत्र करि बस्यौ ॥ ता दिन तै नाहि उधस्यो ॥ ११ ॥ ता तैं

अब मैं तुम्हरी सरनौं ॥ सो कछु रुरौ मिटै ज्यौ मरनौं ॥ कहां दौं
कहौं जगत कौ दुष ॥ जामैं सुपनेहूं न हि सुष ॥ १२ ॥ जहां जहां
जाई तहां तहां काल ॥ हरि बिन जीव सदा बेहाल ॥ ऐसे ब
चन सुने जब नारद ॥ तब तै बोले परम विसारद ॥ १३ ॥ नान
रद उवाच ॥ धंन बसुदेव धंन तुब बांनी ॥ जा करी पूछे सार
ग पांनी ॥ कोई होई सकल जग बातक ॥ बिमुष धर्म तैं रहैं न
पातक ॥ १४ ॥ जाको श्रवन कीरतन ध्यान ॥ अनुमोदन उ
कौ रस पांन ॥ सो पुनीत है वै ततकाल ॥ बहुरी परै न दिजं
म के जाल ॥ १५ ॥ तुम यह कीयौ बडौ उपगार ॥ मो हि सुमरा
यौ सिरजनहार ॥ जाको श्रवन कीरतन ऐसौ ॥ अंधकार कौं

सुरजजैसो ॥ १६ ॥ तुमसोंकहौंकथाईतिहास ॥ जातैंछुटैंजन्म

वकेपास ॥ रिषभदेवसुतनवयोगेस ॥ तिनतैंसुनियोजन

नकनरेस ॥ १७ ॥ मुनिकैंब्रह्मपरायनभयो ॥ जनममरन

संसारसवगयो ॥ अबउतपतिकहतहौ तिनकी ॥ पुरए

प्रीतीरांमसौंजिनकी ॥ १८ ॥ स्वयंभुमनुनृपसिरताजा ॥

ताकोतनयप्रियव्रतराजा ॥ ताकैअग्नीध्रवैसुतभयो

॥ नाभीजनमताहितैंलयो ॥ १९ ॥ ताकेरिषभदेवअवता

र ॥ जिनेप्रगटायोब्रह्मबिचार ॥ ताकेपुत्रएकसतभऐ ॥

सकलवेदकेपारहिगऐ ॥ २० ॥ तिनमैंबडोभरतसेना

म ॥ जाकैंहृदैबसैनितरांम ॥ जातैभरतषंडयहकहौ ॥ तब

अजनाभनामसोलहौ॥२१॥ प्रथमहिबहुतन्नैगए अैगा॥
समकिस्यागिपुंनिलीन्हौंजोग॥ मनक्रमवचनकरहरिर
त्तकी॥ तीजैजनमिलहितिनिमुक्ति॥२२॥ तिनमैंनव
नवषंडनरेस॥ एकअरुअसीकर्मउपदेस॥ नौवतेमहत्मा
गअधकारी॥ सबतजीसेवैंसदामुरारी॥२३॥ तजैअनर्थ
अर्थबिस्तारैं॥ याविधिबहुतजीवनिस्तारैं॥ देहातितदिगं
वरभेष॥ सदाहृदैमैंऐकअलेष॥२४॥ कविहरिअंतरीछ
प्रबुध॥ पिप्पलायनआविर्होतरसुध॥ दुमिलचमस
कराभाजननाम॥ ईननवकीयौब्रह्ममैधाम॥२५॥ आप
आदिसंसारपसारा॥ सबकोंजानैंसिरजनहारा॥ हैतआव

कौ की नौ षंड ॥ या बिधी बिचरैं सब ब्रह्मंड ॥ २६ ॥ सुर असुर
सिध साध गंध्रर्व ॥ किंनर जक्ष नाग नर सर्व ॥ सकल लोक
मैं इछाचारी ॥ आदर हित सब मैं अधिकारी ॥ २७ ॥ निमि
से नाम जनक कै सुता ॥ ऐक वार तिन कि निजाता ॥ रवि
सि सो जीत जिन कि देहा ॥ आवत देषे नृपति बिदेहा ॥ २८
॥ राजा विप्र अग्रि उठि धाये ॥ आगैं ह्वै लैबे कौं आये ॥ उ
त्तम आंनि धरे सिंघासन ॥ उत्तम दीन्ह सब वे है ते आसन
॥ २९ ॥ तब ताहि क्रम पूजा कीनी ॥ करि दंडौत प्रदक्षिना दी
न्ही ॥ अरु कछु आचरण बस्तु बहु रंगा ॥ ते सब सौंपे तिन के
अंगा ॥ ३० ॥ ज्ञांन बिचार ब्रह्ममय जैसे ॥ ब्रह्मपुत्र सनका

रीक जैसैं ॥ तबकर जोरि न्नयौ न्नपं ठाढौ ॥ बौल्यौ बच्चन प्रेम
अतिबाढौ ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ तबन्नपकै आनंद बढौ ॥ कछुन
रहि संभाल ॥ प्रेम मगन ह्वै बोलीयौ ॥ बांनी परम रसाल
॥ ३२ ॥ बिदेह उवाच ॥ चौपई ॥ तुम पारषद परम हरजीके
॥ मैं जांनैं सब हिंन मैं तिकैं ॥ जीवनके उधरवे कारज ॥ सक
ल लोक मे विचरै आरज ॥ ३३ ॥ धन मैं धन मेरै अवतारा ॥
जौ तैं पायौ दरस तुम्हारा ॥ नानाजोनि जीव यह पावै ॥ ३४ ॥
या विधि नरदेह बडभागै हैं ॥ दुलभ साधुसंग न हि लहैं ॥ जि
नके संग मिटैं भव बंधा ॥ नैंन अनंत लहै नर अंधा ॥ ३५ ॥ प्रा
एनाथ हरी हिरदै बिराजैं ॥ छुटै कर्म जर्म भय भाजैं ॥ आधौ छि

नहोवैंसतसंगा॥ सोउकरैंजगतत्रयभंगा॥ ३६॥ तातैंमम
संदेह मिटावौ॥ परमहंसमंसोमोहि सुनावौ॥ भगवंतधरम
कहउबिस्तारि॥ जोमैंहोंसुनवेअधिकारी॥ ३७॥ जिनतैंमि
टैंजगतत्रयभारी॥ बहुरिआपकौंदैतमुरारी॥ ऐसेमुनिब
चनसबनिसुषपायो॥ तबमांनहिदेबैंनसुनायो॥ ३८॥
कविरुवाच॥ राजाप्रस्नकरितुमऐसी॥ बडभागीपुरुत
हैंजैसी॥ निरभैपदऐकेंहैंसेवा॥ हरिकेचरणकंवलकीसे
वा॥ ३९॥ ताकौछोडीकरैनरजोई॥ दुषकौमुलहोतहैसोई
॥ जहांजहांजाईतहांदुषभारी॥ कालपासिकहूंटरैनटारी॥
४०॥ तातैंकहौंभागवतधर्मा॥ मिटैंरांमकछुटैंभयभर्मा॥ श्रीमु

भाषी भगवान सुनायौ॥ आप मिलनकौ पंथ बतायौ॥ ४१॥ म
रषडु जो ह्वै वै कोई॥ ईन पंथ निहरि पावै सोई॥ सोई बिलंब न ल
गै॥ नर मे निसा सुतो जीव जागैं॥ ४२॥ औषमु दिऊ धावै को
ई॥ या हरि पंथ न कछु भय होई॥ हरि मिलनैं को मारग ऐहा
॥ हरी भजि मुक्त होई यह देहा॥ ४३॥ हरि मिलनैं को मारग क
हौ॥ तैरै उर को संसौ दहौ॥ मन क्रम बचन बुधि अरु चित
॥ हौं इसु भाव ह्वै तें जो नित्त॥ ४४॥ सो सब हरि हि समर्पन करै॥
यौं भगवत धर्म निबिस्तरै॥ जब यह जीव हरि हि बिसरयौ॥
॥ तब हरि की माया आवरयौ॥ ४६॥ तब अपनौ सरूप भु
लायौ॥ आपमां नीतन मैं मन लायौ॥ द्वैत भाव तब हितैं

९

उपज्यौं॥ ताहिन्नैयहमरिमरिजंनम्यौं॥ ४७॥ तातैंबुधसेवैं
हरिचरणां॥ जातैं मिटैंजन्ममरणंअरुमरणां॥ साधिल्ल
ईउत्तमगुरुदेवा॥ हरिकौंजांनीकरैतासेवा॥ ४८॥ सोज्यौंज्यौं
आचरनबतावै॥ त्यौंहित्यौंहरिसौंहितल्यावैं॥ कपटनत्तजैं
तजैंसबकांम॥ छुटैंजगतमिलैंतबरांम॥ ४९॥ द्वैतकछुदे
ऐनहिराजा॥ आन्तास्यौसोमंनकोकाजा॥ जैसैंमृषामनैरथ
सुपना॥ मनहिकरितेदोनौंउपनां॥ ५०॥ हैकछुनहिपरिहैसे
सैहै॥ ताकैसंगलागीसबमोहै॥ तौसंकल्पबिकलपनको
जै॥ मनहूढराषिरांमरसपीजैं॥ ५१॥ हरिकैजनमकरमगुन
नामा॥ सुनैंकहैंसुमिरैंसबजांमां॥ तजैंलाजदोवैंनिससह

संगा॥ मगन रहैं नित हरि कैं संगा॥ ५२॥ ऐसैं जन जत प्रेम अ
धिकावैं॥ सब तन रोमांचित ह्वै आवै॥ गद्गद सहज अटपटे
बैंनां॥ द्रवैं चित्त जल नव बरषै नैंनां॥ ५३॥ रोवैं हसैं उंचै सुर गावैं॥
कबहुं मौन गहैं रहि जावैं॥ लोक बेद कुल लाज न जांनैं॥ ५४॥
दस दिसि सरित सिंधु नग नागा॥ रवि ससि तारा हंस अरु का
गा॥ छिति जल पावक पवन अकासा॥ जो कछु देषैं सो हरि
दासा॥ ५५॥ हरी को रूप सकल कौं जांनैं॥ जहां तहां परनामहिं
ठांनैं॥ कबहुं जुलिन जासै अप्रांनां॥ ज्यो अनिन जजैं भ
गवांनां॥ ५६॥ ज्यौं ज्यौं बढैं हृदै अनुरागा॥ त्यौं त्यौं औरस
कल को त्यागा॥ त्यौं त्यौं अनु जव ज्यौं प्रति ग्रासा॥ तो सपो

सत्रुअरुदुषविनासा ॥ ५७ ॥ याविधिकरतेसाधनभक्ति ॥ हरि
जोसुखदैअनुरक्ति ॥ तबकछुऔरभुलिनहिंभासैं ॥ तबही
हृदैब्रह्मप्रकासे ॥ ५८ ॥ ब्रह्मरूपेकरदससुदिसदेषै ॥ हैनभावक
रिकरैनलेषैं ॥ ऐसैं अंगभागवतमांहि ॥ सोहरिमैंहै जगमें
नाहिं ॥ ५९ ॥ दोहा ॥ ऐसुनिकवीजीकेबचन ॥ कीन्हीप्रश्न
विदेह ॥ अबभाषोभागोतके ॥ लछिनकरुणागेह ॥ ६० ॥
॥ विदेहउवाच ॥ चौपई ॥ प्रभुजीकहौभागवतलछन ॥
जिनबसिहोंवैरामविचछन ॥ कौंनधर्मकहै दृढराषैं ॥ कौं
नआचरैकौंनविधिभाषैं ॥ ६१ ॥ कौंनसुभावनिरंतरतिन
के ॥ ह्वैतभावनांहिनउरजिनके ॥ बोलेहरिजोगसुरदुजे ॥

॥ न्टप के ब्बचन बहूत न्नि न पुजे ॥ ६२ ॥ हरिरुवाच ॥ थावर जंगम स्थूल म थुला ॥ एकै प्रकृति सकल को मुला ॥ सोऐ कल्रा त्म के आधारा ॥ सो आत्मा अस निराकारा ॥ ६३ ॥ हरि जी तैं उपजै रै अहोई ॥ अंन लिन हरि हि मैं होई ॥ ता तौ आवहूं हरि कौं जांनै ॥ द्वैत नाव कब हूं न हि आंनै ॥ ६४ ॥ ज्यौं सागर बुद बुदा तरंगा ॥ यौं सब जगत जगतपति संगा ॥ या विधि जांनी न्र यो सो धीरा ॥ सो हरी जंन सम्मति नि उत्तम देह बीरा ॥ ६५ ॥ जा कुं हरी सौं निस्चल प्रेमा ॥ अरु हरी जंन संगति नि तिने मा ॥ सब जीवन पर करुनां आंनैं ॥ सब उधौ हरे यौं जांनैं ॥ ६६ ॥ जो कोई ता पर दोष हिं ठांनैं ॥ त हांत जै के ज्यौं स्यौं बांनैं ॥

निसदिन रहै रांमरंगराता ॥ सो हरिजन मध्यम है ताता ॥ ६७
॥ जो मुरति मैं हरि कौं जांनैं ॥ मन क्रम बचन आंन न दिठांनैं
॥ ताकौं पूजैं दिन चित लाई ॥ कछु न मांगै सहज सुभाई ॥ ६८ ॥
ऐसें हरिजन ऐसें हरि जांनी ॥ सतगुर बिनां नहीं पहेंचांनी ॥ स
ब आत्मा न हरि कौं जांनैं ॥ सो प्राकृत जन साधु बषांनैं ॥ ६९
॥ बहुरौं कहौं उत्तम हरिजन ॥ जाहि प्रही दुजें आसक्त ॥ दरस
परसतैं कारज सारैं ॥ ते हरिजन जन दुष निवारैं ॥ ७० ॥ लछ ब
सैं जाके मन मांहि ॥ और सत्य कछु जांनैं नांहि ॥ जो कछु कहे
सुनैं अरू देषैं ॥ ईश्वर कृत माया सब लेषैं ॥ ७१ ॥ सो हरिजन
उत्तम नर देवा ॥ तातैं मिलै निरंजन देवा ॥ सो जन ब्रह्म बिचार

हिपायौ॥ आपसमकिसुषमाहिसमायौ॥७२॥ जनमअरु मरनदेहकेजांनैं॥ छुधात्रषाकौं प्रानहिमांनैं॥ अह्लादु धिअरुजयसोमनकौं॥ यहलछ्नउत्तमहरिजनकौं॥७३॥ कर्मवासनाअरुसबकामा॥ तिनकौंजु लिनजांनैं नांमाः॥ वासुदेवमैंकीन्हौंवास॥ सोकहियेउत्तमहरिदास॥७४॥ जिनकेजातिवर्णकुलकर्मा॥ लोकनवेद नहीआसर्मा॥ जुलिदेहअभिमाननआवै॥ सोउत्तमहरिदासकहावै॥७५॥ कोसीबस्तुपरिममतानांही॥ अस्तनकोअभिमाननमांही॥ सबजुतनिपारसमताआनैं॥ सोउत्तमहरिदासबषांनैं॥७६॥ अष्टसिधिविभुवन

सुषआवै॥ परीजेकबङ्कुंमननदुलावैं॥ लवर्निमषोधेनत
जैंहरिचरणं॥गुनांतिलनिरतैपदसरनं॥७७॥ जाकेंसाव
विरंचिअरुदेवा॥ तनमनलाईकरैंनित्तसेवा॥ तेउजाके
चरननपावै॥ ताकेंजनक्यौंकरिछिटकावैं॥७९॥ हरीकेच
रनचंद्रचितजाकैं॥ इहातापउतैंक्यौंताकें॥ असोहरिजन
उत्तमकहिये॥ ताकेंसंगिपरमपदलहिये॥८०॥ ताकों
हरिजीनिमषनत्यागैं॥ प्रेमदोरीबंधिक्योंत्यागैं॥ सोकहि
एउत्तमहरिदासा॥ कहेंनतजिएताकोपासा॥८१॥ दोहा
॥ त्रिबधिजकलहणकहे॥ नृपसोंहरिजोगेस॥ तबमा
याकेजानिबे॥ कीनीप्रश्ननरेस॥८२॥ इतिश्री भागवतेम

हापुराणे एकादशस्कंधे वसुदेवं नारद संवादे जायंते प्याख्याने द्वितीयो ध्याय ॥२॥ श्लोक ॥५५॥ चौपई ॥ जनक उवाच ॥ अब करि कृपा कहो हरि माया ॥ जिन ऐसे सकल लोक भ्रमाया ॥ तुमरे मुष सरोज की बांनी ॥ हरि कि कथा अमृत मैं जांनी ॥१॥ ताकौं पीव त्रिपति नहीं मांनौ ॥ सदा पिउं ऐसी मन जांनौं ॥ भवके ताप तपत जो देही ॥ ताकौं परम औषधी एही ॥२॥ ऐसे सुनि नरपति के बैंनां ॥ बगता कौं उपज्यौ चैनां ॥ तब बोले बांनी अभिरांमां ॥ जो अंतरिक्ष से नांमां ॥३॥ अंतरीक्ष उवाच ॥ प्रथम हीं दूजै हुतौ न नांमा ॥ आपहि आप बिराजै रांमा ॥ दया सिंधु मन माहिं बिचारा ॥

तबयहकर्‍यौसकलसंसारा ॥४॥ पंचतनकरिरचीयौदेहा ॥
बंध्यौतहांआत्माएहा ॥ जातैंपहलैजोगवैतोगा ॥ बहुसैं
दुषितहोईजवरोगा ॥५॥ तातैंमोसौंचित्तलगावैं ॥ मेरोंनिजा
नंदपदपावैं ॥ मगनरहैंमेरैआनंदा ॥ बहुरिनह्वियापैंदुष
द्वंदा ॥६॥ याहीतैंयहजवबिस्तारयौ ॥ जिंतिरेअंसआपनै
उगास्यौ ॥ इंद्रियदसअरुमनबिस्तारे ॥ बहुतबीजांतिकेबिष
यपसारे ॥७॥ सोयहअंसइंद्रियनिमनसौं ॥ जोगजागवैस
बहीतनसैं ॥ आपजूलिजोगनिमनदिन्हैं ॥ तबअतिमा
नदेहहकोकिन्हों ॥८॥ जोगनिनिमतकर्मबिस्तारै ॥ तिनकै
फलदुषसुषजयेचारे ॥ तिनकर्मनितैंजोनिअनंता ॥ जन

ममरनकौलहैनअंता॥ ९॥ प्रलयअवधिलौंअमैनिरंतर

॥लीनहौंईप्रुनिमायाअंतर॥ सृष्टिसमैबहुर्यौंतंनपावै॥

भवसागरकोअंतनपावैं॥ १०॥ भ्रमतभ्रमतप्रलैजबआ

वै॥ तबसबनासकालमनभावै॥ तबसतबरषनबरषैजल

धर॥ तेजनतपैंतहांद्वादसदिनकर॥ ११॥ बहुर्यौंअग्निसेषमुख

निसरै॥ प्रलयपवनमिलिजहांतहांपसरै॥ सोऐलोकभस्म

तबकरै॥ बहुर्यौंप्रलयमेघसंचरै॥ १२॥ हाथीसुंडिधारजलबर

षै॥ यौंअषंडबीतैंसतबरषैं॥ तबह्वैवैविराटकोनासा॥ १

आत्मकरैप्रकृतिमैंबासा॥ १३॥ जौअनन्तहौवैब्रह्मांडं॥ तौ

उब्रह्ममांहिनहिंठाउं॥ जेहरिजनहरिहिंतेपावै॥ औरप्रक

तिमैंसकलसमावैं॥ १४॥ पवनकरैजबगंधहीहीन॥ तुमि
होईसबजलमैंलीन॥ त्यौंहिरसक्योंहरैसमिर॥ तातैंमिलैंतेः
जमैंनिर॥ १५॥ अंधकारजबरूपहिंहरैं॥ तेजनबहिपवन
हिसंचरैं॥ बहुरिसपरसहिहरैंअकासा॥ पवनकरैतबत्तु
मैंवासा॥ १६॥ कालकियैतबसब्दहिहीना॥ तामसाअहंः
कारमनलीनां॥ तामसअहंकारमनमिलै॥ राजसअहंका
रदोऊगीलैं॥ १७॥ इंद्रीयअरुराजसअहंकारहि॥ सत्वअहंका
न्होआहारहि॥ बुधिदेवसात्विकअहंकार॥ महतत्वकीन्हैासंः
हार॥ १८॥ महतत्वसैप्रकृतिहिमिलै॥ याविधिकालसकल
कोंगिलैं॥ ऐसीहीविधिबारंबारा॥ उतपतिपरलैअंतनपाः

रा ॥ १९ ॥ यह सब हरि की माया करै ॥ उपजावै प्रतिपारै हरै ॥
मैं तुमकों संक्षेप सुनाई ॥ बहुरि कस्यौ अम्ब अनन्त जाई ॥ २० ॥
दोहा ॥ ऐसी सुनि माया प्रबल ॥ उपज्यौ नृपकै नीति ॥ तब
पुछि आधीन ह्वै ॥ तातें रिषि की रीति ॥ २१ ॥ राजा उवाच ॥ चौप
ई ॥ ऐसी प्रबल ईस की माया ॥ जिनी ए सकल लोक चरमा
या ॥ ताकौं तुम सै ज्ञानी तैरै ॥ हम से देही कौं निस्तरैं ॥ २२ ॥ ता
कौं सुषही तरीऐ देवा ॥ सो करी कृपा बतावो भेवा ॥ ऐसें सुनि
वचन नृपमति के सुधा ॥ तब बोले याचौ प्रबुधा ॥ २३ ॥
प्रबुध उवाच ॥ सकल मनुष्य सुषन के काजा ॥ करैं कर्म
आरंभ तहि राजा ॥ तिनतैं केवल दुष धीकारा ॥ आब हूं अरु

आमैं बिस्तारी ॥२४॥ पाएकु धनदुष अपारा ॥ निसिदिनचि
ताकौ अधिकारा ॥ सोऊ अति दुर्लभ्त नहिं आवैं ॥ जो आवैं
तौ थिर न रहावै ॥२५॥ सौ हि यह कुंटंब सुतदारा ॥ पलक
मां हि है जांइ पसारा ॥ ज्यौं पंथ मैं हि मिलनां होई ॥ घरी मांहि
बिछुरैं सब कोई ॥२६॥ जो कछु ईहां कर्म कमावै ॥ तिन तै जो
निजा निदुष पावै ॥ ईन मैं कौं इनां हि न छुडावैं ॥ आप आप
कौं सब कोजावैं ॥२७॥ याहि बिधि नस्वर परलोका ॥ थिरन
रहैं बिधिहूं कौ वोका ॥ छोटै बडे नीच बहु जाति ॥ तिनके म
न की मिटैं न काति ॥२८॥ मदमछुर अरु वादैं मांनां ॥
॥ त्रष्णा नां बंधें कछु न जानैं ॥ आप आप

पमैंसुधहिठांनैं ॥ २९ ॥ कालपाईजहांतैंपरैं ॥ बहुरिआईइंद्रा
ओवतैंरैं ॥ यौंविचारिवैरागउपावै ॥ तबहिसोधिगुरुसरनहिं
आवैं ॥ ३० ॥ सबदब्रह्मसकलजौंजाषै ॥ परब्रह्मनितिहिर
दैराषै ॥ असेगुरबिनज्ञांननपावै ॥ तातैंसोधिगुरपैंआवैं ॥
३१ ॥ ब्रह्मजांनितासिवाहांनैं ॥ आलसकपटकांमनात्यांनैं
॥ तातैंसीषैंचक्रिकैअंग ॥ जिनतैंहरिजीतजैनसंग ॥ ३२ ॥
सबतैंमनकोसंगमिटावैं ॥ उलटिसाधसंगतिसौंलावैं ॥ अ
रुदिननिपरकरुनांआनैं ॥ सममित्रताउतमबहुमांनैं ॥ ३३ ॥
सौचपाठतपमौनतिरहु ॥ बहुविधिलेवैंगुरसैंसिछु ॥ ब्रह्म
चर्यअरुकोमलरहना ॥ हिंसात्यागदुंदसबसहना ॥ ३४ ॥

१६

एकाकी आसमन बांधे ॥ वस्त्रहु ककै वल्कल सांधे ॥ जहां
तहां चेतन आतम देषैं ॥ परमात्मा नियंता लेषैं ॥ ३५ ॥ ग्रंथ त्य
क्ति कै ग्रधा करैं ॥ निंदा राग दोष परहरैं ॥ देह वचन अरु मन
कौं दंडै ॥ सम दम सत संतोष न छंडै ॥ ३६ ॥ जप तप जग्य जो
ग व्रत दांनां ॥ तन मन धन दारा सुत मानां ॥ जो कछु सो सब
हरि हिं निवेदै ॥ या विधि सकल कर्म कौं छेदैं ॥ ३७ ॥ थावर जंग
म हरि मय जांनैं ॥ परि सेवा साधुन की ठांनैं ॥ मिले परसपर हरि
गुन गावैं ॥ निसदिन कहत सुनत सुख पावैं ॥ ३८ ॥ पल पल
प्रिति बढै हिय फुलैं ॥ गुन हिं संभालैं तत तन भुलैं ॥ दुजो आ
न न कबहुं उपनैं ॥ प्रेम मग्न जात कंगा तन अरु सुपनैं ॥ ४० ॥ ऐसैं

प्रेमभगतिकौं पावैं॥ पलपलतनपुलकी ह्वैआवैं॥ कबहुंरह
सिचितवैंकबरोवैं॥ कबहूंहसैंआनंदितहोवैं॥ ४१॥ कबहुंना
चैंकबहुंगावैं॥ लाजरहीतज्यौंज्यौंमनभावै॥ कबहुंगुनसु
मरतमिलीजावैं॥ स्वासउसांबाहिरनहिआवैं॥ ४२॥ याबि
धिलेंदैंगुरतैंसिक्षा॥ गुरसिष्यनकीईहपरिक्षा॥ ब्रह्मपरा
यनताजनकेरै॥ मायाछुलिनआवैंनेरै॥ ४३॥ दोहा॥ एसुनि
बचनविदेहकै॥ हृदैबढ्योआनंद॥ प्रश्नकरीतबब्रह्मकी॥
ज्यौंछुटैंभवफंद॥ ४४॥ विदेहउवाच॥ चौपई॥ ब्रह्मबेतनि
मैंतुमअधिकारी॥ तुमसौंपहमैंहृदैबिचारी॥ तातैंकहौब्रह्म
कोरूपा॥ जानेजाहिमिटैंग्रहकूपा॥ ४५॥ परमातमाब्रह्मजग

बांना ॥ ऐसबऐककैधौ है नाना ॥ सबजीवनिकों अतिकरु
नायंन ॥ तबबोलेपंचमपिपलायेन ४६ ॥ श्री पिपलायन
उवाच ॥ सुछम थूलसकलसंसार ॥ जाकिरुकतिसकतिवि-
स्तार ॥ उतपतिप्रलयकरैवह्याकौ ॥ काहुहूतैंजनमनहि-
ताकौ ४७ जाग्रतसुपनसुषौपतितुरीआ ॥ चहूंमैंसदाए-
करसपुरीया ॥ ईद्रीयदेहहूदेयअरुप्राणंा ॥ जातैंचेतनह्वैं
वरतीनां ॥ ४८ जैसैंयहजडलोकेहावरतैं ॥ चंबकसंगब-
हुतबिधिनिरतैं ॥ सोभगवानब्रह्मपुनिसोई ॥ सोपरमा-
तमजांनैंकोई ॥ ४९ मनअरुबुधिचितअरुप्राणंां ॥ इंद्रि-
यदेहसबदअभिमानां ॥ कोईताहिपहुंचिनहिसकैं ॥ जात-

जातबहरैं हियकैं॥ ५३॥ जैसें पावकलोह तपायौ॥ पावकस
मांनतेजतिनपायौ॥ सबपरकासे सबकौं जानैं॥ परिपा
वकपरजारनचाहैं॥ ५२॥ यौं सबईद्रीयरू देय अचेतन॥ ता
केसंगहूं ते ह्वैं चेतन॥ और सकल अरथनिकौं जानैं॥ कौं
नसक्तिजो ती हि पिछांनैं॥ ५२॥ सुछम थुलनजावे बरनि
॥ गगनपवनपावकजलधरनि॥ नहिंमनबुधचीत्र
अहंकारा॥ चिदानंदमयसबकैपारा॥ ५४॥ नां सो बा
लव्रधनदिज्जुवा॥ नां सो विनसैनां सो हुवा॥ त्रियापु
रसकलीवनहोई॥ सुरनरनागअसुरनदिसोई॥ ५५
रक्तपिपितसितअसितनहरिता॥ जातिबरनआस

मैनधरीता॥ सीतनउस्नचंदन हि सुरा॥ दिवसनराति-
निकटनहि दुरा॥ ५९॥ सुखदुषर हि न्नवसैसबमांहीं॥ आप
हि आप लिपैकछूनांहि॥ वधैबांन्नावसैंआतमअंसा-
॥ सुनसरोवरबिलसैंहंसा॥ ६०॥ गगनपवनपावकअरु
नीरा॥ धरनिबंधिसबकीएसरीरा॥ पंचवस्तुएपंचोबंधा
॥ सबदरूपरसरूपरसगंधा॥ ६१॥ ईंद्रियदसअरुतिनकै
देवा॥ सात्विकराजसतामसभेवा॥ मनबुधिचित्तमहत
तअहंकारा॥ एकप्रकृतिकोसकलपसारा॥ ६२॥ एक-
ब्रह्महेताकोसारन॥ बिनईछ्यासबकोबिस्तारन॥ -
ज्योंजुवमैंबहुघटउपजावै॥ जुवमैंरहि जुवमांहिंसमावै॥ ६३॥

तेसबघटदीसैंविधिनाना॥ परिच्छुवन्हें उनहिकछुआनो॥
त्यौंसबजगतआदिमधिअंता॥ औरनकछुअेकभगवंता
६१॥ जांहांतहांपूरवपरमअनुपा॥ सोननिउपजैबिनसे
नांहिं॥ बालजुवादिपरेनछांई॥ बढैंनघटैंचलैंनहिदीलें॥
ऐसनतोसमौनिनहिबोलैं॥ ६२॥ जांहांतहांपूरवनैन॥
परमअनुपा॥ चिदानंदविज्ञानसरूपा॥ देहजेरबहुधा॥
सोसेहै॥ ज्ञांनबिनासारोजगमोहैं॥ ६३॥ जैसैंपवनएकईस्र
नां दसईद्रियनसंगदीसैंनाना॥ उदभिजसेदजरायुजअं
डा॥ चारिषानिसूनबूंनडा॥ ६४॥ लिंगदेहजादेहहिंजावै॥
प्राणवायुतहांआनिसमावै॥ सबदसपरसरूपरसगंधा॥

मनअहंकारबुधिचित्ताबंधा ॥९५॥ लिंगदेहईन हिनवको
है याकेमिटै निरंजनसोहैं ॥ निंद्रावससुषुप्तिजबआवै ॥
तबयह लिंगदेह छूटकावे ॥९६॥ अहंकारममताकछुनां
हि मनअरुबुधिचित्तसबजांई तबअद्वैतऐकहैसोई
॥ द्वैतभावकोनांमनकोई ॥९७॥ मनबुधिचित्तअहंकारन
रहै जागैंभगवानकौंकहै ॥ जौकरनौंतौजैतौकियो ॥
आगैंपिछैंलिनौंदियो ॥९८॥ तातैंसोहरिजांननहारा ॥ या
विधिकिजैंब्रह्मबिचारा ॥ परिवासनांसहितहिंरहै ॥ तातैंदे
हफेरिकरिलहै ॥९९॥ लिंगसरिरसहितवासनां ॥ ताहिमिटैन
हिवासनां ॥ तातैंहरीचरंननीचित्तलावै ॥ औरसकलबं

धनछिटकावे॥ २० ॥ तातैंहसी बसननी चितलावै॥ याविधिस
कलचित्तमलनासें॥ रविसमांनतब ब्रह्मप्रकासे॥ जोनरप्रे
मभक्तिनहिजांनै॥ तौवहकर्मजोगकौंजांनैं॥ २१ ॥ कर्मजो
गतेंउपजेभक्ति॥ नवहरिचरनबढेआसक्ति॥ तातैंहोये
ब्रह्मप्रकास॥ छुटैकालजालभवपास॥ २२ ॥ एपिप्पलाय
॥ दोहा ॥ एपिपलायंनबैनसुनि॥ करिप्रश्नमिथलेस॥ क
र्मजोगअबकरिक्रपा॥ कहौंपरमजोगेस॥ २३ ॥ विदेहउवा
च॥ चौपई॥ कर्मजोगअबकहोगुसांई॥ मैंआयोतुम्हारी
सरनांई॥ जाकेकिएकटैंसबकरमां॥ उपजैंज्ञांनहौंनिहकर्मा
॥ २४ ॥ दुजीप्रश्नकहोतुमएहा॥ याकोमेरेअतीसंदेहा॥ ब्र

ह्म पुत्र सनकादिक चारी ॥ ब्रह्मपरायन ब्रह्म बिचारी ॥ ७५

॥ एक वार कृपा करि आये ॥ पिता समीप दरस द्रुम पाये ॥ ७

ई है प्रश्न मैं तिन सौं किन्ही ॥ उत्तर न दियौ हृदै धरि लिन्ही ॥ ७६

॥ नहि बोले सौ कौंन कारन ॥ यह भाषा भवसागर तारन ॥

ऐसै बचन नृपति जब भाषै ॥ आबिर्होत्र छौं तब आषै

॥ ७७ ॥ आबिर्होत्र उवाच ॥ राजा सुनौ कर्म गति गहना ॥ ७

तातैं जहां तहां बनै न कहना ॥ यह ज्यौं ह्यौं बेद बषानैं ॥ ता

तैं या हि न कोई जानै ॥ ७८ ॥ बेद प्रगट करता हरिदेवा ॥ रिषि

अरु पुरुष लहैं क्यौं भेवा ॥ भवल हैं बिन मिटैं न मरनां ॥ ल

है भेव पावै हरि चना ॥ ७९ ॥ तातैं तुम होते तब बाला ॥ जातैं क

ह्वैनमैं विकर्म विसारा ॥ अवमैं कहौं सुनौं चितलाई ॥ जा
तैंजादिह्लांनअधिकाई ॥ ८० ॥ कर्मजोगहै तिनिप्रकारा ॥ कर्म
अकर्म विकर्मपसारा ॥ हरिनिमित्तसोसोकहिऐकर्मा ॥ हरि
विहितसोसकलविकर्मा ॥ ८१ ॥ सोअकर्मजोहोउत्यागैं ॥ ह्लां
न बिनांसुषईह्लांनआगैं ॥ कर्मकरतछुटैंसबकर्मा ॥ उप
जैंह्लांनमिटैंत्रयपत्रमां ॥ ८२ ॥ कर्मतजनकोंकर्मग्रहावैं ॥ ता
तैंवेदनसमुझैंआवैं ॥ पहिलैंसुरगादिकफलभाषैं ॥ आ
गैंसकलदुरिकरिनाषै ॥ ८३ ॥ ज्यौंकाईबालकरोगीह्वावै ॥ औ
षधकटुकनामसुनिरोवैं ॥ ताकौलाडुपितादिषावैं ॥ औष
धकाजलोभउपजावैं ॥ ८४ ॥ औषधकोफललाडुनांही ॥ यौ

षधपिएरौगसबजांही॥ त्यौंसुरगादिकलोत्तदिषांवैं॥ कर्म
नामकौंकर्मकहावैं॥८५॥सुरगादिकफलपुस्पीतबांनी॥ १
तोरैपुहपहोतफलहांनी॥ तातैकरैंबेदकोकर्मो॥ हरिकेहेतब
डैपहधर्मो॥८६॥ औरकछुफलन्हलिनजांनैं॥ हरिकेहेतमैं
कर्मसबठांनैं॥ मैंकर्त्तायौंकदेंनत्राषैं॥ जोकछुसोहरिकोक
रीराषें॥८७॥याबिधिप्रेमभक्तिउपजावै॥ तबसबकर्मआ
पुहिजावैं॥ तबहिप्रगटैंग्यानप्रकासा॥ मिटैंरांमहुटैंभव
पासा॥८८॥बैदिकपंथकह्योमैतासौं॥ अबसुनितंत्रपंथ
हरिमेरासौं॥ हृदैंयगांठिकाटीजोचाहैं॥ सोबिधिसौंपूजाअव
गाहै॥८९॥बेदमिलीतत्राषतहंपुजा॥ तातैंमिटैसकलभ्रम

दुजा॥ श्रीगुरतैं परसादहि पावै॥ सोंन्यौं ज्यौं सब बिधिहि बतावै
॥ ९० ॥ जामुरति पर इछा होई॥ हरिहीं जांनि करि पुजैं सोई॥
अति पवित्र ह्वै करै सनांनां॥ मन की तजैं वासनां नांनां॥ ९१॥
वायु अपान छ्रीक जमुंहाई॥ और पवन गुन उठैं न काई॥ सन
मुष बैठि करै तन रीछा॥ अंगन्यास मंत्र पढि अरछा॥ ९२॥
और सब सैं छिसैं जसे वाकी॥ सबले बैठैं तजैं न वाकी॥ वि
ष्नुरूप अप्रतिमा मैं आंनैं॥ अरघ पाद अरु बिष्टर ठानैं॥ ९३
॥ मुलमंत्र करि पुजा करै॥ और न कछु बचन उचरै॥ सकल
अंग मैं हरि जी कौं ध्यावैं॥ संष चक्र गदा पद्म मनि लावैं॥ ९४
॥ जुष नव सन पारषद सहिता॥ सो हसित वदन देषमद दुषदु

रीता ॥ बिबिधिभांति अस नान करावै ॥ करी तिलक अंग वस्त्र
पहिरावैं ॥ बहु सुगंध माला पहिरावै ॥ बहु भांति कं सिंगार
लगावै ॥ घंटा आदी सब्द बिस्तारै ॥ बहु रिकरै दंडोत परनांमं ॥
पढै मंत्र लेवैं हरि नांमा ॥ ६७ ॥ बाहर वस्तु मिलैं ते आंनैं ॥ औ
र निमनसैं पुजा ठांनैं ॥ तन मन अर्पै निरंतर सेवै ॥ महा प्रसा
द माप्य करि लेवैं ॥ ६८ ॥ बहु रि देवकों हिदै धरै ॥ मुरति सयन पि
टारै करै ॥ या विधि हरि के आतम जांनैं ॥ जथासक्ती सब पुजा ठां
नैं ॥ ६९ ॥ असैं सेवत उपजे ग्याना ॥ वेगें आनि मिलैं भगवा
ना ॥ भव संसार तिरन जे चाहैं ॥ सेवा सहैत छिन्नि निरबाहैं ॥ १०० ॥
॥ दोहा ॥ एसु निबचन विदेह के ॥ बाढ्यौ मन मैं प्यार ॥ तव गुन अ

रुकर्मनसहित॥ पुछेहरिअवतार॥१०१॥इतिश्रीभागवते
महापुराणेएकादसस्कंधेवसुदेवनारदसंवादेजायंतेजे
पाख्यानेन्हतियोध्याय:॥३॥चौपई॥ अबअवतारक
था बिस्तारौ॥गुनअरुकरमसहितउचारौ॥जैजेलिखेहो
हिंगेआगैं॥ अबहैंसबजानाषेअनुरागैं॥१॥ एसुनिन्हपति
जनककेबैंना॥क्रपासिंधुकरुनाकेअैंना॥तबसातैंएदुमि
लसेनामा॥बोलेबचनपरमअभिरामा॥२॥द्रुमिलउवाच
॥जेअनंतकेगुनअवतारा॥तिनकोन्हपतिलहैकौपारा॥जु
मिरेनुकरिकोईगनैं॥सोऊकहासकलगुनभनैं॥३॥हरिकेगु
नअवतारअनंता॥बालबुधिजोचाहैअंता॥तातैंकछुएक

मैंभाषौं॥ तैरैह्रदैनसंसाराषौं॥ ४ ॥ पंचभुतनिरमितब्रह्मंड

॥राष्योतारमां द्विज्योंअंड॥ तामैंअंसआपनैधारां॥ सोहै

आदिपुरुषअवतारा॥ ५ ॥ जिनकिदेहुंतैंसबदेहा॥ देहमां

द्विवरतैंसबएहा॥ तिनकैअंगनितैंसबअंगा॥ इंद्रीयअरु

बुधिबहुरंगा॥ ६ ॥ सतरजतमतैंसकलपसारा॥ उतपतिअ

रुपालनसंहारा॥ प्रथमद्रिरजतैंब्रह्माकियौ॥ सातिकजन

मविष्नकौंदियौ॥ ७ ॥ तांमसकरीसंकरउपजायै॥ तिनसौं

सकललोकनिपजायै॥ ब्रह्मारचै विष्नुप्रतिपालै॥ हरैंरुद्रयों

भवपंथचालैं॥ ८ ॥ बहुरिसुनौहरिकैअवतारा॥ भवसागर

कैतारनहारा॥ धर्मपिताअरुमुरतीमाता॥ तहांनरनारायनवि

ध्याता ॥ ९ ॥ आतमज्ञानजुक्ति बिस्तारैं ॥ जासौं लागि जीव नि-
स्तारैं ॥ अवकुं प्रगट करैं आचरना ॥ नारद दिनि तिसि सेवैं चर-
नां ॥ १० ॥ एकवार सुरपति मन आन्यौं ॥ मम लोक हि लैहै यौं
जान्यौं ॥ तब तिनि आज्ञा कांम दिई न्हीं ॥ कांम संग सिवास
बली न्हीं ॥ ११ ॥ रंभादिक अपछरा अपारा ॥ त्रिविधि पवन
बसंत पसारा ॥ बदरी खंड सबैं चलि आए ॥ नरनारायन-
बैठै पाए ॥ १२ ॥ नरि नरी बान निद्रनैं सरिरा ॥ निफल जये आग
निज्यौं निरा ॥ तब तै रोम रोम थहरांने ॥ आप आग नि जीवन-
गत मांनें ॥ १३ ॥ हरि अपराध इंद्र कृत जांन्यौं ॥ हरि बोले ति-
न कौं जय जान्यौं ॥ मति जय करो पंचसर बिरा ॥ देवनारि लव-

ग्यानसमीरा ॥ ७४ ॥ बैठोई हां अतिथ्य करवैं ॥ हंम अंग्राश्रमसु
फल करि जावैं ॥ एमुनि अत्तयदांनके बैंनां ॥ तैसं बजोरि
सकैं न दिनैं नां ॥ ७५ ॥ रुउपाचार नवायें सीसा ॥ बोले बचन
जां निजगदिसा ॥ हे प्रभुयह कछु नै हि अचंनां ॥ तुम है प्रस
तिपुरुष के अंनां ॥ ७६ ॥ निरविकार निरगुन निरभेदा ॥ जीन
कौं जानि सकैं न दिवेदा ॥ निजानंद पुरन मुनिसारे ॥ तें सब तत
है चरन तुम्हारे ॥ ७७ ॥ तुम्हारे चरन सरन जे आवैं ॥ तिनकौं सुर
बहु विघन पठावैं ॥ तिनको लोक दांबी पग नीचैं ॥ गयो चहै
तुमारे पद ऊचैं ॥ ७८ ॥ तातैं बिघन करें सब देवा ॥ मिटती जां
नि आपनी सेवा ॥ औरकी सी कौं बिघन बिंन करहि ॥ जातैं ति

हैदंडसबजरही॥ १९॥ परितुवजनदिन बिघनसंतावै॥ बिघ
ननीसीसचरनदेजावै॥ जो त्रिभुवनपतितुमरषवारै॥ कहा
करैतौ विघन विचारै॥ २०॥ तातैंतुम्हारोकहाअचंभा॥ जातैं
माहिसकिन हिंस्या॥ क्षुधात्रष्नाअरुआलसनिंद्रा॥ सीत
उष्णवरखाअरुतंद्रा॥ २१॥ जिह्वा सिस्नादिक विसतारा॥ इ
नके तुनतेजलधीअपारा॥ ताकोंबहुतकष्टकरितरैं॥ गोप
दक्को धबुडिनेमरैं॥ २२॥ ननकोतपसबमिथ्याहोई॥ दोहूं
लोकमैं ऐकनकोई॥ तातैंसबसाधनकुंकरैं॥ तुम्हारीकृपा
बिनानहितरैं॥ २३॥ याबिधिदेवबचनउचरैं॥ तबहरिअेक
अचंभाकरैं॥ अतिअदभुतबहुबिनारिअनेका॥ मनमोह

नी एकतै एका ॥ २४ ॥ तेसब बसे वाकरत दिषाई ॥ मानौं रंचा स
षिनसौं आई ॥ तिनके गंध रूप सब मोहै ॥ चंद्र उदै जैसौं उड्गन
सोहै ॥ २५ ॥ तिनसौं हरिजी बोले बैनां ॥ ईनमैं एक लेहु तुम मैं
नां ॥ स्वरगलोक कौं चुखन रूपा ॥ जातैं एसब परम अनुपा
॥ २६ ॥ तिन सब हरि कौं कीयौ प्रनामा ॥ लीकी एक तर बसी
नांमा ॥ करि प्रनांम पुनि बारंबारा ॥ पहुचे सकल इंद्र दरबा
रा ॥ २७ ॥ तिन इंद्र हि प्रसंग सुनायो ॥ बिसमय त्रास इंद्र मनि
आयो ॥ बहुरि लियो हंस अवतारा ॥ चारि नये सनी कादी
कुमारा ॥ २८ ॥ दत्तक पिल अरु पिता ह्म्हारा ॥ आठौं ब्रह्म रू
प बिस्तारा ॥ हयग्रिव मधु प्रांन निबारे ॥ ताकरि हरि बेद उधा

रे ॥ २९ ॥ सत्रव्रतराजा हरिजन्न ॥ ताकौं हरिजी कीयौ विरन्न ॥ विन हि प्रलय प्रलय दिषरायौ ॥ मछरूप ग्यांन हि समझायौ ॥ ३० ॥ बहुरि वराह रूप हरि धारयौ ॥ बोरी हुती मही जल माही ॥ सो उपर थापि पलमांही ॥ ३१ ॥ कुरम है कै मदरागिर धर्यौ ॥ अम्रत काढि सुरकारीज कर्यौ ॥ ग्राह ग्रह्यौ गजराज पुकार्यौ ॥ तब हरीजी ततकाल उबार्यौ ॥ ३२ ॥ बाल षिलादिक जे रिषिरा जा ॥ अंगुष्ठ समा आकार बिराजा ॥ कस्यप के काजे अेक वार ॥ संमधनि कौं तब जन्हि पधारा ॥ ३३ ॥ तहां गाय कै पग जल ० नरिया ॥ तिनि मैं आप आपसब परिया ॥ हासी करैं ईद्र तहां परौ ॥ तब तिन क्रुद्ध है हरिसं जन्यौ ॥ ३४ ॥ जब आत्म कोई

नांहि॥ तबतुमनाथउधारनमांही॥ तातैंअबहमत्रयेअना-
था॥ करुनांसिंधगहौकरहाथा॥ ३५॥ ईतनिसुनिआरतिकी-
बांनी॥ तहंउठिधायेसारंगपांनी॥ तबहरिकरगहिसबनि
उधारा॥ बालखिलउधरंनअवतारा॥ ३६॥ ब्रंम्हहत्यात्रयई
इसंत्रास्यौ॥ तबहीहरिजीप्रगटउधास्यौ॥ सुरबिनीताजब-
असुरनिहरि॥ तबतैंहरिसरनहिंअनुसरी॥ ३७॥ तबहरिजि-
तेसकलउधारी॥ असुरमारिसबविपत्तानिवारि॥ हनिन-
सींघरूपतनधास्यौं॥ असुरहिरन्यकसिबजिनिमास्यौं॥ ३८
॥ जंनप्रहलादहिंलीन्हौंराषी॥ जाकीप्रगटकहैंसबसाषी॥
॥ जबजबअसुरप्रबलअतिभयैं॥ देवनकैअस्थलहरीलहैं

॥४०॥ तबतब सब मनवंतर मांहि॥ विष्णु करा अवतार धरांई॥ मारी असुर सब दुष मिटावैं॥ सरनागत सुरनर सुष पांवैं॥४१॥ बावन रूप ईद्र कै काजा॥ निछा छल छलि लियौ बलि राजा॥ तीन लोक लै ईंद्र हि दयो॥ बलि को नक्कि आप बसि लयो॥४२॥ बहुरि त्रेधर मि उपजे राजा॥ परसरांम त्रगटै तिनि काजा॥ ईकीस बार करी निक्षत्री॥ पुवमैं कहु न राष्यो छत्री॥४२॥ बहुरि जनै दसरथ सुत रांमा॥ जे हैं प्रगट लोक अभिरांमा॥ सायर उपरि सैल जिनि तारे रावन आदि दुष्ट संहारे॥४३॥ आगैं रांम कृष्ण अवतारा॥ कृष्ण कैं प्रबल हरैं गे भारा॥ जदुकुल जनम कर्म ते करिहैं॥ जिनि सौं लागि जीव निसत्तरिहैं॥४४॥ असुर देषि जगिन

केकरता॥ जीवनिंमारिउदरकेचरता॥ बुधरुपह्वैरिजीतब
धरिहैं॥ ४५॥ बहुरिधरैंगेकलंकीरुपा॥ अतिअपराधकरैं
जवभुपा॥ कलिकेअंतसकलसहरिहैं॥ बहुरिप्रवर्त्तसत्त
जुगकरिहैं॥ ४६॥ ऐसेविष्णुकर्मअवतारा॥ कोईकहतनं
पावैपारा॥ कछुएकमैंतुमसौकहे॥ औरैकोटिअनंतनि
रहे॥ ४७॥ इनकौंकहैंसुनैंजोगावें॥ प्रेमसहितनिसवासुरि
ध्यावैं॥ सोभवसागरमैंनहिरहै॥ पावैग्यानपरमपदलहैं॥
॥ ४८॥ दोहा॥ एवैनासुनिदुमलछके कीन्हौंप्रस्ननिरंद्र॥ प्र
भुजीतिनकीकौंनगति॥ जेनभजैंगोविंद॥ ४९॥ इतिश्री
भागवतेमहापुराणेद्वादशस्कंधेवसुदेवनारदसंवादे

जासंते जोपाष्याने चतुर्थो ध्यायः॥४॥ ॥विदेह उवाच॥

चौपई॥ ऊन कौ हरिजी की सेवा॥ तिनकौ कहौ कौन गति देवा॥ तिनके नित प्रति सुपनै आवैं॥ निसदिन त्रिष्णा अग निज लावैं॥१॥ परि जो बहु बिधि धर्म उपावै॥ तासौं दिक कहौ कछु सुष पावै॥ एक हि बचन जन क जब रहे॥ आष्मच मस न्नाम॥ तब कहैं॥२॥ चमस उवाच॥ हरिजी वी प्रवरनते करैं॥ बाहु नतैं छत्रि बिस्तरे॥ जंघ निहु तै बैस्य उपजाये॥ सुद्र निंममच रननी तैं आयैं॥३॥ याही जाति की ये आस्रमा॥ तातें जन सबनि को धर्मा॥ ते आपहि कै रे प्रतिपाला॥ आपही पो षौं दीनदयाला॥४॥ ऐसे प्रभु कौं जे बीसरैं॥ ते अपार अ

पराधनिकरैं ॥ तेई गुरुद्रोही पित्रद्रोही ॥ स्वांमिद्रोही कृतघ्नसो
ई ५ तिन अपराधनि अधगति जावैं ॥ कबहूं न्हु लिखुषनर
हि पावैं ॥ सुद्रजाषिता अंतज आदि ॥ तिनकौं दूरि कथा अव
ण आदि ॥ ६ ॥ त्रमन नमैं अन्निमांन न धरैं ॥ तातैं तुम सेन्रूपाक
रैं ॥ यातैं ईन कौं दृउधारा ॥ परिऊ वनिकौं वारनपारा ॥ ७ ॥
विप्र अरु ऋत्रि वैस्य त्री बरनं ॥ उपनये नादि बेद मरबक
रनं ॥ ईन सब हि निकैं तेअधिकारी ॥ तातैं हौं हि बहुत अहं
कारी ॥ ८ ॥ त्रात्नपर्जेकौं जांनैं नांहि ॥ पुद्हपीत बांनी मैं त्रमा
हीं ॥ विह्नं त्तजनउत्तम अदृधिकारा ॥ पायो ता हिन लषैं
गवारा ॥ ९ ॥ कर्म अकर्म विकर्म न जांनैं ॥ अति कठोर आपु

हिबहु मांनैं॥ हमपंडितजग्पनकैकारक॥ औरबहुतकर्म
निबिस्तारक॥ १०॥ आपत्रमैं औरनिकमावैं॥ प्रियबा
निबहुजातिसुनांवैं॥ कामरुअर्थअर्थकरिमांनैं॥ पढिपढि
बेदसाषिबहुआंनैं॥ ११॥ बहुसंकल्पकरैंमनमांहि॥ बहुत
बहुतआरंभकरांई॥ सौंहितौंराजसअधिकारा॥ कांमरु
क्रोधलोभअहंकारा॥ १२॥ दंभकपटचतुराईआंनैं॥ हरिज
ननिकिहांसीठांनैं॥ आपआपबैठैं मिलिजबहि॥ ग्रहकैं
सुषनिसरांहैंतबही॥ १३॥ जिनमैंआनंदहिनांनाहि॥ दंभ
मांनसौंजग्पकरांहि॥ बहुतनिपसुमारैंअगपांनी॥ तिनअप
राधनिमकैंनजांनी॥ १४॥ इतनौंधंनआयौयह औहैं॥ एतौर

मिलिएतौतबह्वैदै॥ कुलसंपतिबिद्याठकुराई॥ त्यागरूपब
लकर्मबडाई॥ १५॥ ईनकोमदबाढ्यौअधिकाई॥ तांतेहरि
देसमझिनहिआई॥ हरिजनक्रिनसौंठानैंहांसी॥ मगहरम
रैंह्वैडोषलुंकासी॥ १६॥ थावरजंगमसबघटमांहि॥ हरिपू
रनषालीकहुनांही॥ ज्यौंआकासलिपतिनहिहोई॥ त्यौंहरि
बेदकहतहैंसोई॥ १७॥ परिबैमदनकहुंजांनैं॥ जातैंहरिजन
ननहिमानैं॥ बहुतमनोर्थमनमैंकरैं॥ त्रिस्नातापजलनि
नहिटरै॥ १८॥ मद्यपांनंअरुमांसअहारा॥ नारीनेहसहित
जगसारा॥ तासकलहित्यागबेनिमत्ता॥ बिधिमैंबेदलग
वैचित्ता॥ १९॥ संगकरैंतौनारिबिहाई॥ ताहुमैंबहुतैंतिथी

नांही॥ बहुरि कह्यौ देवै रिति दानं॥ तुलि अरु नरनै दैं नां
मां॥ २१॥ बहुरि उहां उतैं छोडावैं॥ असौ तात पर्ज कौं पावैं॥
हरि की सरन हिं आवैं कोई॥ सारी विधि समझए सोई॥ २२॥ कै
जे तिन की सरन हिं आवैं॥ अनि आय सारौ सौ पावै॥ वेद
सिजन अरु हरि हिं न जांनैं॥ आप ही कौं पंडित करि मानैं॥
२३ तातैं तात पर्ज न हि जांनैं॥ पढि पढी बेद ज्ञान षैनि ठां
नैं॥ धन कै सो जो करैं उधारा॥ सो धन षौवैं ब्रथा गंवारा॥
२४॥ जो धन हरि के काज लगावौ॥ सो तब प्रेम भक्ति कौं
पावैं॥ तातैं हौं इग्यांन प्रकासा॥ २५॥ कै सो धन तैं मुढ अ
यांनां॥ देह कज रखौवै नरमांनं॥ काल निरंतर हरत तन

देषै॥ बहुमदमन्नहूराकरी देषै॥२६॥ मद्यमांसमषमैं आनीजैं
॥ और न्नु लिकहुं नांवन लिजैं॥ तहांऊ आपलेई अघ्रांनां॥
षांनपांनतैं अघगतिजांनां॥२७॥ त्यौंबनितारितुदांनदि
दैवैं॥ और न्नुलिकहुं नांमन लेवैं॥ सोऊजबलगएकसुत्त
होई॥ सुतकेन्नयेंत्या गिऐसोई॥२८॥ ऐसौसकलबरनको
धर्मा॥ ताकोन्नु लिनपावैमर्मा॥ मरमदिंनस्रुतिसुमृतिबषां
नैं॥ मुरषआपहीपंडितमांनैं॥२९॥ तातैंबहूतकर्मआरंन्नै
॥ ईंद्रियमनहिकंदेनहिंथंन्नै॥ द्रोहीकरै बहुजिवेनिमोरैं॥ तेब
हुजनमतिनहिंसंहोरैं॥३०॥ थावरजंगमसबघटमांहि॥ ए
कहरिदुजाकोईनांहि॥ तिनकोद्रोहकरैंतनपोषै॥ दारासुत

नित्त्र्यांनिसंतैाषैं ॥३१॥ नहिंमुरखनहिंतत्वग्यांनी ॥ पढिंपढि
ग्रंथहोहिंअभिमांनी ॥ तेअसाधिरोगीसबजांनी ॥ तिनसैं
ग्यांननमांडेग्यांनी ॥३२॥ तेसबकरैंआपनोघाता ॥ सुपनैं
हुंनलहैकुसलाता ॥ कर्मपंथमैंसुषकौंचाहैं ॥ अंमृतदेक-
रिबिषहिबसाहैं ॥३३॥ नानातापतपतजोरहैं ॥ करैंमनोर्थ
फलनहिंलहैं ॥ बहुतत्त्रातिभ्रमकरिउपजाये ॥ सुतबितदा
रासकलमनभाये ॥३४॥ तिनसबहिनकोंछोडिईहांहि ॥ बंधे
आपजंमहारैजांहिं ॥ जंमकेदुतनर्कलेजावैं ॥ ताकेदुषकहेन
हिंजावैं ॥३५॥ तिनकौंकोनहिंराषनहारा ॥ हरिरछकसोनहीं
संभारा ॥ कहाकहौंकछुकहेनजांहिं ॥ हरिबिनुकहुंपलकसु

षनाहीं॥ ३६॥दोहा॥ चमसबचनसुनीनृपकै बढ्यौत्रास-
अपार॥ तबजुगजुगकोपुछियौ॥ हरिकोजनअकार॥
३७॥राजाउवाच॥ कौंनसमैंकैसौअवतारा॥ कैसोवरंन
नांमआकारा॥ किंहिबिधिजनजैंबरंनआप्रमां॥ कहौगुंण
नकैसाधनधंमा॥ ३८॥ जिनतैंग्पांनलहैंसबत्यागैं॥ नि-
तिहरिचरनकवलअनुरागैं॥ सुंनिनृपवैंनजुक्तिकेआ-
जन॥ तबबोलेनवमेकरभाजन॥ ३९॥करभाजनउवा-
च॥ सतत्रेताद्वापरकलिकाला॥ बहुतनांतिजजियेगोपा-
ला॥ बहुबिधिबरनबहुतआकारा॥ बहुतनांतिजजिये-
गोपाला॥ ४०॥ सतिजुगसुकलबरनजुजचारी॥ सीसज

टातंनवलकलधारी॥ कंठजनेऊकरजपमाला॥ दंडकंमंडलअ
रूमृगछाला॥ ४१॥ तबमानुषहैवैसबसुधा॥ समनिरवैरस
हृदपरबुधा॥ असिथिरिकरिईंद्रीयमनप्रांनं॥ करैंसबैंतंनि
हरिकोध्यांनं॥ ४२॥ हंससुबर्नधर्मजोगेसुर॥ निरमलपरमा
त्माअरूईस्वर॥ ऐसेनामबैकैंठअव्यक्त॥ तिनिकेनामहे
हिएबक्त॥ ४३॥ रक्तबरनत्रेताजुगमांही॥ त्रिगुनमेषलाग
लिपहिरांही॥ पीतकेससुरवाहीकहाया॥ रिगजजुसांमत्र
यमैंनाया॥ ४४॥ सबतिनिहितजग्यादिककरैं॥ बेदविहित
कर्मनिबिस्तरैं॥ सर्वदेवमैंहरिकौंजांनै॥ तबसबयौंहरिपुजा
पानैं॥ ४५॥ बिष्णुगर्जउरुगाईकहीजैं॥ बिस्नबर्षाकपिजग

जनीजैं॥ सर्वबेदअरुक्रम बिजयंता॥ ऐसै नाम कहैं सब संत
॥४६॥ द्वापर पितबसन घनस्यांमा॥ संखादिकआयुधअभि
रामा॥ चारिबाहु त्रिगुलताधरनां॥ लक्ष्मी चिन्ह बहुतआ
भरनां॥ ४७॥ चामरछत्रआदि बहुतेनां॥ महाराजि लछन
सुषदेनां॥ बेदतंत्रपंथ सेवाकरैं॥ सबअरपन पुजा बिस्तरैं
॥४८॥ बासुदेव संकरषन देवा॥ प्रद्युमन रुअनिरूधअरुकेवा
॥ नारायन भगवान अनंता॥ जिनकौ कोई लहैं न अंता॥ ४९
॥ बिस्वरूप बिस्वेसुर स्वांमी॥ सर्वात्मा सब अंतरजांमी॥ ५
बहुत भांति अस्तुति बिस्तारैं॥ बिधि सौं द्वापरि पूजा करैं॥ ५०॥
कलिजुग पित पितांबर धारी॥ कृस्नदेव घनस्याम मुरारी॥ सहि

तपारषत बहु आचरनं ॥ श्रवन किरतन पुजा करनां ॥ ५१ ईंद्रिय
मन बहु त्तर विकारा ॥ तिनतें राषे चरन तुमारा ॥ सब बिधि स
ब तिरथ को वासा ॥ सुमरत हि पुरवैं सब आसा ॥ ५२ ॥ सिव विरंचि
सुर नर मुनी ध्यावैं ॥ जाको ततु बेद न हि पावैं ॥ राषि लेत सरन हि
जो आवैं ॥ जनम मरन सब दुष मिटावैं ॥ ५३ ॥ केवल दीन हो
त उधारैं ॥ नव सागर के पार उतारैं ॥ ऐसो चरन तुम्हारो गायो
॥ ताकी सरन दीन मैं आयौ ॥ ५४ ॥ अति दुस्सज सुर वंदे जाकौं
॥ ऐसौ राज छोडि करि ताकौं ॥ दसरथ तक्क बचन सति करनां
॥ बन कौं गवन कीयो जिनि चरनां ॥ ५५ ॥ हेम मृग दयता मन ता
यो ॥ जो जाकौ पीछे उठि धायो ॥ जो जक्कन कै पैं आधीना ॥ ऐ

३३

सचारनसरनमैं लिनों ॥ ५६ ॥ ऐसी विधि कलि स्तुति करैं ॥ बहु

विधि हरिनांम निउचरैं ॥ सुनैं कहैं सुमिरैं अरु ध्यावैं ॥ ते तत का

ल तत्व कों पावैं ॥ ५७ ॥ या विधि जे जुग जुग हरि सेवैं ॥ तिनि ति

नि कौं हरि ग्यांन हि देवैं ॥ ग्यांन पाई निज तत्व समावैं ॥ जहां

जाई बहु स्यौ न हि आवैं ॥ ५८ ॥ जे कलि जुग के गुन कौं जांनं

त ॥ ते बहु विधि अस्तुति कों ठानत ॥ जै सो परम सार कलि मां

हि ॥ ऐसो और जुगन मैं नांहि ॥ ५९ ॥ सतिजुग ध्यान जग्य

त्रेता महिं ॥ द्वापर प्रतिमा पुजै रांम ही ॥ कलि केवल नामा दिक

गावैं ॥ सो सो फल तत काल हिं पावैं ॥ ६० ॥ या भव सागर मांहि

निरंतर ॥ दुषि जीव परे न हि अंतर ॥ तामैं हरि गुन नाम उचारन

॥एकजाहि जसकलको तारन ॥ ६१ ॥ पापअपार घोर कलिमां
हि ॥ जांमैं पुन लेसकहुं नांहि ॥ तामैं जे हरिगुन निउचारैं ॥ ते
तिरिआप औरनिकौं तारैं ॥ ६२ ॥ ते छत्रकृत तेई बडभागी ॥ जे
कलि हरि किरति अनुरागी ॥ आपसुमिरि औरनि सुमिरावैं
॥ ते जुगजनमि बहुरि नहिं आवैं ॥ ६३ ॥ सत त्रेता द्वापर जुव
तरही ॥ ते कलिजुग कि बांछा करही ॥ कलि कछु साधन अ
रुभ्रम नांही ॥ हरिगुन गावत हरिहि समांही ॥ ६४ ॥ अरु क
हुं कहुं कोई देस विसुधा ॥ द्रव्यउदी मांनवत्त हांबुधा ॥ जे उप
जैते त्तक्ति हिकरैं ॥ तातैं तहां बहुं तउधरैं ॥ ६५ ॥ अरु जो ताम्र
बरणि कृतमाला ॥ कावैरी पेपस्नुनि बिसाला ॥ अरु सुरस

ति पब्लिमवाहिनी ॥ गंगाआदिदुरितदाहनी ॥ ६६ ॥ जेमा-
नव पिवैंजललईनको ॥ दुरिहोईहृदै मलतिनको ॥ तेसवैया
हो हरिजनका ॥ साधसंगहोवैंआसनका ॥ ६७ ॥ ज्युतकुटं
व पित्र रिषिदेवा ॥ ईनकरिनीकैंसबसेवा ॥ सोतरिनिन
हिं सेवाकरई ॥ जोसबतजिहरिकोंअनुसरहि ॥ ६८ ॥ जे-
विधितजिहरिचरननिआवैं ॥ तिनकेमलहरिदुरबहा
वैं ॥ बहुरयोंमलउपजैनहिकोंई ॥ उपजेकहैंहरैहरिसोई
॥ ६९ ॥ तातैंसबविधिकोफलएका ॥ गहियेहरिपदछां-
डिअनेका ॥ सबकेंप्रभुसबकेसुषदाता ॥ सरनागत-
पालकविष्याता ॥ ७० ॥ जबजबजैजोसरनहिआयो ॥

तबहितबतिनितिनिदूरिपायो॥ तातैंऔरसकलपरिहरि
ऐ॥ श्रीभगवानचरनचितधरिऐ॥ ७१॥ ऐसैसुनितबतिनकै
बैंना॥ जनकहिरदैअलपजौचैनां॥ संसामिट्यौसकलभ्र
मभाग्यौ॥ ब्रह्मज्ञानिसुतौसोजाग्यौ॥ ७२॥ तबतिनर
किंबहुपुजाकीन्ही॥ विप्रनिसहितप्रदक्षनादीन्ही॥ याबि
धिदरसनपायेसबहिं॥ अंतरध्यानभयेतेतबहिं॥ ७३॥
जनकविदेहऔरसबत्यागो॥ हरिकेचरनकमलअनुरा
ग्यौ॥ याविधिब्रह्मपरायनभयो॥ तीरनवसिंधुब्रह्मम
हिगयौ॥ ७४॥ याहिविधितुमहूंबडभागी॥ ह्वैकौहरिचर
ननअनुरागी॥ औरसकलकौतजिहौसंगा॥ तबपाईहौ

ब्रह्मप्रसंगा ॥ ७५ ॥ अरुतुम तौ देव कि वसुदेवा ॥ जे ये कृतार्थ करिहि सेवा ॥ तुम्हारो जस प्रस्यौ जग सारा ॥ जिनके हरि लिन्हे अवतारा ॥ ७६ ॥ दरसंन अलिंगन आलापा ॥ आसन जो जन सैन मिलापा ॥ हरिसो पुत्र जानि वितरीन्हें ॥ नातें सकल जन तुम कीन्हें ॥ ७७ ॥ कपट वासुदेव अरु सिसिपाला ॥ दंतवक्र सल्वादिक राजा ॥ वैरचाव स्मृति चित्त धास्यौ ॥ तिनहुं कौं हरि देव उधास्यौ ॥ ७८ ॥ तौ जे प्रेम प्रीति सौं सेवें ॥ तिनिकौं क्यौं न परमपद देवें ॥ अब तुम त्रबुधि मति भ्रांनौ ॥ त्रिलोकदेव को ब्रह्म हि जांनौ ॥ ७९ ॥ माया करी धारी नरदेहा ॥ परिब्रह्म जानौ तुम एहा ॥ बढौ टेषिच

वमैं अघजारा॥ मैटनकाजधस्यौ अवतारा॥ ८६॥ परमपु
नितजसहिंबिसतरहीं॥ जासौंलागिजीवनिसतरिहीं॥ ८
जेजेईनसौंहेतलगावैं॥ तेतेसकलपरमपदपावैं॥ ८१॥ अै
सिमुनिनारदकिबांनिं॥ बसुदेवदेवकिअदचुतमांनि॥ ८
आपहिदोदुसुतिकरिज्यांन्यौं॥ हरिमैंजावब्रह्मकौंआंन्यौं
॥ ८२॥ यहईतिहासकथाजोभाषै॥ सावधांनसुनिरदैराषैं
॥ सोसबजनबंधनछिटकावैं॥ उपजेग्यांनपरमपदपा
वैं॥ ८३॥ दोहा॥ यहभाष्यौसंछेपसौं॥ हरिमिलनैंकौहार
॥ हरिउधवसंवादअब॥ बरनौंकरिबिस्तार॥ ८४॥ इतिश्री
भागवतेमहापुराणेअेकादसस्कंधेवसुदेवनारदसं

वादेजायंतेयैोपाख्यानेपंचमोध्याय॥५॥वसुदेवनार
दसंवादसमाप्त॥ अथरूष्णउधवप्रस्तावप्रस्यतेतत्र॥श्री
सुकउवाच॥चौपई॥बहुरिसुनौनृपआत्मविद्या॥जाके
जांनेंमिटैअविद्या॥मिटैंअविद्याब्रह्महिपावैं॥ब्रह्महिंपा
ईफेरिनहिंआवैं॥१॥तबब्रह्मासनकादिकसंगा॥नारदा
दिरंगेहरिरंगा॥सलप्रजापतित्रिगुमरिचादिक॥महादे
वलीन्हेंरूतादिक॥२॥सुरसंमूहसंगलेसुरपति॥पवनअ
ग्नीसुतग्रहपति॥वसुअंगिरसरुद्रइतदेवा॥साध्यादि
कअरुविस्वेदेवा॥३॥रिषिगंधर्वपितरअनंगा॥चारन
सिधनरेंअनुरागा॥अपअप्सरअरुगुह्यकविद्याचर॥कि

नरज ब्रह्मादिक मायाधर ॥ ४ ॥ कृष्णदे षि बेकार निसारे ॥ आ
नंदित ह्वारिकाप धारे ॥ केई नांचै केई गावैं ॥ केई बाजे बहु
त बजावैं ॥ ५ ॥ केई जयजय सबद उचारें ॥ केई कृष्णजस
हि बिस्तारैं ॥ या बिधि करैं बहुत उछाहा ॥ मगन न्नेयेह
रि प्रेम प्रवाहा ॥ ६ ॥ श्री भगवान मनुज तन धारी ॥ दरस
न सब मन हरन मुरारी ॥ लोक निमाद्रिजस हि बिस्ता
रै ॥ श्रवनादिक निसकल अघ तारैं ॥ ७ ॥ नि धि रि धि पूर
न द्वारावति ॥ जाके सम न दि अमरावती ॥ तामें कृष्णा
दिक चलि आए ॥ कृष्णदेवके दरसन पाए ॥ ८ ॥ सुरग हु फुल
न की माला ॥ ब्रह्मादिकी न्है दीनदयाला ॥ पावत दरसन प

त्रिनहीहोवैं ॥ चित्रलिषेसेसनमुषजोवैं ॥ ९ ॥ चित्रपद
तिबहुअस्तुतीकरैं ॥ उतमअरथनिजसबिसतरैं ॥ सद्नि
नवीनतिअरुपरनामा ॥ दरसनतेंसबपुरनकामा
॥ १० ॥ दोहाऊवाचं ॥ हेप्रभुचरनसरोजतुम्हारा ॥ मनक्र
मबचनचित्तअहंकारा ॥ इद्रियबुधिप्रानअरुदेहा ॥
बंदतहैंहमपरगटएहा ॥ ११ ॥ जाकोप्रानबचनमनसा
धे ॥ सावधाननिसदिनआराधे ॥ जावसहतअन्तिअं
तरध्यावैं ॥ तेउआबिधिमगटनपावैं ॥ १२ धनिधनि
हमधनिभागहमारे ॥ परगटदेषेचरनतुह्मारैं ॥ जिनके
ध्यानकीरतनश्रवना ॥ बहुरिनहोईआवागवना ॥ १३

॥ तुम अद्वैत द्वैत यह करौ ॥ अपनी माया सब विस्तरौ ॥ तुम
ही मैं उपजे संसारा ॥ सदा रहैं तुम्हारी आधारा ॥ १४ ॥ तुमहि
मांहि लिन सब होई ॥ तुम कौं परसी सकै न हि कोई ॥ रागर
हित आनंद सरूपा ॥ अजित अमित चिद्रुप अनुपा ॥ १५ ॥
॥ बहु अध्ययन श्रवन अरु दांनां ॥ क्रिया उपासन तप
असनांनां ॥ त्याग जोग जग्यादिक जेतें ॥ आत्मसुध करैं
नहि तेतें ॥ १६ ॥ तुव गुन श्रवन परत अघ नासैं ॥ ज्यौं तम मां
हि सुर प्रकासैं ॥ तातें जनम करम तुम धारे ॥ दीनबंधु दीन
नि उधारे ॥ १७ ॥ जो तुं व चरन कवल मुनि ध्यावैं ॥ नव चाय
नितन पल छिटकावैं ॥ अरु निज जन क निरंतर सेवैं ॥ नय

नहिंमुखैंनहिंकछुलैवै॥ १८॥ अरुएकैवैकुंठनिमंता॥ इ
देंधरैंतावरनहिंनिता॥ बहुरिएकसैवैसहकोमां॥ एकत्र
येवाहैनिहकामां॥ १९॥ जीवनमुक्तयेएकसेवैं॥ प्रेम
ज्ञावसोंअतिसुषलेवैं॥ जत्तांदिकनसोंत्तजें॥ सर्वदेवम
यतुमकोंजजें॥ २०॥ एकैवरनआदिआसरमां॥ तुम्हरेहेत
करैंसबधरमां॥ एकैंएकरूपकरिध्यावैं॥ द्वैतज्ञावकबहुं
नहिंल्यावैं॥ २१॥ एकैतुवप्रतिमाकोंसेवैं॥ एकैनामनिरं
तरलेवैं॥ एकैश्रवनकीरतनध्यानां॥ कहांलगेंकहियै
विधिनानां॥ २२॥ यौजेजेतुववचरनहिसेवैं॥ तेतेसबैंवंछि
तफललेवैं॥ सोतुववचरनप्रगटहमपायौ॥ तातैंअबदि

जैंमनआयौ॥२३॥ यहहंमबंछापूरनकरौं॥ अपनेंचरन
कवलचितधरौं॥ असमकरोदुजीवासनं॥ जिनतेंउपजैं
अवसासना॥२४॥ परमदयालअगतहितकारी॥ ईछापूर
कदेवमुरारी॥ ईछापूरनकरोंहंमारी॥ निहचलउपजेअति
तुम्हारी॥२५॥ जोतुवजनबनमालाकरैं॥ प्रेमसहिततुअ
गैंधरै॥ कवलादेषिसपरधाअंनैं॥ ताकौंआपसपतनी
जांनैं॥२६॥ परितुमअेसेदीनदयाला॥ अतिआधीनकर
तप्रतिपाला॥ तअंईहरनिरादरकरो॥ बंनमालाताउपरि
धरौ॥२७॥ जोतुचरनअतिसुरकारन॥ दुष्टअसुरसेनासंहा
रन॥ असुरनिकौंअधगतिकेदाता॥ सुरनिसुरंगदी

से बिष्याता ॥ २८ ॥ अजनमहंा नअघ गाजानबांनो ॥ लाके
वेदयह प्रगटबषांनैं ॥ बांधी धजा गंग तिहूं लोका ॥ जाके
दरसि मिटै जनव सोका ॥ २९ ॥ ब्रह्मादिक सुर नर अधिकारी ॥
तुम्हारे चरनकंवल बसिचारी ॥ जे अति बली बैल मदजी
नं ॥ ताथे नाकध आधीनं ॥ ३० ॥ जब जब असुरनि तैं दुख
पांवैं ॥ तब तब सरनि चरन आवैं ॥ तब दिं सुष उपजैं दुख जा
जैं ॥ आप निआपनि ठौर बिराजैं ॥ ३१ ॥ प्रकृति पुरुष महतत्व
नियंता ॥ तुम ईनके कारन जगवंता ॥ तुमतैं पुरुष सकति ज
बपावैं ॥ प्रकृति हि मिलि महतत्व उपावैं ॥ ३२ ॥ तातैं उपज्यो
य ब्रह्मा मंडा ॥ जल आधार तिरैं ज्यों अंडा ॥ थावर जंगम बिबि

धिप्रकारा॥ तातैंहोईसकलविस्तारा॥ ३३॥ तातैंतुमयहस
बकेकरता॥ उपजावंनप्रतिपालनहरता॥ तुमआधारतै
सकलकेस्वांमी॥ तुमफलदाताअंतरजांमी॥ ३४॥ जोकछु
होईसकलजुगमांही॥ तुम्हकरतादुजाकोनांही॥ परिक
हुंलिपतहोहुनहिदेवा॥ कोईलषिनसकैंतुवभेवा॥ ३५॥ सो
लहसहस्त्रएकसतआठा॥ जिनकेह्रदैप्रेमअतिकाठा॥ हो
बईनाथसोंप्रीतिबढावैं॥ मदनबांनबहुत्तातिचलावैं॥ ३६
॥तुमहोहुबसिहोवौनांही॥ निहचलनिजानंदपदमांही॥
औरषेरहुंबैठेकोई॥ करतबासनांबंधैसोई॥ ३७॥ एहैंनदीप्र
गटतुम्हकीन्ही॥ जिनकीमहिमांपैरंनहीचीन्ही॥ एकगंगच

रननिकोनीरा॥ परसत निरमल करैं सरीरा॥ ३९॥ दुजि तुव कीर
तिकी सरिता॥ त्रिभुवन जहां तहां विस्तरीता॥ स्रवन करत
अंतरमल नासैं॥ निर्मल ह्वै ब्रह्म प्रकासैं॥ ४०॥ ब्रह्म प्र
कास त्रये त्रयनां ही॥ खेलैं एक मेक मिलि मांही॥ ईन ह्वै न
हि त्र जैं जे पंडित॥ तिन कों काल करैं नि हिं षंडित॥ ४१॥ तातैं
नाथ रूपा अब किजैं॥ साधु संग हम कों नित दीजैं॥ जिन
मैं कथा न दी हम पावैं॥ जातैं तुव चरननि चित लावैं॥ ४२॥
॥श्रीशुक उवाच॥ यों लै सिव सनकादिक संगा॥ अस्तुति क
री बहुत प्रसंगा॥ बहुरयों बिधि एक बचन सुनाये॥ जाके
काज सकल मिलि आये॥ ४३॥ ब्रह्म उवाच॥ हे प्रभु तुं हंमत

ब विनतीकीन्ही ॥ धरनीज्ञार ज्ञईजबचीन्ही ॥ तातैं तुमली
न्हो औतारा ॥ सकलउतारयौं जुवको ज्ञारा ॥ ४३ ॥ मेटिश्र
धरम बिस्तारयौं ॥ सबसंतनके कारजसार्यौं ॥ और कीरति
रतिबहु बिधि बिस्तारी ॥ ज्ञवसागरतरिबेकौ तरी ॥ ४४ ॥ लै
अवतार सुजुपजदुवंसा ॥ सकलजन निको मेट्यौ संसा ॥
बहु बिधि कीन्हे कर्म अपारा ॥ जिनसौं लागि जैहैं ज्ञवपारा ॥ ४५ ॥ अरुजदुकुलद्विजश्रापविनास्यौ ॥ नहिंरहि
हैं दिनद्वैश्रास्यौ ॥ तातैं देवकाज सब कर्यौ ॥ करि बैकौंक
छुनां हिउचर्यौ ॥ ४६ ॥ गये बरष सत अधिक पिचीसा ॥ ता
तैं हमहंम बिनवैं जगदीसा ॥ अब करि रूपा चलौ निज लो

का ॥ करत पूनित हमारो वोका ॥ ४७ ॥ हंम हैं दास तुमारे देवा ॥ निस दिन करैं तुम्हारी सेवा ॥ ऐसी सुनि ब्रह्मानी बानी ॥ तब हसि बोले सारंगपानी ॥ ४८ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ मैं सब सुनी तुम्हारी बानी ॥ तुम्हरौ काज भयो मैं जांनी ॥ परि जदुकुल यूं ही परिहरौं ॥ तौ नास सकल भव कौं मैं करौं ॥ ४९ ॥ ए सब जांदु बहु मद माते ॥ न एर है सो मेरी सता ॥ मो दित जैं सब परलै ठांनैं ॥ ज्यूं सायर मरजाद भ्रजांनैं ॥ ५० ॥ तातैं नास हेत उपजायो ॥ आप सबनि विप्रनि तैं पायौ ॥ अब ईन सब दिन कौं विनसांऊं ॥ पीछैं तुव लोकनि मैं आऊं ॥ ५१ ॥ ऐसे सुनि हरिजी के बैंना ॥ हरै बद्यो स

बहिनमनकैचैंनां ॥ करिप्रणपतिबीनतीसौरे ॥ अपनेअ

पनेलोकपधारे ॥ ५३ ॥ श्रीसुकउवाच ॥ तबनृपतिकीस

नामंऊरी ॥ बेठेजदुकुलसहितमुरारी ॥ द्वारावतीउठेउत

पाता ॥ तिनकौंदेषिकहीहरिबाता ॥ ५४ ॥ श्रीभगवानुव

च ॥ एउतपातउठेंबहुंओरा ॥ अतिभयदायकदिसंघोर

रा ॥ अरुद्विजश्रापभयोकुलमांहिं ॥ तातैंचलीदेषियेनांहीं

॥ ५५ ॥ तातैंअबइहांनहिंरहिये ॥ नजीयैबेगिजीयोजोच

हिये ॥ अतिपुनितछेत्रपरभासा ॥ तहांबेगिचलिकिजैंं

बासा ॥ ५६ ॥ एकबारदक्षश्रापदियौ ॥ ससिकैंछईरोग

नबसयौ ॥ जबसोससिपरभासहिन्हांयौ ॥ छुट्यौश्राप

रमसुषपायौ ॥ ८७ ॥ तातैं अब षपर जास चलीजैं ॥ तहां

जाईस नांन हि कीजैं ॥ त्रिपति देव पितर निकौं करीयै ॥

बिप्र भोज बहु बिधि बिस्तरीयै ॥ ८८ ॥ तिन कौं दांन ब

हुत बिधि दीजें ॥ श्रधा सहित प्रनाम हि कीजें ॥ तिन प

रिसा दि दुरव परहरीयैं ॥ जंमुनां वन सौ सायर तरीयै ॥ ८९

॥ ऐसी सुनि हरिजी कि बांनी ॥ सब जादु बनिन लिक

री मांनी ॥ तब चलबै कौं सकल बिचारै ॥ आपनै आपनैं

घ निसंवारैं ॥ ९० ॥ तब उधव हरि कौ निजदासा ॥ देषि स

कल बिधि भयो उदासा ॥ चलिए कौं तिह हरिजी पैं आयौं

॥ चरन निपरि कैं बचन सुनायौं ॥ ९१ ॥ उधव उवाच ॥ ऐ

देवदेवईश्वरजोगेस॥ अवनकीरतनहरनकलेस॥ जदुकु
लकोसंहारदिकरिहो॥ अबतुममृत्युलोकपरिहरिहो॥ २
६२॥ विप्रश्रापमेटनसमृथा॥ नहिमेटैसोईहैअरथा॥ मे
रेजीवनीचरनतुम्हारा॥ जैसैमिनउदकआधारा॥ ६३॥
अंनअपअैसेअबकीजै॥ संगिआपनेमोकौंलीजैं॥
तुम्हेसबआचर्नेअनुपा॥ सबकौंअतिकल्याणअनु
पा॥ ६४॥ जिनकौंपाईओरसबत्यागैं॥ त्रिभुवनकोसुष
दुखसोत्यागैं॥ आसनगंवनअसनअस्नाना॥ जागतअ
रुसोवतअ विधिनाना॥ ६५॥ गंधवसंनमालाज्यांभरनां
॥ तवऊतारंनकोमैंधरनां॥ महाप्रसादनिरंतरपोष्यौ॥ १

दरसपरसेबहुविधिसंतोष्यो॥ ६७ ॥ ऐसेमैंनिजदासतुम्हा
रो॥ मायाकरिहैंकह्यहमारो॥ मायाजयअरुतुमरेहेत॥
हौंहिदिगंबरउरधरेत॥ ६८ ॥ इंद्रीयदेहप्रांणमनसाधे॥
सावधांनतुमकोआराधे॥ ब्रह्मविचारसदामनलावै॥
तेनिरुपतुम्हारोपावैं॥ ६९ ॥ हमकछुकर्मअकर्मनजां
नैं॥ इहदेग्यांनवैरागनआंनैं॥ तुम्हरेजनकनकेमिलिसं॥
गा॥ जवतरिहैंसुनितुवहिंप्रसंगा॥ ७० ॥ तुम्हारेकरमव
चनपरिहासा॥ आसंनगवनअरुरूपप्रकासा॥ कहत
सुनतसुमरतसुषमांहि॥ जवसागरहंमरहिहैंनांहि॥
७१ ॥ तातैंमायाजयनहिंआंनैं॥ आपहिसदामुक्तिक

रिमानौं॥ परितुमबिनांआनतजिजांही॥ तातैंमोहिदोउिएना
हिं॥७२॥ दोहा॥ एउधवनिजजनकके॥ सुनेबचनगोपाल
॥ तबकरुनामयकरिकृपा॥ बोलेबचनरसाल॥७३॥ इति
श्रीनागवतेमहापुराणेएकादसस्कंधेश्रीनगवानउद्ध
वसंवादेषष्ठमोध्याय॥६॥ श्रीनगवानुवाच॥ महानाग
उधवयहयौंही॥ जंतुमकहिबातैंहैयौंही॥ सिवबिरंचिस
कादिदेवेसा॥ बंछैममबैकुंठप्रवेसा॥१॥ नुवमैनारबेहो॥
जबनारी॥ तबनब्रह्मापासिपुकारी॥ ब्रह्मादिकनविन
तिकरी॥ तातैंमनुजदेहमैंधरी॥२॥ अबनुकोसबनारउतारो॥
॥सकलसुरनिकोकारजसारो॥ अरुकिन्हैजसकोविस्ता

रा॥ जातैं जीव जाहि त्तव पारा॥ ३॥ जदुकुल आप लह्यौ द्विजपा-
सा॥ आप आप मैं ह्वै है नासा॥ आजहूं तैं सपत दिन मांहि॥
सिंधु द्वारी कां रा षैं नाहिं॥ ४॥ जब हिं मैं त जिहौं पद लोका-
॥ तब पावै गो दुष त्रय सो का॥ कलिजुग और निअधिष्टि-
त होई॥ तातैं अघ करि है सब कोई॥ ५॥ तातैं सुनि उधव वर-
उ त्यागी॥ अब तुं करि सब ही को त्यागी॥ मो मैं सदा चित्त थि-
र करौं॥ समदरसी है त्तुव मैं बिचरौं॥ ६॥ जो कछु कहन सुनन-
मैं आवैं॥ अरु मन बुद्धी जहां लगि जावैं॥ सो यह सब मन-
को रुत जानौं॥ क्षण भंगुर माया करि मानौं॥ ७॥ जिन यह
सकल सत्य करि ज्यांन्यां॥ तिन कौं भेद जयौ है नांनां॥ ताके

दढ़ि न्रमकरिन ट्टिंजांनें॥ विधिनिषधताह्नतैंहानैं॥ ८॥ विधि
निधजोन्गाषैवेद॥ सोलाकौंजाकेहूं नेद॥ नेदमिट्ये विनक
रेंन्तत्पागा॥ तातैंएहै किए विन्नागा॥ ९॥ ज्यौंज्योंतजैसुषा
त्यौंहोई॥ तातैंवेदवनावैदोई॥ आगैंजाईछोडावैसारे॥ आ
पहीतेजेविस्तारे॥ १०॥ तातैंयहसव मिथ्याजांनौ॥ उवनी
चगुनदोसनमांनो॥ इंद्रियअरुमन निह्चलकरैं॥ अहं
कारममतापरिहरै॥ ११॥ सुक्ष्मथुलसकल विस्तारा॥ एक
हिआत्मकेआधारा॥ सोआधार ब्रह्मकेजानैं॥ जैसि
विधिनवकेनयजानैं॥ १२॥ याविधिवेदअरथकोंजा
नैं॥ वहुरिहृदै निह्चलकरिआंनैं॥ दोकुलोक किआसा

छंडे॥ या विधि अंतरायसब षंडे॥ १३॥ जितनी याके आ
सा होई॥ तितनौं विघन करैसब कोई॥ ज्यौं ज्यौं तजनैं तैं जा
वै आसा॥ त्यौं त्यौं मिटै विघनके पासा॥ १४॥ जबयह हो
ई आतमारामां॥ तबतहां नहि आसाको धांमां॥ तबवि
घननके करतादेवा॥ तेई उलटि करैं तासेवा॥ १५॥ तातैं
विधि निसेधसब नांषो॥ आसाछोडि इहैं दृढ़ राषो॥ ए
कब्रह्मकरि सबकौं देषौं॥ दुजौं कबहु नलिन हि लेषौ॥
१६॥ अरु जिनि पायौ ब्रह्मगियांनां॥ तिनिकै विधि
निषधन हिं नांनां॥ परितिनिके नितहि विधि होई॥ कदे
निसेधनपरसे कोई॥ १७॥ वैसुषदुखगुनन्तेदनजांनें॥ बा

षकसम आचरन निहांनैं ॥ परिविधि सारी सेवा करै ॥ अरु नि
सेध आपही परीहरैं ॥ १८ ॥ सब परिसुद्ध सदा अति सांति ॥
ग्यान विग्यांन सहित नित दांती ॥ सब जग ब्रह्म जांनि थीरी हो
ई ॥ वृद्ध स्यौ जन मन पावैं सोई ॥ १९ ॥ ऐसे सुनि हरि जि के बैंनां ॥
अति दुस्कर अरु अति सुष दैंनां ॥ तत्व सुनन की बाढी प्यासा ॥
तब बोले उद्धव निज दासा ॥ २० ॥ उद्धव उवाच ॥ जोग रूप जो
ग उपजावेंन ॥ जोग दांन जोग स्वरूपावन ॥ तुम यह त्याग क
ह्यौ मेरे हित ॥ सो दुष्कर आवैं नही चित ॥ २१ ॥ क्यौं हौवैं विषयन के
त्यागा ॥ पुत्र कलित्रादिक अनुरागा ॥ यह तन यह धन ए सुत मे
रे ॥ ए बिनीता एग्र हंगाचरे ॥ २२ ॥ यह विधि मन अहंकार समु

ड़ा॥ बुडारह्यौमै मतिको छुड़ा॥ तुम्हारीमायाअतिअरमायो

॥ तातैंज्ञान हूदैनदीआयो॥ २३॥ अबतुममोसिष्य हिउप

देस्यौ॥ मेरेउरकछुज्ञानप्रवेस्यौ॥ तातैंअबबहुधिसमझा

ओ॥ ममउरपुरणज्ञांनसुनाओ॥ २४॥ जातैंसबतजितुम

कोंपाऊ॥ बहुंरयोजगत जनमिनहिआंऊ॥ अरुदुजोऔसो

न हिकोई॥ जातैंलाअग्यांनकोहोई॥ २५॥ ब्रह्मादिकतनधा

रिजेते॥ तुवमायावसकीन्हेंतेतै॥ तातैंमायाहीकोंदेखैं॥ करम

अरुलागअलेकरिलेषैं॥ २६॥ तातैंमैंजनतुम्हारिसरनां॥ सो

कीजैंपावैंतुवचरनां॥ तुमरोआदिनअंतनपारा॥ ग्यांनरूप

सबहीतैंन्यारा॥ २७॥ सोईतेरेगह्योकरजाकों॥ मायाकछुनकरि

सकेताकौं॥ तुमहितैंउपज्यौयहजीवा॥ जैसैंअग्निहुतैंबहुदिवा
॥ जैसैंअग्निहुतैंबहुदिवा॥ २८॥ सदारहैंतुम्हाआधारा॥ नितउहि
पोषैंसिरजंनहारा॥ ऐसैप्रभुकौंसेवैंनांही॥ तातैंपरैपरमदुष
मांहि॥ २९॥ मानुवकेदुषकहेजांहि॥ परयोनिरंतरिमैंतिनमां
हि॥ अबमोकौंसरनांगतिजांनौं॥ देकरिग्यांनसकलभ्रमभां
नों॥ ३०॥ मेरेतंनमनधंनतुबचरनां॥ मनबचक्रममैंआ
योसरनां॥ ऐसैंसुनिउधवकेबैंनां॥ हसिकरिबोलेअंबुजनैंनां
॥ ३१॥ भगवानुवाच॥ उधवमैंकहिदेंऊग्यांनां॥ सतकहतहैंग्यां
निआंनां॥ याजगसाधजेतेहैंजैते॥ आपहीआपउधेरतेते॥ ३२॥
आपहिंभलोबुरोकरिमांनै॥ छोडैबुरोभलेकौंठांनै॥ गुरुआपु

तौ आप हिं होई ॥ पसु पंछि जावै जो कोई ॥ ३३ ॥ परि नर तन जैसे
है निको ॥ ब्रह्मा आदि सबन को टिको ॥ जातैं ब्रह्म विचार द्रिपा
वै ॥ बहुर्यो जगत जनम न दिखावैं ॥ ३४ ॥ येक पद द्वैपद त्रिपैप
द एका ॥ चौपदादी बहुपाद अनेका ॥ मैं बहु जाति स्त्रिष्टी विस्ता
री ॥ तिनमैं ग्रियनरदेह हमारी ॥ ३५ ॥ मो हि पावैं सो या करि पावैं
॥ और सकल सुख दुख जो गावैं ॥ यामैं मैं रै कै रै विचारा ॥
सावधान तैं बहो प्रकारा ॥ ३६ ॥ जाई यह तो जउ देदेहा ॥ इं
द्रिय आदि सकल सनेहा ॥ अपनें अपनें अरथ निगहैं ॥ सो
एसक तिकैं न की लहैं ॥ ३७ ॥ आरु सो वत जब सुपिनां पावैं
॥ लखतो ई द्रियतन छिटकावैं ॥ सुपन मांहि सुख दुख कों

है॥ जागैं बात सकल सो कहै॥ ३९॥ तातैं मैं तो यह तन नांहि॥
मैं तो बास कीयो या मांही॥ तो वनिता सुत बित परिवारा॥ मेरे
तो नहि सकल पसारा॥ ३९॥ ये तो सकल देह संग जांहि॥
सो यह देह कै दै मैं नांही॥ तातैं सुपन मांहि नहि कोई॥ उहां
सकल औरै रई होई॥ ४०॥ अरु जाई मैं तो वे है नांही॥ जो तन ह
से सुपनां मांही॥ तातैं वह उथिर नर होवे॥ वाकौं तजि याभें
फिरि आवै॥ ४१॥ वातें यह मातें वह कुछि॥ यह हिरगपान गए
सो मैं मुछि॥ जो ईन दोउं देह कौं लहै॥ ईइन है सब अरथ नि
गहै॥ ४२॥ ईंद्रिय बुध्या दिक अरु बांनी॥ जो कौं कोई सकै कै
न जांनी॥ सो मैं निस निरंतरि अेका॥ उपजैं बिनसै देह अ

नेका ॥ ४३ ॥ एदोउतत्तिकामैरहै । सोहमानितादृष्टिदुरहै ॥

ऐसैंबहुबिधिकरैबिचारा ॥ त्यागैदेहादिकपरीवारा ॥ ४४ ॥

सोजहांतहांतैंलेखैग्यांना ॥ कबहुकछुनजांनैंअग्यांनां ॥ या

विधिआपआपकौंतारैं ॥ लहैब्रह्मनवदुखनिवारैं ॥

४६ यहबिचारमानवतनहोई ॥ दुजान्तुलिनपावैकोई ॥ तातैं

तुवमांनवलननपायौ ॥ अरुमैंकछुएकतौहिलषायौ ॥ ४७

॥ तातैंतजौंसकलकौसंगा ॥ मनक्रमबचनहोहुनिसंगा

॥ सबकेपरैं । आपकौंजांनैं ॥ सोआधारब्रह्मकेमांनैं ॥

॥ ४८ जहांतहांदेषोउपदेसा ॥ याबिधिकरौब्रह्मप्रवेसा ॥

ऐसैजहांतहांलेगयांनां ॥ बहुतकजयेब्रह्मप्रवांनां ॥ ४९

॥ तिनमैं कहौं एक की बाता ॥ जो ईतिहास सकल विष्याता ॥
दत्त ही गंबर अरु जदु न्रुप ॥ तिनको है संवाद अनुप ॥ ५० ॥
दोहा ॥ सुनि उधव ईतिहास अब ॥ भाषो परम अनुप ॥ ब्रह्म
ज्ञान दत्तात्रय जहां ॥ अरु पछिक जदु न्रुप ॥ ५१ ॥ चौपई ॥ एक
मैं न्रुपति जदु नांमां ॥ गय सिकार छोडि निज धांमां ॥ तब तें
नगर निकट है सुता ॥ देष्यो येक परम अवधुता ॥ ५२ ॥ नि
रभै निह्चल ईछ्याचारि ॥ तेज निधांन तरुन तन धारी ॥ करि
प्रनाम बहुत प्रकारा ॥ जदु न्रुपति तब बचन उचारा ॥ ५३ ॥
॥ जदु उवाच ॥ हे प्रभु पूरन परम दयाला ॥ करो क्रिपा करि
हो क्रुपाला ॥ असी बुधि कहां तुम पाई ॥ जातें बिचरौ स

दूजसुन्ताई ॥ ५४ ॥ त्रयेच्त्रकरताई छाच्चारि ॥ बालकसंभस
व चिलटारी ॥ सबजग निसिदिन इह विचारै ॥ धरमअरथ
काम बिस्तारै ॥ ५५ ॥ सो उन हि उपजैं दुखपावैं ॥ तिनसौं लागि
सब आयुगंवावै ॥ तुमसमर्थ सबही विधिजांनौं ॥ त्रिया
निपून प्रियैवैंन बषांनौं ॥ ५६ ॥ सबविधिसरसतरुन तंन
सुंदर ॥ तुष्टपुष्ट कौ लिपैं नदुंदर ॥ नांकछुवंछौ नांकछुकरौ ॥
जड उनमंत जिमिमैं बिचरौ ॥ ५७ ॥ त्रष्ना कांम लोभ नहीं ला
गी ॥ सकललोकदाझैं तिनआगी ॥ तुमआनंदमयदाझौ
नांहि ॥ ज्यौं गयंदगंगोदकमांहि ॥ ५८ ॥ देह अरथ सबहीकैं
त्यागै ॥ रहै आनंदितसो किहिं लागैं ॥ संगनकोइ रापो देवा ॥

कोईलहिनसकेतुवन्नेवा॥ ४९ ॥ तातैंकहौंत्नपाकरिनांथा॥ ज
वजलवुडतपकरौहाथा॥ यौंजदुन्नुपविनतिकरि॥ तवञ
वधुतगीराउचरी॥ अवधुतउवाच॥ ५० ॥ ॐनिजदुन्नुपप
रमत्वैंउत्नागी॥ कैंजाकीमतिहरिसौंअनुरागी॥ वहुतहे
मेरेगुरदेवा॥ जिनतैंमैंसवजांन्योन्नेवा॥ ५१ ॥ परिमैंमतौ
आपतेलिन्हौ॥ तिनमैंसौकिनहुंनदिचीन्हौ॥ तेगुरसक
लसुनैांतुममौसौं॥ हरिजनजांनिकहतहौंतोसौं॥ ५२ ॥ धर
नीपवनगगनअरुपांनी॥ अंनलचंद्रविकपोतहीजां
नी॥ अजगरसिंधुपतंगरुत्नंगा॥ कुंजरमधुहाअरुकुरंगा॥
५३॥ मीनपिंगलाकुररवाला॥ कंन्यासरकरताअरुव्याल

मकरि संगी एचौविसा ॥ इंन तैं सिष्यौ सुनौ महीसा ॥ ६४ ॥ प्र
थम मैं धरनी गुन देष्यौ ॥ सो मैं परम तत्व करि लेष्यौ ॥ सबै
र देह धरनि आधारा ॥ तापर मुढ करै अपकारा ॥ ६५ ॥ होरहो
र अति उतिम अंगा ॥ तिनकौ करैं बहुत बिधि संगा ॥ ते के
परबत तृन अनंता ॥ पर उपगार सबैं बरतंता ॥ ६६ ॥ पर अ
पराध कलुन हिं जांनैं ॥ उलटि आप उपकार हि ठांनैं ॥ ऐसी
सीष धरनि की लेवैं ॥ जो जन हरिचरननि कौं सेवैं ॥ ६७ ॥ प्रा
नवायु त्यौ लई आहारा ॥ स्वाद कुस्वाद न कोई प्यारा ॥ यौं ह
रिजन अहार हि लेवै ॥ स्वाद कुस्वाद नहीं चित्त देवै ॥ ६८ ॥ बि
ना अहार बिचार न आवै ॥ स्वाद कुस्वाद न मन ठहरावैं ॥ तौ तै

एतौ लेई अहारा ॥ जातैं होवै प्रांन आधारा ॥ ६९ ॥ अरु ज्यौं
पवन फिरे जग मांहि ॥ सुध असुध लिपैं कछु नांही ॥ नाना न्नेद
न मैं संचरै ॥ प्रिय अप्रिय गुन दोस न धरै ॥ ७० ॥ यौं बिसय निअ
हतें जोगी ॥ मन क्रम बचन न होवैं जोगी ॥ नेद अनेक निमैं अ
नुसरैं ॥ परि कछु नेद हूदै न ही धरैं ॥ ७१ ॥ अरु ज्यौं पवन गंध संजो
गा ॥ लिपत न मौ जांनें सब लोगा ॥ परिसो पवन सदा एक रू
पा ॥ लिष्यें न कबहूं ईसौ अनुपा ॥ ७२ ॥ पंच भूत निरमत ज्यौं
देहा ॥ सकल बिकारन को ग्रिह एहा ॥ तामैं जोगि लिपत न हौं ई ॥
और लिपत जांनैं सब कोई ॥ ७३ ॥ ज्यौं सब हिन मै है अकाका
सा ॥ अरु सब हि को तामैं वासा ॥ सब उपजैं बिनसैं वरतां हि

गगन लिपैं काल तिहूं मांहिं ॥ ७४ ॥ त्यौं बहु बिधि सब जग तें प
सारा ॥ मुनि देषै आत्म आधारा ॥ जो कछु दीसै जउ देसोई ॥ जा
के संग तें चेतन होई ॥ ७५ ॥ ज्यौं आत्मा देह निमें देषै ॥ त्यौं पर
मात्मा जहां तहां लेषै ॥ एक अनंत न कहौं आवरनं ॥ लिपैं
न छिपै जनन मन हिमरनं ॥ ७६ ॥ सो परमात्मा आत्म ऐका ॥ क
रैं न देषैं चु लित अनेका ॥ ज्यौं जो गगन घटनी मैं होई ॥ बाहरि
हूं पुनि जहां तहां सोई ॥ ७७ ॥ कहिबे कौं है नातर भेका ॥ यौं आ
त्म अरू ब्रह्म विविका ॥ ज्यौं बहु मेह पवन दामिनी ॥ बरषैं बहु
वासुर जांमीनी ॥ ७८ ॥ परि न अलिपित कबहूं न हि होई ॥ औ
र लित जांनैं सब कोई ॥ त्यौं आत्म मैं देह अनंता ॥ उपजैं बरतैं

पावैं अंता ॥ ७९ ॥ परिआत्म लिपति कहैं नांही ॥ साध क्षिवौं स्यौ
मन मांही ॥ यह अंबर गुन तौ हौ सुनायौ ॥ अब्ब लाषौ जो
जलतैं पायौ ॥ ८० ॥ निति निरमल औरन निरमल है रैं ॥ ताप से
टि सीतल करैं ॥ सब्ब सुष दाई कहित रस वंत ॥ ए गुन जल के
सी षि संत ॥ ८१ ॥ गुरु तें जवंत अति दीपति जुक्ता ॥ ज्यौं जर हि
त जहं त हां निरमुक्ता ॥ स्वादर हित सब जत कुन करै ॥ अग्नि
न लिपै संन्विन हीं धरै ॥ ८२ ॥ त्यौं ही ज्ञांन तेज मये होई ॥ ईंद्रि
या दिक सदीपक सोई ॥ जद्य पि बहु विधि भाजन करै ॥ स्वा
दर हित गुन दोष न धरै ॥ ८३ ॥ काहू तैं ज्यौ बन हि होई ॥ का
हु के गुन मिलै न सोई ॥ उदर प्रमांन लेई अहारा ॥ कछुन जो

तैसें संचैयसारा ॥८४॥ गुप्त रहै न च्युती जनावै ॥ कीन्हे परगट त्र-
गहू आवै ॥ परईछा न आछू तिकौं लेई ॥ तिनके पाप रहैं न दि-
कोई ॥ ८५ ॥ त्यौं मुनि गुप्त आप तें रहै ॥ षोजि लेहि ताको अमर
रहै ॥ उतम भोजन नां दिउ होई ॥ परईछा तें लेवै सोई ॥ ८६ ॥ बहु-
त्यौं अग्नि एक रस एका ॥ बहु विधि दीसै का अनेका ॥ त्यौं
आतमा एक सब मांही ॥ भेद देह हत साचे नांही ॥ ८७ ॥ दि-
वा मसाल प्रगट ज्यौं होई ॥ ज्वाला जात लषै सब कोई ॥ परि-
ते दीसै त्यौं के त्यौं ही ॥ प्रति दिन देह जात हैं यौं ही ॥ ८८ ॥ गुरु जे-
सैं ससि के बाढे कला ॥ त्यौं त्यौं दिन दिन दीसै चला ॥ पुरन ह्वै-
करि दिन दिन नांसैं ॥ सकल मिटे तैं न ह्वि प्रकासैं ॥ ८९ ॥ त्यौं

बाला दिअवस्था आवै ॥ ह्वैंक रितरुन दिनैं दिन जावै ॥ तव आ
तमा देषिए नांही ॥ परि है सदा काल तिहुं मांही ॥ ८६ ॥ ज्यो र
वि किरन निसैं जल लेवैं ॥ समय पाई बहु त्यौं सब देवैं ॥ प
रिकब हुं अभिमांन न आंनै ॥ लीयौ दीयौ आप ही न दीसां
नैं ॥ ८७ ॥ यौ मुनि कहैं सुनें अरु देषैं ॥ सकल अरथ इंद्रिय रु
त लेषैं ॥ नित आत्मा अकरता जांनै ॥ सबत जि ब्रह्म विचार हि
ह्रांनै ॥ ८८ ॥ ज्यौं घट जल प्रति बिंब तैं सुरा ॥ लिपत देषिए परि
है दुरा ॥ त्यौं आत्मा देह सबंधा ॥ थुल दृष्टि जांनत है बंधा ॥ ८९
॥ अब कपोत कि कथा सुनाऊं ॥ तेरे मन को भ्रम मिटाऊं
॥ एक कपोत कपोती संगा ॥ वंन में कीह्नौं ग्रह प्रसंगा ॥

९४ अ आप आपमें अति आसक्ता ॥ आठ पहर मैं पलन र
विरक्ता ॥ मन सों मन अंगनि सौं अंगा ॥ नैननि नैं स्तवु
हैं बहु रंगा ॥ ९५ ॥ आवन गवन असन अरु पांनां ॥ से
न बैयन सारी विधी नांनां ॥ मिले सकल करमनि कौ
करे ॥ नि त्तेर हैं नक बहु हैं रे ॥ ९६ ॥ सो कपोत वनिता
वसी कीयो ॥ हाव भाव तन मन हरी लीयो ॥ बनिता
जो बहु हठ है सो ल्यावै ॥ कष्ट सह तजा ही बिधि पावै
॥ ९७ ॥ सो अस्त्री जित ज्यौं तुम राजा ॥ अपनौं लष्यो न
काज अकाजा ॥ तनमय भयो निरंतर रहैं ॥ प्रांन तिहूं तै
नाहि प्रिय कहै ॥ ९८ ॥ ताकी त्रिया अंड उपजाए ॥ तिनमै

मनदुनौ मिलिलाए ॥ तबहरिमाया सिसुनिरमए ॥ कोमलअंग
रामतेरूए ॥ ९९ ॥ तबदोउ मिलितिनकौं पोषैं ॥ बहुतत्तां तिनि
सदिनसंतोषैं ॥ कोमलबचनसुनेसुषदरसैं ॥ अपनेअंगअं
गसौं परसैं ॥ १०० ॥ हरिकी माया बहुतनुलाए ॥ आपआपमैं
सकलबंधाए ॥ पुत्रसनेहरहै अनुरागे ॥ सिरपरकालनलषै
अत्तागें ॥ १०१ ॥ एकबारबालनिकेकारन ॥ चारोलेनगयेते
आरन ॥ ताहीसमै व्याधएकआयौ ॥ बालकदेषिजालबिछ
रायौ ॥ १०२ ॥ देष्यौकननिनदेष्यौजाला ॥ बंधेआनिसकल
षगबाला ॥ तबदोउचाराकौंल्याए ॥ तिनग्रहमांहिनबाल
कपाए ॥ १०३ ॥ तबदेषेमाताते बाला ॥ बंधेजालमांहिबेहा ॥

ला॥ तबसो तहां प्रकारत धाई॥ जालमांहि सुत देत बंधाई
॥ १०४ ॥ तब कपोत देषे सब बंधे॥ हरि माया किन्हें अति अं
धे॥ तबसो बहुविधि करै बिलापा॥ देष्यो बहुत आपने
पापा॥ १०५॥ हा हा पाप कौंन मैं कीन्हौं॥ ऐसे दुष दई मो हि
दीन्हैं॥ जाकी यह पतिब्रता नारी॥ पुत्र निले सुरलोक
सिधारी॥ १०६॥ मा हि छोडि सुनैं ग्रह मांहि॥ सब मिलि आ
पुई इ पुर जाही॥ नां मैं सुष जोग एयह लोका॥ नहि साधन
पायो परलोका॥ १०७॥ धर्म अरु अर्थ कांम सब जामें॥ कछु
बेनां हिरह्यौ अह तामें॥ अब प्रांन निरषैं कछु नांही॥ घरी घ
री मैं दुष अधिका ही॥ १०८॥ या विधि जयौ बहुत दही बिहाल

॥ बंधे देषि बनिता अरु बाला ॥ व्याकुल बुधि बिचारन करयो ॥
॥ आपदु आई जाल मे परयो ॥ १०९ ॥ सहित कुटुंब कपोत ढ़िपा
यो ॥ तब हित्त यौ व्याध मन न्यायो ॥ ऐसी मैं कपोत की देषी ॥
तब आपनै हृदै यह लेषी ॥ ११० ॥ यौं कुटुंब हो वैजा हीकै ॥ ब्रह्म
रागबंद ता हिकै ॥ जीवत अति आरंत्र निकरैं ॥ सहित कुटुंब
काल मुष परैं ॥ १११ ॥ या बिधि जो मानव तन पावैं ॥ सो तो द्वार
ब्रह्म कै आवैं ॥ ताकुं पर जोग रह हित करै ॥ सो नर ब्रह्म द्वार च
ढि परे ॥ ११२ ॥ तातै जोग कुटंब रु गेहा ॥ तिन कौं जीव लहैं प्र
ति देहा ॥ ऐसौ मानव तन नग वईए ॥ जां करि देव निरंज
न पईए ॥ ११३ ॥ दोहा ॥ पढ़ि जांषी गुर आद कि ॥ सिरु मैं तुव

पासि ॥ अब औरनकी कहत हैं ॥ ज्यौं छुटै भव पास ॥ २२४ ॥

इति श्री भागवते महापुराणे एकादस स्कंधे भगवदु-
धव संवादे अवधुत इतिहासो पाख्याने सप्तमो ध्यायः
॥ ७ ॥ अवधुत उवाच ॥ जे इंद्रिय सुष कछु कहावैं ॥ ते तैसु-
रग नरक उ आवैं ॥ ज्यौं सुकर कुकर सुष मांही ॥ त्यौं ही देव अ-
वर कछु नांही ॥ १ ॥ अरु सो सुष आपहि तैं आवैं ॥ करम लि-
ष्यो सौ कोई न मिटावैं ॥ ज्यौं कोई दुख कौं न हि चाहैं ॥ परि दु-
ष आई आपही रहैं ॥ २ ॥ त्यौं हि सुष आपही तैं आवैं ॥ बिन-
जां नै नर बहु दुष पावैं ॥ कैं तालै बुध सुष नां मन लेवै ॥ है इ-
अ करता हरि पद सेवै ॥ ३ ॥ स्वाद कु स्वाद बहुत के थोरा ॥ जो

हरिजी पठवै तिस बौरा॥ ताकौं जक्षैर दै उदासा॥ अजगर ब्रतग
हैं यह दासा॥ ४॥ जो कबहु अहार न आवै॥ तौ थिर रहै न कछ
छु चित्त ल्यावै॥ करम अधिन देह कौ जांनैं॥ मन क्रम बचन उ
द्यम न ठांनैं॥ ५॥ अति समरथ इंद्रिय मन देहा॥ परि कछु उद्य
म करै न एहा॥ निह्चल ब्रह्म निरंतर सेवैं॥ यह सिक्षा अजग
र तैं लेवैं॥ ६॥ दास न परस न परम गंभिरा॥ अधिक अगाध
गंभ न सो निरा॥ वारपार कोई थाह न लैहै॥ एउ नम्र नि सायर
के गैहे॥ ७॥ ज्यौं बरषा बहु नीर प्रवेसा॥ सायर कब हुं बढै न दि
सेसा॥ ग्रीषम मैं कछु हीन न होई॥ सदा समरथ आपतैं साई॥
८॥ त्यौं कोई बहु बिधि अरचावै॥ जोजन बस्त्रादिक पहिरा

वै॥ अस्तुति मांनि बडाई दैवैं॥ बहुतन्नां ति बहुतैं मिलि सेवैं॥ ए॥ अरु एकै ले जो हि उतारी॥ निद्या दिकठानैं एक न्यारी॥ परिनारायन मय मुनि मांहि॥ राग दोष कछु उपजै नांही॥ १॥ वनिता वस्त्र कंनक आभरनं॥ बहु विधि माया के उपक रनां॥ इन मैं आई परे जे कोई॥ अगनि पतंग समां सो होई॥ ११॥ जों लगि मुनि समझे निज देहा॥ जावि आहार लेई बहु गेहे॥ जातैं कछुं अनुराग न बढैं॥ यह सिक्षा मधुकर तैं पढैं॥ १२॥ छोटे बडे बहुत विधि ग्रंथा॥ तिन तैं सार गहै हरि पंथा॥ ज्यों मधुकर बहु फुलन मांही॥ बास गहै फुलन कौं नांहि॥ १३॥ सो मधुकर है बिकोक हियै॥ दोंकु पास तैं सिक्षा लहिए॥ ब

दुग्रह नितै लेई आहारा ॥ उई परवांन एक हि बारा ॥ १४ ॥ दुजे-
कीं कछु सेंचिन धरै ॥ निरंतै ब्रह्म विचार ही करै ॥ संग्रह जु लि
करे जो कव हि ॥ मधु माषी ज्यों बिनसे तब हि ॥ १५ ॥ पुतली का
ष्ट की जो होई ॥ पग हु बुध प्रसैं मत कोई ॥ परस करत हो वै दि
ढ बंधा ॥ ज्यों करिंद करनी संबंधा ॥ १६ ॥ मत्स जां निव नितां-
कौं तजें ॥ पंडित कव हु जु लिन तजैं ॥ तजतें होवैं करी समां-
नां ॥ एक हि मिलि मार हिं जग नांनां ॥ १७ ॥ जा कोइ धन संग्रह-
करे ॥ सो कोई और हि पर हरैं ॥ ज्यों मधु मांषी मधु संग्र है ॥ मधु-
हा सो उद्यम बिन लहैं ॥ १८ ॥ हरि बिन गीत सुनै नहीं आरा ॥ ग-
यो चहै जो हरि कै ढेरा ॥ और सुनत होवै गति ऐसी ॥ व्याध-

गीत हिरिणांकी जैसी ॥ १९ ॥ सुनैा हरिंन गतिं सुनि बहुरंगा ॥ घ्रे
गिरि खिज्यैांग निकासंगा ॥ अबलाधीन मुक्त हुहोई ॥ ति
नके सह सुनैंन हि कोई ॥ २० ॥ मुनि जिह्वा आसक्ति न करैं ॥
स्वाद कुस्वाद सकल परहरैं ॥ जिह्वा रसतैं ह्वैवैं काला ॥ जैसे
मिन मरै ततकाला ॥ २१ ॥ जे मुनि सब अरथ निपरिहरैं ॥ जा
ई एकांत बास कौं करैं ॥ सह जैहै हिंइंद्रिय सब ज्ञीनां ॥ प
रिरसनां न हिहोंइ आधीनां ॥ २२ ॥ रसना सबकौं फेरि जिवा
वैं ॥ जब ही रस संजोग हि पावै ॥ जो सब इंद्रिय जिते कोई ॥
परि रसनां कर मेंन हि होई ॥ २३ ॥ तौ लगि सकल वृथा करि
जांनी ॥ रसना जिति जिती करि मांनि ॥ तातैं मुनि रसनां ब

सकैरै॥ औरसकलसाधंनपरिहरैं॥२४॥ येजेएकएकवसिन
ए॥ तेसबजमकद्वारैगये॥ परिजोएकपंचबसिहोई॥ ताकें
दुषजानैगोसोई॥२५॥ बूझीएकगनिकापिंगला॥ तातैंगु
नसिखेमैंभला॥ सोतुमसेंभाषतहौंराजा॥ जातैंसरेतु
म्हारोकाजा॥२६॥ जनकविदेहपुरिमैंवासा॥ नामपिंग
लारूपनिवासा॥ एकवारसिंगारबनायौ॥ धनीपुरिषमन
मैंठहरायौ॥२७॥ बैठीनिकसिभवनकेद्वारा॥ आगैंचलैलो
कबाजारा॥ कोईजनलौंआवतोदेषैं॥ यहआवैगौयौंकरीले
षैं॥२८॥ जबवहआगैंकौंचलिजावैं॥ तबपिंगलाऔरकौं
ध्यावैं॥ औरौंआईआईचलिजांही॥ सौंत्यौंयहदुषपावै

मांहि॥ २१॥ कबहू ऊंचीनीतरकैं जावैं॥ कबहुं व्याकुलबाद रिआवैं॥ अरधरा तिअै सिधि धिआयैा॥ लोगबजार चललर हिगयो॥ ३०॥ नबवे अमनोरथ भई॥ चित्यां दुष अनल अनुभई॥ अपनो तिरसकार करि मांन्यो॥ अबतें हानआपकैं जान्यों॥ ३१॥ नबताको कोई अनुरागा॥ जातैं उपज्यों दृढ बैरागा॥ जौलगि न हिउपजैं निरबेदा॥ तौलगि न हिन मिटै भवबेदा॥ ३२॥ या भवबन षसि षदुःष अनेका॥ तामैं परम रतन सुष एका॥ बंधन बंध्यौ जीव अपारा॥ तिनकौं दुरि जीरच्यौ कुठारा॥ ३३॥ ताकी महिमां कही न जावै॥ जाके जाग वै सो पावै॥ ~~अबआयेकोटिकुरसमैंआवै~~॥ तातैं मांन बस

जाकोनामकहैवैराग॥ सोतौहरिकौदीयोसुहाग॥ ३४॥ जा
हिदेहिसोईपैपावै॥ अवअयेकोउिब्रह्ममैंआवै॥ तातैंमांन
वसवछिटकावै॥ ज्यौंत्यौंकरिवैराग उपावै॥ ३५॥ पिंगलाउ
वाच॥ अहोएकमेरोअपांनां॥ जाकेंइहदेवदयौअमनांना॥
जलबुदबुदासमजोनरदेहि॥ तासौंसुषहितकियोसनेह॥
३६॥ सरवरजलपूरनतजिपासा॥ मृगजलधायकरिमैंजग
आसा॥ चारिपदारथदायकदेवा॥ सदानिकटकोलहोन
सेवा॥ ३७॥ सत्यसंदायकस्वांमी॥ सोछोड्यौ निजघनपति
नांमी॥ ऊहौसदाकालसुषमांही॥ जामैंदुषसोकअधिकाई
॥ ३८॥ ऐसौपुरुषताहिमैंतज्यौ॥ आपदादुषआपकौं

सज्यौ॥ देहवेचिमैं देहही पोष्यौ॥४०॥ अस्त्रीलंपटत्रष्णां दाह्यौ॥ दुषतनरसौंमैं सुषचाह्यौ॥ हाडमेदमंजांअरुआंत॥ मासरु धिरत्वचारोमअनंत॥४१॥ विष्टामूत्रप्रस्वेदकी मिगेहा॥ अरु द्वारनवऐसीदेहा॥ तामैंकहौरमितकौहोई॥ मोसीमुढऔर नहिकोई॥४२॥ यातुमांहिजनकनृपऐसे॥ सुषअधिकारसु रेसुरंजैसे॥ ताहूपरिसबसुषकौंतजें॥ है विदेहहरिचरननभ जें॥४३॥ अरुसबप्रजाभजैंहरिचरनां॥ जातैं मिटैजनमं अरुमरनां॥ जाकौंभजेंब्रह्मासिवसेषा॥ परिसोतिनहूकदे नेदेषा॥४४॥ ऐसेप्रभुकौंजेनरसेवैं॥ तिनकौंरीझिआप कौंदेवैं॥ ऐसोप्रभुमैनहिआराध्यो॥ कीयोअंनरथअरथ

नहिसाध्यौ॥ ४५॥ अबमैंआपनिवेदनकरौं॥ औरसकलउ
रतैंपरिहस्यौं॥ अपनेंपतिहरिजीकेसंगा॥ सदरमौंज्यौंभी
अरधंगा॥ ४६॥ कहाऔरसुरनरत्रियकरिहैं॥ जेबापुरेआ
पहीमरिहैं॥ अरुतेसुषकोईथिरनांहीं॥ देषतसकलपलक
मैंजांहीं॥ ४७॥ मरिहहिंदुरिवसबआवैं॥ कालआधीनक
हासुषपावैं॥ तातैंमैंयहनिसचैंजांनी॥ कृपाकरीहैसारं
गप्रांनी॥ ४९॥ जिनमेरैंवैरागउपायौ॥ अपनैंचरनकेंव
लचितलायौ॥ यहहरिकृपाबिनांनहिंहोई॥ जोवैराग
लहैनरकोई॥ ५०॥ तातेंसबजनबंधननासै॥ इंदेरमापति
आपपरकासै॥ मैंतौमंदभागनीऐसी॥ त्रिभुवनमांहि

नहीकोजैसी ॥ ५१ ॥ ताकैकै सो हरि कोन्तजनो ॥ कैसोका
लनालकोतजनो ॥ परिते दिनवधुगोपाला ॥ पतितउधा
रनदीनदयाला ॥ ५२ ॥ तिनहीआपकृपायहकरी ॥ जिन
मेरेउरिऐसी धरी ॥ अवलेहुंपरसादहीसीसा ॥ निसदि
नजेज्वरनजगदिसा ॥ ५३ ॥ जितिनैयाइहहीनिरवां
है ॥ सोउनहीआरंनसंबाहै ॥ सहजमांहिजोहरिजील्या
वै ॥ ताकरियादेहहीवर्त्तावै ॥ ५४ ॥ यान्नवकुपपस्यौनितं
प्रांनी ॥ विषयआवरणहष्टिछिपांनी ॥ तापरअजगर
कालग्रास्यौ ॥ यौंनरवहुतफांसिसौंफांस्यौ ॥ ५५ ॥ ता
कौंहरिविनकौनछोडावैं ॥ आपहिंसांनदिछुटनपावै

अरु आपही आपकौं राषैं ॥ जब सब बस्तु है तैं नाषैं ॥ ५६ ॥
जब हि वह हरि कि सरहि आवैं ॥ तब हि आपदा आप छोडावैं ॥
वै अच्यु निजानंद मय देवा ॥ कहा करै कोतिन कि सेवा ॥ ५७ ॥ प
रि सब जगत काल छिटकावै ॥ हरि की सरणि आप सुष पावै
॥ तातैं और सकल कौं तजौं ॥ प्रेम न्याव हरि चरण नि भजौं ॥
५८ ॥ या बिधि आपही आप उधारौं ॥ अब न हि भवसागर
महि डारौं ॥ यौं पिंगला परम गति पाई ॥ सेहूं लोक की आ
स मिटाई ॥ ५९ ॥ सीतल ह्वै सज्या मैं गई ॥ परम आनंद हि प्रा
प्ति भई ॥ यह सिक्षा मैं तासौं लीन्ही ॥ चलि जो निउर अथि
र कीन्ही ॥ ६० ॥ ज्यौं लगि आस करै नर कोई ॥ तौ लगि सुष

कदेन हिहोई ॥ जबही सकल आसा छिटकावै ॥ तब ततकाल

परमपद पावै ॥ ६० ॥ दोहा ॥ यह गुर सब हकी कही ॥ सिक्षा

मैं समझाय ॥ अब औरन की कहत हैं ॥ सुनियौ हित चि

तलाय ॥ ६१ ॥ इति श्री भागवते महापुराणे एकादसस्कं

धे भगवदुधवसंवादे अवधूत इतिहासे जोपाष्याने पिं

गला गीता नाम ८ मोध्याय ॥ ८ ॥ अवधूत उवाच ॥

जो जो हित करि संग्रह करै ॥ सो इसो अति दुष बिस्तरै ॥ जबही

हित संग्रह छिटकावै ॥ तब अपार सुखसागर पावै ॥ १ ॥ कुरर

पंषि कहौं आं मिष पायौ ॥ सो लेउडौ बहुत चित लायौ ॥ त

ब बहुतैं कुरर निंदुष दयौ ॥ आं मिष तज्यौ सुषी तब भयौ ॥

॥२॥ यह मैं सीष कुरर तें पाई ॥ जातैं संग्रह करौं न काई ॥ बहुरि सीष बालक तैं लई ॥ मेरे उर जातें मति नई ॥३॥ नामें मान अप मान द्विजा नौं ॥ चिंता कछु चित न हि आनौं ॥ निस दिन रहौं आत्मारांम ॥ कबहू कछु न उपजे कांम ॥४॥ या अवमैं है द कौं सुष है ॥ और सकल जीवनि कौं दुख है ॥ उदिम रहित बाल मति हीनां ॥ अरु जो गुनां तीत पद लीनां ॥५॥ एक विप्र के दुती कुमारी ॥ ता विवाह की विप्र विचारी ॥ ताके मात पिता एक बार ॥ और गांव कहूं कांम सिधारा ॥६॥ समाचार एक विप्र नि पाये ॥ ब्याह काज द्विज के ग्रह आये ॥ कन्यां बचन किसी सौं भाषे ॥ तिन तैं द्विज आदर करी राषे ॥७॥ तब तिन के जो

जनकी धारी॥ चावलषोटनलगी कुंवारी॥ तबताकेकर ज्यों
ज्यौं डोलै॥ त्यौं ही त्यौं कर कंकन बोलै॥ ८॥ तिन लजित है सब
कल उतारैं॥ द्वै द्वै दोऊ हाथ मैं धारे॥ बहुरि लगी तब चावर छर
नै॥ तौऊ लगै सब्द ते करनैं॥ ९॥ तब तिन एक एक ई राष्यौ॥ चुप
करि रहै बहुरि न हि भाष्यौ॥ मैं बिचरतु होंई इछाचारी॥ तातें देषि
हूं है मै धारी॥ १०॥ बहुत निसंग बढै बकवादा॥ दुजे हू तैं होई अ
नुवादा॥ तातैं रहै अकेला जोगी॥ सदा बिचार ब्रह्म रस भोग
गी॥ ११॥ आसन प्रांन देह मन बंधे॥ दिढ वैराग हृदै मे संधै॥
निह्चल ह्वै नित ब्रह्म बिचारै॥ यौं क्रम क्रम रज तम कौं टा
रैं॥ १२॥ त्यौं त्यौं निह्चल बढै समाधि॥ तजतैं जावै सकल उपा

धि ॥ तब ज्यौं पावक इंधन हीन ॥ त्यौं ह्वै है निजपद मैं लीन ॥ १३
॥ तब कछु कहूं कछु है तन जांनै ॥ सिला समान देह गुन जांनैं ॥
ज्यौं आगै है नरपति गयौ ॥ सैन्यां सब बहुत बिधि भयौ ॥
१४ ॥ परि सरकार नेह न हि पायौ ॥ या बिधि सर मैं चित लगा
यौ ॥ ऐसी सीषल ई मैं तातैं ॥ निह्चल बुधि नर ई मम जातैं ॥
१५ ॥ यह आरं नदुष को मुला ॥ ते आरं नै जे नर भुला ॥ सरपप
राये यह मैं रहै ॥ या बिधि मुनि अहि सिक्षा गहै ॥ १६ ॥ एकै आप
निरंजन देवा ॥ जा कौ कोई लहै न भेवा ॥ आपही तैं माया बिस्ता
रै ॥ सत रज तम बहु भेद पसारै ॥ १७ ॥ बहुरौं आप ही सब संग्र
है ॥ निजानंद मय एकै रहैं ॥ तातैं यह सब मिथ्या जांनै ॥ या

कोकरतासोसतमानैं ॥१९॥ यहसिख्यामकरितेंलेवै ॥ सबतैं
परैंब्रह्मकौंसेवैं ॥ जहांतहांयहमनैंकौंधारै ॥ निसबासुरक
बहुनहिटारै ॥२०॥ रागदोषत्रयकौंहीहोई ॥ होतरुपताहीं
कोसोई ॥ त्रगिकीरहूतैंयहलीन्हों ॥ तौमनहूरिवरननिषे
रिकीन्हों ॥ २१ ॥ यहचौवीसगुरनकीसिख्या ॥ तौसोंहूहमैंचा
खीदीख्या ॥ अबतनतैंसिष्योसोकहों ॥ तेरेसबत्रज्ञानगे
यौंहिदहौं ॥ २२ ॥ मेरीदेहमोहिसंमुझावै ॥ इहैदेग्यानवैरागउपा
वै ॥ ज्यौंबालापनगयोविलासैई ॥ त्यौंही अबयहजोबनजा
ई ॥ २३ ॥ आवैजरामरनताआगे ॥ बहुविधिदुखदेहसोंलागे ॥
खानअकालनिकोयहचछा ॥ तासौंप्रितिनजोरैंदछा ॥ २४ ॥

पुत्र कलित्र अरथ पसु गेहा ॥ कुल कुटुंब बहु सेवक जेहा ॥ तिनसौं
मिलि जाइ देहही सैवैं ॥ सोई अंत महा दुष देवैं ॥ २५ ॥ आगैं कौं ब
हु करम उपावै ॥ अब जनम कै देह बार पठावै ॥ रसनि मत्र षेंच त्रिनि
तर सनो ॥ प्रांन सदा चांहैं जल असना ॥ २६ ॥ नयन रूप अरस स
वद ही श्रवनां ॥ इंद्रिय चहैं नारि को रवनां ॥ त्वचा सपरस नां
सा बहु गंधा ॥ चरन गवन कर फिरि है धंधा ॥ २७ ॥ या विधि
सब मिलि लूटैं ताकौं ॥ बंध्यौ देह सौं देषै जाकौं ॥ तातैं देह दे
को तजियैं ॥ सदां निरंतर हरि कौं भजियैं ॥ २८ ॥ हरि जब
माया गुन विस्तारैं ॥ तब नांना विधि देह संवारैं ॥ तिन तिन
मन संतुष न भयो ॥ बाहर्यौं मांनव तन निरमयो ॥ २९ ॥

ताकैंदेषिबहुतसुषिरवपायौ ॥ तामैंअपनैंाधांमबनायौ ॥ तबहरिजीबोलेयहबांनी ॥ जोभ्रगटदेहषेरवषांनी ॥ ३० ॥ मोहि लहैसोयाकरिलहै याकरिसबजनबंधनदहै ॥ जबमेरिहितकरैंउपाय ॥ तबमैंयाकौंकरौंसहाय ॥ ३१ ॥ तातैंयहअतिदुर्लभदेहा ॥ श्रीभगवांनरचौनिजगेहा ॥ अतिदुर्लभकिहूंजतननपावै ॥ जौपावैंतौथिरिनरहावै ॥ ३२ ॥ अतिदिनमृत्तुनिरंतरग्रासै ॥ एकदिनंततकालबिनासैं ॥ जरौगजयेसोकनिधांनां ॥ जामैंपलकसुषिनहीपांनां ॥ ३३ ॥ तातैंताहिपाईकरिराजा ॥ करिलिजियेआपनौकाजा ॥ जातैंयहदुषैसंसारा ॥ जाकेदुखकोवारनपारा ॥ ३४ ॥ निसदिनदेवनि

रंजनत्त जिये॥ द्वै ज्ञयप्रीत विषै सब तजिये॥ विषियापं
मपांन सुत दारा॥ ये सब देह निबारं बारा॥ ३५॥ तातैं त्याग
सकल कौ किजै॥ हरि के चरन कंवल चित्त दीजैं॥ याविधि
इं नतैं सिक्षा पाई॥ तब मैं और सकल छिटकाई॥ ३६॥ जुव
मैं बिचरौं है निह संगा॥ या तनहू कौ छाड्यौ संगा॥ सदा र
हौं हरि चरंन निवासा॥ बहु बिधि देषौं सकल तमासा॥
३७॥ बहुत गुरनि तैं ग्रंनगपांनां॥ जहां तहां लेवैं साधु सु
जांनां॥ छुटै अहंकार अरु ममता॥ द्रढ़ै आनि बिराजैं सम
ता॥ ३८॥ निर्गुन सगुन भेद पहिचानै॥ सार असार अथिर स्
थिर जांनैं॥ जहां तहां लै लै दृष्टांत॥ संसय द्वैत मिटावैं संत

॥अर्थ॥ परियेपरमारथगुरुनांही॥ एसबगुरहैसतगुरुमां
ही॥ सतगुरुतैंजबग्यानदिपावै॥ तबसारोजगग्यान
सिषावै॥ ४०॥ तातैंमेरेसदाअनंदा॥ हृदैविराजैपरमानंदा॥
याविधिजेहरिकौसेवैं॥ तिनकौहरिनिजचरननिदेवैं॥ ४१
॥ऐसोजदुकैंवचनसुनायौ॥ मनकौभ्रमसनेहगंवायौ
॥राजाबहुविधिपुजाकीन्ही॥ करिप्रनपतिप्रदछनादीन्ही
॥४२॥ तबराजाकौंकरिसनमांनां॥ दत्तात्रयमुनिकीयौप
यांनां॥ राजावचनधरिउरमांही॥ सबकौसंगतज्यौछिन
मांही॥ ४३॥ ब्रह्मदृष्टिसबहीमैंआंनी॥ ऐसोभयोपरम
विग्यानी॥ सोराजाजदुबडौहमारौ॥ जिनिअपनौभवसं

कटटास्यौ ॥ ४४ ॥ तातैं उधव औरन कोई ॥ गुरु आपनौ आप
ही होई ॥ आपही बुडै आपही तरैं ॥ आप ह्म जीवैं आपही म
रै ॥ ४५ ॥ दोहा ॥ यह ज्ञान्यौ विग्यांनमय ॥ सब अद्वैत उपाय
॥ अब याको साधन कहौं ॥ बहुत भांति समुझाय ॥ ४६ ॥ इति
श्री भागवते महापुराणे एकादस स्कंधे श्री भगवद उधव
संवादे चातुर्विंसति गुरु व्याख्याने नाम नवमो ध्या ॥ ९ ॥
॥ अवधूत इतिहास सोपाख्यान संपूर्ण ॥ श्री भगवानु
वाच ॥ सुनि उधव अब साधन कहौं ॥ तेरे सब संदेह हिंद
हौं ॥ जातैं उपजै ब्रह्म ग्यांनो ॥ छुटै और सकल भ्रम नांना ॥ १
॥ मम भगत निजे मारग जाषे ॥ ते सब बहु दै वै हि मै आषै ॥ तेक

हिए आत्मके घरमां॥ औरसकलबंधनकेकरमां॥ २॥ तिनं
कौंसावधांनहैंजांनैं॥ वरणाश्रमकुलमिथ्यामांनैं॥ जेजेबु
द्धआरंभनिकौरे॥ सुषचांहैंनिसदिनदुखभौरें॥ ३॥ आगेंकौं
बंधनउपजांवैं॥ जिनकेसंगजनमहारैजांवै॥ यौंबिचारिआ
रंभनितजैं॥ ह्वैनिहकाममममचरननितजैं॥ ४॥ जहांलग
हैंनांनाबुधि॥ सोसबउधवजांनिअबुधि॥ हैतन्नावसो
भ्रमकरिजांनैं॥ सुपनमनोरथसंमकरिमांनैं॥ ५॥ तेतैं
औरकरमसबतजैं॥ नितनैमितकछुएकभजैं॥ तेउक
छुसत्यनहिजांनैं॥ करैंतौकरैनहीतौभ्रांनैं॥ ६॥ भक्तिमादि
जौअंतरपरै॥ तौतेउलिनकबहौंकरै॥ जौजासमैनअंत

रजांनै॥ तौतासमै सहजमै ह्वानै॥ ७॥ जम नि मां हि निह्चल
चित धरै॥ नियमनि कौं न्ना वै सौं करै॥ ब्रह्म बिझ्ञ गुरसरन
ह्वा जावै॥ जातैं न्नेद सकल कौ पावैं॥ ८॥ जम अरु नियम क
छुन हि सिवै॥ सतगुर कहै सो षसो लैवै॥ मांन्नर हितम छुरन
ही जांनैं॥ तनमन अर्पि प्रितिकौं ह्वानैं॥ ९॥ ज हां न हीं तैं मम
ता परहरै॥ सावधांन आलस नहिं करैं॥ तजैं असुया तृयान
बोलैं॥ तनमन निह्चल कहें न डौलै॥ १०॥ अधास हित आ
स्तिक ह्वाइ॥ गुरुचरनं निसिषसे बैसोई॥ दारा सुत बित ग्रेह कु
टंबा॥ सकल न्नत आतम पितु अंबा॥ ११॥ तिन सब हि नकौ
समकरि देषै॥ मैं मेरा करि कहें न लेषैं॥ रहै उदास आसपरि

हैरै॥ निसदिन ब्रह्ममांहि मन धरैं॥ १२॥ सुक्षम थूलदेह है जेहैं॥
जरम रूप मायाकृत तेहैं॥ इन दुनौ लै आत्म दुरि॥ स्व प्रकास
चेतन अन्तर पुरि॥ १३॥ थुल सरीर प्रगट जड एहा॥ चैतन क
रैं ता हि व ह देहा॥ सो वह ऊतन जड है अंगा॥ चेतन है। इ आ
त्मा संगा॥ १४॥ सो आत्मा दुहूं तैं न्यारा॥ दुहू प्रकास दुहूं आ
धारं॥ ज्यौ एक काष्ठ अनल परिजरैं॥ सो दुजै परिकासित
करैं॥ १५॥ परि सो अनल दुहूं तैं न्यारा॥ स्व प्रकास आत्म अ
धारा॥ बहे धा सो बहे काष्ठ निसंगा॥ पावैं उतपति थिति
अरु अंगा॥ १६॥ त्यौं है तन हरि माया कीए॥ ते आत्मा आप
करि लिए॥ तिन संग जनम मरन दुष पावै॥ लहै आं नंद ज

बहिछिटकावैं ॥१७॥ जातैंबहुविधिकरैविचारा ॥ आतमजों
नैंसबतैंन्यारा ॥ एकअजन्माअरुअविनासी ॥ चेतनघनपू
रनसुषरासी ॥१८॥ तनउपजैबिनसैंवरतांई ॥ परमअसुध
सुधनहिकाई ॥ सकलविकारनिकोसंघाता ॥ परगटदीसै
आवतजाता ॥१९॥ मेरोयासौंकैसोसंगा ॥ मैंचेतनयहजड
उबहोरंगा ॥ यौंविचारित्यागैतनममता ॥ आतमदृष्टिसक
लमेंसमता ॥२०॥ याविधिहूदेहाईथिरग्यांनो ॥ मिलैंब्रह्म
छुटैसबनांनां ॥ प्रथमआरम्भअथिरगुरदेवा ॥ दुजीसिष्य
करैनितसेवा ॥२१॥ गुरकेवचनश्रवनमथांनो ॥ याविधि
उपजैग्यांवकग्यांनो ॥ उपजिकाढतनकेगुनदेहैं ॥ करम

बीजकोईनहीरहै॥ २२॥ तबज्यौंपावकतेजसमांवै॥ इंधनंबि
नानपलकरहांवैं॥ त्यौंआतमबुद्धमयहोई॥ इंधनकरम
नवकैसंमकरिसोई॥ २३॥ अरुजेमुढनयहविधिजांनैं॥
तेबहुबिधिकरमनिकोंठांनैं॥ तेकरमनिकेफलनिभोग
वैं॥ जन्ममरनकोअंतनपावैं॥ २४॥ जहांजहांजांईतहांत
हांकाला॥ निसदिनसदारहैबेहाला॥ यहजहीसेज्यौंकौंसैं
ही॥ परिएकोपलरहैनयौंही॥ २५॥ औरंओरहैहिआका
रा॥ तिनसंगतिमनबहुप्रकारा॥ कबहुंग्यांनहिरदैनहीआ
वै॥ जनमिजनमिमरिमरिदुषपावै॥ २६॥ करमरुजोकरम
निआचरैं॥ सुषअरुजोसुषभोगनिकरैं॥ एचारयौंहीसैंपरतं

तर॥ तातैं सब तजि ये यह मंत्र॥ २७॥ जे पंडित स्त्रुति सुमृति ज्ञा
नैं॥ तत्व लहे बिंन करम निहांनैं॥ ते मुर षदे हात्र अभिमांनी॥
आप ही आप कहां वैं ग्यांनी॥ २८॥ हरिजंन संगन कबहीं करैं
॥ तत्वन सुनै करम बिस्तरैं॥ तिन तैं जे कछु नजांनैं॥ तत्व
वचन सुनि हृदै आंनैं॥ २९॥ जद्यपि अंत सुषनि कौं जांनै॥ अ
रु छिन अंगर देह न मांनै॥ परिसो तत्वन समझैं तेऊ॥ जातैं लहैं
अक्ति कौ चेऊ॥ ३०॥ काल मृत्यु जाकौं निति यहासै॥ ताकौं कहैं
कहा सुख दरसै॥ जौं कोई मारन कौं लीजैं॥ सुली निकट धरौ ले
किजैं॥ ३१॥ अरु ताकौं जो भोग जुगावै॥ सौ थौं कहो किसो सु
षपावै॥ अरु त्यौं न्हीन स्वर परलोका॥ मदमं छुर निंदा भय

सोक॥ ३१॥ तिन्हके हेत जत्नंन बहुत हो करैं॥ सिधन ह्वाय विघ
न आति परै॥ ज्यौं षेतामै विघन अनेक॥ त्यौं सुरगादिसलै है
कोएक॥ ३३॥ अरु जो लह्यौ तेऊ थिरि नांही॥ देषत विनसि जा
य पल मांही॥ इहां जप करै बहुत कोई॥ अरु जो अंतराई न हि
होई॥ ३४॥ तव सो स्वरग लोक कौं जावे॥ ह्वै करि देव देव सुष पै
पावै॥ अपने पुन्यनि कौं उपजायौ॥ उत्तम जाये विमांन हि
पायौ॥ ३५॥ वहै गंधरव गांन कौं करैं॥ वहै सुदरी नंा रिभ
न हरैं॥ इच्छा होई तहां चलि जावैं॥ सहित विमान विलंवन
लावै॥ ३६॥ अंमृत पांन तहां निति करैं॥ वस्त्राभरण देह व
हु धरै॥ यौ निति मगन बहुत सुष पावै॥ परिवे की कछु वि

न न आवै ॥ ३७ ॥ जे तौ पुन्य इहां को होई ॥ ते तौ रहै सुरग मैं सोई ॥
पुन्य हीन होवै पुनि जबही ॥ काल तांहा तैं डारैं तबही ॥ ३८ ॥ सो
सुष कहो तज्यौ क्यौं जावै ॥ तदुष की कछु कहत न आवै ॥ रहो च
है परि क्यौं करि रहै ॥ काल आधीन महा दुष लहै ॥ ३९ ॥ कोई सु
ष पावै कहुं जे तौ ॥ छीनि लीयै है होवै दुष ते तौ ॥ सो तजि सुरग ॥
भूमि मैं आवै ॥ पीछै जो निज अनंत ही पावै ॥ ४० ॥ यह जाणी बि
धि काग तितौ सौं ॥ अब निषद की सुनियो मो सो ॥ जो कुसं
ग मैं प्रानी परैं ॥ तौ बहु जाति अधरम निकरैं ॥ ४१ ॥ बंधै हैं काम
इंद्रिय आधिनां ॥ अस्त्री लंपट लोभी दीनां ॥ बहै जीवन की
हिंस्या करैं ॥ ते तन्तु त गण कौं अनुसरै ॥ ४२ ॥ मैं ही एक बसौ स

बमांही॥ तिनकेद्वै हूनरकमैंजांही॥ बहेरौंईहांपावरंतनर
लहैं॥ जनमजनमबहुसंकटसहैं॥४३॥ तातैं बिधिनिषेध
जेकरैं॥ तेसबजंनममरंनमैंपरैं॥ करमकैरतिनतैंतनध
रैं॥ तनधरिधरिबहुसोमरैं॥४४॥ तातैं भवरतिमैंसुषनांही
॥ जावैब्रह्मलोककिंनिजांही॥ लोकपासबलोकसमेता
॥ एतोरहैब्रह्मदिनजेता॥४५॥ सोब्रह्माण्डअंतिनरहैं॥ तीतर
बाजकालस्योंगहै॥ अगनिरहैमेरेन्तयमांही॥ पवनबहै
निचलपलनांही॥४६॥ सुरजचंदएकरसिचलैं॥ मरजादातैं
सिंधुनटलैं॥ मिरत्यनिरंतरीसबकौंत्रासै॥ मेरेकालरूपतैं
त्रासैं॥४७॥ तामैंकछुनसुषभववर्त्ति॥ सुषचाहैसोगहैनिवर्त्ति

॥ अरु एई इंद्रिय करम उपावै ॥ तिन कौं सतरज तम वरतावै ॥ ४८ ॥
॥ सो आत्मा इंद्रिय बसि होई ॥ तातैं सुष दुष पावै सोई ॥ परिआ
त्मा अकरता जानौं ॥ जोग रहित ताहि तैं मानौं ॥ ४९ ॥ करम अ
रु जोगादिक है जेते ॥ इंद्रिय अरु गुन करत्व तेते ॥ जौं लगि य
ह इंद्रि गुन बंधा ॥ तौं लगि मिटै न तन सन बंधा ॥ ५० ॥ तन संन
बंध मिटै न हि जौं लौं ॥ नांनां नाव बहुत विधि तौं लौं ॥ नांनां
नाव रहै जब लग ॥ पराधीन आतमां तब लग ॥ प० ॥ पराधी
न आतमा तब लगि जौं लगि यह दर है ॥ तौं लगि काल निरंतरी
ग है ॥ तातैं जे अब थिर तिह होवै ॥ जुग जुग जंनम जंनम तै रोवै
॥ प० ॥ प्रथम हुतौ मै एक निरंजन ॥ ताही तैं उपज्यौ यह अंजन

७१

न॥ काल आत्मा लोक अरु बेद॥ करम स्वभाव बहुत बिधि भेद॥ ५३॥ ए सब माया सतिन कोई॥ तातैं बुध अनुरक्त न होई॥ एक निरंजन आत्म जांनैं॥ तब सब संकट त्यय के जांनैं॥ ५४॥ लोक अरु बेद बासना तजैं॥ इंद्रिय देह बिषैन हि तजैं॥ मन प्रहुं वैसे मिथ्या लेषै॥ मन अतित सो जह तह देषैं॥ ५५॥ ब्रह्म अरु आत्मा एक बिचारै॥ या बिधि सकल उपाधि निटारै॥ तब ही एक ब्रह्म कौं पावैं॥ छुटै द्वैत बहुरि नही आवैं॥ ५६॥ यह आत्मा ~~कौं निकम अबंधम~~ अरु देह बिबिका॥ याकैं जांनि एक कौ एका॥ ऐसे वचन कहे जब रूस्न॥ उधवदास करी तब प्रश्न॥ ५७॥ उधव उवाच॥ हे प्रभु जौ यह सारो भरमां॥ इंद्रिय देह बि

षेगुनकरमां ॥ अरुआत्माअनिदअबंधा ॥ ताकौंत्यौकौन वि
धिबंधा ॥ ५८ ॥ अरुजौबहुरिग्यांनकौंलहैं ॥ छोडिउपाधिदेह
मैंरहैं ॥ सौबहुरयौंक्यौंलिप्तनहोई ॥ अरुक्यौंकरिजानीजैसोइ
५९ ॥ कैसैंविचरैकैसैंरहै ॥ कैसैंजीवैकैसैंकहैं ॥ कैसैंपहरैकैसै
सोवैं ॥ कैसैंमुनैंकौंनविधिजोवैं ॥ ६० ॥ अरुआनमरकैहैनो
ही ॥ एकमुक्तिक्यौएकबंधांही ॥ एकबंधएकक्यौंमुक्ता ॥ एतौ
बहुतएकक्यौंउक्ता ॥ ६१ ॥ गुनअनादिआतमाअनादि ॥ तातैं
यहतौबंधनआदि ॥ निसमुक्तक्यौंकहिएदेवा ॥ याकौमोहि
बतावौजेवा ॥ ६२ ॥ दोहा ॥ एउधवनिजतत्त्वके ॥ सुनिकरिनि
रमलबैन ॥ ताकौंप्रत्यउत्तरकह्यौ ॥ हरिजीकरुनाऐन ॥ ६३

॥इति श्री भागवते महापुराणे एकादस स्कंधे श्री भगवउध
व संवादे भाषाटीकायां दसमो ध्याय:॥१०॥ श्री भगवान
उवाच॥ सुनि उद्धव अब परम गियांनं॥ जातैं भेद मिटै तुव मां
नं॥ बंध अरु मुक्त तोहि समझांऊं॥ तैसै सब अज्ञांन मिटा
ऊं॥१॥ बंध मुक्त जो कहिए कोई॥ सो तौ सकल गुन नितैं होई
॥ ते सब गुन माया के जांनौ॥ इन तैं दुरि आतमा मांनौ॥२॥ सोक रु
मोह जनम अरु सुष॥ जय अरु मरणादिक बहु दुष॥ ए सा
रे माया कृत केवल॥ सदा एक आतम निह केवल॥३॥ जैसें सु
पने सुषं दुष अनेका॥ तिन मैं आतम कौं नहिं एका॥ तैसें स
बु माया के भव हैं॥ ... आतमा का अबुधि अरु मन कौ

हौवै॥ इंद्रियदेहप्रगटतेसोवैं॥ ४॥ पुनिक्षुधादिककछुन
हीरहैं॥ जाकौप्रगटसुषोपतिकहैं॥ तवआतमानिरंतरहो
ई॥ परिताकौं ~~कौइनहीविकार~~ सुषदुषनहिकोई॥ ५॥ जौ
सुषपतिमैआतमरहै॥ तौव्यावहारपिलेगहै॥ परिता
कौंकोईनहीबिकारा॥ एसबमायाकेव्यवहारा॥ ६॥ परि
आतमाआपनमांनैं॥ तातैंसुषदुषबहुबिधिजांनैं॥ प
रिआतमाएकरसनित्य॥ बंधमोक्षएसकलअतित॥ ७॥ उ
धवजानौएकअविद्या॥ अरुदुजीजोकहीयैविद्या॥ एहो
उहैमेरीसक्ति॥ इनमैंसवहिनकीआसक्ति॥ ८॥ बंधनकरैसोच
हेमैंजांकौं॥ ओरीअविद्यापठउताकौं॥ अरुजाकेवंधन

निमिटाउं॥ ताकौं विद्या सकति पठाऊं॥ ए॥ एजो है उमुकत
अरु बंधा॥ ते मम सकतिनु के संबंधा॥ आतम है सो मेरो
रूप॥ सबतैं न्यारो परम अनुप॥ १०॥ ज्यौं ससि के प्रतिबिं
ब अनेका॥ परि सैं न्यारो सै तै बहुत नहि सब एका॥ अरु जा
जा कौ घट बिनसाई॥ सो इसो ससि मांहि समाई॥ ११॥ त्यौं स
ब आतम मेरो अंसा॥ परि घट संगलहैं दुष संसा॥ विद्या
सक्ति जाहि हैं जब ही॥ घट को नास करैं सो तब ही॥ १२॥ सो
ई सो तब मो कौं लहैं॥ और सकल न वही मैं रहै॥ अरु प्रति
बिंब घट नि कुमाही॥ सदा अलिप्त लिप्त कछु नाही॥ १३
॥ परि घट संग लिप्त से होवे॥ अरु त्यौं लिप्त और ऊ जो है॥ सो

आतमासकलतैंन्यारा॥सदाअलिप्तनलिपैबिकारा॥१४॥परि
यातनमैंआपबंधानां॥ताकेसंगलहैदुषनांनां॥अबमैंबं
धमुकतिकीकहौं॥तेरेसबसंदेहहिरदहौं॥१५॥एकदेहमैंहै
कोबासा॥परमातमाआतमाकेपासा॥ज्यौंहैपंषीरहतरु
मांही॥तरतैंत्तीनलिप्तकहूनाही॥१६॥दोउचेतंनएकसमा
ना॥सरवारूपएकअस्थांनां॥आपहुतैंतिनबासाकियो
॥तिनमैंएकतरुहिचितदियो॥१७॥देहतरुकेसुषफलषा
वैं॥तातैंदुषआपहीपावैं॥तबताकाजेकरमबहुकरैं॥ति
नतैंजुगजुगजनममैंमरैं॥१८॥देहमरैमरनौंकरिजांनैं॥देहज
नमतैंजनमहिमांनैं॥ऐसैंसदाबहुतदुषपावैं॥देमैंसोआ

तमाकहावैं ॥ १९ ॥ परमातमा देहतरूमांहा ॥ सुषफलकंबहु
षावैनांही ॥ तातैंकछुकरमनहीगहै ॥ निजानंदमयनिह
चलरहै ॥ २० ॥ यौंपरमातमाआतमजांनैं ॥ देहअतीतदु
हूंकौंमांनैं ॥ सुषफलअरुआरंभनितजैं ॥ मुक्तहोइपरमा
तमनभजैं ॥ २१ ॥ ज्यौंतनमांहिमुक्तपरमातम ॥ बिद्यापाइ
बसैंत्यौंआतम ॥ तनमेंरहैपरितनमेंनांही ॥ आपहीजांनि
नयौथिरिमांही ॥ २२ ॥ सुपनदेषिज्यौंजागैकोई ॥ सोसोसु
पनविचारैसोई ॥ परिसोसुपनदेहअरुसुपनां ॥ मिथ्याजां
नैंनरमतैंउपनां ॥ २३ ॥ अरुजोसहितअविद्याहोई ॥ सो
तनमैनहैपरिहैसोई ॥ ज्यौंसोवतसुपिनातनपावैं ॥ ताकौं

आपजानिमनलावैं॥ २४॥ तनमैंबंधमुक्तजोजीव॥ बंधजीमु
क्तासोसीव॥ बहुरयौंकहैंमुक्तकेलछन॥ जिनकौंजांनैंहोंः
ई बिचछन॥ २५॥ देषैसुनैंकहैंकछुकरै॥ सोकछुकदेनहि
रदैधरै॥ सकलअर्थइंद्रियगतजांनैं॥ आपहीएकअक
रतामानैं॥ २६॥ पुरवकर्मअधीनसरीरा॥ कर्मकरैइंद्रिय
मनसीरा॥ तिनमैंवासकियौनहिजांनैं॥ मुरिषआपहीः
करतामांनैं॥ २७॥ बहुरिमुक्तिऐसीबिधिरहै॥ अहंकारया
तनकादहैं॥ आसंनअसनअटनअरुसयेनां॥ दरसपर
सअघ्रांनरुबैंनां॥ २८॥ इंनिमैंइंद्रिनकौंबरतावै॥ आपनः
कबहुंप्रितिलगावैं॥ रहैमांहिपरिलिप्तनहोई॥ ज्यौंआका

सपवनरबितोई॥२९॥ बिद्यानांमसदृथीपाई॥ दृढ़वैरागसं
नघरवाई॥ तासोंकाटैंसंसयेसारे॥ जागिसकलत्रमतेदनि
वारे॥ ३०॥ इंद्रियग्यानबुधिमनमांही॥ कबहुकछुबासनां
नांही॥ सोजद्यपिसनहीमेदरसै॥ परिसोमुक्ततनहिनहीं
परसें॥ ३१॥ एकदुष्टतनपिडाकरै॥ एकबोतपुजाबिस्तरैं
॥ परिबुधरोषतोषनहीआनैं॥ सकलदेहकृतमिथ्याजां
नैं॥ ३२॥ बिधिनिषेधजोकोईकरै॥ किंबांकहैंग्रंथबिस्तरैं
॥ मुनिकछुत्तलोबुरोनहीदेषैं॥ गुनअरुदोषरहितसंम
लेषैं॥ ३३॥ बिधिनिषेधनांहीकछुकरैं॥ नांकछुकरैनहीर
हैधरैं॥ निसिदिनरहैंब्रह्मरसमंत॥ ईछ्यामेज्योजउअनमंत

॥३४॥ ऐसे चिन्ह मुक्त के जांनौ ॥ मुक्त भयो चाहे जो कोई ॥ ए
सब साधन साधै सोई ॥३५॥ जिनि सब सद्ब्रह्म जांन्यो ॥
॥ परि निज तन न ही पहिचांन्यौ ॥ इन साधन नि मांहि रत नां
हीं ॥ ताकै भ्रम सब मिथ्या जांही ॥३६॥ सब द ब्रह्म ब्रह्म कै
काजा ॥ हरिजी अरु हरिजन निसाजा ॥ तातैं ब्रह्म बिनां भ्र
म ऐसैं ॥ बूध गाई से ईये जैसें ॥३७॥ बूध गाई दुध बिन होई ॥
पराधीन तन राषै कोई ॥ असति नारी पुत्र अन्याई ॥ धरम बि
हीनौं धंन अधिकाई ॥३८॥ ज्यौं इन तें दिन दिन दुष होई ॥
कबहुं सुष पावै न हि कोई ॥ मो हि बिना त्यौं बहु बिधि बांनी
॥ केवल बंधन ही कौ जांनी ॥३९॥ मो तैं जगउतपति संहा

७६

रा॥ सबप्रतिपालनबिबिधिप्रकारा॥ किंबाजंनमकरम
बहुतेरे॥ जाबांनीमैंनांहीमेरे॥ ४० मेरेनांनाबिधिसंबं
धा॥ जांबांनीमैंनांहीबंधा॥ बंधाबांनीताहिबिचारा॥
४१॥ जहांतहांतैंमनहिनिवारैं॥ पुरणएकब्रह्ममैंधारैं॥ ४२
॥ जोतजिदुजेनानाअरथ॥ मनधारनकौंनहिसमरथ
॥ सोममहेतकरमसबकरैं॥ प्रेममगनंफलहिपरिहरैं॥ ४३
॥ औरैंकरमअकरमविकर्म॥ बंधनजांनितजैसबभरम
॥ जाहीतैंउपजैंममभक्ति॥ ताहीमैंराषैअनुरक्ति॥ ४४॥
श्रधासहितसुनैगुनमेरे॥ जिनतैंकरमनआवैंनेरे॥ गावैंसु
मिरैंअस्तुतिकरैं॥ प्रेमसहितनिसदिनबिस्तरैं॥ ४५॥ जेक

हुधरमकांमअरुअरथ॥ करैसकलतेमेरेअरथ॥ ममआधी
नतिरंतरिरहै॥ मनक्रमबचनआंननहिगहै॥ ४६॥ याविधिहो
वैनिहचलभक्ति॥ औरसकलतैंसहजबृक्ति॥ तबमेरेनिज
रूपहीजांनैं॥ तातैंनांनांनेदहिंजांनैं॥ ४७॥ जबताहिपदमां
हिसमावै॥ जातैंजनमफेरिनहिपावैं॥ परियहसतसंगति
तैंहोई॥ सतसंगतिबिनलहैनकोई॥ ४८॥ भक्तिबिनांभ
क्तिनहिंपावै॥ भक्तिबिनांनहिंमोमैंआवै॥ तातैंसतसंगति
कौंकरैं॥ दुजोजतनंसकलपरिहरैं॥ ४९॥ दोहा॥ ऐसेसुनिह
रिकेबचनमनमैंबाढीप्यास॥ तबजनभक्तिअरुभक्तिके॥ ल
छिनपूछेदास॥ ५०॥ उधवउवाचा॥ चौपई॥ हेअच्युतपुरणपर

मअनंत॥ याजुगबहुतन्नातिकेसंत॥ जाकैंसंतकहैातुमदे
वा॥ ताकोमोहिबतैांभेवा॥ ५१॥ अरुसौच्नक्तिकंवंनजोहांनैं
॥ जातैंतुवनिजरूपहिंजांनैं॥ तबउधवकैांदेबहुमांनो॥ १
क्रिपासिंधबोलेभगवांनो॥ ५२॥ श्रीभगवानुवाच॥ पर
मक्रिपालद्रोहनहिंजांनैं॥ क्रमावंन्नअरुसंतबषांनैं॥ निं
दारहितहंदसबसमता॥ परउपगारीह्वैनममता॥ ५३॥
आयेकांमबुधिथिररहै॥ इंद्रियजितकोमलतागहै॥ सदा
चारसंग्रहनहिंजांनैं॥ लघुअहारनइहाअांनैं॥ ५४॥ सीतल
हिरदैबिचारहिकरै॥ धरमआपनेदृढताधरै॥ सावधानअरुर
हितबिकारा॥ धीरजवंतदयाअधिकारा॥ ५५॥ सोकमोहत्र

रु क्षुधापियासा॥ जरामिरत्युजीतेषटुपासा॥ अपमांनअ
पमांननआंनैं॥ औरनिकौंउपकारनिहांनैं॥ ५६॥ जोकोई
सरनांगतआवै॥ ताकेंज्योंत्यौंज्ञानउपजावैं॥ सबकोमित्रसु
त्रामुत्रमांनैं॥ द्दिढविस्वाससकलभ्रमभांनैं॥ ५७॥ ममआ
धीनदीनह्वैरहै॥ साधनकौबलकरैनगहै॥ मोहिकौंकरतां
करिजांनै॥ कबहूंत्युतिनआपामांनै॥ ५८॥ जद्यपिरूपवेद
मैंगाए॥ वर्णाश्रमकुलधर्मबताए॥ तौहुबिधिनिषेधसबतजैं
॥ द्दिढनिश्चयममचरणनिभजैं॥ ५९॥ इसौजुभक्तीनिजजनकुक
हावै॥ ताकेसंगभक्तिकौंपावै॥ देसअरुकालरहितसरवातम
॥ चिदानंदमयप्रभुपरमातम॥ ६०॥ ऐसौजांनिजांनिमो

हित्यजैं ॥ औरसकलसंकल्पनितजैं ॥ सोमेरोकहियेनिजभ-
क्त ॥ तासौंनितहुजैंअनुरक्त ॥ ६१ ॥ अरुजैऔसोमोहितजो-
नैं ॥ परित्यागतहीतिकौंठांनैं ॥ लैकरिमोहिसकलपरिहरैं ॥
तेजंनमोहिसकलपरिहरैंआपबसिकरैं ॥ ६२ ॥ एभक्तनिके
लच्छनकहिये ॥ मेरीकृपाहूतैतेलहिए ॥ तिनकौंपाईभक्तिकौं
पावै ॥ भक्तिपाईममचरणनिआवैं ॥ ६३ ॥ तातैंमोहिचहैंजो
कोई ॥ ममसंतनिकौंसेवैंसोई ॥ अबमैकहौंभक्तकेअंगा ॥
जातैंपावैमेरोसंगा ॥ ६४ ॥ ~~६४~~ ममप्रतिमामैंमोकौंभजैं ॥ मभ-
क्तमबचनफलादिकतजैं ॥ हितसौंदरसपरसपरिचरजा ॥
अस्तुतिअरुदंडवतसपरजा ॥ ६५ ॥ मेरीकथाबिषैअतिप्र-

धा॥ मो बिन कछु न करै पल अरधा॥ मेरे जन्म कर्म गुन गावै॥ सदा
निरंतरि मोकौं ध्यावै॥ ६६॥ तन अरु तन के पीछे जेते॥ मोकौं सकल
समरपैं तेते॥ जन्म अष्टमी आदि जे परवा॥ बहुत उछाह करै
ते सर्बा॥ ६७॥ नित्य गीत अरु बहु विधि बाजा॥ मंदिर रूप बहुत
बिधि साजा॥ कथा कीरतन बहै विधि अरचा॥ हरी नाम तणी
बहु चरचा॥ ६८॥ ऐसे बहुत भांति उछाहा॥ सब परबनि सब
विधि निरबाहा॥ मथुरादिक हरि धाम नि जावैं॥ बहुत भांति क
रि प्रेम बढ़ावैं॥ ६९॥ आरति कौं अरचा हि सिषावैं॥ ठौर ठौर प्र
तिमा पधरावैं॥ बहु बिधि करै बाग फुलवाई॥ क्रीड़ा थान महि
त चतुराई॥ ७०॥ प्रभु मंदिर बहु भांति करावैं॥ ज्यौं हरि अरु हरि

जक्तनिजावै ॥ आपमांहिजोसकंनहोई ॥ तोउर्द्धमठांनै
सोई ॥ ७१ ॥ बहुविधिमहिमाकहैकहावै ॥ औरनसौंमिलि
कैंकरावैं ॥ मंदिरादिबहुजोतिबुहारैं ॥ बहुविधिसौंवै
धुलिनिवारै ॥ ७२ ॥ चित्रविचित्रलोकविस्तारै ॥ द्वैकरिदासआ
पहीकरै ॥ मानरहितकछुदंजनजांनैं ॥ जोकछुकरैसोनव
षांनैं ॥ ७३ ॥ मोकौंकरैंआरतिजासौं ॥ औरकछुनहिदेषै
तासौं ॥ ममप्रसादप्रीतीसौंलेवै ॥ प्रीतिहिनजीवनीनहि
देवैं ॥ ७४ ॥ यौंहीज्यौंज्यौंउपजैप्रेम ॥ त्यौंत्यौंअधिकबढावै
नेम ॥ ममजक्तनिरहैआधीन ॥ तनमनधंनसौंनितलैली
न ॥ ७५ ॥ आरुएकादसरनिजनई ॥ ममपूजाकरिहैअनुनई ॥

सुरिज अग्नि विप्र अरु गाई॥ जक्ष्मेष अकास रु बाई॥७६॥ ज
ल अरु धरणिं आपमै त्यौं ही॥ सबनिमां हिमम पूजा यौं ही॥ वि
द्या त्रयी सुरिज की पूजा॥ मोकौं छांडि न जानै दुजा॥७७॥ बरषा
राजस करि उपजावै॥ सातिक सील सबनि बरतावै॥ तामस
पीष मसकल बिनासैं॥ सकल जगत कौं आप प्रकौसै॥७८
॥ तातैं मेरी परम बिभुति॥ ऐसैं जांनि करै अस्तुति॥ पावकमा
हि है मकरि जजैं॥ विप्रनि अतिथि न्नावसी जजैं॥७९॥ त्रियज
ला दिगाई की पूजा॥ जक्ष्मेषमै और न दुजा॥ जक्ष्मेष निज
बंधव जांनैं॥ अतिथ बहै पूजा हांनैं॥८०॥ ज्यौं आपनें बंधु सं
बंधी॥ तिनसौं प्रीति सबनि है बंधि॥ तिनकु बहु लत्तां तिक

रिसेवै ॥ तनमनधन निहचलकरिदेवै ॥ ८१ ॥ त्यौंहीजक्रआपने
जाई ॥ औसैंजांनिकरैअधिकाई ॥ तनमनधनसौंप्रीतिवढा
वैं ॥ जिनतैंमेरेभेदहिपावैं ॥ ८२ ॥ ह्रदैआकासध्यानसौंसेवैं
॥ सवआधारपवनचितदेवैं ॥ जलकुंजलअरुफुलफलादी
॥ नधरणीपूजैंमंत्रादी ॥ ८३ ॥ जोगनिसौंनिजदेहहिजजैं ॥
मोविचअंतरायेसवतजैं ॥ सर्वभूतनिमैंमैकौंजांनैं ॥ सम
दर्सनयहपूजाठांनैं ॥ ८४ ॥ इंनीसवठौरनिपूजाकरै ॥ मेरोरूप
ह्रदैमैधरै ॥ रूपचतुरभुजआयुधधारी ॥ स्यांमंसरीरपीतांवर
धारी ॥ ८५ ॥ सीसमुकटसुभकुंडलकरणं ॥ कौस्तभादिवहो
विधिआभरणं ॥ औसौरूपसवनिमैंध्यावै ॥ सावधांनह्वै

क्षितिबढावैं ॥ ८६ ॥ याबिधिबाईकुपसरबाग ॥ जपतपदांन
दयाव्रतजाग ॥ मेरैहितिकैजोकरे ॥ मोबिनऔरनदैनहिधरै
॥ ८७ ॥ इंनिसाधननिकैनरजोई ॥ प्रेमभक्तममपावैसोई ॥
॥ एसाधनकरतैंबहुभांति ॥ साधमिलापहोईदिनराति ॥ ८८
॥ तिनतैंऐसीभक्तिहिपावैं ॥ जातैंग्यांनभक्तिउरआवैं ॥ ता
तैंग्यांनभक्तिकोकारण ॥ एकभक्तभवसागरतारण ॥ ८९
॥ तातैंभक्तिहिंसोंचितलावै ॥ जिनतैंमेरिभक्तिहिपावै ॥ ति
नकैंबनिजभक्तिकोंनित ॥ कबहुंऔरनआवेचित ॥ ९० ॥
॥ मैउनकौमेरेहैतेई ॥ ऐसौभेदनजांनैंकेई ॥ जोकछुकहैं ॥
करैंमैसोई ॥ जद्यपिमेरेमननहीहोई ॥ ९१ ॥ मोहिमिलन

कौएकउपाया॥ साधसंगतिमिलिजतनकहिकरई॥ सोईएकज
गतजलतीरई॥ ४२ ॥ जतनबिनानहिमोमेंआवै॥ मोमैं
आयैबिजहांजाई॥ तहांतहांकालनिरंतरषाई॥ ४३ ॥ य
हअतिगोपमतोहैमेरौ॥ अरुमेरेआधीनचीततेरौ॥ ता
तैमैंयहतौसोंकह्यौ॥ आगैंकछुकहिबेनहिरह्यौ॥ ४४
॥ दोहरा ॥ बहुरिगोपअपनौमतौ॥ कह्यौंतोहिसमुझा
ई॥ जातेंक्षुद्रैजगतत्रय॥ मोमेंरहैसमाई॥ ४५ ॥ इति
श्रीभागवतेमहापुराणेएकादसस्कंधेश्रीभगवनुध
वसंवादेभाषायांएकादसोध्यायः॥ ११ ॥ ॥ श्रीभगव
नुवाच॥ उधवमतौगोपसुनिमेरो॥ पावैमोहिमिटैजवते

रौ॥ आपमिलनकौपंथदिषांउ॥ औरैंसकलकुंपंथपिषां
उ १॥ जोगकहिजैअष्टप्रकारा॥ सांख्यप्रकृतिअरुपुरषबि
चारा॥ बहुविधिवरणाश्रमधरमा॥ सकलत्यागिहैंवै
निहकरमा॥ २॥ वेदादिकबहुविद्यापारा॥ जहांलगैंहैंतप
तिकारा॥ होमजग्यसरबापीकुंपा॥ इष्टादांनसमयअनु
रूपा॥ ३॥ एकादसीआदिव्रतजेते॥ गुप्तमंत्रमेरेहैंकेते॥ मम
प्रतिमापूजाआचरणा॥ तीरथअटननियमजमकरणा
॥ ४॥ औरौंसंमदमआदिकजेते॥ साधनसकलमुक्तिकेते
तेते॥ इनसबहिंनतैंमोहिनपावै॥ साधुजंनपलमांहिमिर
लावै॥ ५॥ उनतैंमनकौसंगनछुटै॥ ममचरननिमैंचित्तन

दिवुड़ैं॥ तातैंमोदिनपावैउनतैं॥ पावैबचनसाधुकेसुंनतैः
ई॥ साधुऐसेबचनसुनावैं॥ सत्रुमित्रसुषदुषजनावैं॥ सा
रअसारकालनहिकाला॥ साधदिषावैसबततकाला॥ ७
सबतैंमनकोसंगमिटावै॥ मेरेचरनकंवललपटावै॥ ऐसी
बुधिभवसागरतारैं॥ मेरैजंननततकालउधारैं॥ ८॥ जेतेतिरै
तिरैंगेजेते॥ असअबहुंतरतैहैकेते॥ तेसबसाधुसंगतैंजा
नैं॥ दुजौऔरउपाईनमानैं॥ ९॥ षगम्रिगजातुधानअसुरा
दिक॥ चारणसिंधनागगुह्यादिक॥ अपसरविद्याधरगंध्रबा
॥जिनिजिनिपायौतेतेसरबा॥ १०॥ वैस्यसुद्रअंत्यंजअरुना
री॥ बहुराजसतांमसअधिकारी॥ जुगजुगजेसतसंगतिआये

॥ तिनह्नी तिनि मेरे पद पाये ॥ ११ ॥ व्रित्रासुर विषपरबा बांनी ॥ ब
लि प्रहलाद बीभीषन जांनी ॥ मय सुग्रीव री छुद हनुवंता ॥ गज
अरु गीध व्याध अघवंता ॥ १२ ॥ तुलाधार कुब्ज्या ब्रिज गोपी ॥
धरमनकी सीवां जिनि लोपी ॥ जिग पतनी बिप्रनि की बनिता ॥
पुरुषनि की द्वी अवमनिता ॥ १३ ॥ औरऊ अनेक कहां लौं कहि
ऐ ॥ कहत कहत कहौं अंत न लहिऐ ॥ तिन कछु बिद्या बेद न जां
नें ॥ सास्त्र जोग न ही पहीचांनें ॥ १४ ॥ जप तप जग्य ब्रता दिन
कीनै ॥ औरौ धरमन कोई चीन्हैं ॥ परि जो साधु संगति तिनि पा
ये ॥ तौ सब मेरे चरननि आये ॥ १५ ॥ अरु तु उधव यो मति जां
नें ॥ तिनकौ संगत मेरी मांनौं ॥ उधव संतन मैं हैं नांही ॥ मैं

हि है संतन उर मांहि ॥ १६ ॥ किनहि मिलौं धारि कै लनन कौं ॥ मि
लि कीरि सो धौं तिन के मन कौं ॥ ऐसी विधि एकन कौं त्यारौ
॥ एकनि साध रूप उधारौ ॥ १७ ॥ साधुन है मन के मल हरैं ॥
सो मन अपनें चरणनि धरैं ॥ ऐसी विधि तिन कौं उधारौं
॥ जहां त्यारौं तहां मैं ही त्यारौं ॥ १८ ॥ साधु संग सो मेरो संग ॥
साध सकल है मेरौ अंग ॥ तातैं दोउ साध संग जांनौं ॥ एतो
दोउ मेरई मानौं ॥ १९ ॥ गोपी गाई वृक्ष नग नागा ॥ औरैं मुढ कु
धि वडभागा ॥ मम सतसंग प्रेम तिन बांध्यौ ॥ ताव जगति
मो कौं आराध्यौ ॥ २० ॥ और कछु साधन नहि जांन्यौं ॥ अरु
नहि ब्रह्म रुप करि मांन्यौं ॥ परि तिन कौं हित मोसौं जयौं ॥

तातैं सब मनको मल गयौ ॥२१॥ अमहिं बिन तिनि मो कौं पायौ ॥ अति अपार भवदुष मिटायौ ॥ जाकौं जोग सांख्य बुतदां नां ॥ जग्य बेद बिद्या बिधि नांनां ॥२२॥ करि संन्यास बहुत दुष सहैं ॥ नेऊ मो कौं कदे न लहैं ॥ ता कौं तिनि सुषही मैं पायौ ॥ जो केवल मन मो सौं लायौ ॥२३॥ रामसहित मोहि पायो जबंही ॥ चले अकरूर मधुपुरी तबहिं ॥ तबतैं मो पी मेरे हेत ॥ पाई मुरछा न्तई अचेत ॥२४॥ बहे स्यौं समस्रिमहा दुष पावैं ॥ निसिब सुरि मम चरण निध्यांवैं ॥ मा हि छोडि सब दूष मय देषैं ॥ लोक बेद कुल कछु न लेषैं ॥२५॥ जे निस मो संग पलसी बीतैं ॥ तेई तिन कौं कलप विति तैं ॥ मेरे गुण निसुनैं अरु गावैं ॥ लीला रु

पङ्कदैयमै ध्यावै ॥२६॥ कवहुं विरहमहादुष रोवैं ॥ कवहुं तपै दंसु दि
सि जोवैं ॥ कवहुं प्रांनत जनकी त्राषैं ॥ ममद रसन आसा तें राषैं
॥२७॥ नींद त्रुषतिस सकल गंवाई ॥ और देह गुन रह्यौ न काई ॥ ति
नके दुष तें ईपें जांनें ॥ कै मैं तीजो कह्या बषांनें ॥२८॥ विरह प्रचंड
अनल अधिकारा ॥ सकल विकार तए जरी छारा ॥ प्रेम प्रवाह
सकल मल छाले ॥ यौं मो विवके अंतर टाले ॥२९॥ तव यह उप
जी परम अनुपा ॥ तुली आप नई मम रुपा ॥ ज्यौं जोगे सुर कुंस
दि ध्यावै ॥ ह्वै करि ब्रह्म आप विसरावै ॥३०॥ अरु ज्यौं सरिता सिंधु
समावैं ॥ नांम रुप गुंन तेरगं वांवै ॥ त्यौं वै नई रुप सव मेरो ॥ द्वैत
त्रावकहुं रह्यो न नेरो ॥३१॥ आपापजो निअवला तेसारी ॥ अ

रुस्रुतिकीमरजादाटारी॥ निजपतिछांडिकीयेविभचार॥ अ

रुतिनिमोकौंजांन्योजार॥ परीताकुंजवसिंधुमिटायो॥ सतनि

सहस्रगिममपदपायौं॥ ३३॥ तातैंसुनिउधववडभागा॥ लो

कवेसवकौकरित्यागा॥ जोहैसुन्योसुननकौंजोई॥ प्रवर्त्तिनि

वर्त्तिजोकछुहोई ३४॥ सबतजिएकसरणिममआवे॥ हैतं

आवमनतैंबिसरावे॥ जहांतहांममरुपहिदेषे॥ आपपरक

छुऔरनलेषे॥ ३५॥ ऐसैंहैकरिमोकौपैहे॥ जातैंजगतज

नमिनहिंऐहै॥ यौंहरिजीबांणीबिस्तिरी॥ तबउधवआसंका

करी॥ ३६॥ उधवउवाच॥ प्रभुतुमत्यागबेदकौकह्यौ॥ सोमेरे

उरसंसयरह्यौ॥ तुम्हारीआग्याबेदकहावैं॥ ताहिछेडिकेसैंसु

षपावैं ॥ ३७ ॥ तुम हि स्रुति मैं कर गोसाईं ॥ तुम ही इहा दुरि करिनं
षै ॥ तातैं मन भ्रमत है मेरौ ॥ थिर किजैं अपने जंन केरौ ॥ ३८ ॥ किं
धौं वैस ति कि धौ एदेवा ॥ याकौ मो हि बतावौ भेवा ॥ तब गोपा
ल बचन उचारै ॥ जैंार विउदै मधि अंधियारैं ॥ ३९ ॥ श्री भग
वानुवाच ॥ उधव अब सुनि उतम गंपाना ॥ जांतैं तुव हुदै भ्रम
नानां ॥ प्रथम हि आप निरंजन एका ॥ और कछु न हि हुतौ अ
नेका ॥ ४० ॥ बहुरि कीयौ माया बिस्तारा ॥ रच्यौ देह बहु अंग प्र
कारा ॥ तामै आप प्रवेसा कीयौ ॥ प्राण अरु सब संग करि लीं
यौ ॥ ४१ ॥ सो तास बब चक्र आधारा ॥ परा नाम कान्हौ आगार
॥ मणिपूरक पसंती नांमां ॥ चक्र बिसु धमध्यमा धोमा ॥ ४२

॥ बाह्रि प्रगट वैषरी बांनी ॥ जो यह लोक रु बेद बषांनी ॥ सुरल॰
घु मात्र अक्षर जेते ॥ नांना नांति स्तोरे तेते ॥ ४३ ॥ लोक मांहि यो
रे बिस्तारै ॥ बेद मांहि तिरे सीहि है सारै ॥ परि तिन को बहु बिधि
बिस्तारा ॥ जा को कोइ लहै न पारा ॥ ४४ ॥ जैसै अनल काठ मथि
काढ्यौ ॥ इधन पवन संग बहु बाढ्यौ ॥ यौं मम बांनी कौं बिस्तारा ॥
॥ जातैं प्रगट्यो सकल पसारा ॥ ४५ ॥ यह बिसतार सबद को सा
रौ ॥ जामैं चत निरूपह मारो ॥ इंद्रिय उ जीद स प्रकारा ॥ सुत्र रु म॰
न बुधि चित अहंकारा ॥ ४६ ॥ सत रज तम माया गुन जांनैं ॥ स
ब बिस्तार तिन्है कैं मांनैं ॥ जो अद्वैत एक निरधारा ॥ तिन की॰
द्वै माया बिस्तारा ॥ ४७ ॥ तिन मैं बहु तत्त्व जाति अस्पो ॥ उत॰

ममध्यबहोतप्रकास्यो॥ विधिनिंषधतातैकरिलिए॥ सुष
दुषहैंताकेफलत्नये॥ ४८॥ यहसंसारएकतै ऐसैं॥ एकबीज
तैंबहुबनतैसें॥ तातैंयहसबएकआधारा॥ अरुएकहीकोस
कलपसारा॥ ४९॥ जैसैंवस्त्रतंतुमयहोई॥ ओतपोतदुजोन
हीकोई॥ ऐसैंयहजवतरुहैयेका॥ हैफलफुलरुसाषअने
का॥ ५०॥ यहसबममचेतनआधारा॥ परितैंहुचैंतनतेंन्या
रा॥ सोचेतनहेमेरोअंसा॥ यामैंजुलिनओनेंसंसा॥ ५१॥
यहसंसारवृक्षहैजैसो॥ मैंजाषतहौंसुनियौतैसो॥ पापअ
रुपुनिबीजहैयाकैं॥ मुलअपारबासनाताके॥ ५२॥ आदि
हीकेत्रिगुणत्रिसाषा॥ तिनतैंपंचभुतपरसाषा॥ उपसाषा

मनअरुइंद्रियेदस ॥ सबदादिक सरवैपंचोरस ॥ ५३ ॥ कफअरु
बातपित त्रियबलकल ॥ सुषअरुदुषप्रगटएहैफल ॥ तामैं
हैपंछीकोबासा ॥ परमात्मअरुआतमपासा ॥ ५४ ॥ जमुयह
रिषयहजेदनजांनैं ॥ तेबहुजांतिनैवेदविधिठांनै ॥ तिनतैं
होवैबहुविधिबंधा ॥ जुगजुगदुषपांवैंतेअंधा ॥ ५५ ॥ जेयं
हदेहहइकरिजांनैं ॥ आपहिंपंछिन्यारैमानैं ॥ बेदसुमृतिस
बमायादेषै ॥ सकलअतीतआपकौंलेषै ॥ ५६ ॥ तबयहवि
धिनिषेधछुटकावैं ॥ सुषअरुदुषकैनिकटनजावै ॥ सकल
मंहिआपहिकौंमांनैं ॥ जेदेहहजतमायाजांनैं ॥ ५७ ॥ चेत
नसकिब्रह्मकरिदेषै ॥ औरसकलमायाकरिलेषैं ॥ परिय

दुसकल्लभेदतबपावै॥ जबसतगुरकीसरण दृढ्आवै॥ ५८॥ सदगु
रुबिनांनपावैकोई॥ ब्रह्मादिकन्नावैसोहोई॥ तातैगुरुकीसर
णदृढ्आवै॥ दृढउपासनांन्नक्तिबढावै॥ ५९॥ गुरुसेवाकोईए
सौप्रस्ताव॥ जातैंउपजैंमेरोन्नाव॥ गुरसेवातैंपावैन्नक्ति॥ गु
रसेवातैंसकलविरक्ति॥ ६०॥ गुरसेवातैंग्यांनदृढहै॥ गुरसे
वातैंकरमनिदहैं॥ गुरसेवातैंप्रेमप्रकास॥ गुरसेवातैंममन्कर
णनिवास॥ ६१॥ मोहिमिलनकौंईहैउपाय॥ गुरसेवाबिन
औरनकाई॥ तातैगुरकीसरणहीआवैं॥ तनमनधनसौंदेत
लगावैं॥ ६२॥ तातैंउपजैंज्ञांनकुठारा॥ सबपापनिकौकाटन
हारा॥ त्रिगुनलिंगसरीरउपाधी॥ जोआत्मकौंलागीव्याधि

॥ ९३ ॥ ज्ञान कुषर सकल सो हरै ॥ या बिधि आत्म निर्मल करै ॥
पीछैं ज्ञान ध्यान सब त्यागै ॥ निस दिन ॥ एक ब्रह्म अनुरागै ॥
९४ ॥ तब सो ब्रह्म दिसा दिसं भावै ॥ बहुरयौं जगत जन मिन दि
आवैं ॥ तातैं तुम सब साधन त्यागै ॥ निसदिन एक ब्रह्म अनु
रागै ॥ ९५ ॥ दोहा ॥ यह उधव तौ सौ कह्यौ ॥ ग्वब मोखं न मम म्यं पा
न ॥ अब बहुरयौं साधन सहित ॥ जाषौं परम निधान ॥ ९६ ॥
इति श्री भागवते महा पुराणे एकादश स्कंधे श्री भगवा
न उधव संवादे भाषा याहादशौ अध्याय ॥ १२ ॥ ॥ श्री भगवा
नुवाच ॥ सुनि उधव अब परम गियांनां ॥ जातैं पावै परम नि
धांनां ॥ जातैं ज्ञान न होई सौ कहौं ॥ या विधि तुव अज्ञांन हिरहौं ॥

॥१॥ सातिक राजस तांमस जैहैं ॥ उधव ते गुन माया के हैं ॥ सुष दुष सब तिनहि के जांनौं ॥ तिन तैं परें आतमां मांनौ ॥ २ ॥ तातै नर सातिक कौं गहैं ॥ सातिक करि रज तंम कौं दहै ॥ पीछै ब्रह्म माहि थिर होई ॥ सातिक कृत बत्यागै सोई ॥ ३ ॥ औसी विधि तीनौं गुन दहै ॥ तब हैं ब्रह्म ब्रह्म मैं रहै ॥ ज्यौं ज्यौं होइ सत्व अधिकारा ॥ त्यौं त्यौं प्रेम भक्ति विस्तारा ॥ ४ ॥ सकल बस्त सी लिक जब भजै ॥ तब हि सातिक गुण उपजै ॥ सातिक ज्यौं ज्यौं सौं त्यौं भक्ति ॥ त्यौं हि त्यौं नत बिरक्ति ॥ ५ ॥ तब रज तम दोउ मिटि जावै ॥ तातैं तिन के गुन नही आवै ॥ हरष आरु सोक मांन अपमांनां ॥ निंद्रा आलस गर्ब गुमांनां ॥ ६ ॥ राग दोष आदिक है

जेते॥ द्वंदसकलरजतंमकेतेते॥ तातैंजबएरजतंमजाहीं॥ त-
बतिनकेगुनउपजैंनांही॥ ७॥ तातैंसातिकसंगतिकरै॥ रज-
तंमकी संगतिपरिहरैं॥ मुलसकलकौंसंगतिकारन॥ संग-
तिबोरैसंगतिस्यारन॥ ८॥ देसरुकालपुत्रजलपांन॥ ग्रंथ
रुकरमजनमअरुध्यांन॥ गरन्ताधांनअरुआदिसंसकार॥ मं-
त्रजापएदसप्रकार॥ ९॥ एदसजाकौंहौवैजैसैं॥ गुण बिस्ता-
रैंताकौंतैसैं॥ सातिकतेसातिकउपजावै॥ राजसतैंरा-
जसअधिकावैं॥ १०॥ तांमसतैंतांमसबिस्तारै॥ जैंसैंएदं-
सतैंसैंकरैं॥ जाहिजामैंजोगुणहोई॥ सोसोउत्तमजांनैंसो-
ई॥ ११॥ परिजोउतिमसाधबषांनैं॥ सोवहसातिकउतिम-

जांनै॥ जो अति निंद्यतमोगुणसोहै॥ सोराजसकछुमध्यम-
जोहै॥ १२ तातैं एदससातिकसेवै॥ राजसतामसजा हिस-
होई॥ तौहूंसबछिटकावैसोई॥ १३ सातिकसंगतिउपजा-
वैसत्व॥ त्यौत्यौंलहैतत्किकौनतत्व॥ ज्यौंलगिदृढउपजैं विज्ञां-
न॥ देषैसकलएकभगवांन॥ १४॥ अरुदुन्हौदेहनिम्दमजानैं
सबविस्तारसुपंनसममांनै॥ तबयहब्रह्ममांहिथिरहोवै
॥सातिकहुंकिअौरनओवै॥ १५॥ ज्यौंबासनतैंउपजैंअंन-
ल॥ आरूढ़ोवैंमारुततैंप्रबल॥ सबबासनकौंदाहैंसो-
ई॥ आपहूंबहुरिउपसमितहोई॥ १६॥ त्यौंसाधनयाननतै
होवैं॥ हैंप्रचंडबासयातननकौंषोवैं॥ बहुरयौंआपउपसमि

तहोई ॥ साधनलेसरहैंनहिकोई ॥ १८ ॥ गुणातीतसोकहिएजो
गी ॥ तीन्यौंकालअकुझरसन्जोगी ॥ सोबहुस्यौंनवमैंनहिआवै
॥ ओहिमिल्यैमोमांहिसमावै ॥ १९ ॥ तातैंसबसाधनछुट
कावैं ॥ एकनिरजंनमोकौंध्यावैं ॥ तबहरिकिसुनीअदभु
तबांनी ॥ जंनउधवयहमहाबषांनि ॥ १९ ॥ उधवउवा
च ॥ हेप्रभुजीदहांऐसौकहिए ॥ ग्यांनादिककौंतजैसुष
लहिए ॥ परिजेविषयसुषनिकौंचाहैं ॥ तातैंबहौंआरंभ
संबाहै ॥ २० ॥ तैबापुरेसदादुषसहैं ॥ कबहुंचुलिनसुषकौं
लहै ॥ परितेनोविषियनदुषजांनैं ॥ जांनिमुक्तिक्यौंउदिम
ठानैं ॥ २१ ॥ ज्यौंबकरामारनकौंलियो ॥ लैछेरिनमैंठाढौकी

यो॥ वहनिरलजकछुनहीजांनैं॥ तिनसौं मिलि विषयादि
कठांनैं॥२२॥ अरु जैसैं गर्धव अरु कुता॥ तिरसकारते सदै
वहोता॥ सुषकेदेत सव निआधिनां॥ सदाहदै दुरवलअ
तिदीनां॥२३॥ वैतौ मुढकछुनहिजांनैं॥ तातैं विषयउद्य
म निठांन॥ येतौ नरजानैं सव वाता॥ देषेजगतचल्यौ जैसें
जाता॥२४॥ प्रथमै तौ सुख आवैनां हिं॥ जो आवैं तौ थिर
नरहांई॥ अरु जो दिनांचारनहि जावैं॥ कालहूं लैं तौ षांः
ननपावैं॥२५॥ काल निरंतर ग्रासत जावैं॥ एक दिनां ज
महार पठावैं॥ तहां नरक हैं वहुत प्रकारा॥ जिनकेदुषको
अंत न पारा॥२६॥ आगै चौरासीजमसार॥ विषयेनिके

बहुदुषबिस्तारे॥ यानवजनकेदुषअपारा॥ कहौंकहांलौं
वारनपारा॥ २७॥ ऐसीबिधिसबमांनवजांनैं॥ तौहुंक्यौं
आरंननिठांनैं॥ आपआपकौंदुषउपजांवैं॥ आपआ
पजंमहारिपछावैं॥ २८॥ सोयहसकलरूपाकरिकहै॥ मेरेउ
रकौसंसौरहो॥ यौंकहिकैंउधवजबरहैं॥ तबहरिजीप्रत्यउ
तरकहैं॥ २९॥ श्रीभगवानुवाच॥ उधवयहआतमअवि
नासी॥ ग्यांनसरूपपरमसुषरासी॥ सोजबहियातनमैंआ
वै॥ तबस्वाधिनबिषेसुषपावै॥ ३०॥ बहुरयौंतिनहितउद्य
मगहैं॥ नहिपावैतौदुषकौंलहैं॥ याबिधिसुषदुषजबहिजां
नैं॥ तबहिदेहआपकरिमांनैं॥ ३१॥ ऐसैंबढैदेहअहंकारा॥

तब ह्वै राजस को अधिकार ॥ राजस सहित जब ह्वै मन होई ॥
तब ए दुष सुष जांनैं सोई ॥ ३३ ॥ तब संकल्प विकल्प निकरै ॥ नि
स दिन ह्रदै ये बिषय सुष धरै ॥ तब जा सुष हि सुनै अरु देषै ॥
तब बस ह्वै निज सुष करि लेषै ॥ ३४ ॥ तब ह्रदै मैं बाढै कांम ॥
॥ ग्यांन बिचार न राषै नांम ॥ तातैं बढ़ै राजस अधिकार ॥
राजस तैं मन गहै बिकार ॥ ३६ ॥ तब राजस कौ बेग प्रचंडा ॥
ग्यांन हि मारि करैं सत षंडा ॥ तातैं ग्यांन सुनैं अरु जांनैं ॥
अरु औरनि सौं आप बषांनैं ॥ ३७ ॥ परि सो कांम न हि
ठहरावैं ॥ लेक रिप करि करम करवावैं ॥ परि जद्यपि या न
र की बुधि ॥ रज तम तैं न हि पावैं सुधि ॥ ३८ ॥ तौहू निस दिन

दोस विचारै ॥ उरतैं सकल कांमना टारैं ॥ सावधान आलसन
हि करैं ॥ क्रम क्रम मम चरननि चित धरैं ॥ ३९ ॥ आसन जिति
करैं बसि प्रांन ॥ निसदिन उर राखै मम ध्यांन ॥ अरु मम सि
द्धचार संनकादि ॥ सकल तत्व गंनतिन की आदि ॥ ४० ॥ ति
नि विचारि करि जोग ही राख्यौ ॥ सो तो है है और सनां ख्यौ ॥ १
ज्यौं ही त्यौं मन दु जो तजै ॥ अरु ज्यों ज्यों मम चरन नि त्त जैं ॥ १
४१ ॥ याही तैं सब मिटै विकार ॥ याही तैं छुटै संसार ॥ याही तैं
मम चरण नि पावैं ॥ बहुरि सौं जगत जनमि न दिखावैं ॥ ४२ ॥ १
तातै परम जोग यह राख्यौ ॥ जातैं मेरे सिस्यनि त्ता ख्यौ ॥ जब
यह बानी बोले कृष्ण ॥ तब उधव पंजन कीन्हौ प्रस्न ॥ ४३

॥ उधवउवाच ॥ हे प्रभु कौन समैं जा रूप ॥ तुम ज्ञा ध्यौय
ह ध्यान अनुप ॥ संनिकादिक निकौन बिधि लह्यौ ॥ क्यौं
पूछौ कैसैं तुम कह्यौ ॥ ४४ ध्यान सहित सब मो सौं क
हौ ॥ मेरे उर को संसा दहौं ॥ जब यह उधव कीनी प्रश्न ॥ तब
बोले करुणामय कृस्न ॥ ४५ ॥ श्री भगवानुवाच ॥ ब्रह्म
पुत्र संनिकादिक चारी ॥ मन तैं उपजे ब्रह्म बिचारी ॥ जन
म हि तैं जिनि गहि निवर्त्ति ॥ मन बच क्रम सौं तजी प्रव
ति ॥ ४६ ॥ प्रश्न करी तिनि ब्रह्मा आगैं ॥ इसो भेद ज्यौं सो व
त जागैं ॥ अति सूक्ष्म जांनी नहीं परै ॥ उतर कहौं कौंन उ
चरैं ॥ ४७ ॥ संनिकादिक उवाच ॥ हे प्रभु ब्रह्म ब्रह्म मैं दैवा ॥

याकोहंमदिखतावौन्नेवा॥ बिषयबासनाचीतहिगह्यौ॥
॥चितप्रीतिकरिकैंमिलिरह्यौ॥ ४८ दोउमिलेआपमेंजै
सें॥ नीररुषीरपरसपरजैसें॥ भिन्नचहएबिनमुक्तिनहो
ई क्यौंकरिभिन्नहैहिएदोई॥ ४९ यहबांणीब्रह्माउर
धारी॥ उतरदेनकोबहोतबिचारी॥ परितौहुउतरनहिंआ
यौ॥ जातैंकरमनिसौंमनलायौ॥ ५० तबब्रह्मायहबि
धिबिचारी॥ जादिनकोईताहिमुरारी॥ तातैंकर्‌यौचितव
नमेरौ॥ हंसरूपमैंआगट्योनेरो॥ ५१ हंसरूपमैंतातैंदिषरा
यौ॥ जातैंयहआसैंसमुझायौ॥ कैजोहंसवृतिकौंगहै॥ सो
ईयाकेभेदहिलहैं॥ ५२ तबतिनिमोहिदेषिसुषपायौ॥

ब्रह्मा मिलि ऊठि माथो नायौ ॥ करी बिनती तब बचन बषां-
नैं ॥ हे प्रभु तुम कौं दंमन दिजां नैं ॥ ५३ ॥ तब तिन सौं मैं जो
कछु कह्यौ ॥ तिन के उर कौ संसा द ह्यौ ॥ ते इ बचन कहौं
अब तो सौं ॥ सावधान ह्वै सुनियो मो सौं ॥ ५४ ॥ तुम को-
ह्यौ पुछौ जब हि ॥ ग्यांन कह्यौ उर मैं तब ही ॥ मन को सं-
सो तब हि मीटायो ॥ विद्यमान परब्रह्म बतायौ ॥ ५५ ॥ हं
स उवाच ॥ विप्र हू प्रश्न करि तुम जैसैं ॥ करनी नही त्रवै तै-
सैं ॥ वस्त विचारै द्वैत नही कोई ॥ तो या को उतर क्यौं होई ॥ ५६
॥ अरु जो देह रूप उकदिए ॥ तौ हूं कछु द्वैत न दिल दिए ॥ पं-
च भुत निरमित तन सारे ॥ जे कछु जां हां लगि है बिस्तारै ॥

५७॥ तातैं सकल एक है नांही॥ दूजौ कौंन विचारो मंन्ही॥ पुरुष
हि षोदे षै तैं एक॥ प्रकृति हि छि हुं नही अनेक॥ ५८॥ तातैं अ
लकरी तुम ऐसी॥ वहौ तनि मांहि कजैं जैसी॥ अरु जो ही
सै तत्व विचारा॥ तौ न हि प्रकृति पुरुष विस्तारा॥ ५९॥ जौक
छु दिसे सुनियें कहिए॥ मन अरु बुद्धि जहां लौं गहिए॥ सोंस
बै मैं ही दुजौ नांही॥ ऐसो ग्यांन धरो उरमांहि॥ ६०॥ नांम
रूप तै सकल विकारा॥ आदि अंत मधि मांटी सारा॥ स्यो ही
आदि अंतिम धि मांही॥ मैं ही एक है तक छु नांही॥ ६१॥ है तहि
छि सो दुष को कारन॥ अद्वहि निज सुष विस्तारन॥ लगे त
रंग नि सो दुष लहे॥ तब सुष जब तैं त जिज लगा है॥ ६२॥ त्यौं ही

द्वैतद्दिष्टिसोदूष॥एकदृष्टिसोईनिजसुख॥अरुतुमअस्तवि
रचिह्किरी॥सोमैंझूदैआपनैंधरी॥६३॥विषनिमांहिंचित
मिलिरह्यो॥अरुविषयनिचितदिढ्ढगह्यो॥देपुन्नोयहयौं
ह्रीसति॥परितेआत्ममांहिअसत्य॥६४॥विषयचितएदोउ
माया॥आतमब्रह्मनिरंजनराया॥विषयनिसौंजबचि
तलगावै॥तबहिचिततिनतैंसुषपावैं॥६५॥तबविषय
निकेध्यांनहिकरै॥तिनकेहेतकरमविस्तरै॥तातैएकमेक
मिलिरहै॥ऐसेंजनमिजनमिदुषसहै॥६६॥तातैंआत्ममे
रोऐसा॥मेरीसरणिगहैतजिसंसा॥बाहरिहूतैंविषयप
रिहरैं॥अरुचितसौंचितवननहींकरैं॥६७॥विषयरुचितब्र

याकरि जांनैं॥ तिनतैं परै आपकौं मांनैं॥ ब्रह्मसरूप एक अवि-
नांसी॥ ग्यांनरूप चेतन सुषरासी॥ ९८॥ मन अरु बुधि चित
अहंकारा॥ इंद्रिय विषय देह विस्तारा॥ एन्हमरूप सकल है मा
या॥ न्हलिआतमा आप बंधाया॥ ९७॥ ऐसें जांनि सकल
छिटकावैं॥ आप हिमो हिएक करि ध्यावैं॥ जाग्रत सुषि सुंष
सिंबषा नैं॥ ते आचरण बुधि के जांनैं॥ ९९॥ तिनतैं परें आ-
तमा रूप॥ सदा एकरस परम अनुप॥ सा तिक हूं तें जागनै हो
ई॥ राजस सुपन लहै सब कोई॥ ९९॥ सुषपति तांमस गुणतै आ
वै॥ मन अरु बुधि तिहौंकौं पावैं॥ एकरूप आतम तिहूं मांही॥ सा
षी न्हुत लिपै कहूं नांही॥ १०॥ तातैं तिहूं गुण नितैं न्यारौ॥ निजा

नंदमयरूपहमारो॥ तामैंथिरह्वैकरैविचारा॥ सहजैहिछुटेत्रि
गुनपसारा॥ ७१॥ देहविषैबांध्यौत्रभिमांनां॥ तातैंजेदउ
ह्योपहनांनां॥ तातैंनिजानंदबिसरायौ॥ कालअसंष्यम
हादुषपायौ॥ ७२॥ ऐसैजांनितजैंअभिमांनां॥ करेंनकरैं
सुषनिकौध्यांनां॥ तिहूंगुणनिसौंकरैंबिरकत॥ चौथैंपदबां
धैंआसकत॥ ७३॥ नवसहजैंमोमांहिसमांवैं॥ बहुरुयौंदेहक
देनहिपावैं॥ अरुजोसकलग्रंथबिस्तारै॥ वेदधर्मनांनांबि
धिकरै॥ ७४॥ प्रवरतिमांहिबहोतबिधिजागैं॥ परिजोजांनिहै
तनहित्यागैं॥ सोनितसोवतजागतजांनै॥ ताकौंमैंदृष्टांत
बषांनैं॥ ७५॥ जैसैंसैनकरैनरकोई॥ सोवतसुपनलहैंपुनि

सोई ॥ बहुतक त्यों तिकरै बिवहारा ॥ लेन देन जलपांन अहारा
॥ ७६ ॥ बहुर त्यों रैनि जयें तें सोवैं ॥ दिंवस जयें त्यों ही उठि जोवैं ॥ ५
ऐसी बीधि केई दिन बीते ॥ जागत सोवत सकल बितीतें ॥ ५
७७ ॥ बहुर त्यों वह ऐसी मन निश्चांनें ॥ राति हु दिन की निंद हु त्यां ५
नें ॥ कदे न सोवैं जागत रहैं ॥ साव धांन आलस न हि गहैं ॥ ७८
॥ ऐसै काज आपनों करै ॥ चोरादिक धंन कोंन हिहरैं ॥ परि
जब इहां जागि करि देषै ॥ तब वह सकल हि थाक रि लेषैं ॥ ७९
॥ सोवन जागन सब बिवहारा ॥ जाकै हित जागे सो सारा ॥ ५
आप हि सब मिथ्या करि जांनैं ॥ कब हु न जुलि सस्पन हि मांनैं ॥
८० ॥ त्यों ही बेद धरम आचरणं ॥ अरु ते सुष जिन के हित क

रूरणं ॥ ते सब सु मरूप बिवहारा ॥ पंडित छोडै सकल पसारा
॥ ८१ ॥ जमतैं धरयौ देह अभिमांनां ॥ तातैं वरण आश्रम बि
धि नांनां ॥ तातैं बहु करै बहुत बिधि करमां ॥ सुष निमि
त विस्तारैं धरमां ॥ ८२ ॥ परि ते सकल पसारा चेतन क
रि बरताबन कूं सब क्रिया करि जांनैं ॥ स्वपन जाग्रत सम
करि मांनैं ॥ जौ देहादिक सकल पसारा ॥ चेतन करि बरताबन
हारा ॥ ८३ ॥ सुषदुष भोग करैं अरु जांणैं ॥ आपही सुषी दुषि
करि मांनैं ॥ बहुर्यौ जब हि सु सुष कौं पावै ॥ बहो बिवहार
त्रिसौं मन लावैं ॥ ८४ ॥ तब बहु जांनैं सकल पसारा ॥ आप
पर सुष दुष बिवहारा ॥ बहुरि सुष त्रिमांहि सब जांई ॥ म

नबुधिचित अहंकारनकाई ॥८५॥ नब आतमां निरंतरिरहै
॥ जागे सकल बात जो कहै ॥ लियौ दीयौ अरु आयो गयो ॥
॥ जहां लगे पीछे अनुभयो ॥ ८६ ॥ सो आतमा एकरस रहै ॥
तिहुं काल की बात निकहै ॥ यौं अबिनासी आतम एक ॥
दुजे माया भेद अनेक ॥ ८७ ॥ तीन्य अवस्था ते है मन के
॥ मन मै आत्मा से है तन के ॥ तिन तिंन कौं तीन्यौं गुन जे
हैं ॥ तीन्यौं गुन माया के ते हैं ॥ ८८ ॥ ऐसी बिधि निश्चय
सां जांनै ॥ निसदिन हृदै बिचार नि ठांनै ॥ सकल उपाधि
निको आधारा ॥ ग्यांन षड्ग काटै अहंकारा ॥ ८९ ॥ हृदै
मां हि मैं ताकौं तजैं ॥ सावधांन ह्वै कदे न तजैं ॥ यह सो

रो जग भ्रमकरि जांनैं ॥ मनकौ कृतं मिथ्याकरि मांनैं ॥ ८० ॥
ज्यौं एकनिकौं उपजत देषै ॥ अरु बिनसत निकौं पेषै ॥ सो
ई रीति सकलकी जांनैं ॥ स्वप्न समांनि हृदै मैं मांनैं ॥ ८१ ॥
अग्नि सहित ज्यौं लकरी होई ॥ बालक लेकरि फेरैं कोई ॥ और न्हांति दीसैं और ॥ थिर परि चंचल है नहि ठौर ॥
८२ ॥ त्यौं यह जग नर है थिर नित ॥ परि अति चंचल सकल अनित ॥ एक ब्रह्ममैं सब आन्हास्यौ ॥ त्रिगुण
पाई बहु भेद प्रकास्यौ ॥ ८३ ॥ स्वप्न रूप गुण मैं ज्यौ जोगी
॥ यौं बहु भांति बिचारै जोगी ॥ तातैं जगतैं दृष्टि उतारैं
सांच जानि हृदै न हि धारैं ॥ ८४ ॥ त्रिष्णा छोडै निश्चल रहै

॥मनवचकरमककुकर्मीनिगहै॥ इहांरहितब्रह्मरसजोगी॥
यौंनिजानंदमयपदपावैंजोगी॥८५॥ औसैंजथाजांनिसव
त्यागै॥ निहचलह्वैब्रह्मअनुरागै॥ सोजोरहैदेहहूंमां
ही॥ तौहूंफिरिभ्रमउपजैनांही॥८६॥ जोयहदेहजाईक
हुपावै॥ उठैपीवैंअरुषावैं॥ औरौंकछुकरैविवहारा॥ परि
सोसिधनजांनैंसारा॥८७॥ निहचलरहैनिरंजनमांही॥
देहादिककछुजांनैंनांही॥ ज्यौंकोईतनिवस्त्रनिधरैं॥ बहु
स्यौंपुरापानकहूंकरैं॥८८॥ सोतिनिवस्त्रनिजांनैंनांही॥
प्रथमबंधेतातैंनहिंजांही॥ करमरहैयातनकेजौंलौं॥
सहितइंद्रियनिबरतैंतौंलौं॥८९॥ करमहितानेकतन

९८

कौं पोषै ॥ षांनपांनसौं निति संतोषै ॥ जोगी ब्रह्म मांहि थि

रि रहै ॥ देहादिककी सुधि न लहै ॥ १०० ॥ जैसैं सुपन देषि करि

जागै ॥ ता सुपनां सौं न हि अनुरागै ॥ तैसैं मोह निसा तैं जा

ग्यौ ॥ कछु न लिपैं ब्रह्म अनुराग्यौ ॥ १०१ ॥ देह थकौ ब्रह्म

हि मिलि रह्यौ ॥ जब को सकल बीज तिनि दह्यौ ॥ सो बहु

रयौं जब मैं न हि आवैं ॥ ब्रह्म मिल्यौ सो ब्रह्म समावै ॥

१०२ ॥ तातैं देह आदि बिस्तारा ॥ जरम करि तजौ त्रिगुन प

सारा ॥ त्रिगुंणं तीत ब्रह्म कौं सेवैं ॥ विषयनि कौ कछु नां

मन लेवैं ॥ १०३ ॥ विषय चित दोउ जरम जांनौं ॥ ब्रह्म मांहि

रहि दोन्यौं जांनौं ॥ सकल अतित आपकौं देषौ ॥ सब घट ए

कहै तन दि लेषौ ॥ १०४ ॥ ब्रह्म अरु आप एक करि मांनौं ॥ द्वैत
भाव कबहु जिनि आंनौं ॥ निस दिन ब्रह्म बिचार हि करौ ॥
परि ब्रह्म मेरौ उर मैं धरौ ॥ १०५ ॥ मम आधीन निरंतर रहै
॥ या बिधि जगत बीज सब दहै ॥ जातें बहौरि न जन्म मैं
आवै ॥ ब्रह्म रूप ह्वै ब्रह्म समावै ॥ १०६ ॥ यह मैं तुम सौं
कह्यौ बिचार ॥ सांख्य जोग सकल को सार ॥ मेरौ गुह्य म
ता अति जांनौं ॥ ब्रह्म तत्त्व तिहूं दै मै आंनौं ॥ १०७ ॥ तुम्
ह्यरो हेत मन मांहि बिचार्यौ ॥ मैं ह्वैं बिष्णु हंस तन धार्यौ ॥
मैं ह्यौं ब्रह्म सकल को ईस ॥ मो बिन और सकल अनीस
॥ १०८ ॥ सांख्य अरु सत्य तेज तप जोग ॥ प्रिय सम दम श्री कीर

तिन्होग ॥ औरौं वस्त सकल माया पावै । मो बिन न चहु साध
न ऊ गहै । जहांलौं सार ते समस्त मेरे आधार ॥ १०९ ॥
तातें जो मम सरण हि आवें ॥ उत्तम वस्त सकल सो पा
वैं ॥ मो बिन बहु साधन ऊ गहैं ॥ तो इह कहे न सुष कौं लहें
॥ ११० ॥ में निरगुण परि सब गुण सेवै ॥ में निरपेक्ष सक
ल चित देवें ॥ सब को हित सब को आधारा ॥ सर्वव्यापक ह
रण अवतारा ॥ १११ ॥ सब उपजी उ सब प्रतिपालौं ॥ सब
षेषौं सब प्रतिपालौं ॥ सब पोषौं सब संकट टालौं ॥ ता
तैं मो हित जै दुष पावैं ॥ तब ही सुषा सरणि जब आवै ॥ १
१२ ॥ सरणागत कौं देगि उधारौं ॥ आप मिलाऊं जब तत्त

यहारैं ॥ तातैंसब तजिमोकों भजौं ॥ पावौमोहिजगतत्त

यतजै ॥ ११३ ॥ उधवमैयहग्यानसुनायौ ॥ संनिकादिक

निपरमसुषपायौ ॥ इहैरह्यौसंदेहनकाई ॥ मोहिमिलन

की बिधिसबपाई ॥ ११४ ॥ बहुतभांतिममपुजाकरी ॥ ब

हुतभांतिअस्तुतिबिस्तरी ॥ मेरौभजनहृदैमैधारयौ ॥

औरसकलततकालनिवारयौ ॥ ११५ ॥ आपकृतार्थक

रितिनिमांन्यौं ॥ इतआवतजिब्रह्मपिछान्यौं ॥ तब

तिनकेअस्तुतिकरतैही ॥ ब्रह्माकैदेषतआगैंही ॥ ११६

॥ सबहितकोंआनंदबधायौ ॥ तबमैंअपनेंधामसि

धायौ ॥ तातैंउधवयहतुम ~~...~~ बैनमैंतुम्हेंपे

जांनौं ॥ अपनौं परम भाग करि मांनौं ॥ २७ ॥ सनिकादि
क निस मां तुम कीए ॥ तेई बचन मैं तुम्हें यै दीए ॥ तातें एह
ग्यांन उरि धारौ ॥ ब्रह्म जांनि सब द्वैत निवारौ ॥ २८ ॥ मम
आधीन सदा ही रहौ ॥ दुजि सकल वासनां दहौ ॥ ऐसें
ह्वै निजपद कौं पैहौ ॥ जातें जगत बहुरि न दिखैहौ ॥ २९
॥ दोहा ॥ यह उधव तो सौं कह्यौ ॥ परम ग्यांन निज सार ॥ या
कौ गहि निजपद लहै ॥ छुटै सब संसार ॥ ३० ॥ इति श्री
भागवते महापुराणे एकादशस्कंधे श्री भगवद् उध
व संवादे हंस गीतायां भाषायां त्रियोदसौ ध्यायः ॥
१३ ॥ ऐसो सुनि हरिजी कौ ग्याना ॥ भक्ति उधार करन म

सबंध्यान ॥ यह उधवहृदकरि उरधरि ॥ परिकछुपरसनहृ
ष्टसौंकरी ॥ १ ॥ उधव उवाच ॥ परमदयालदयानिधिदेवा
॥ मोकौंबडो ब्रतायोजेवा ॥ त्यागकिहूंतैंपईएतुवचरणं
॥ छुटैंजगतजनमअरुमरणं ॥ २ ॥ परिअबएकप्रश्नकोक
हौं ॥ मैरेयासंदेहदिढहौं ॥ जेबहुविधिस्रुतिसुमृतिजांनैं ॥ ते
तौंबहुसाधननिबषानैं ॥ ३ ॥ मुक्तिहेतिबहुपंथनिकहे
॥ अरुतेऊबहुतैंमिलिगहे ॥ तातैंतेउपंथअसेष ॥ तक्तिस
मांकेकछुबिसेष ॥ ४ ॥ जाजापंथतुम्हैंप्रभुपईए ॥ बहुस्योंनव
सागरनहिंआईए ॥ सोसोपंथकृपाकरिकहो ॥ मेरीसकलसु
दलादहैं ॥ ५ ॥ तुमबिनयहदुजौनहिकहै ॥ ग्यांनलहैसोतु

मतैं लहै॥ उधव ऐसी पुछी बांणी॥ तब उतर किस्न बषां-
णी॥ ६॥ श्री भगवानुवाच॥ उधव कल्प समय जब त्रयो
॥ तब यह तत्व लीन ह्वै गयो॥ पुनि मैं सृष्टि समै यह ग्यानं॥
ब्रह्मा सौं श्रुति तत्व षानं॥ ७॥ सो श्रुति पुनि ब्रह्मा पढायौ-
॥ भृग्वादिक सो पंच सुपायो॥ सप्तमहारिसि सिध्र जिनि आ-
दि॥ अरु स्वयं भुमनु मन्वादि॥ ८॥ तिन अष्ट नितै यह बि-
स्तारा॥ नांनां बिधि के भेद अपारा॥ सुर नर असुर सिध गं-
धरब॥ बिद्याधर जक्षादिक सरब॥ ९॥ सप्तदीप नर बहु प्र-
कारा॥ किंनर किंपुरुषादि अपारा॥ सतरज तम तिनकी उ-
तपति॥ तातैं बहु बिधि भई प्रकृति॥ १०॥ तिनतैं भये बहु त-

विधिचेर । तिनतैंसेइजांनेबेद । बेदतत्वसो वितहूरह्यौ
आपसुन्नावसमांतिनिकह्यौ ॥ ११ ॥ ज्यौंज्यौं तिनिकेन्नये
स्वन्नाव । त्यौंत्यौंजांन्यौंम्रुतिकेन्नाव । स्यौंह्रित्यौं आचार
लनिकरै । त्यौंत्यौं आपसुम्रुतिविस्तरैं । १२ । परंपराजेति
नतैंह्वोवैं । तेतिनकेक्रतसम्रुतिजोवैं । तिनतैं आपकरै
बहुपंथा । नांनांनांतिचलांवैंपंथा ॥ १३ ॥ ऐसीविधिउप
जैंपाषंडा । ग्यांनरुधरमहुईसतषंडा । ममम्मायाकरिमो
हितहौवैं । तातैंतत्वपंथनहिंजोवैं ॥ १४ ॥ अपनिआपनि
रुचिउनमांनां । करैकरमअरुन्नाषैंग्यांनां । नांनांविधि
साधननिसुनांवैं । तिनतिनतैंकलांनबतावैं ॥ १५ ॥

ऐकै बहुबिधि करम निनावै ॥ ऐकैं कहैं जसदि बिसारिऐ
॥ जातैं सकल दुष निति तैं टरीयें ॥ १६ ॥ जाको जस या जग मै
जौ लौं ॥ सो नर रहै सुरग मै तौं लौं ॥ एक कहै इहां ही कांम बषांर
नैं ॥ आगैं स्वरग नरक नहि जांनैं ॥ १७ ॥ जो तनि इहां करै
भोग करै सबनि को ॥ इहां ही छो डि जाई ता तन को ॥ र
आगै सुष दुष लहैं न काई ॥ तातै भोग करै सब काई
॥ १८ ॥ औसे ग्रंथ निकहि जर मावैं ॥ धर्मराई की षंव
रि न पावै ॥ एक कहैं समद मत्र अरु मत्र ॥ तु जै साध
न सकल अ सत्य ॥ १९ ॥ जो य ग्रंथ बहु साषी बषांनौ
तिन कौं मुद मरु की कौ जानै ॥ साम दाम दंड अरु भेद

॥ इंनकौंगहैंएकपदिवेह ॥ २० ॥ न्याईसदतसबउद्यमकरैं-
॥ उतमधरमजांनिउरधरैं ॥ इंनजोगउतमकरिजांषैं ॥ इ
हैमुक्तिसाधनकरिराषैं ॥ २१ ॥ एकैजत्पदांनतपगहैं ॥ ए
कैंजमनियेमनिसंग्रहैं ॥ एकैतीरथव्रतमनधरैं ॥ कहैं-
कहांलोबहुविधिकरैं ॥ २२ ॥ तिनतैंसुरगादिकसुषपा
वे ॥ सीनजमेईहां फिरिआवें ॥ बहुस्योंनीचजोनिबहै
लहैं ॥ नरकनिमैकेईजुगरहैं ॥ २३ ॥ अरुजवरहैंसुरगहूं-
मांहीं ॥ तबहूंकछुसुषपावैंमांहीं ॥ कांमक्रोधनिंदांअप
मांनां ॥ रागदोसईछाआनांमांनां ॥ २४ ॥ इत्यादिकनिग्रहै
सनितरहैं ॥ तातैंकौंनजांतिसुषलहैं ॥ जक्ति बिनांबि

धिलोकहिजावैं॥ लोकालततहोइकैतैदहावैं॥ तातैंउधव
उरमहैसारा॥ सुषममचरणनिकोआधारा॥ जिनिमे
रेचरणनिचितधस्यौ॥ साधनसाध्यसकलपरिहस्यो॥
२६॥ तिनकोंउधवसोसुषहोई॥ सोसुषकहुनपावेंको
ई॥ सोसुषकह्योसुन्योनहिआवैं॥ सोईषैंजानैंजोपावैं॥
२७॥ सोपावैंजोमोसोंमांगै॥ औरसकलआसयकोंत्या
गै॥ ममआधिननिरंतररहैं॥ दुजिसकलकांमनांदहैं॥
२८॥ सकलवस्तकोकीन्होंत्याग॥ अंतःहकरणषरोवै
राग॥ संमदरसीनितसीतलचित॥ ममचितवनह्रदेहिर
त्रित॥ २९॥ ताकोंदसोंदिसासुषरूप॥ सोसुषजोअतिप

रमअनुप॥ जोजंनमैरेसुषकौंजानैं॥ ताकौमनकतहुनहि
मांनै॥ ३०॥ ताकैसबआधिनहिंरहैं॥ परिसोमाबिनकछु
नगहैं॥ ब्रह्मलोककौंकदेंनलेवै॥ इंद्रलोकपलचितनदे
वैं॥ ३१॥ सबभूराजनयननहिदेषैं॥ सप्तपतालसुषनि
त्रिणलेषैं॥ जोगसिधिअणिमादिकअष्ट॥ जोगीजिनहित
सांधैंकष्ट॥ ३२॥ तिनहुंकौंकबहुंनहिलेई॥ आपहीतैंनिति
सेवैतेई॥ मुक्तिनिकटहिंरहैंसदाई॥ परिमैरोजनछ्वैवैनंका
ई॥ ३३॥ मैंहीएकसरदाप्रियताकौं॥ ममचरणनिचितरातो
जाकौ॥ ताहितैंमेरेप्रियसोई॥ ताबिनऔरनहिप्रियकाई॥
३४॥ त्यौंमेरोसुतबिधिनहिप्यारौ॥ नहिसंकरजोरूपहंमा

रो ॥ ननहि प्रियज्यौं संकरषण आई ॥ श्री अरधंगी यौं नहि सा
ई ३५ ॥ यौं नहि प्रिय मेरौ मम देहा ॥ जैसैं तुम सौं परम सनेहा ॥
॥ तुम सौं अक्क परम प्रिय मेरै ॥ ताकैं रहौं निरंतर नेरै ॥ ३६ ॥ ई
श्वर द्रत रूसी तल्लहै ॥ सब निरबैर सब निपरसायदै ॥ ब्रह्म
दृष्टि देषै सब मांहि ॥ ब्रह्म बिचार तजैं पल नांही ॥ ३७ ॥ मैं ताकौं
प्रथम दियौ करयौ ॥ त्रिगुण पास बंधन बिसतरयौ ॥ परि ताकौं
ऐसो बल न्यारी ॥ काटी माया सक्ति हमारी ॥ ३८ ॥ एते परि सब
औगुण तज्यैं ॥ उलटी आई मम चरण नित जैं ॥ अरु सब सुष
ताके बसर है ॥ सो तजा मो हि कछु न दिग है ॥ ३९ ॥ बहु तन के
न्व बंधन दहै ॥ नांम प्रगट करी मेरो कहै ॥ तिन तिकौं मम

चरणनिल्यावैं ॥ सदासबनितैं आपछिपावै ॥ ४० ॥ अहंका
रममतानहिंजांनैं ॥ मोहिछोडिदुजोनहिंजांनैं ॥ गुणअती
ततजनकेपाछैं ॥ यहतनधरिफिरौमैंआछैं ॥ ४१ ॥ सात्विक
गुणधारीयहदेहा: ॥ करौंसुधताचरननिषेह ॥ मिहकंचन
नतनदुनहिरक्त ॥ मोहीस्योनितहिअनुरक्त ॥ ४२ ॥ सीतन
लइदैयबिगतअभिमांन ॥ रूपावंतसबएकसमांन ॥
केहुकांमचलेनबुद्धि ॥ मोहिसेईपाईअतिसुद्धि ॥ ४३ ॥ मुन
क्तिहुतैनितनिस्पृहहैं ॥ तेजनमेरेसुषकोंलहैं ॥ तासुष
कोंसुषजांनैंसोई ॥ औरसकलजसुमुषैनहिकोई ॥ ४४ ॥
निस्पृहजननिस्पृहसुषपावै ॥ स्पृहावंतकेनिकटिन

आवैं ॥ विषयंनिकेबसमांनवहोंई ॥ इंद्रियजीतिसकैंनहि
कोई ॥ ४५ ॥ परीआधिनहोईममजबहि ॥ विषयाकछु
वनसकैंनहिंकैंसकैकरितबहि ॥ विषयसत्रुतेसकल
निवारयौं ॥ अपमिलाउत्रवजयटास्यौ ॥ ४६ ॥ पावकः
प्रगटकस्यौंहैअसम ॥ होईप्रचंडकरैंसबजसम ॥ त्यौं
मनत्नकीप्रगटजोहोई ॥ जारैंपापरहैंनकोई ॥ ४७ ॥ बहु
रिपापकोनिकटनआवैं ॥ नक्रिप्रतापमोहिसोपावैं
॥ साधेसिद्धिजोगअष्टांग ॥ बहुविधिजगपदहिंजोसंग
॥ ४८ ॥ सांष्यबिचारसकलजोजांनैं ॥ बेदपढैंदैवैंसबदांनैं
॥ तपहिकरैंईंद्रीयमनबांधैं ॥ औरसकलधर्मनिकोंसा

धैं ॥ ४९ ॥ तौहूं मोहि कदे न छिपावैं ॥ जक्ति मोहि ततकाल
मिलावैं ॥ एक जक्ति मो कों वसी करैं दुजौ तैं अति अंतर प
रैं ॥ ५० ॥ अधा सहित करैं मम जक्त ॥ तासौं मेरी अति आ
सक्ति मैं जु माहि सब न कोई सम ॥ मो बिन और सकल
अनिस ॥ ५१ ॥ सो मै जक्ति निके आधीन ॥ ते मो सौं ज्यौं ज
ल बिन मीन ॥ जो चांडाल जक्ति मैं आवैं ॥ ता हित न न्हाम
लता पावैं ॥ ५२ ॥ ब्राह्मण आश्रम वंदन करैं ॥ ता पद रेणु सीस
परि धरैं ॥ तीनौं भुवन दीस बसि ताकै ॥ मेरी जक्ति बिराजै
जाकै ॥ ५३ ॥ बिद्या पढै धरम बहु करैं ॥ जो वदया बहु बिधि
बिस्तरैं ॥ सत्यवंत अरु दृढ संतोष ॥ कबहुं कछु करैं न दो

रोष ॥ ५४ ॥ कष्टसहित पुरगत्तप साधैं ॥ मनइंद्रियदेह हि
कबांधैं ॥ तीरथव्रत निआदिहैं जेते ॥ सबआचरण
करैं जौ तेते ॥ ५५ ॥ परिजो मेरि त्रक्ति न होई ॥ तो निर्मल
होवैं न हि कोई ॥ बिन रोमंच द्रवै बिन चित ॥ आनंदासु
कला बिन नेत ॥ ५६ ॥ तौं त्यौं साधुन्न कि न हि कहैं ॥ त
क्ति बिना उर सुधि न लहैं ॥ द्रवैं प्रेम तें जो को चित ॥ कब
हुरोवै मेरे हित ॥ ५७ ॥ कबहुं गदगद वांनि होंई ॥ कबहुं
उचैं गावैं सोई ॥ कबहुं मधुर मधुर सुर गावैं ॥ कबहुं प्रेम म
गर हि जावैं ॥ ५८ ॥ कबहुं नृत्य प्रेम बस करैं ॥ कबहुं हसैं
गुणनि बिस्तरैं ॥ लोक बेद की लाज न जांनैं ॥ ज्यौं उनमंत्त

सकलथौंहांनैं ॥ ५९ ॥ ज्यौंमेरेऌ्रेसोजनहोई ॥ त्रिभुवन
सुधकरतहैंसोई ॥ सकलभुवनकेपापनिवारैं ॥ सकलभुव
नकौंसेभ्जनस्यारैं ॥ ६० ॥ जैसैंहेंममलिनताहोई ॥ बहुजल
मांहिधोईएसोई ॥ औरैंजतनबहुतविधिकीजैं ॥ हेंमहिब
होतकसोटीदीजैं ॥ ६१ ॥ परीकेहुविधिसुधनहोई ॥ कोटिक
जंतनकरैंजोकोई ॥ सोईहेंमअग्निमेंदीजे ॥ ६२ ॥ तातेंकोई
मलनहिरहैं ॥ अपनेंसुधरुपकौंगहैं ॥ त्यौंहिजतनकरैंजे
कोई ॥ परिआत्मानिरमलहोई ॥ ६३ ॥ मेरीभक्तिमांहिज
बआवैं ॥ तबसबकर्ममलनिछीटकावैं ॥ निर्मलहैंाइल
हैंनिजरुप ॥ पावैंमोहितजैभवकुप ॥ ६४ ॥ ज्योंज्योंमेरी

त्नक्ति हिकरैं॥ मेरगुण निहृदैमें धरैं॥ श्रवणकीरतनसुमिरन
हांनैं॥ ज्यौंज्यौं औरवासनांत्रांनैं॥ ६६॥ त्यौंत्यौंहृदैप्रकासे
यंन॥ देषैंब्रह्मिटैंसबत्र्यांन॥ हैतत्रावकबहुंनदिर
हैं॥ निर्चयनिजानंदपदलहैं॥ ६७॥ नैननिमांहिरोगज्यौं
होई॥ तातेंकछुनदेषैंसोई॥ पुनिज्यौंज्यौंऔषधहिलगा
वै॥ त्यौंत्यौंद्रिष्टिरोतिनितत्रावैं॥ ६८॥ त्यौंत्यौंसकलब
स्तकौंदेषै॥ आपहिपरमसुखिकरिलेषैं॥ तातैंत्नक्तिरू
पहृदत्रंजन॥ जातैंदेषैंदेवनिरंजन॥ ६९॥ जोसंसारसु
षनिकौंध्यावैं॥ सोसंसारमांहिबहिजावैं॥ अरुजोध्यावैं
मेरेचरणं॥ पावैंमोहिमिटैंजवमरणं॥ ७०॥ तातैंसबसा

धनजुंजांनो ॥ स्वप्नसमांनहैतसवमांनैं ॥ मनक्रमवचन
सकलकौंत्यागैं ॥ निसदिनममचरणनिअनुरागैं ॥ ७२ ॥
जोयात्नवहीचाहैछिटकायौ ॥ अरुचाहैममचरननिआ
यौ ॥ तेतिनकिसंगतिपरिहरैं ॥ जेनरजुवतिसंगतिकरै ॥ ७२
॥ जुवतिसुषनिसुनैंनहिश्रवनां ॥ नैंननदेषैंकरेनगव
नां ॥ कबहुंजुलिहैदैनहिआंनैं ॥ मनक्रमवचननिरंतर
जांनैं ॥ ७३ ॥ ऐसोबंधनकबहुनहोई ॥ कारिनसंगकरै
जोकोई ॥ ज्योंजोषितअरुजोषितसंगी ॥ बंधनकरैंहोत
प्रसंगी ॥ ७४ ॥ तातैंतिनकेसंगहितजैं ॥ सावधानममचरन
नभजैं ॥ निरत्नयठौरकरैंअस्थांनां ॥ सोबिनसंगतजैंस

बखांनी ॥ ७४ मेरो ध्यांन निरंतर किरै ॥ प्रेमसहित हृदै मैं धरैं ॥ कृष्ण बचन सुनि हिरदै रषै ॥ उधव और प्रस्न कौं भाषै ॥ ७५ ॥ उधव उवाच ॥ हे प्रभु तुम्हें कौंन विधि ध्यावे ॥ कौंन रूप मैं चित लगावें ॥ मैं तो मुक्त से ईतु व चरणं ॥ परिजो च है मिटायो मरणं ॥ ७६ परिजो च है मिटाया ॥ रूपासिंधु तुम करुणां करी ॥ ध्यांन जोग बांनी बिस्तरौ ॥ सुनि उधव निज जंन का बांनी ॥ तब श्री हरिजी आप बषांनी ॥ ७७ ॥ श्री भगवानुवाच ॥ उधव तो कौं ध्यांन सुनांऊ ॥ जोग सहत सब अंग बतांऊ ॥ जोग सहित जो ध्यांन दिकरैं ॥ तो मन वेगि स्वरूप हि हरैं ॥ ७८ ॥ समत्रासंन मैं त्र

स्थरहोई ॥ जंघनिपरिराषैंकरदोई ॥ दृढ़समांनचलैंनहिडोलैं ॥
॥ नासाद्दिष्टिकछुनहिंबोलैं ॥ ७९ ॥ ईडापूरिकुंभकथिरधारैं ॥
पुनिरेचकपिंगलानिसारैं ॥ बहुर्यौपूरिपिंगलाद्वार ॥ ईडा
निसारैंबारंबार ॥ ८० ॥ इंद्रियअर्थसकलपरिहरैं ॥ मनएहे
तद्दैमैंधरैं ॥ उद्वबद्धविधिजोगकहावै ॥ वाकेदहिसतगु
रतैंपावैं ॥ ८१ ॥ मंत्रिसहितसोनांमसगर्भ ॥ मंत्रबिनांसो
कहिएअगर्भ ॥ तातैंजोसगर्भसेनांम ॥ सोउतमहैपर
णांयांम ॥ ८२ ॥ पुरैराषैरेचककरै ॥ ऊँकारमंत्रउरधरै ॥ घं
टानादतुल्यउरध्यावैं ॥ नासामिकसिप्रांणचलावैं ॥ ८३ ॥
॥ योंत्रिकालअभ्यासैकोई ॥ प्रांणायांममोहिमैसिधि ॥

होई ॥ बहुरयौं हृदय कवलकौं ध्यावैं ॥ अष्टपांषरी बहुरयौं हृदय ॥ कवलकौं सौं विकसावैं ॥ ९४ ॥ श्रोध्येमुख वतैं ऊरध करैं ॥ ताके मध्य सुरज दृढि धरैं ॥ सुरजमै पुरण ससि आनैं ॥ ससिमैं अनल तेज मय मांनैं ॥ ९५ ॥ अनल मध्य मरूप दि ध्यावैं ॥ परम शिन्नि सौं मन दृढि लगावैं ॥ अंगुष्ट समानि चतुरभुज रूप ॥ अति सीतल सुषदा नि अनुप ॥ ९६ ॥ नुतन सजल मेघ तन स्यांम ॥ तडित तुल्य अंबर दृढि विधांन ॥ मंदहास सोभा निधि आंनन ॥ मकराकृत कुंडल सुत्र कांनन ॥ ९७ ॥ कंठ कौस्तुभ मनि बनमाला ॥ उरैं रूरयुगल ताल लक्ष्मी विसाला ॥ संख चक्र गदा अरू पदम ॥ हसत चारि हु सोभा सदम

॥ ६६ ॥ हेममुकुटहिरामणिजड्यौ ॥ अतिसान्त्रायमांनसीर
धर्यौ ॥ न्यालतिलक अंबुजवरनैंन ॥ जगतप्रसादसुधा
कोअैंन ॥ ६७ ॥ करकंकनअंगदमुद्रिका ॥ पगनुपरकटि
मैक्षुद्रिका ॥ अंकुसवज्रधजाअरविंदचिह्नि ॥ चरणहरण
दुषद्वंद्व ॥ ६८ ॥ नषमंणिगणअतिप्रन्नाकास ॥ उंरअष्टांग
नअंधतुमनांस ॥ औरसकलअंगनिबद्धभूषण ॥ जि
नकेध्यांनमिटैंसबदुषण ॥ ६९ ॥ बैसकिसोरपरमसुकु
मांर ॥ नषसिषध्यावैंबारंबार ॥ चरणनितैंप्रतिअंगदी
ध्यावै ॥ एकगहैएकद्दिछिटकावै ॥ ७० ॥ योलैनषतैसिष
परजंत ॥ निसद्दैध्यावैसंत ॥ औरवासनासबपरिह

रैं ॥ मेरे रूप अडग मन धरैं ॥ ९३ ॥ या बिधि जब मन निह
चल होई ॥ तब फीरि अंगन ध्यावै कोई ॥ अति सुंदर मु
ष मन मैं ध्यावै ॥ और सकल चितवनि निवारैं ॥ ९४ ॥
या बिधि मन अपनै बसि होई ॥ तब बैराट मैं धारैं सो
ई ॥ सकल बिराट रूप मम जांनैं ॥ मम तें भिन्न कछु न
हि मांनैं ॥ ९५ ॥ यौं बिराट मम रूप हि जांनैं ॥ निहचल
भयौ भेद कौं जांनैं ॥ तब ताहू तैं मन हि निवारैं ॥ सुध
निरंजन ब्रह्म बिचारैं ॥ ९६ ॥ ब्रह्म बिचार निरंतर करैं ॥
सब आकार दुरि परिहरैं ॥ आतम ब्रह्म एक करि देषैं ॥
चैतन रूप अषंडित लेषैं ॥ ९७ ॥ निजानंद निहचल नि

रधार ॥ सत्यसरूपवारनहिपार ॥ एकअजनमाआपैंआ
प सुषदुषरहितपुन्यनहीपाप ॥ ९९ ॥ कालनकरम
जीवनहिमाया ॥ आपैंआपनिरंजनराया ॥ जैसैंअ
गनिअषंडितहोई ॥ तातैंऊठपतंगाकोई ॥ ९९ ॥ बहु
रिअगनिहीमांहिसमावैं ॥ तबहिपतंगानांमगवा
वैं ॥ ऐसैंआतमब्रह्मविचारैं ॥ एकजांनिकरिद्वैतनि
वारैं ॥ १०० ॥ येसीक्रांतिबीचारहीकरे ॥ निसदिनब्रह्ममां
हिमनधरें ॥ त्रिगुणाकारसकलभ्रमत्यागें ॥ हैईब्रह्म
सोवतसौजागें ॥ १०१ ॥ ह्वेकरीब्रह्मब्रह्ममलीजावै ॥ जा
ह्नतेबोहुरौनहीआवै ॥ एसिविधिजवदुषनीदहें ॥

मेरो निजानंदपदलहै ॥ १०२ ॥ दोहा ॥ एहपेंडौ तो सुषदहौ ॥ जाकरी हरीपुरजाए ॥ परीयामें बहु विघन है ॥ तें जांषु समुझाए ॥ १०३ ॥ इतिश्री भागवते महापुराणे एकादसस्कंधे श्री भगवतउधव संवादे चतुरदशो ध्याय: ॥ १४ ॥ ॥ श्री भगवानुवाच ॥ उधव जोगपंथ समझाउ ॥ तामें बोहोत विघ्न बताउ ॥ जो ईद्रीये मन प्रान हि वाधे ॥ सावधान ह्वै जोग हि साधे ॥ १ ॥ मोमे धरें आपनौं चित ॥ ताकुसीधी विघ्न ह्वै नित ॥ जो तिनसाधिनकुं परहरे ॥ सौ ममचरननकुं अनुसरे ॥ २ ॥ तिनसेक बहुरहे चलायें ॥ तो श्रमसकल दीव्र था जाये ॥ जैसे स्त्र

बचनमनधारी ॥ उधवकिनि प्रश्नविचारी ॥ ३ ॥ उधवउवाच ॥
केप्रकारधारणादेवो ॥ रूसिधिनिकोकेविधिलेवो ॥ तीनकें
नांमऋीपाकुरिकहे ॥ जोगीनकें बिघ्नकिंवनिकुदहे ॥ ४
॥ श्रीभगवानुवाच ॥ उधवसिधिअठारेकहीए ॥ ममधार
णाकरेजोलहीएं ॥ तिनमेंअष्टसिधिप्रधांनां ॥ इसमधं
मतेकहूवषांनां ॥ ई ॥ जातदेहरूपअरुहोई ॥ कबहूनां
आवरणकोई ॥ अंणीमानामसिधिएजांनो ॥ महामो
हनीमायामांनो ॥ ७ ॥ जोतनकोरमाहाबिस्तारा ॥ जहां
तहांकछुवारनापारा ॥ महिमानामसीधिसोकहीए ॥ क
बहुंनलिनताकुगहीए ॥ ८ ॥ पुष्पादेहीअतिलघुकरे ॥

मुष्टीन आवेदृष्टिनहीपरे ॥ सोएहलघुमासिधिकहावें ॥ म
मजनयाकेनिकटनांआवें ॥ ९ ॥ जेजेइंद्रीयभोगनीक
रे ॥ जहांकहूंविषयैनिवीस्तरे ॥ तिनभोगसावनिजा
करीलहीये ॥ प्राप्तिनांमासिधिसोंकहीयें ॥ १० ॥ एकहोर
हुवेहोरहे ॥ देषेसुनेसकलकिकहे ॥ ताहीअगोचररहे
नांकांई ॥ सोप्रकासकसिधिकहाइ ॥ ११ ॥ इंद्रियदेहमनबु
धिप्रांनां ॥ तिहूलोकजीनकोस्थांनां ॥ तिनकुतोप्रेरैजो
जांने ॥ ताहीईसीतासीधिबषांने ॥ १२ ॥ विषेसुषनिकुक
धिनांगहे ॥ जातेअतिअंनेदीतरहे ॥ नांमअविसीतासिधी
कहावे ॥ मेरेजगत्पनिकनहीआवे ॥ १३ ॥ जोजोईछामनमे

लावें ॥ सोसोसकलपलमेंआवें ॥ वसीतानांमसाधीहैसो

ई ॥ मेरोजनआदेरनाकोई ॥ १४ ॥ अष्टसिधीएआतिप्रधा

न ॥ इनतेमधमआंषुआंन ॥ तीनकेगुणव्यापेनहीको

ई ॥ नांमअनुरमीकहीएसोई ॥ १५ ॥ दुरसर्वनसुनेंसबबे

न ॥ दूरसरसंनदेषसबनेन ॥ मनकेवेगमनोजबधावें

॥ कांमरूपबहुरूपबनावें ॥ १६ ॥ प्राकतंनमेंकरेप्रवेस

॥ सधीछुटीपरकायप्रवेस ॥ निजइछातेतजेसरीर ॥

सोस्वछंदमृतहेवीर ॥ १७ ॥ मीलेंअपछरानिविचरेदेवा ॥

देषीतीनहिलहेसबसेवा ॥ सासुरक्रिडादर्शनकहीये

॥ मिथ्याफलदेकधीनांगहीये ॥ १८ ॥ सोसकलकरेंसेहे

ई ॥ जथा सकल पकहीए सोई ॥ जंहांग औ वादैं तांहां जावें

॥ यथा तिहैं तसा धीसो कहावें ॥ १९ ॥ एदस मली अष्ट दंस

कहीए ॥ औरपंच तुछ नगहीए ॥ व्रतमान औरु न्तन

वीस ॥ सबरूकू जाने लषो यलीस ॥ २० ॥ एहहै सिधिब

त्री कालसुजांन ॥ आगें सिधि बषानें आंन ॥ सीतउ

ष्ण आदीक जे धंद ॥ तिनहि निवारे सोई अहंद ॥ २१ ॥ बिषे

औरु अग्नी मुरजन लधंना ॥ जाते होवे ये सेअवंतां ॥

प तिष तेसो सिद्धि कहावे ॥ हरीजन ताकें नीकट नां आ

वे ॥ २२ ॥ वेयष्ट दस अरु एपंच ॥ नीले तेई सकल प्रपंच ॥

ए में मूलरूप उचारी ॥ साषा बहुत नहि विसतारी ॥ २३ ॥

ममतौ धारणा करते आवे ॥ जोगीन कुं बहुतै वीधि वतलावें ॥ जो
तिन ते विचलै नां कबही ॥ तो मम चरन पावें तबही ॥ २४ ॥
जा धारणा हूं ते जो आवें ॥ जैसे जोगीन कुं वतलावें ॥ सो स
ब उधव तो से कहूं ॥ जोग पंथनी के विघ्न दहूं ॥ २५ ॥ अगुण
रूप रूप जो कछू विस्तारा ॥ सो नाना विधि विरूप हमारा ॥ ताही
ताही मांही मंन लावें ॥ तैसी तैसी सीधी पावें ॥ २६ ॥ सब रस स
परस रूप रस गंध ॥ पंचभूत कें सकुं मंबंध ॥ तिन में जो जामे
मंन लगावे ॥ पंचभूत के जे ते प्रमांन ॥ तीन मे जोगी धारे धा
वे ॥ तो तासमे लघु देह करे ॥ ताकू मेसे स्वपची चारे के रूप ही
मील जावे ॥ २७ ॥ महे तत्व में मंन लगावे ॥ पंचभूत साथा

१९८

करी ध्यावें ॥ जो ज्ञा सा षा मे मन धरैं ॥ ताही समे देह उधरै ॥
२८ ॥ पंचभूतके जेते प्रमांन ॥ तीनमे जोगी धारे ध्यानं ॥
तो तासमे लघु देह करे ॥ काहू सैं कहूं क ह्यौ न हीं परे ॥ २९ ॥
संतिक अहंकार मन धारे ॥ ताकू मेरे रूप बीचारे ॥ तब
जे ईंद्रीये जोग नि करे ॥ बहूत ज्ञांनी विषेयन विस्तरे ॥
३० ॥ तैसे रूप एह जोगी पावे ॥ सो वैह प्रा मी सी धिक हा
वे ॥ मेरे सूत्र रूप मन आनें ॥ तातें त्री जीवंन की गती
जानें ॥ ३१ ॥ जौ कर दीवाले घर देषें ॥ त्यौं त्री जीवंन आचरण
ने पेषे ॥ मेरे काल रूप मन धारे ॥ सब व्यापक सब रूप विचा
रे ॥ ३२ ॥ तातें सीधी इस ता पावें ॥ त्री जीवन जांनें ज्यौं उपजा

वें॥ जैसी द्रिस्ट जो द्रिकरवावें॥ ताकें अंतरसौं उपजावें॥३३॥
आदि पुरुष जो मेरो रूप॥ तामे धारे चीत अनुप॥ ताते सि
धि अवीसीता पावें॥ वीषयन बीन आनंद बढ़ावें॥३४॥
नीरगुण ब्रह्म मांही मन धारे॥ सब रुता सब ईस विचारे
॥ताने वसीतासीधि ही लहे॥ सोई सो पावे जो वहे॥३५॥
सुधतत्वमय मांही विचारे॥ जामे जोगी मन कु पी धारे॥
ताने सुध आप ही होई॥ षट ऊरमि नो व्यापे सोई॥३६॥ गग
ना धार प्राणमन धारे॥ सब्द रूप उर मांही विचारें॥ तब हूं
तां हां लगें पवन आकास॥ सुनी तां हां ले वचन नी पास
॥ नेननी मां सुरज कु धारे॥ सुरज नेनेननी वीचारे॥३७॥ श्र

परछनमोह्किकुलेषे॥ तवसोताहूंलोककुदेषे॥ पवनंसदी
समेमेमनधोरे॥ जोंहांतांहांममरुपवीचारे॥ ३७॥ येसे
मंनकुंजोहांचलावें॥ मनकेवेगतांहांहीजावें॥ सारेमेरे
रुपहीवीचारे॥ तिन्हीतीनमेमनकुधारे॥ ३८॥ चाहेरुपच
औतवजोई॥ बारनलागेंहोवेसोई॥ कस्यौप्रवेसचाहेजा
में॥ धांनआपनेंआनेंतामें॥ ४०॥ तवतालनमेंजावेये
से॥ नर्गफुलतेफुलहीजेसे॥ म्हलद्वारपगबंधलगांवे॥
प्रंणचलाईसीसमेंलावे॥ ४१॥ बंसरंध्रहैगेंनकरें॥ जोमं
नहोईतांहांअनुसरें॥ सुर्गदेवसुरवनीताधावें॥ मेरेरुप
जांनीमनलावें॥ ४२॥ तवतेसदीतवीमानहीयावें॥ ताजो

गीकुसुषउपजावें ॥ जोजोवस्तइदैमेधारे ॥ तोताकेप्रनुमो

हीवीचारे ॥ ४३ सोईसोपावेततकाल ॥ जबहीचाहैकालकअ

काल ॥ सकलनीयंतासवकोईस ॥ तीनस्वाधिनसकलके

सीस ॥ ४४ ॥ जोगीयैंसोमोकुधावें ॥ ताकीअनननाकोईमि

टावै ॥ ज्ञांनरूपसवअंतरजांमि ॥ धावेमोहेसकलकौस्वा

मिं ॥ ४५ ॥ आपनिजानैंजन्ममरनकी ॥ ज्ञांनकालअरूप

सवमनकी ॥ प्रकृतीगुणनितेंनारेजाने ॥ औरुतिन

कोसांमीकरीमांने ॥ ४६ ॥ धावेंमोहीसदाअहंद ॥ तवकोई

नांव्यापेदुद ॥ सवमेंमेंव्यापकसकलअतीत ॥ लीपेनांसु

रअस्त्रीजलसीत ॥ ४७ ॥ येसोमोकुधावेंकोई ॥ येसोलक्षन

पावेसोई॥ जोमेरे अवतारनी धावें॥ आउधछत्रवमेरमन
लावें॥ ४८॥ ताकूकहून आजेंहोई॥ सबहीनमाही बीराजै
सोई॥ युधारणाकरेममजोई॥ सीधीनुपावेजोगीसोई॥ ८
४९॥ परीअंतरायेहेसारे॥ मेरेचकहुरनिवारे॥ मोतेएई
नतेमेनांही॥ तातेममजमनिकटनांजांही॥ ५०॥ मोहीन
लहेईनजेलेवे॥ मोहीअजीतीनकुएसेवे॥ मोहेतेउतपता
सबनकी॥ मेप्रतिपालकरुतिनतिनका॥ ५१॥ ममआंधि
नसिधिओरुजोग॥ सांहरुज्ञानधर्मधनभोग॥ सबको
जनसकलकोसांमी॥ तेसबहीनकोअंतरजामी॥ ५२॥
सबमेबाहेरभीतरएक॥ मोमेव्रतेसकलअनेक॥ पंचभूत

सबअूतनियाहि॥ बाहेरअुतरदुजानाहि॥५३॥ तेसबमेहीना
हीअैन॥ अैनदूष्टसोईअग्यांन॥ तातेंहीअबमहिआंने
॥मेरोरूपसकलहीजांने॥५४॥ साधनसिधसकलअरमतजे
॥मेरेचर्णनीरंतरअजे॥ ममप्रसादममचर्णनिआवें॥ अ
तीअपारअवदुषमिटावें॥५५॥ एमेतोसौंआषुग्यांन॥ याते
अौंरसकलअग्यान॥ आदेअंतेंहूहरीसोई॥ मधेहूबिजोन
हीकोई॥५६॥ दोहा॥ एकब्रह्मकरीदेषने॥ एहसुनिदुःकर
ज्ञान॥ पुछीविद्युविद्युति॥ तबउधवपरमसुजांन॥५७॥ ई
तिश्रीभागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवत
उधवसंबादेभाषायेपंचदशोध्यायः॥१५॥ ॥उधव

उवाच॥ तुमहौपरब्रह्मअविनासि॥ चीदानंदविज्ञानप्र
कासि॥ आदिअंतमधनहीजाको॥ कोईभेदलेहेनहीताः
को॥ १॥ तुमहीसकलजगतउपजावें॥ तूमप्रतिपालेंतु
मवीनसावें॥ तुमसबबाहेरओरुसबमांही॥ सदाअलि
पतलीपैकछुनाही॥ २॥ जंहंतंहतुमहीहोएक॥ एसब
जर्मदृष्टिअनेक॥ हेप्रभुएजगतअतीविसतारा॥ उचनि
चविबीधिप्रकारा॥ ३॥ ओरुयाजीवसतकरीमांनैं॥ वी
षयनसबहूतन्नातिबधानैं॥ याकूएकदृष्टिकौआवें॥ के
सेसकलब्रह्मकरीधावें॥ ४॥ ज्ञानवंततूमजनहेजेते॥ ब्र
ह्मदृष्टिदेषेतेहेतेते॥ तातेंतूमअबकरुणाकरो॥ नीजविज्ञ

तिमोसुविस्तरो ॥५॥ तीनमेंदेषासकलमेदेषे ॥ तबअद्भुतआ
स्तकरीलेषें ॥ सुनीउधवकेउतमबेन ॥ बोलेहरीजीकरुणा
येन ॥६॥ श्रीभगवानुवाच ॥ उधवप्रश्नभलीतुमकीन्ही
॥ जातेपरंब्रह्मगतचीन्ही ॥ असैप्रश्नअरजुनहीकरी ॥ ५
तासैमैयाविधिउचरी ॥७॥ ताहीविधिअबतोहीसुनांउ
॥ येंसेब्रह्मद्रष्टिउपजांउ ॥ कौरवरुपांडवकुरषेत ॥ जब
हीजुरेभारतकेहेत ॥८॥ तबअरजुनकौरबसबदेषे ॥ सक
लबंधवआपनेलेषे ॥ ईनसबहीनकुजोमैमारूं ॥ आपहि
आपनरकमांडारू ॥९॥ येसीविधिआपनोअहंकारा ॥ आ
पहीमांनोमारनहारा ॥ तबमैताहीज्ञांनसमझाओ ॥ ताके

सबअज्ञानमटाओ॥१०॥ एहकरीतवअरजुनयेसी॥ तु
ममोसेकोनीहेतेसी॥ तातेउतरकुउचारु॥ याविधिके
ह्रइषीकुकरु॥११॥ उधवमेसबदीनकोस्वामी॥ ओरुस
बहीनकोअंतरजामी॥ आपहुतेसबकुउपजांउ॥ सब
पोषुसबकुबुताउ॥१२॥ सकलरहेमेरेआधीन॥ मोही
मेसबहोवेलीन॥ तातेसबमेहुजोनाही॥ याविभूति
जांनेमंनमांही॥१३॥ परिसोसेवसेषसेकहूं॥ तेरीहीत
हषीकूदहूं॥ सबरछुकमांहीमेरछुक॥ तीनमेंकालस
कलजेतीछुक॥१४॥ सोमेंप्रकृति॥त्रीगुणकीआदे॥ पं
चभूतमेमेभूतादे॥ सुत्रसकलबधमेजानों॥ बेदनमाही

मदैंतत्वहिमानें ॥ १५ ॥ सबसुछमन्नामोंहाजेदेषो ॥ सबदुर
जनिमांहिंमनलेषो ॥ वेदज्ञांनीमैंब्रह्मजानो ॥ ऊँकारमंत्र
मांमांनो ॥ १६ ॥ छंदनीमेगायत्रीछंद ॥ मैंआकारअछरकै
बृंद ॥ सबदेवनकेमधपुरंदर ॥ सकलबसुनिमेमेवसंदर
॥ १७ ॥ नीलकंठएकादसइमे ॥ विष्णुनांमहादसादीनकर
मे ॥ तिनमेंजुगूजेसप्तमाहारुषी ॥ तिनमेमनुजेसबरा
जरुषी ॥ १८ ॥ देवरुषीनमेनारदजाने ॥ कामधेनधेन
मांमांने ॥ सीधनमेंमेकपीलस्वरुप ॥ पंछिनमांगरुडम
मरुप ॥ १९ ॥ प्रजापतिमेहूंदछ ॥ तिनमेमकरजांहांलो
मछ ॥ वादनमेंअधात्मवाद ॥ जहलरहेमलमधनेस

॥सब असुरन मैं मै प्रहलाद॥२०॥ सप्त प्रकास कमांही दे
वेस॥ ईजच्छर ह्म गण मा धनेस॥ तिनमे सोम सकल जे
उडगन॥ सब धातन मे मेरु कंचन॥२१॥ गजनमैं दी मैग
ज ऐरावत॥ मे अनंग जे अषि उपजावत॥ तांह्मां वर्णी जे
सब जलजंत॥ नागन मैं मम अनंत॥२२॥ नरन मांहे
मम रूप नरेस॥ सर्पन माह्मी वासुकी अपेस॥ उच्चैंस्त
वा हय निमे जानो॥ इंडधरन मैं ईलीनमे जम मानौ॥२३
॥सकल मृगनी मैं मै मृगराज॥ सरीता मैं नी मे गंगा सीर
ताज॥ सब आश्रमनी मैं मे संन्यास॥ वर्णनी मांही वि
प्रमम वास॥२४॥ सकल सर निमे रूप समुद्र॥ सकल ध

तुकधारीमेमेरुइ ॥ मेरूंधनुषआयुधनीमांही ॥ भ्रमनीवास
मेरातामांही ॥ २५ ॥ जैअतीगहन हिमालतीनमें ॥ मेपीप
लवनसपतीमें ॥ मैऊ हितनमांहीवसीहू ॥ तांहांब्रह्मस
मीनेब्रसीहू ॥ २६ ॥ सेनापतीमांहीसेनानी ॥ धर्मप्रवरतक
सौब्रह्माजानी ॥ सकलऔषधीनीमेंजवजांनैा ॥ मींत्रनी
मांहीअर्जुनमांनो ॥ २७ ॥ ब्रह्मजगंनसबजनीमांहि
॥ ब्रतअद्रोहसमक्रोनाहि ॥ वाईअग्नीजलसूर्जबानी ॥
औरूमंनयेषटसोधकजांनी ॥ २८ ॥ चतूरदेहआत्मविचा
रब्रह्मचारनमैसनतकुमार ॥ अस्तरीनमेसतरूपारानी
॥ पुरुषनेस्वयंभूजांनी ॥ २९ ॥ सावधांनतिनमेसबसंत

र॥ अठेहार तिनमे उर अंतर॥ मेहुं धर्म अजयको हांनं॥ गुर
हज हि प्रियमे नसमांन॥ ३० ॥ स्त्रीया पुरुषसंजोग जेते॥ अ
स्सइतेउ रेसब तेते॥ सकलवांदरमे हनुमंत॥ रतनी मांमम
रूपबसंत॥ ३१॥ अरुमाग सिरमासि तिनिमें जांनो॥ नछत्रमे
मे त्रिजित मानो॥ देवलक्र सितर हीतजे दुंदर॥ कमलकोस
सबहीनमें सुंदर॥ ३२॥ जुगनीमे सतजुग से नाम॥ वेदनिमां
हि साम सेनाम॥ वासनमां हिव्यासदिपायन॥ तिनमे तूमंजो
विसूपरायन॥ ३३॥ कविनमां हिकवि सुंदर जांनो॥ सक्तीवंत
ममए त तनमांनो॥ बिदाधर तिनमें सुंदरसंन॥ प्रछराग ति
नमें जैमनी गन॥ ३४॥ सबतरण जाति नमें कुसजांनो॥ होवै

मवसतमागौग्रतमानै॥ तीनमेघनजेसववविवविंदसाथ॥

॥जयमार्गसवतिनमेनाय॥ ३५॥ अगसमाधिजेजैगअगन

मे॥ मेहूंछमाछमावंतनीमें॥ धीरजमेजोधीरजवंत॥ मेब

ली तिनमेजेबलीवंत॥ ३६॥ छलीमांहिछलमहेजुप॥ मेरेहे

तकर्मेममरूप॥ बासदेवसंकरहिनविर॥ प्रद्युमनअरु

अंनिरुधसरीर॥ ३७॥ नारंयनहयग्रीमहीधर॥ नरहरीअरु

जमदग्निपुत्रवर॥ व्युहार्चेननवपुजाजानो॥ वासदेवतो

हांमोकुमानो॥ ३८॥ तीनमेयीतीजेसवन्धर॥ पूरववात

नीमेअपसर॥ मैहूवीश्ववसगंधरबा॥ धरणीमेगंधमेस

रबा॥ ३९॥ रसजलमांहेसबदअकास॥ रवीससीतारनी

मेप्रकास॥ तेजसीमेपावकजानो॥ विप्रन्नक्तितिनमेबली

मानो॥ ४०॥ विरनीमांअर्जुनबहुमानो॥ उतपतिथीमो

तेकरीजानो॥ आदिएमनबुधादिकजेते॥ मेरीसक्तित्रह

तेतेते॥ ४१॥ सबहिनह्वैसबअर्थनीगहै॥ तेजडतिनम

वस्तनरहै॥ सबदसपरसरूपरसगंध॥ तिनमेपंचभुत

सबंध॥ ४२॥ ईद्रीयमनमहेतत्वअहंकारा॥ त्रीगुणसही

तएप्रकृतिबिकारा॥ प्रकृतीरुपजहांकछुजेते॥ मेरोंरु

पसकलहेतेते॥ ४३॥ मोबिनकछूकहूंहेनांही॥ मेहीप्र

गटीरह्यौसबमांही॥ मैप्रमाणगनौमेकबही॥ तोत्रीन

पारहीपाउतबही॥ ४४॥ परीममरनीरमतजेब्रह्मंड॥ ती

नकुगनतिपरेनहीषंड॥ तातेकहूविन्हतिकहालो॥ जोक
छूमेरोरूपतहांलों॥ ४५॥ यरूअवमुक्तिविन्हतिहिकह्यू
॥ द्वेतदृष्टिएसीवीधिदरू॥ तजातेजच्छीमाधर्मदान्नो॥ सुदर
ताएसवजगज्ञांनो॥ ४६॥ बलसोत्ताज्ञांनरूधीरजजेही॥
मसविन्हतिजानोतांहांतेही॥ एविन्हतितोसौकछूकही
॥ अतिअपारकहीवेकूदही॥ ४७॥ मनथिरकर्णकाजए
जानो॥ एहीज्ञांनकहीमतिमानो॥ ईद्रीयबुधिदेहम
नप्रांन॥ निश्चलकरदेषोत्तगवान॥ ४८॥ मनतेसवक्ष
कारउतारो॥ चईतनमोरोरूपविचारो॥ एकअषंडतजे
हतरूसोई॥ आपापरदुजोनहीकोई॥ ४९॥ येसेज्ञानक्ष

लकु पावे॥ ब्रह्मादि पायै जगत नहीं आवे॥ तंन मंन ईद्री
यरु प्रांण॥ जपतपदानब्रतादिककरण॥ ५०॥ तातेंउ
द्धतत्नाति आचरनां॥ थिर करी जिन निधरो मम धानां॥ ५
॥ काचे कलस त्तरे जल जेसे॥ पलमें अवजाए सबु तेसे
॥ ५२॥ ताते बचन काया मन ध्यान॥ सबकु बाधि करे मम
धान॥ मोहे धावे मो मां ह्रि समावें॥ तब संसार मांही नही
आवें॥ ५२॥ दोहा॥ जे उधव तो सुक हो॥ यह बीन्हें तौ॥
कोज्ञांन॥ तो ही सुछ्म स्थूल सब॥ देषे श्री भगवंन॥ ५३
॥ इति श्री भागवते माहापुराणे एकादशस्कंधे श्री भग
वत उधव संवादे भाषाय विभूति कथनं नाम षोडसो

ध्याय:॥२६॥ ॥दास निमें ऊधव निज दास॥ जाकें हृदें
ज्ञान प्रकास॥ तीन जीवनी के हेत मन धरी॥ तातें प्रभ स्वरूप
सैकरी॥१॥ ऊधव उवाच॥ प्रभु तुम कलप आदि उचार्‍यौ॥
त्रक्ति निमित धर्म सब विस्तार्‍यौ॥ ब्रह्माश्रम आदि नर जे
ते॥ तिन धर्मनी सौं लागे ते ते॥२॥ तिन मैं कोई त्रक्ति दृगा
वें॥ कोई करम सिधू ही वही जावें॥ ताते तुम करुणा मे देवा॥
त्रांषो नर धर्मनि के त्रेवा॥३॥ धरम करत जो उपजे त्रगति
॥ तुमारे चरण बंदे अनुरक्ती॥ छूटे कालजाल त्रव कुंप॥ लहे
तुमारो ब्रह्म सरूप॥४॥ जदि पि पुन विधि सौं विस्तार्‍यें॥ जब
प्रभु हंस रूप तुम धार्‍यें॥ परिवद्दं काल कहेत त्रयो॥ तातें

धरमलीनहो एगयो ॥५॥ है कछु औरकरे कछु और ॥ ता तें
जीवनां पावे ठोर ॥ ताते तूम करू एणकारी नांषो ॥ वहे जां
तते जीवनी राषो ॥ ६ ॥ औरु एह तुमही जांनो देव ॥ तुमवी
न हु जो लहे नां भेव ॥ तुमहि का हो सुनु उर धरु ॥ तुमही रा
षो तुमही करु ॥ ७ ॥ ब्रह्मादु की सत्ता मो झारी ॥ वेद जांनी
जमुरती धारी ॥ तीहां उएहां कोई नाही जानें ॥ ज्यौ वधै त्यै
स बही बषांने ॥ ८ ॥ औरु एह के सेकरी मन आवें ॥ कंम
करे ते त्तक्ति दिपावें ॥ औरु तुम माया को तंन धार्यो ॥ जातनि
ज धर्म हि विस्तार्यो ॥ ९ ॥ जौ वैकुंठ पयनो करद्यौ ॥ एह नि
ज धर्म नही उचरद्यौ ॥ १० ॥ एह ता पिछे कोई नही कही है ॥ एह नि

जधर्मनैंहीअब गुपतहिरहिहे ॥ १० ॥ तौतेअबतुमकरुणाक
रो ॥ एहनिजधर्मबेगविस्तरो ॥ एसीसुनिउधवकीबांनी ॥
आपनबोलेसारंगपांनी ॥ ११ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ धन
धनउधवजनतुमेरे ॥ दुजोनहीबराबरतेरे ॥ मेरोनीजजनक
हीएसोई ॥ हेतपराएबरतेजोई ॥ १२ ॥ तातेतुमपरकारजकरो
॥ मोंतेपरमधर्मविसतरो ॥ उधवपरमधर्ममममत्तजी ॥ औरए
सकलतौकरीविरक्ति ॥ १३ ॥ भक्तिविनाजोकोईधरम ॥ सोस
बजांनोभ्रमयधरम ॥ जबमेप्रथमकिओसंसार ॥ तबन
हीहेतोक्रमविस्तार ॥ १४ ॥ जेईजेमांनवतंनधरे ॥ मोहीसे
इतेतेउधरे ॥ हैक्रतक्रतलहेममधाम ॥ तातेसुक्रतजगसे

नाम ॥ १५ ॥ ॐकाररूपतवबेद ॥ ऐसेकछुहूतेनांन्वेद ॥ सबई
ह्रीयमंननीश्चलकरे ॥ मेरेध्याननीरंतरधरे ॥ १६ ॥ यैसैस
बपापनिपरीहरे ॥ सबमेरेचरणनिअनुसरे ॥ तातेंविष
यन्तयेमंतिमंद ॥ वीषेनीतेमांनेअनंद ॥ १७ ॥ तिननिम
तबहुउदमकरे ॥ राजसतेपापनिविस्तरे ॥ तबतीनहेतकें
षटवीस्तारे ॥ बोहोतजंतिकेकमनीयारे ॥ १८ ॥ अज्ञान्अ
मन्वेहउपजाऐं ॥ न्यारेन्यारेकर्मगहाए ॥ आपनेधर्मतांग
जोकरे ॥ सोनरजाईनरकमांपरे ॥ १९ ॥ येसेबहुजंतिन्नयें
देषात्रै ॥ थैरेकर्मनीमांठहराञै ॥ तामेन्नांपुआतमंन्तज
ना ॥ मोविनसकलकर्मकुतजनां ॥ २० ॥ बोहोरुबहुआरजना

चहें ॥ राजसतेनही निश्चलरहे ॥ तिन के हेतजन्नउपरजायो ॥
॥ वीस्नुरूपकही सबनी सुनायो ॥ २१ ॥ विस्नुजज्ञनकीजें ता
मांही ॥ वीस्नुरूपकही सबनी सुनायो ॥ हेतद्वी ष्टी अंग
निजै नाही ॥ मेमूषहूते विप्रउपजावें ॥ रुत्रिबाहबाना
वें ॥ २२ ॥ जंघनितेबंसपदनीतेसुद्र ॥ पदनीचे औरे सब
छुद्र ॥ पनग्रहस्थयेद्यनितेकीयो ॥ ब्रह्मचर्ये उरसंन्तव
लीयो ॥ २३ ॥ बहूस्थलउपजो बनबास ॥ मस्तकहूतेर
चोसंन्यास ॥ तातेंसकलपीत्यो मेएक ॥ मोतेउपज्योसक
लअनेक ॥ २४ ॥ तातेमोही मेटी जौ करे ॥ सोसोसकल
बंधनबीस्तरे ॥ जाजाअंगहूतेजोउपजो ॥ तौतौता

कौलषननीपजै ॥ २५ ॥ उंचेअंगह्लतेंतेउचौ ॥ निचौअं
गह्लतेसोनीचौ ॥ तिनकेंबहुबीधान्नएसन्नाव ॥ तातें
उपजोनानान्नाव ॥ २६ ॥ समदमसतक्षमासंतोष ॥ स
दादयालनां उपजेरोष ॥ तपअोरुसोचनिरमलमम्न
न्न ॥ इतिलछ्ननिविप्रअनुरन्न ॥ २७ ॥ क्षमातेजबल
उद्यमधिर ॥ सुरउदारअचलगंन्नीर ॥ विप्रन्नगतमेरे
ऊठन्नाव ॥ एक्षत्रीकेन्नएसन्नाव ॥ २८ ॥ बुधअास्तिक
दानअादंन्न ॥ विप्रनक्तिउदमअारंन्न ॥ वैसन्नयली
न्हैपलह्लीन ॥ मंदबुधिपरिमादावचीलन ॥ २९ ॥ गाईरु
तिह्लवरणोकुसेवे ॥ तीनतेकछुलहेसेलेवें ॥ सतसंतोष

कपटतानाही॥ येसेलछसुद्रनी मांहि॥३०॥ मिथ्यावांचहृत्रासे

चऋोरुचोरी॥ सुधीनास्ताकहीहै गोरी॥ कांमक्रोधसमद्लो

त्तविकार॥ ब्रण निचकैए प्रकार॥ ३१॥ कांमक्रोधऋौरत

रष्णारहीत॥ सतहीमाऋरुस्वारथसहीत॥ जीवदयातजे

ऋधर्म॥ एसबकोंसाधारणधर्म॥ ३२॥ ब्रम्हचरजकेंधमहि

कहै॥ जातन्तक्रिउपाईजौचहै॥ विप्रक्षत्रीऋौरवंसत्री

वरण॥ इनकुसकलवेदविधिकरण॥ ३३॥ ग्रन्नाधांनादिक

संस्कार॥ तिहूवरकौएहऋाचार॥ जबतेवोहोरीजनेउपा

ए॥ तबतेगुरकेनिकटरहाए॥ ३४॥ बहै विधीगुरकिसेवा

करें॥ वेदपठेऋरथहीउरधरैं॥ जनौमेषलाकरजपमाला

॥ दंडकमंडलऔरम्रगछाला ॥ ३५ ॥ दंतवस्त्ररतनमंजननी
वारें ॥ सीसजटाहस्तनीकुसधारें ॥ आसंनचंचलकधिन
करै ॥ लाकवारताछिदैनधरै ॥ ३६ ॥ मंत्रपुरीषतागआसें
नं ॥ होमसजपत्रोजनजलपांनं ॥ इनमेंवचननदीउच
रे ॥ नखकेसादिकदूरनकरे ॥ ३७ ॥ सदानीरंतरदिढव्रतधा
रे ॥ कबडुंकुलिविदनहीडारे ॥ जोआपुहीतेजावेकबही ॥
बोहोतजांतिपछीतावेतबही ॥ ३८ ॥ करीस्नांनओरुवंही
प्रणायम ॥ जापकरेत्रीपदीसेनाम ॥ अग्नीकरकगुरविप्र
अरुगाई ॥ सरसुनीवृधनीनवनिकराई ॥ ३९ ॥ संधांउपासना
करेंत्रीकाले ॥ बचननांबोलेंहलेनचाले ॥ घरकुमारोरुपदी

जानें ॥ नरकी बुधकथीनहीयांने ॥ ४० ॥ सरवदेवमेगुरुकुलेषे

॥ तीनकेंकछु आन्दरानंदेषे ॥ भिक्षाआदिऔरकछुजोई ॥

गुरुकुंअंनसमरपेसोई ॥ ४१ ॥ जबगुरुताकूंअज्ञादेवें ॥ तब

प्रसादआपहूलेवे ॥ वेठहांदेंआवताजात ॥ नोजनसेनरातिं

प्रभात ॥ ४२ ॥ तीनन्नांतीगुरुसेवाकरे ॥ अजुलीसोपिछैअनु

सरें ॥ येसेब्रतअषंडीत धारे ॥ मनहूमेनहीजोगविचारे ॥ ४३

॥ येसेगुरकुलेवृतेसोई ॥ जोलगीबीद्यासमूपतिहोई ॥ पुनीं

ब्रह्मकेंलोक हिचाहे ॥ तोग्रहस्थतानहिसबाहे ॥ ४४ ॥ गुरुकूदे

हसमरपनकेरे ॥ वेदविचारह्रिदेमेधरे ॥ गुरुऔरुअग्यगती

आपसबमांही ॥ सेवेमोही अवरकछुनाही ॥ ४५ ॥ जुवतिंआ

रुजुवतीनकूसंगी ॥ ईनकुकधीनांहोए परसंगि ॥ दरसपर
सबांनी परीहास ॥ तोगेहुरीमांनैं अतीत्रास ॥ ४६ ॥ मैंचअ
चमनरूपस्त्रोनां ॥ सुधउपासनागतअविमांनां ॥ तीरथसे
वाजपतपत्नीहा ॥ तजौदरससंभाषणदेह्रा ॥ ४७ ॥ मंनअे
रुबचनदेसबसकैरै ॥ मेरोन्तजनह्रीमैंदेमधरै ॥ समन्तजन
सबकोधर्म ॥ न्तजनबिनासबधर्मअधर्म ॥ ४८ ॥ येसोब्र
ह्मचरजब्रतधारी ॥ द्रिढब्रतनिसदिनवेदविचारी ॥ विगतपा
ईयेसीविधीहोई ॥ मेरीन्तगतिलहतबसोई ॥ ४९ ॥ येसीवि
धीन्तवसागरतजे ॥ मेरेप्रेमरूपकुन्तजे ॥ औरुजोकोइहैए
सकांम ॥ तौसोकरेंजुवतीऔरुधांम ॥ ५० ॥ हेंकांमग्रहेंन

बास॥ कैअधिकारपईयैसन्यांस॥ औरूजोउपजैंममन्नगति॥
तोंनहीकेरेकहूआसक्ति॥ ५१॥ एहहैंब्रह्मचरजकोधांम॥ या
तेदुजोधरम॥ धर्मसकलअधर्मसनाउ॥ सकलधर्मसकुस
मऊाउ॥ ५२॥ ब्रह्मचरजजोनहीठरावै॥ तोयस्तआश्रमहीं
आवै॥ गुरुतेवेदपदेसबजबहीं॥ गुरुकुदछनादेइतेबहीं॥
५३॥ जोगुरुतेअज्ञालेउरधरें॥ तबविधिसेस्नानहीकरें॥
तबदषेउत्मकुललछन॥ करैविवाहत्रीयाविचिषन॥
५४॥ जोदेषेंआपनोअधिकारा॥ तोहीकरैविचारविचारा॥
विप्रविवाएचारेब्रण॥ विप्रछोडीछत्रीकोकर्ण॥ ५५॥ वै
सविवाहैवैसओरुसद्र॥ सद्रएककईउनछूद्र॥ उत्मसोजोए

क१करे॥ बाह्नतकनीकुष्टनहिंवीसरे॥ ५६॥ स्तुतिअध्याय
नजन्नऔरुदांन॥ तिह्नवरएकोएकसमांनं॥ दांनयग्रह
नजज्ञकरावन॥ यधिकवीप्रकुवेदपाठावन॥ ५७॥ परा
एतिनतेदेएसी॥ अग्नीमधिजलवर्षाजेसी॥ ईनतेब्र
ह्मसेजनहिरहे॥ तातेंईनकुविघ्नयग्रदै॥ ५८॥ करीकेर
सीलादेहनिरवाहे॥ तोतेअधिकोनहीसरवाहे॥ विप्रदे
हपुरएतपपईए॥ सोविषयेनलागीनादागमईएं॥ ५९
॥ बादेगतनोतितपकष्टहिकरीए॥ हरीजनजिहरहीकुअ
नुसरीए॥ सत्यावृतिकरीराषेदेहा॥ नहीममताजुवतिस
तग्रहा॥ ६०॥ अतिथिपालनरजतमनाहि॥ मोहिकुदेषे

सवमादि॥ जीवंनमुक्त होई सो विप्र॥ मेरे चर्णनि पावे छिप्र॥ ६१

॥ जो कोई मम जन कीही करे॥ नि सदीन जन किही करे॥ जा कुं कछु

आपदा मीटावे कोई॥ सो मेरो हेत कारी होई॥ ६२॥ ता कुं मे उ

धारु एसें॥ नाव नीतेय जै निधी जेसें॥ परी छत्री नीज धर्म वि

चारे॥ सकल जिव नाही दै धारे॥ ६३॥ छत्रि सब नी कें दुष हरे॥

सकल जिव नी प्रतिपालन करें॥ सो छत्री सुरलोक नी जावें

॥ वास सहीत मा हा सुष पावें॥ ६४॥ जो आपदा विप्र हि कुं परें

॥ तो सो व त्रिज व्रत कु करे॥ जही पिष ड गव रती है उचि॥ परि

सो अति ही सातें नीची॥ ६५॥ जो छत्रि कु परे विपति॥ सो

तो ग्रहे बनिज की व्रति॥ किवा विप्र व्रति कु ग्रहें॥ आणवार

मगयाकरिनीरबहै ॥६६॥ वैस्पहीपरेआपदाकबही ॥ सुद्रव
तिसोटारेतबही ॥ औरुजोविपतिसुद्रहीपरें ॥ तेधतिलों
म्हजव्रतिधेरें ॥६७॥ याविधिजबहिमीटेविपती ॥ तबही
ग्रहेयापनीव्रति ॥ पंचजज्ञजेप्रतीदीनकरनें ॥ ग्रहस्तकुंना
हीपरीहरनें ॥६८॥ करीकेपाहराषनुकजजें ॥ करीकछूदे
मदेवतीनीच्चजें ॥ सुतनीबलीअरुसराधपीतर ॥ जल
अनादीसक्रिसोंनर ॥६९॥ तिनसबहीनमेमेरोकुंजानें
॥ औरसबनपरकरुनाआंने ॥ जेसहेजहीकबहूधंनपा
वे ॥ केविनजहूतेउपजावें ॥७०॥ तासेलोकआपनोपोषे ॥
औरुजज्ञनकरीमोहेसंतोषे ॥ जेतीलगतिघरमेंहेई तेतो

ही धनराषेसोई ॥७१॥ औरसकलममदेतलगावें ॥ न्हलिनां
दुजे मारगजावे ॥ जदपिरदें कुटंबमाही ॥ तोह्र लिपेकदे कह्र
नाही ॥ ७२ ॥ निसदीनह्रीदेकरे विचार ॥ मीथ्याजांनेसबपरी
वार ॥ यस्त्रीपुत्रबंधुसबजेसें ॥ जलकेंनीकटवटाउजेसे ॥
॥७३॥ एप्रुप्रतीदेदहीआवें ॥ ज्योंनीद्राप्रतिसपंनापावें ॥
ज्योंज्योजागेवारंमवारा ॥ त्योत्यो मीटेंसप्रवोहारा ॥७४॥
युहिएप्रतीदेदहीआवें ॥ देदतजेसबजीततीतजावें ॥
अरुप्रुभ्रुथगादीकलोका ॥ पावेदरषगएअतीसोका
॥७५॥ तातेसकलवासनादहे ॥ अतिलसमांनन्हव
नमांरहे ॥ अहंकारममतानहीआने ॥ सबमायाबंध

१३०

नकरीजांने ॥७६॥ सबकर्मनीमेरेहेतकरे॥ मोविचत्र्प्रतरा॰
ईसोपरीहरे॥ प्रेमत्तावद्दीढउरमांराषे॥ ओरसकलइंदि
तेनाषे॥७७॥ एकपुत्रत्तएवनजावे॥ किवाग्रहदिसोंकिरहा
वे॥ येसेयोहामुक्ताकरीमांने॥ औरकछुइंदेनदीग्रांनें॥७८
॥ओरुजोहोईत्रुवनत्र्प्रासक्त॥ विषयालेएहस्पात्र्प्रातुर॥
ग्रंनरहीतकर्मनीमेंचातुर॥७९॥ आपुहीपरवसताहैनों
हीजांने॥ औरनकीचिंताउरत्र्प्रांने॥ नाईब्रधपीतरहैंमेरे
॥मोबिनहैईकवनमतीताकोदुषलहेबाहूतेरो॥८०॥ए
हूत्र्प्रबलालघुसवतिजाकी॥ मोबिनहोईकवनगती॰
ताकी॥ एत्र्प्रनाथमोबीनसबबाला॥ कैयोकरीजीवेत्र्प्रति॰

वेहास्ना ॥८१॥ मोबीनरनदीकवनप्रतीपालो ॥ कोविधी
दुषनिकुटाले ॥ एसैनिसदीनअनेचंत्या ॥ कवङ्कनाहोवे
नीसचीस्या ॥८२॥ कधीनांसुषपायोयांलोका ॥ ग्रहेगरदे
चिंत्यान्तएसोका ॥ याविधीचीस्याकरतअपार ॥ नरकहो
जावेंवारंवार ॥३॥ दोहा ॥ ब्रह्मचरजगुरचर्जेको ॥ मेन्नांषोए
धर्मे ॥ यातेउधवऔरकछू ॥ सवजांनेअधर्म ॥८४॥ इतिश्री
भागवतेमहापुराणे एकादशस्कंधे श्रीभगवतउधवसं
वादे भाषायां आश्रमधर्मनिरूपणनामसप्तदशोध्या
यः ॥१७॥ ॥श्रीभगवानुवाच॥ अवमेकहूधर्मवनवा
स ॥ औरअधीकारसहीतसंन्यास ॥ जातेमेरीभक्तिहिपावें

॥ त्रक्रिद्दिपायममचरननीत्र्प्रावें ॥ १ ॥ वरसपच्चिनाहूंतैउप
रांनि ॥ तबवंनजाईरहेएकांति ॥ नारीसुतनमैंरहैननांदेई ॥
जोविधिवनतेसंगहीलेई ॥ २ ॥ कंदमूलकलवृतिहीकरै ॥ ब
नकलमरगछालातंनधरै ॥ तर्षपर्णनिकिसेंजसंवारै
॥ ईद्रीनीकेसवत्र्प्ररथनीवारैं ॥ ३ ॥ केसरोमननषदुरनांकरै
॥ देंहदंतमलनहिपरहरै ॥ नौमिसेनत्रीकालसनांना ॥ मल
नांउतारेमृत्रालसमांना ॥ ४ ॥ ग्रिषमरतुपंचत्र्प्रग्नीसांधे ॥
व्रछामेछांह्यानहीवांधे ॥ सीससकलजलधारासहे ॥ सीत
कालेजलसमोंहीरहें ॥ ५ ॥ येसीत्र्प्रातीकरीतपदुःकर ॥ दुषन
त्र्प्रापेजोजलपुहकर ॥ त्र्प्रग्नीपकरीतूपकपत्रादी ॥ न्नजनल

घृषवित्रअनादि ॥ ६ ॥ मुरालउषलकैपाखान ॥ केदंतनिसै
घूटेधांन ॥ देहजीवकाआपुदिआंने ॥ अधिकनग्रदेनसं
चयजांने ॥ ७ ॥ तिनहितिनसैमोकुजजै ॥ औरजहुवन
वासीतजे ॥ यग्नीहोत्रऔरुपुरनमास ॥ सौहीइसऔरु
चातुरमास ॥ ८ ॥ ईनसबहिनकेंममहेतकरे ॥ मोविनऔ
रहिदेनहीधरे ॥ युतपकरेमोकुआराधे ॥ प्रांणईद्रिय
मनसुबाधे ॥ ९ ॥ सुद्धोए सुषलहेममतनकि ॥ औरत्रि
गुणविस्तारतेविन्कि ॥ येसोहुंतबचनंनिपावें ॥ केके
मब्रह्मलोकहोयावै ॥ १० ॥ औरुजोयेसंकष्टहिकोरे ॥ दे
परीकांमनाहिदेमेधरे ॥ तासममसुषदुजोनांहि ॥ ताकेदे

या॥ सकलश्रमजांहि॥ ११॥ युक्त्रबपंचौतरीबर्षरषनि
पाछे॥ अहेसुधसंन्यासहि आछे॥ सकलक्रीयाकुताइंद्री
करे॥ मनसेममसेवाअनुसरे॥ १२॥ क्रमेरचीतसबलौक
नीजाने॥ तातेंझीलज्जेगूरकरीमांनें॥ ताहूतेकरेसब
तांग॥ मनवचक्रमसहूहढवैराग॥ १३॥ वेदविहितविधि
मोकूजजें॥ क्रतकौसर्वदेहूतजै॥ जबकोईसंन्यासदी
करे॥ तबहीसुरविघ्नहिविस्तरे॥ १४॥ परीएहविघ्नगीने
कछूनाही॥ मेरेचरनधरेउरमांही॥ जोकबहीकछूवस्त्र
हीराषे॥ ताकोपीनओरसबनाषे॥ १५॥ दंडकमंडल
करमेधारे॥ जोमिलेतोनहीओरवीचारे॥ देषदेषधरणी

पगधरे॥ वस्त्रछांन जलनही करे॥ १६॥ सतवंतवंनीकूबोले

॥ झीदेविचारकथीनांडोले॥ मौनधारीबांनीदंडे॥ और का

याकेनीक्रमषंडे॥ १७॥ प्रणायममनहीबसकरे॥ सबईं

द्री अर्थनिपरीहरे॥ और एचदेनहीजांमांहि॥ नेषधरे

जतीसोनांही॥ १८॥ नछ्याकरेसपतघर विप्र॥ औरकहु

कंहूगदेनछ्यांपि॥ सो विप्रचतूर विधिजेते॥ जीनारहे

निछ्याकीतेते॥ १९॥ विप्रकहीजेदेसप्रकार॥ तिनकौ

तुमसुकहौ विचार॥ देव विप्ररिषीविप्रहीजानें॥ विप्रवि

प्रअरुछत्रीमांनें॥ २०॥ वैसमुद्र और एकचंडाल॥ पसुप

लेछु विप्रसंस्कार॥ निछ्यानित और पढेपढावै॥ सकल

अर्थरुतत्वबतावें॥ २१॥ ईंद्रीयअर्थजीतसीतलसंतोष॥ देव
विप्रसो निर्गतरोष॥ तपरुसतअहीस्याकरे॥ दीनदीनषट
क्रमनिअनुसरे॥ २२॥ काललोपकवहूरनहिहोई॥ रिषिब्रा
ह्मणकहीयुतहेसोई॥ विनहंसाफलफूलहीखावे॥ तीनसै
देहहिव्रतावे॥ २३॥ वरषासीतउष्णसबसहे॥ विप्ररनीतस्र
धहिग्रहे॥ अस्वादिकनिकरेअरोह॥ रणमेसुरतजैतनमोह॥
२४॥ नितिसहीतहानेआंत्र॥ छत्रीविप्रहिदेनहिदंत्र॥ औ
रुजोउतमबिनजहीकरे॥ पस्तराखेषतीविस्तरे॥ २५॥ सौवहेवे
सब्राह्मणकहीए॥ तातेलेजीह्यानहीग्रहीए॥ बुधिअश्वहोतदे
सोई॥ तातेंबरजवावीप्रजोई॥ २६॥ तेललोनघृतदूधअरुल

छ॥ तीनैलअरुनिलमहीमधूमछ॥ ईनकोंवनजकरतुहैजो
ई॥ सुद्रविप्रकहीतुहैसोई॥ २७॥ सबअंतहीकोइहीहहीकरे॥
सबकेंछीद्रदेषतहीफेरे॥ प्रतिदीनहीससैोअधिकारा॥ वी
प्रकहावेसोमंजारा॥ २८॥ नछयनछअकारजकारज॥ ए
जोगमीअगमीलषेनयनाऊं॥ कृतघ्नसकलप्रसुनीकें
लछंन॥ सैोपसुब्रह्मनकेविपाछुंन॥ २९॥ व्यापीकुंतैप
तलावपुरावे॥ वंनवागादीकनीसकरावे॥ संधारुहंा
ननजांनें॥ यैसोविप्रमलेछवषांने॥ ३०॥ निंदकलोत्नप
रधनहरे॥ दैयकुपैनताकरें॥ सोचंडालविप्रकरीमांनै॥ ए
दसप्रकारविधिविप्रनिजांनै॥ ३१॥ तातेउतमन्नीझाकरे॥

औरसकलदुरपरहरे॥ सातघरनतेभीक्षापावें॥ ताहीकं
रीसंतोषउपावें॥ ३२॥ सोलेजावेंनदीतडाग॥ तातेकछू
एककरेविभाग॥ कोईमागेताकूदेई॥ केजलमांहीप्रवा
हकरई॥ ३३॥ विचरेंधरणीह्वैनिसंग॥ कदीकछूनांसवारे
अंग॥ तंनमंनईंद्रीयनिग्रहकरै॥ मेरोसमदृष्टैमेंधरै॥ ३४
॥ नीसदीनरहेंआत्माराम॥ विषयसुषनीकुसुनेनांना
म॥ समदरसीओरधीरजवंत॥ सदारहेंनीरन्तेएकांत॥
३५॥ मेरेन्नावन्तयोअतिसुध॥ प्रेमबीवेकजोंजलदुध
॥ आपहीमांहीविचारेएक॥ कदीनांदेषेतुलीअनेक॥ ३६
॥ आत्मयसब्रह्मकुंजांने॥ वधमुक्तिदोउनमेंमांनें॥ व

धनजवईंद्रीयवसहोई॥ मुक्तईंद्रीयनिबंधेसोई॥ ३७॥ ऐसे
जांनीइंद्रीयजीते॥ मोहीस्मीतेकालबिहीते॥ दोहूलोकते
होईविरक्त॥ तनहूंनांहीहोवेआसक्त॥ ३८॥ पुरग्रीमादी
कआईजोपरे॥ नीछाहेतप्रवेसहीकरे॥ देसपवीत्रसेवे
बेनसरीता॥ वांनपुरस्थजांहीयाचरता॥ ३९॥ तांहांतां
हां नितहीचलीजावें॥ तिनआश्रमनीतिछापावें॥ तिन
केलहेंसीलाकेंअंन॥ तातेंह्वेमनप्रसंन॥ ४०॥ तातेनि
रमलतालहें॥ उपजेग्यांनसकलमलदहे॥ इहीअर्थसा
त्यनहीदेषे॥ ह्वणत्तंगूरसववीश्वहीलेषे॥ ४१॥ तातेसव
तेग्रहेंविरक्ति॥ नहीउदमनहीविषेआसक्ती॥ ईहसव

अहंकारकृतजानें ॥ आत्मा विषे स्वप्नं सम माने ॥ ४२ ॥ कहीनो
ह्र हैचीन वंनकरे ॥ मंनवचक्रमहुरीपरहरें ॥ एसी विधजबउ
पजे ज्ञांन ॥ होईवीरक्त जेसबआन ॥ ४३ ॥ मेरीत्नकि छिदेमे
आवे ॥ तबसबब्रह्मम्रमछोटकावे ॥ विधिनषेधदोऊन्त
रमजांनें ॥ वेरसम्रतीकीसंकनंामांनें ॥ ४४ ॥ अतीबूधपरी
वालकसमरहे ॥ विधिनषेधकछूकहैनांगहें ॥ सबजांनेप्र
ज्योंउनमंत ॥ चेतनमांहीसेजडवंत ॥ ४५ ॥ योहोपषानीर
तनएकहोई ॥ कबहूंबाहनांहांनैसोई ॥ बाहेरएकमध्यए
कसमरहै ॥ कबहूंबाहनांहांनैसोईकोईपछिनहीअहै ॥ ४६
॥ जौजौकहैसुनेत्योंत्योंही ॥ तबमतौनांतागेक्यौंही ॥ कहू

ते उदवेग नां आनैं॥ अंत काहू कू आपना ह्वानैं॥४७॥ निद्यो
आदि सहै दुखेन॥ अंघर धरे निरंतर चैन॥ काहू कू अपमां
न न करैं॥ मन क्रम बचन मांन बिस्तरैं॥४८॥ पक्ष समांन वैरा
गन मांनै॥ सब विकार देह के त्यांनै॥ जौ आत्मा आपने त
न मांही॥ सो ईस बदु जो कौ नांही॥४९॥ जो बहु घट निमां
ही ससी एक॥ घटन संग जांनीए अनेक॥ तौ तें हष्टी अनि
ष्ट दिकेरे॥ सो सब आपही कौ विस्तरे॥५०॥ तातें आत्मा बु
धिही राषे॥ जे ह देह तजतै सब नाषे॥ समय पाए जोजन
नही आवे॥ तो हूं कछू नां मंन मा लावे॥५१॥ कर्म रचित देह
नी जांने॥ तिन द्वितै सब सुष दूष मांनैं॥ ते सब सुष दुषं क

१३६

मैसरीर॥ यु आत्मामैज्यौं मृगनीर॥ ५२॥ केवल आहारहि
नोंनाषै॥ उद्मकरीप्रांणहीराषै॥ प्राणहीराषेहोए विचार
॥ लहेमोहेछूटेसंसार॥ ५३॥ जोमेरेईछातेआवें॥ उत्तमम
धमसुकछूपावें॥ युअसनवसनादीकचहे॥ जेसोआवेते
सोगहे॥ ५४॥ प्रीयैअप्रीयेकिछुधिनांआंने॥ होउमीथ्यांही
करीमांने॥ कोउटेकनांमनमें धरे॥ सोविनसकलओरपर
हरे॥ ५५॥ सउचआचमन औरु अस्नांनां॥ औरकछूंआच
ननाह्नानां॥ तेकछूसंकातेनहीकरे॥ जोकछूसोंईछाआच
रे॥ ५६॥ जोमेरीश्रुतिकोल्लमनांही॥ होउत्रमजानहुंतमांही
॥ परीतथापीकर्मनीआचरे॥ सोकछूलोकनकेमंनमैंहेंति

धरे॥ ५७॥ स्वैज्ञांनी विधिकरेनाही॥ विधिनषेद्त्तरमजांने।
मांही॥ परीआपनाईछाआचरे॥ लोकनकूहीतहीदै धरे॥
५८॥ ताकें त्तेद्दृष्टी कछूनांही॥ ज्ञानदृष्टदेषेतामांही॥ पु
रवसंसकारदेंहं जैसैलो॥ देंहमांहेसैसोछूतेसैसोलो॥ ५९॥ वोहे
रसोत्तवमेनहीआवें॥ मेरो निज निरमलपदपावें॥ औ
रुंजाके उपजेवैराग॥ काहेोचाहेयात्तवकौताग॥ ६०॥ प
रीममत्ताजनजुगक्तिनहीपावे॥ सोसतगुरकिसरनहीं
आवे॥ भ्रमवीनालहेसोंजुक्ति॥ पावेमोहेहोईत्तवमूक्ती
॥ ६१॥ गुरुकुब्रह्मरूपहिकरी देषै॥ मांनवबूधकदेनहीले
षै॥ सर्धासहीतअसुआनजै॥ मनक्रंमवचन निरंतरत्त

जै ॥ ६२ ॥ जौलगीब्रह्मविचारहीपांवै ॥ त्यौंलगीगूरतजीअं
तनजावै ॥ पाछैजौजांनेत्यौंरहैं ॥ परमहंसकेधर्मेनियरहैं ॥
॥ ६३ ॥ परीजनषटरीतुपुजीतेनाही ॥ इंद्रियअर्थेविचार
तमाहि ॥ चंचलबुधीनज्ञांनविराग ॥ तासुसकलव्रथा
हैताग ॥ ६४ ॥ जैसेंदेषाईजीवकाकरै ॥ ताकौदौसक
हैौनहिपरैं ॥ देवपीतररीपअ्तननाषे ॥ तीनकौरि
णसिरउपराषे ॥ ६५ ॥ अंतरगतिमेताहीछिपावै ॥ आ
पहिवचैवषउपावै ॥ सौसुषकुनांलहेयालोक ॥ औ
रसौनष्टहोईपरलोक ॥ ६६ ॥ एहवर्णाश्रमकेधर्म ॥ इनते
नकिलहेदहिक्रम ॥ ब्रह्मचारीकैधर्मपरधांन ॥ नारेंनारें

करुबषांन॥६७॥ समरुआ दिसासीनसीको॥ अतिविचा
रतबनवासीको॥ ग्रहेहै मेंद आजन्नममकर्म॥ ब्रह्मचर्य
गुरुसेवाधर्म॥६८॥ ब्रह्मचरजतपसौच संतोष॥ सक
लसुह्रदकितहूनांहीरोष॥ मेराजजनसकलममकार
ण॥ एसबहीनकेंधर्मसधारण॥६९॥ उहीदेई विमता
रतुंदांन॥ चुलैनागवंनकरेदीनआंन॥ आबिधिअ
पनेंअपनेधर्म॥ मेरेहेतकरेसबकर्म॥७०॥ सबमेंजो
नेमेरोज्ञाव॥ काहूंपरनांधोकूज्ञाव॥ सोपावेमेरीइ
ढभक्ति॥ औरसकलतेकरेविरक्ति॥७१॥ तातेमेरोउ
पजेंज्ञान॥ देषेमोहि मिटेंसबआंन॥ एसौहोएपावे

ममरुप॥ बौहोरनाआवेएहनंवकुंप॥७२॥ जेदसकल
अस्त्रायाश्रमा॥ तिनकेएनाषेमेंध्रमा॥ नक्तीसहीत
एमोदमिलावें॥ नक्तिविनानवसिंधुबहावें॥७३॥ एसो
तत्वलहेंतेतरै॥ औसकलजोमैंमरै॥ आवागवंनमि
टेनिस्तरी॥ युसंस्पारनरमतफीरै॥७४॥ दोहा॥ उ
धवतोसेकह्यो॥ ब्रणाश्रमकोधर्म॥ जातेममनक्ति
हीलहो॥ छूटेबंधनकर्म॥७५॥ इतिश्रीनागवतेम
हापुराणेएकादशस्कंधेश्रीनगवतउधवसंवादे
नाषायवर्णाश्रमधर्मनरोपणंनामाष्टादशोध्या
यः॥१८॥ ॥श्रीनगवानुवाच॥ उधवन्नणऔरु

आश्रम॥ तिनके मैं संतोष धर्म॥ ईन मेरही मम अनु-
रागति उपजावैं॥ तामे ग्यांन नही पावैं॥१॥ ग्यांन नही पाये
सकल जरम जानें॥ ब्रह्माश्रम मिथ्या करी मानैं॥ सब सा-
धन तजी मोकु धावैं॥ और कछू हृदै नही लावे॥२॥ ग्यानी
कै मेही हूं साधन॥ और मेरो ईनी सब आराधन॥ मोही क-
री मोकु आराधे॥ तन मन ईंद्रीय मोसें बांधे॥३॥ मो बिन
भ्रगादीक नहीं लेई॥ मेरे ईश्वरण नी चीत देई॥ मो बिना
मुक्ति कछि नही गेहे॥ मो बिन सकल वासना दैहै॥४॥
मो तन मेहूं ता कूं प्रीयें॥ मो बिन और सकल अप्रीयै॥
ये है सही तउ पजे ग्यांन॥ जेते ज्ञान मे सो हि सुजांन॥५॥

१३५

ज्ञांनीतेमेरेप्रीयेनाही ॥ सदावसेमेरेमनमाही ॥ मेताकुं
मेरेमैंनहेसोई ॥ दुजोनाहीपरसपरकोई ॥ ६ ॥ जपतपति
र्थव्रतऔरूदांना ॥ इकहांलोजोविधानांना ॥ तेसवक
रेनहीफलयेसो ॥ ज्ञानकलातेहोवेजोसो ॥ ७ ॥ तातेज्ञां
नहिर्देमैधारै ॥ औरसाधनसकलनीवारें ॥ सबमेरूप
आपनोजानें ॥ मोहीज्ञांनीप्रेमसेवाहांने ॥ ८ ॥ क्षेकरी
सहीतज्ञांनविज्ञांनें ॥ देषेएकसकलजगवांन ॥ बोहोरूते
ममनीजरूपसमावे ॥ जांहांजाईकोईनहीआवे ॥ ९ ॥ जब
हप्रांणीज्ञांनहीपावै ॥ तबहीममनीजरूपसमावैं ॥ ज्ञांन
विनानांपावेंमोही ॥ एहनिजमतोकेहेताकुंतोही ॥ १० ॥ उध

वस्ता मैं बिबिधि बिकारा ॥ जन्म मरण सुष दूष परकारा ॥ ए
समस्त यातन के जानौ ॥ सो तन माया त्र्कर्म करी मानौ ॥ ११ ॥
आपुही सुध निरंजन देषै ॥ द्वैत अद्वैत एक करि लेषै ॥ यै ए
सकल प्रगट देहादी ॥ ते आत्मा में हैं हि न आदी ॥ १२ ॥ और तअं
तहर है कछू नांहि ॥ यच यज्ञान ह ते बरताही ॥ ज्ञानदृष्टि
करी देषे जबही ॥ त्रीगुण रहीत आपही है तबहि ॥ १३ ॥ जै
से रजु मांही यही कहै ॥ आदि नाह तौ अंत न हि रहै ॥ त्र्कर्म ते
मधी मंदमति मांनैं ॥ है नाहि प्री है सौ जांनौ ॥ १४ ॥ तौ देहा
दि कसकल त्र्कर्म देषें ॥ आपुही सदा अस्ल हि लेषें ॥ यै सा सैं
नाहरी से ज्ञान ॥ उधव जन पुछै भगवान ॥ १५ ॥ उधव उ

वाच॥ हे गुरु ज्ञान क्रपा करि कहो। मेरे नां हां नाचर्म कूंद
हो॥ औरु तो ही नां षो विज्ञान॥ जक्ति आपनी भ्रम निंदा
न॥ १६॥ जाकूं वादे सकल मदूं ता॥ ताते होई सकल को अं
ता॥ जा विज्ञान ध्यान कछु नाहि॥ साधन सकल वृथा श्र
म जाही॥ १७॥ जाकू पाई मुक्ति नां हिले वे॥ और सुष पर द
ष्टि न देवे॥ ये सि जक्ति क्रपा करी कहो॥ आपनो जांनै वो
होर नी वहो॥ १८॥ एह भव सागर विकट अनंत॥ जां मे
जर्म तन पावे अंत॥ ताफ रूत पत्ति विधि संताप॥ तीन
मे षरे आप ही आप॥ १९॥ ताते जीव महा दुष पावे॥ सुष
हाने ता सुष होई आवे॥ ताकूं दुजे रहु कनाही॥ मे बिचार दे

षोंमंत्रमांही॥२०॥तुमोरेचर्लीछत्रसिरधारे॥सोसमस्तसं
तापनीवारे॥ताकुंदसौदसात्रमृतबरषे॥ताकेदरसत्रौ
रसबहरषे॥२१॥जोकाहूकंगालहिलीजै॥ताकेंसीसछ
त्रहीदीजे॥सोहैछत्रपमाहासुषपावें॥औरुऔरनकेदु
षमीटावें॥२२॥तौतुवचर्णछत्रसीरधावैरे॥सोत्रपनेसु
षदुषमीसबेनिवारे॥सोत्रतीनलोकनिमांही॥तासम
त्रवरकहूकोंनांही॥२३॥औरुजोताकीसरणहीत्रावें
॥तेतोसकलप्रमसुषपावें॥यात्रवकुंपपरोंबेहाला॥
तापरउसोमाहात्रहीकाला॥२४॥तातेबिषबिषयासु
ष।जांने॥तीनकेंत्रीमतबहूउदमठांने॥तातेसदात्रनं

नदुषपावें ॥ जाकौ कबहूं अंत नां आवें ॥ २५ ॥ ताकु कष्य
पिउ षेपिवावौ ॥ कादि कुपते मृतक जीवावौ ॥ वचनां अ
मृत की वर्षा करो ॥ अपने चरण निबांधि उधरो ॥ २६ ॥ तुम
हीं जगत पिता जग स्वांमि ॥ जग पालक जग अंतरजांम
मि ॥ यैसै बचन सुने भगवानां ॥ तब उधव सें भाषे ग्यां
नां ॥ २७ ॥ श्री भगवानुवाच ॥ उधव प्रस्न करी तुम जो य
ई ॥ धर्म पुत्र की नीति सोई ॥ सरसें जां सें जां मे भीषम पे ॥
हम कु सुनत बचन उचरे ॥ २८ ॥ तेई बचन अब मे तो हीं सु
नांउ ॥ भक्ति ग्यांन विग्यांन जनाउ ॥ प्रकृती पुरष द्रातत्व
अहंकारा ॥ सबदादे जे पंच प्रकारा ॥ २९ ॥ त्रिगुण रु ईंद्री

एहसएक ॥ पंचभूतमीलीभएअनेक ॥ थावरजंगमवि-
विधिप्रकारा ॥ ईनयहाविसकैावीस्तारा ॥ ३० ॥ इनबिन
औरकहूंकछुनाही ॥ एकहृष्टिदेषैसबमांही ॥ जाकरीस
कलएककरीजांनै ॥ ताकूसाधुज्ञांनबषानैं ॥ ३१ ॥ औ
रुजबएअहाईसतत्व ॥ मायाजांनेंसकलअतत्व ॥
आंत्मंब्रह्मएककरीजानै ॥ देहादीकसकलमीथ्यांमां-
नै ॥ ३२ ॥ रजूजांनजौंसर्पनीवारै ॥ त्यौंसमस्तभ्रमरू-
पवीचारै ॥ जैसेदिसामोहमीटीजावैं ॥ आहोदीसाकी
षबरहीपावे ॥ ३३ ॥ करतहिनिरंतरज्ञानविचारा ॥ देषे
ब्रह्ममिटेविस्तारा ॥ ताकुकहेतहेविज्ञांन ॥ तातेलहे

मोहीतजेआंन ॥ ३४ ॥ आदिहूतो रहेहै अंत ॥ सोईअ
वहूंबरतंत ॥ वर्णीकार जगटहेजैते ॥ आदिहूतौ अंत
नांतेते ॥ ३५ ॥ तासैंअवहूंमी थांदेषे ॥ तीहूकालमो
हीकूलेषे ॥ जेसेतिहूकालमै धरणी ॥ घटनामादीक
मीथ्याकरणी ॥ ३६ ॥ श्रुतिकौमतौइहेमांआंने ॥ नेति
नेतिश्रुतिसदावषांने ॥ नानाकारबेंदब्रंह्मलंषे ॥
ब्रंह्मश्रुतिंदुजोसबनांषे ॥ ३७ ॥ सकलघटनीमेंएक
बतावे ॥ उचनीचसबभेद मिटावैं ॥ येसीजांति विचा
रेवेद ॥ जांनेमोहीमीटावेषेद ॥ ३८ ॥ अरुयौ हिसबघ
गटलेषे ॥ सपतधातकेंसबतंनदेषे ॥ अरुदेषेउपजत

बीनसंत॥ युसतनंा कहु विचारेसंत॥३९॥ अरुसंतपुरुष
चरहेजेते॥ तिनकेंबचनबीचारेतेते॥ एकमसेसबनी॰
कूरेषे॥ जांनीमोह्ाभेदन्नमेलेषे॥४०॥ युरकेबचनबीचा
रसुद्धि॥ यात्मानिवेकरेत्यैातबद्धि॥ अरुतैाअनुभवहिरदे
विचार॥ चेतनराषैयचेतनडारे॥४१॥ सबदेषैचेतनयाधा
रा॥ ईद्राएदेहविविधिप्रकारा॥ चैतन्नतेजहहअर्थैनिगदें
॥चैतनबीनाको॥ ईनहारहै॥४२॥ युवोदोतनयाद्रष्टांत॰
अनुभवअरुत्यैाह्ासिधांत॥ ईनचारीकोमतोविचारे॥॰
मोहिजांनीसबभेदनीवारें॥४३॥ सकलइष्टतेहोइविर॰
क्त॥ चैतनब्रह्मसदाअनुरक्त॥ क्रमरचितसबमीथ्यामा

वे॥ ब्रह्मलोककुं विनसत जांने॥ ४४॥ देषेसुनेइंद्रे मांआ
वे॥ सो सब बंधन जांनी बहावे॥ मेरी भक्ति द्रिढ़ेमे धरै॥
जीन तें भक्ति होए ते करे॥ ४५॥ भक्ति अरु भक्ति हेत दे जे
ते॥ तुम सें पिछै न्नां॥ षेते ते॥ अब वो अरु नुगदेत विचारैं
॥ भक्त भक्ति साधन उर धारैं॥ ४६॥ मेरी कंथा सुने और कहें
॥ प्रीत सहीत उर अंतर गहे॥ पूजा में अती ने हा धारें॥ बहु
तं न्नांती स्तुति विस्तारें॥ ४७॥ बंदन करै अदछनादेई॥ अरु
अष्टांग प्रणांम करेई॥ सब भुत निमें मोकुं जांने॥ प्रितम ज
न मोरो तन ही मांने॥ ४८॥ मम भक्तन कुं बहू बिधि सेवें॥ तं
नमं न धंन तिनन हूं कुं देवें॥ मेरे हेत व्रत जो करे॥ मो बिन औ

रसकलपरहरें ॥ ४९ ॥ मेरेगुननीकहेउरधारे ॥ दुजिसकल कोंमनानिवारे ॥ मेरेअर्थअनर्थसबतागें ॥ सुषऔरुअनु गनीतेबिरागें ॥ ५० ॥ जपतपजज्ञजोगब्रतदांन ॥ सयना सयनभोजनजलपांन ॥ ईनादिकसबममहीतकरें ॥ तोतें अंतरसोपरीहरें ॥ ५१ ॥ सदाआपकूमोहीनीवेदे ॥ प्रेमसह तउरग्रंथहीभेदे ॥ येसैंजबममभगतीहोलहें ॥ तबअब सेषकछूनहीरहे ॥ ५२ ॥ साधांनसाधिलहेजोसकल ॥ का लक्रमदोवेंअकल ॥ जबमो बिषेचितधारें ॥ तबहेसाल करजतमउारे ॥ ५३ ॥ धर्मईश्वरजज्ञांनवैराग ॥ ईनकेंसहेज लहेंवडभाग ॥ अरुमेरीभक्तीजोनांपावें ॥ देहग्रहेंसेचा

तलगावें ॥ ५४ ॥ तवहोवेरजतमअधीकार ॥ बंधेयधर्मपेर
संसार ॥ बंधमुक्तिकोंचितलैमावैंहीकारन ॥ बोरेचितचित
हीतारन ॥ ५५ ॥ मोमेधरेमोकुलदें ॥ जवमेंधारेजवमेवदे ॥
तातेधर्मज्ञांनवैराग ॥ ईसुरताआदिकजेत्राग ॥ ५६ ॥ तेसम
सेमेरेआधिन ॥ तातेंहोवेममलोलीन ॥ सेवतमोहिसक
लएपावें ॥ मोबिनकोईनीकटनांआवें ॥ ५७ ॥ मेरीभक्ति
कहावेंधर्म ॥ एकव्रतस्सरउधवदुजोसकलअधर्म ॥ एक
ब्रह्मदरसनसोज्ञांन ॥ याबिनाओरसकलअज्ञांन ॥ ५८ ॥
औरुउधवसोंदेवैराग ॥ जोसमसविषयकोत्याग ॥ औरुई
सरजसिधिअणिमादि ॥ ममसेवककोसेवकआदि ॥ ५९ ॥

॥ तातें जे मन मसरण ही आवे ॥ इतेई भक्ति मुक्ति सुष पावे ॥ ना
रद आदी सकल ब्रह्मचारी ॥ भक्ति विना आनी ति विचा
री ॥ ६० ॥ दोहा ॥ येंसे अदभुत वचन सुने ॥ कहे कृपा करी
प्रश्न ॥ तब उधव जन हृषी करी ॥ कीन्हौ हरी सौ प्रश्न ॥ ६१ ॥
चौपई ॥ उधव उवाच ॥ हे प्रभु पुरन करुनाकरो ॥ ज्यौं
हें त्यौ सब विधि विस्तरौ ॥ जो तुम धर्म भक्ति क तत्नां ष्यौ
॥ ब्रह्म ज्ञान दुष कौ ही राषौ ॥ ६२ ॥ और रु वैराग आदी क सम
झाए ॥ मेरे सब संदेह मीटाए ॥ त्यौ हि सकल तत्व सौ भाष्यौ
॥ होई अनतत्व दुर करनां ष्यौं ॥ ६३ ॥ जम कहिए सों कें प्रका
र ॥ अरु तौं कहियें नीयस विस्तार ॥ अरु समकौं न दैवौ

दंमकौंनदेवा॥ कौनकुमारुधितिंकेजेवा॥ ९४॥ कौनसुर
औरुतपदांन॥ कौनसतकौनजूठवषांन॥ कौंनतंग
कौनधनदेईषु॥ कौनजतुदक्लिनावरीष्टा॥ ९५॥ बलकौ
रुदयालाऔरुसु॥ ९॥ विद्यालजाऔरुसोजादुष॥ ९
पंडीतमुर्षग्रहेस्तपंथ॥ स्रगनर्कऔरुबंधकुपंथ॥ ९६
॥ कौनदालिद्रकौनधनवंत॥ कौनक्रिपंनकौनश्रीवंत
॥ अरुईनतेउलटिदेजेते॥ समअरुदंनआदितसव
तेते॥ ९७॥ मोंसेदेवक्रिपाकरीभाषे॥ एषोनलक्षतत्व
द्दिनांषे॥ मुनीउधवकीनीवहूभक्ष॥ तबबोलेक्रीप
करीप्रक्ष॥ ९८॥ श्रीभगवानुवाच॥ दंसारदितसत

अस्तेय॥ संग वीवरजन सबकु देय॥ लजा मुंन आस्ति
कथीर॥ ब्रह्मचरज छुमा अरु नीर॥ ६९॥ ये द्वादस जम
म्रदे नीव्रति॥ चारु तौ द्वादस ज्ञान ईस म प्रवृती॥ सउच सक
पटर हित धर्मो दर॥ जप तप रु समस प्रजा आदर॥ ७०॥
तिर्थे अटन अतियकु पोषे॥ गुरु सेवा रद्रढ संतोषे॥ पर
उपगार देम विस्तार॥ मुक्ति जक्ति चाहें सों धारे॥ ७१॥ स
म ओ मो मे निषा लुधी॥ दम ईंद्रिय निग्रह मन कुं स्हु
धी॥ जो दुष निउप। जावें कोई॥ तिन तें जाके दुषन है
ई॥ ७२॥ सकल सहें कछु मन न नहीं आने॥ ताकौ मम
जन छिमा बषांने॥ जिह्वा ईंद्रि चंचल होई॥ तिन दौ मै

कु धारे जोई ॥ ७३ ॥ रस अरु अबला कुं नहीं ग्रहैं। ताकुं मेरे
जैन चितक कहे ॥ श्रुत होहि त्याग सौं दांन ॥ जोग जतन सौ
तप नहीं आन ॥ ७४ ॥ सोई सुर जें जीते सु भाव ॥ सौइ सु
रंजें सत जे सकल ममभाव ॥ मो कुं लीये वचन सौ स
त ॥ मो विनास कल बोले असत ॥ ७५ ॥ कर्मनि मे जो है
ईय संग ॥ सो वहे भ्रम सो वहे अंग ॥ सो हे त्याग तजे फ
ल कर्म ॥ सो धन इष्ट भ्रम मम धर्म ॥ ७६ ॥ जग परूप मैं हूं न
हिं चींन ॥ सौ दक्षिना देई मम ग्यांन ॥ प्रणायम भ्रम बस
कहीये ॥ जा करी बडो रात्रु मं न गहीऐ ॥ ७७ ॥ जोग ईजो
मम ईस्वर्ज दिपावै ॥ चौतन निजानंद है होई आवै ॥ मेरी

नक्तिएकएलाज्ञा॥ नक्तिं विनासेंसकलअज्ञान्न॥ ७८॥ जा
तेभेदमिटेंसो विद्या॥ उधवदुजी सकलअविद्या॥ लजामां
नीअरुकर्मनुग्रहे॥ ममजननाकूलजाकहे॥ ७९॥ निह्कंच
ननिरपेषनीरलोभ्ना॥ ईत्यादिकजेगुणनेसोभ्ना॥ सोसुषजो
सुषदुषअतीत॥ पुंननंपापउह्लनहिसीत॥ ८०॥ बीषयनी
कीईछादुषजानें॥ गुणग्नाधनआठिसमांने॥ बंधमुक्तिकी
जुगतिजांने॥ ममत्तंनपेडीनताहीबषांने॥ ८१॥ अहंकार
जाकेंजगआदी॥ आपनेकहैदेहग्रहादी॥ सोसमस्तसुरष
ईजांने॥ यातेऔररत्नांतीमतीमांने॥ ८२॥ जाकरीमोहोल
हैसोपंथ॥ जेप्रव्रतिसौसकलकुंपंथ॥ नित्यसंतोषीसीत

लहिदेषै॥ सांचीकचितसबनपरसदेषै॥ ८३॥ एहंदेह्यग-
सुषकेनाउजार॥ मरकनीमैतामसधधीकार॥ सतगुरएंक-
बंधूकरीजाने॥ अरुसकलईवेरीमाने॥ ८४॥ सतगुरुदे-
सौमेरैरुप॥ जातेजीवतजेग्रहेंकुंप॥ सतगुरबीनावंधु-
नाहीकोई॥ सतगुरविनासोंवेरीहोई॥ ८५॥ मानवतवसो-
ईग्रहेकहीए॥ ताकेग्रहेंग्रहीकौरहीए॥ सोदरीद्रसोंहआ-
वंत॥ ज्ञीपलईद्रियनीवसवरतंत॥ ८६॥ विषसविषयन-
अनसतसोई॥ विषयनविसतेसकलअनीमोई॥ अन-
नीअलकदीमेतोसु॥ जाजाविधिपुछीतुममोसु॥ ८७॥ बिधि
नषेधकेलछनजेसे॥ माहापुरुषजानतहेंतैसे॥ विधिनषे

धकौजौलौजांनै ॥ ऊचनीचबहुभेदनीमांनैं ॥ ८८ ॥ सोंएहस
कलनषेधहीजांनैं ॥ भेदद्रुष्टीसौ विधमतमानैं ॥ विधिअ
रुनषेधऔरदेषे ॥ दहूतेपरेताही विधिलेषे ॥ ८९ ॥ विधिन
षेधीपसुमांनवामांनै ॥ पंडीतकदेहिदैनहीआंनै ॥ तातैं
विधिनषेदभरमजांनैं ॥ मेरोरूपसकलकरीमांनैं ॥ ९० ॥
दोहा ॥ विधिनषेदभर्मजाननो ॥ ग्यांनकह्योजबरूप
वेदवचनसुमरीकरी ॥ ऊधवकीनीप्रश्न ॥ ९१ ॥ इतिश्री
भागवतेमहापुराणे एकादशस्कंधेश्रीभगवतउ
धवसंवादेभाषा एकोनविंशोध्यायः ॥ १९ ॥ ॥ ऊध
वउवाच ॥ हेप्रभुजी तुमकरुणाकरो ॥ मेरोएहसंसेपरहरो

॥ तुमीरी आज्ञा कहीए वेद ॥ ताहीमें दीसत है भेद ॥ १ ॥ वि
धिनषेद सो वेद बषांने ॥ ताहूते रु सब कोई माने ॥ तुम्हा
रि यज्ञा क्यो न मर्म लषें ॥ जाते विधिनषेध न ही देषें ॥ २ ॥
औरु ए प्रगट दीसें दव ॥ विधिनषेदकें बहू विधि नेव
॥ प्रगट विधि ब्रणाश्रम ॥ तिनकें बिबिध जाति विधि
धर्म ॥ ३ ॥ तिनकें प्रगट फल स्वर्गादि ॥ अबको नहीं एहें
पंथ अनादि ॥ औरु मषेध प्रगट प्रलोम ॥ अबष्टादि
क जे अनुलोम ॥ ४ ॥ वर्णी निमें संकर है जेतें ॥ औरु ती
नके कर्म प्रनीते ते ॥ तिनकें फल प्रगट नरकादिक ॥ ९
काहू ते फल आई मावादक ॥ ५ ॥ जाके फल दिवेद जोक

हैं ॥ ताकें फलनरतौ हालहैं ॥ अरु तो ईश्वर है सबयकाल ॥ प्र
गट बिधिनषेध गोपाल ॥ ६ ॥ अरु जो बिधिनषेध दिसत
॥ त्यौ सुष रु दुष फल असत ॥ कौई श्रुग नर्ग न दीजावैं ॥ तब
हूं भ्रम करी बिधि नकरावैं ॥ ७ ॥ औरौ कहा कहीयें वारंवार ॥
तुमारे बचन अनंत प्रकार ॥ एहो तो कहौं तुमारो वेद ॥ जा
ते विधिनषेध के भेद ॥ ८ ॥ देव पीतर मुनी मानव जेते ॥ वे
दनै न करी देषे तेते ॥ विधिनषेद तिनकें फल जाने ॥ अ
रु तौ हीतौ ले उदम ठाने ॥ ९ ॥ सकल तुमारी यज्ञां मां
ही ॥ ज्यौं थापै अरु त्यौं वरतां ही ॥ मीथ्या कौ कहीयें सो
वेद ॥ याकौं मोहें बताया भेद ॥ १० ॥ है बिधि बचन बडै सं

देह॥ वैदैंसतकीधु प्रत्तुयेद ॥ एहपुरसांसैंदेहमिटावै॥ ॥एक
त्नो तिकें बचनसुनावै॥ ११॥ याबिधिप्रेमज्ञांनबिस्ता
रै॥ अपनेरचेजी॥बनीस्तारो॥ सुनीउधवकीएसीबा
नी॥ तबबोलेहंसीसारंगपानी॥ १२॥ श्रीभगवानुव
च॥ उधवप्रमज्ञांनअबकहूं॥ तेरे सबसंदेहहींदहूं॥ १
मेत्नांषेहेतीनउपाए॥ क्रमरुत्तक्रिज्ञांनसमुज्याए॥ १३
॥जो जाकेदेषेअधीकारा॥ तेकोंतेसोंकीयोविचारा॥
जोत्नांषोसबहीनमेंज्ञांन॥ त्यातेबिषैयातजैनोंत्र्प्रां
न॥ १४॥ तातेक्रमकर्मसकलछोडाउ॥ लेकरीज्ञांनमधार
हराउ॥ तातेबचनसकलममसत॥ बिधिनषेधउनहीं

असत ॥१५॥ श्रीएसकलज्ञानके कारन ॥ ज्ञांनलदेतेसकल
नीवारन ॥ एतुमसीदीब्रह्मकीजांनौ ॥ तातेंकछूसंदेहनांआ
नौ ॥१६॥ जीनेअवसपजौदेतौजानौ ॥ ब्रह्मलोकलौदुष
करीमांनौ ॥ तातेंतीनकेउदमदहे ॥ औरसकलतजीथीरहो
ईरहे ॥१७॥ जीनकेंज्ञांनजोगअधिकार ॥ थीरहोईकरीब्रह्म
वीचार ॥ औरजीनविषयदुषनहीजांने ॥ अरुतिनकेंउद
मनहीजांन ॥१८॥ परीममगूनसुनीकरीसुषमांने ॥ मेरो
अजनअलोंकरीजांने ॥ तीनकुअक्षीजोगहेतकारी ॥ ये
सीजांनेतत्ववीचारी ॥१९॥ रुजोवीषयनीकेआधिन
॥ तीनकेउदमसोतौहैलीन ॥ कथासुननकुनहीआका

स ॥ अरु मम प्रीत न हिय त्रास ॥ २० ॥ तीन कुकर्म जोग सुष दाई ॥ इन ते और सरे ना उपाई ॥ एती नौ त्राष नहु तो सुनी ॥ अलच्चीत ह्वै सुनी ॥ यौ मो सु ॥ २१ ॥ प्रथम ही कर्म जोग वि स्तार ॥ विषई जीवनी कुं नी कुं नीस्तार ॥ मेरे वहु विधि गुण बीस्तार ॥ कथा प्रसंग बिबिध प्रकार ॥ २२ ॥ तीन में प्रीत नां उपजे जौ लौ ॥ कर्म जाग नांत जीए तौ लौ ॥ और जो ग्यो नाबेदे वैराग ॥ बिषयनी कौ नां मीट अनुराग ॥ २३ ॥ तौ लौ कर्म जोग न हीत जै ॥ कर्म न करी मो कें अर्जे ॥ अथ नै धर्म मां ही थीर रहै ॥ कब हू न लन षेद नां गहैं ॥ २४ ॥ जन्न्ना मो हू छा व हूं बीधि करें ॥ सकल कर्म मम हीत वीस्तरें ॥ मन ते ईछा सकल

मीटावै॥ जोजनसुरगनरकनहीजावै॥२५॥ येसेज्ञांनरत्नकौकु
लहै॥ तातेकर्मकालमांदहै॥ उधवएमांनवतंनयेसौ॥ सकल
सीष्टमांनहीजेसौ॥ २६॥ सुर्गनकेकेवंछेयाकु॥ परीकौहीन
हीपावेताकु॥ ज्ञानरत्नक्रियातंनकरीलहे॥ औरसबनीकरीन
वजसबहे॥ २७॥ यौयेसौमानवतनपावें॥ सौसमस्तकाम
नांमीटावें॥ तजेसकलनीषेधीकर्म॥ औरुकांमनाहेततजे
धर्म॥ २८॥ औरुफेरीनींबछैममदेह॥ प्रमरतनंनांषेवेए
ह॥ जदीषीवोहूरूनर॥ तनपावें॥ परीकछुज्ञांनादीकमांर
हावें॥ २९॥ मातापीताभ्राईकूललोग॥ ज्ञांनमीटावेक
रीसंजोग॥ षानपानयनादिकबहूसाधे॥ बालपनाते

ताकुबाधे ॥ ३० ॥ तातें जौलगी नाहीं मरे ॥ तौलगी जतनप्र-
थमही करे ॥ पीता नूकु मीथ्यां करी मांने ॥ औरु पुनी ब्रह्म
ही कतीजांने ॥ ३१ ॥ तोते जतन नीरंतर करे ॥ सावधांनता
हृदे धरे ॥ यातें नमें असक्त नांसहोई ॥ करै उपाय मुक्ति
कौ सोई ॥ ३२ ॥ जो पंछी तरु वासा करे ॥ तामें प्रीत मानी म
न धरे ॥ तब औरु ब्रुछु काटे जो कोई ॥ तिन केइ दै दया-
न हि होई ॥ ३३ ॥ ब्रुछु संग जो पंछी परो ॥ तातें तीनके बस-
होकरि मरो ॥ परि जो प्रथमही ब्रुछु ही तागे ॥ काटत देषा
आपही त्यागैं ॥ ३४ ॥ पाप हि ए जौ सिद्धां ति बचावें ॥ पीछें
जां दोर है तां दं ज्ञावे ॥ जौ हि नर तूं रुतंन आधार ॥ यात्म-

पंषि कियौ आगार॥ ३५॥ ताके निसदिन करे अहार॥ स
दा निरंतर बारंबार॥ ऐसै मंन देषि धरै त्रास॥ प्रथम ही
ता गेत के बास॥ ३६॥ मो मे आई बसेरा करै॥ तातें बोहरी
ना जनं मे मरै॥ मानव तंन भव सागर नावै॥ में रिक्षपा हु
ते ए ह पावें॥ ३७॥ जामगुरषेवट सुषदाई॥ सांन कुल मे प
वंन सहाई॥ तो हूं आप ही जो न ही तारे॥ नाव छोडी भव
सागर डारे॥ ३८॥ ताकू आत्म घाति जांनै॥ दुजै आत
म घाति नां मांनै॥ ॥ अरु जो भव ते दोवे वक्र॥ दुषमयै
जांनै नां हौ वैरक्र॥ ३९॥ समस्त ईद्री य वस करें॥ मन नि
श्चल करी मो मे धरें॥ जो मंन धारत अचल नां होई॥ ताकू

आतुरहोईनांसोई॥४०॥एकहीवारनसकलनिंवारे॥क
र्मीकर्मसकलउपाधिटारै॥कछूएकपुरैआसामनकी॥
॥क्रिदैधारैमूलषननकी॥४१॥देवेसातजवेकेदेत॥सा
वधाननीरंतरह्वैसचेत॥आगेफलकीअवधिवता
वे॥दूषदेषाईवरक्रिउपावैं॥४२॥यैसैक्रमदिक्रममं
नधारै॥कर्मकर्मसकलविकारनीवारै॥ईद्रीयगुनद्वि
दैनहिधरैआंनें॥स्वासाजितिमनकिगतित्यानै॥४३॥
मंनजीतनकौप्रमउपाई॥जातेमंनगतिजांनीजाई॥
॥जैसैयस्वतैरांगमहोई॥यस्वधारवसहोईनांसोई॥
४४॥तबतापरचढकेयमवारा॥हठनांकौएकदिखा

रा॥ कछूएकरूपसहीतचलावें॥ पीछेदेवाखकदेरावें॥४५॥
ऐसीविधिहएवसकरै॥ तौजोगीक्रमक्रममंनधरैं॥ सां
षविचारनिरंतरकरै॥ जाविधिएहजगतउपजेमरै॥४६॥
तत्वनकीउतपतीवीचारे॥ जैजैविनसैतैतौमंनधारै॥ स
कलउपाधिउरेकीदेषे॥ आपुहिपरेसकलतेलेषे॥४७॥
यांविधिजौलगीमंनवसहोई॥ तौलगीविचारकरेसोई॥
येसिविधिजवसांषहीवीचारे॥ गुरकेंबचनहिदैमांधा
रे॥४८॥ तवसवहिनितैहोएविरक्त॥ मनघरमेहोवेंअन
रक्त॥ जोगपंथजोअष्टप्रकारा॥ औरूयौहिआत्मादे
हविकारा॥४९॥ औरूममअवनकिरतंनधांन॥ मंन

जीतनकें पंथनांआंन॥ जोगउरुसंाषत्रक्रिएंतीन॥ स
बपंथनमेलिन्है बिन॥ ५०॥ इनतेचोथोनांहीनांठंपा
ई॥ जातेमनमोमेहद्दराई॥ तातेचोथोकहूनांहीकरनो॥
ईनपंथमोकूअनुसरनो॥ ५१॥ अरुजोकधीपापहोई
आवें॥ सावधांनताउरनांरहावे॥ तोकहूऔरुनांकेरेउ
पाई॥ सोसोपापईनहीतेजाई॥ ५२॥ रुकेंग्रंकरेनानाबि
धिजोई॥ सोसोअधिकअधिकमलहोई॥ विधिनषेद
सकलमलजांने॥ कबहूकछुउतममतिमांने॥ ५३॥ बाधि
नमेदएकीनेहोई॥ जानेबंधेरहै सबकोई॥ नयतेबहूअ
ंनमीकेरे॥ यपनेयपने बिधिउवेरे॥ ५४॥ तापिकूसब

वधनजानाउ॥ करुअबधसकलछोडाउ॥ सकलनाता
गैएकहीबारारी॥ तातेकानीबोहोतप्रकारा॥५५॥ ताते
विधिनषेधनांकरनौ॥ सकलतांगीमोमेमंनधरनौ॥ वि
धिनषेदजीनमीथाजानें॥ त्रवसुषदुषसबकीमांनें॥५६
॥परीज्ञमरथतजवेंनाही॥ प्रबलज्ञानप्रगटोनाहिमा
हिं॥ ताकेत्रगक्तिजोगअधीकार॥ सेहेजेछूटेसकलवि
कार॥५७॥ मेरीकथानीरतरसुनें॥ द्रढेमांहिमेरेगुनगुनें
॥द्रीढविस्वासह्रिदेमांराषे॥ मेरोगुंननीमनितभाषे॥५८
॥सुजदीषीविषईनमेरहे॥ परीमनेकर्मविचत्यागेच
है॥ सोनीत्सत्नक्तिजोगसेत्रजें॥ मोमेचअंतरएईसब

तजें ॥ ५९ ॥ तत्वग्रंथ पृजा वीस्तरे ॥ मम ही तें जो कछु
सोसब करे ॥ मा विधि सकल वासना नासें ॥ मेरो रू
प ही दे प्रकासे ॥ ६० ॥ ताते ब्रह्मरूप मम जांनें ॥ ह्वै त
त्व मी थ्या करी मांनें ॥ संसे क्रम कर्म त्यै त्यागै ॥
अहंकार तजी सो वन ज्ञागै ॥ ६१ ॥ जां ह्रां तां ह्रां मो ही
कु देषे ॥ मो विन और कछु नां लेषे ॥ येसै ह्वै मम रूप स
मावें ॥ या जनम और नां ह्री पावें ॥ ६२ ॥ ताते जा कें अ
रु मेरी भक्ति ॥ निसदिन मम चर्न अनुरक्ति ॥ जा के
जदि पि है नहीं ज्ञांन ॥ और नां हि है वैराग नीदांन ॥
६३ ॥ ते हू सा मो कूं अनुसरें ॥ अती दुस्तर भवसागर त

रै॥ वर्णाश्रम कें धर्म निकरें॥ बहु तन्त्रो तितप कुअनुसरै
॥ ६४ ॥ निसदीन साऊ ज्ञान विचारे ॥ यैहै वैराग सकल ह्री
उरै॥ साधे जोग अष्ट प्रकारा॥ दान व्रतादीक बहू प्रका
रा॥ ६५॥ एसब ही आपही तै चली आवै॥ मन जन कें आ
धिन रहावें॥ मेरी भक्ति सकल सिरताजा॥ जेसें सकल
नी मैं राजा॥ ६६॥ भक्ति मुक्ति फल तो द्विप रिहरें॥ ममजन
की नीत सेवा करै॥ औरुज द्विपि में बहू बीधि कह्यौ॥ भ
क्ति मुक्ति कहू दीनी चह्यो॥ ६७॥ परी मेरो निजजंन नदि
लेवें॥ सकल त्यागी मम चरणनि सेवें॥ निरपिछैं तपस
हें अयै॥ मों विना सकल वस्तु कें हुये॥ ६८॥ निस प्रेह

ताए दुःख अपार ॥ जो हां नहि काल कर्म अधीकार ॥ मै
सै निसप्रेह निसप्रेह जो होई ॥ मेरो भक्त कही जे सोई ॥ ईर्षा
॥ मेरे सम लछन है जामैं ॥ मेरो रूप जानी औ तामैं ॥ सबतें
निसप्रेह तीते मम भक्ता ॥ मै निसप्रेह तास अनुरक्ता ॥ ७०
॥ ताते निसप्रेह तासु षयै मै ॥ सकल विर्घ्न मै नहीं है जैसे ॥
॥ निसप्रेह जन मेरे सुष पावै ॥ सो प्रेहावंत के निकट न आ
वैं ॥ ७१ ॥ जे एकांत भक्त है मेरे ॥ तीन के पुंन पाप नही नेरे ॥
॥ राग दोष वर्जित समदरसे ॥ त्रीगुण अतीत ब्रह्म कु परसे
॥ ७२ ॥ जे एकांत भक्त है मेरे ॥ तीन के पुंन पाप नही नेरे ॥ रा
ग दोष वर्जित समदरसे ॥ त्रीगुण अतीत ब्रह्म कु परसे ॥

॥७२॥ जोग त्रक्लि रूसांष तीनी॥ तीन एक है अविनी॥ इनकें
पाये मो कू पावें॥ ए बिन पाये मो मे ना आवें॥ ७३॥ ए साधन
तीनौं है नीकें॥ ईन बीन और नातारन जीकें॥ ए साधन है
मेरौ रूप॥ ईन ते तत्व नां औ रु अनुप॥ ७४॥ मेरो गोपर है जो
ग॥ जीव ब्रह्म कौ छो प्रसंजोग॥ छूटे सकल अविद्या
जोग॥ काल ज्वाल नहीं संसे जोग॥ ७५॥ एम मै तीन पं
थ वीस्तारें॥ ईन क्षौ बहूत जीव नीस्तारे॥ जेई जे जन ई
न में आवें॥ ते ई ते मेरो पद पावें॥ ७६॥ दोहा॥ ज इन प
थ नी कुतजे॥ करे कर्म अधीकार॥ तीन पस्त जीवनी कुक
हो॥ वीधि निषेध विस्तार॥ ७७॥ इति श्री भागवते म

ह्य गुरु लेएकादशस्कंधेश्री भगवंत उधव संवादे
भाषायउपैथनीयमीरायमलवीसमो ऽध्याय ॥२९
॥ श्री भगवानुवाच ॥ ज्ञानवंत क्रिआरु कर्म उपाई ॥ आ
पमिलनकुदीएवताई ॥ परिजैअं तिहांपंथअज्ञान ॥ ईन
कूछोडीकरेकछुआन ॥१॥ वहूतकांमनाहूदेधरै ॥ ति
नहीतवहूकर्मवीस्तरे ॥ तेपसुदुषनिरंतरपावें ॥ जवज
वाहमांहीवहीजावें ॥२॥ तिनहीतविछिनषेधउचारे ॥ ती
नकेंवहूआरंभनीवारे ॥ अपनेअपनेजोअधिकारा ॥
॥ तामेंक्रतेतजीविस्तारा ॥३॥ उचौनीचौसवपरीहरें ॥
अपनेकर्ममाहीअनुसरे ॥ सौसौतीनकूंविधिजाने ॥

तातै औरन षेध हि मांनें ॥४॥ उपजी वस्त समस्त अशु
ध ॥ परीकदी न्याषै सुधयसुध ॥ एक हू वस्त विधि मत दे
षै ॥ जीव पंसुनी हूं वंधन लै षै ॥५॥ कर्म कर्म सकल छो
डावंन कारन ॥ मेएकी यौ भेद उचारन ॥ पाप छौडाई धर्म
यहांउ ॥ या विधि व्यह आरंन छौडाउ ॥६॥ येह समस्त ज
ग कै व्यौहारा ॥ यातै जग कौ वार नां पार ॥ छिति जल तेज
तेज पवन याकास ॥ सब जग पंच भूत परकास ॥७॥ ब्र
ह्मादीक थावर परजंत ॥ पंच भूत करी सब वरतंत ॥ औ
र एक यात्म सब मांही ॥ तातै भेद कहूं कछु नांही ॥८॥ प
री तथापि भेन्याष्यु वेद ॥ ताकरी कीन्है नाना भेद ॥ तिनकें

स्वारथसुषकेहेत॥ विधिउचरेकलनीसमेत॥ ९॥ देसका
लगुणद्रुवसौभाव॥ ईनकेंजाषेनानाभाव॥ एकनिषे
धएकविधिजांषे॥ एहसकोंवमांहीसवराषे॥ १०॥ जी
नदेसकृष्णमृगनाही॥ औरुजांहांनाहीजसेवाकराही॥
औरुजोकृष्णमृगौवहूरहै॥ परीमलछतांहांवासहीसदै॥
११॥ अरुजदपीतूरकतांहांनांही॥ परीमृगघादीकतीन
केंमांही॥ अरुजेमृगघादीकपरहेरे॥ परीकदरजतादुरनां
करे॥ १२॥ अरुकदरतामेंटेहोई॥ परीसौहोवेंउसरसोई॥ सों
सोदेसनषेधवहीजै॥ तिनमेवासादीकनहीकीजे॥ १३
॥ तिनतेंऔरदेसमृचिजानें॥ तिनमांहीवासादीकठांने

॥ औरुजौ कालधर्मकौ नांही ॥ सूतकआदी जयै जा मांही ॥ १
१४ ॥ सो सो कालनीषेधकहीजै ॥ उत्तमसो जामें बिधिकीजें ॥
वस्त्रादिकजलादीक निसूध ॥ मुत्रादीकतें होहि असूध ॥ १
॥ सूधयसूधबचनतें तौ हीं ॥ सूधतें पुषादिकयोंही ॥ नव
हीपाककरौ सो सूध ॥ वौ होत कालकूं होई सूध ॥ १६ ॥ क
हीं ञो मिमसांनयसूध ॥ बो होत कालतें होई सूध ॥ न्हू
मी जौ क्रूषाजल होई ॥ बो होत कालतें सोधे सो धेसोई ॥ १७ ॥
औसी आंती और हूं जानें ॥ सूधयसूध भेद पहीचांनें ॥ १
विनस्नांनसूधबालादिक ॥ स्नांनादीकसूधनांनांदिक
॥ १८ ॥ जिर्णबस्त्रअधनकुसुध ॥ इववंतताकूं प्रमयसूध

॥ अरु सकल सत्रि उन मांन ॥ सुधपसु घरकें की एव्वषांन
॥ २९ ॥ सो सब्ब देस काल अनुसार ॥ बिधि नषेध कूं कहौ
विचार ॥ धंन रु पात्र वस्त्र गजदांत ॥ तेल अरु घृत हेमादी
अनंत ॥ २० ॥ काल अग्नी जल माटि वाई ॥ जथाजोग कें सु
धकराई ॥ अरु जो कछू लगै दुरगंध ॥ जौ लगी धोवें मिटे
नां गंध ॥ २१ ॥ तौ लगि जो नी असुध नगहीयें ॥ गंध गये
तें निरमल कहीयें ॥ सक्रपव स्यात पस्नान ॥ संस्कार
सत्क मर्दान ॥ २२ ॥ मम सु मर्ग ते होवे सूधि ॥ करी अन
र्थ होए असूधि ॥ मेरो मंत्र लीऐ बीधि जानै ॥ मंत्र बीनां
नषेधि ही मांनै ॥ २३ ॥ यरपे मो है सुध सब्ब करम ॥ करे बिप्र जे

यहोयत्र धरम॥ देसत्रोरु कालकर्मत्ररुकरता॥ द्रव्य
मंत्रऐषटयाचरता॥ २४॥ येजोसुधहोहितोसुधी॥ येत्र
सुधतोहोईत्रसुधी॥ त्ररुकहूंहोवेसुधयसुधि॥ कहूं
त्रसुधियुहोवेसुधि॥ २५॥ सुधयसुधीजेदहेजाके॥ राज
दहूंकोहोवेतोताके॥ जोकहीयेउंचेकोधर्म॥ नीचकोहेत्र
धर्म॥ २६॥ त्ररुजोकछुधर्मनिचेकु॥ सोईहैत्रधर्मउंचेकु
॥ ताहीतेदोउत्तमजाने॥ मेरेत्रनककदीनांमाने॥ २७॥ जोर
कबहूंविषत्रमर्तलीजे॥ लेउंचेउचेकुदीजे॥ तोतीन
मैतोत्रेदनांहोई॥ मर्णोत्रमरएकसमसोई॥ २८॥ युयेवि
धिनषेधकर्महोवे॥ उसनीचकीवौरनंजोवे॥ परीर

१५९

दोउहैकछुनाही ॥ आपहीवीचारेअंतरमांही ॥ २९ ॥
निचे निचेकर्मआचरे ॥ मदीरापानादिकउकरे ॥ तोउनकुं
दुषनाही ॥ नितहीहैदुषणमांही ॥ ३० ॥ अरुजौग्रहिकरत
हैसंग ॥ रीतुकेसमयेऊवतीप्रसंग ॥ तौताकोकछूदुषण
नांही ॥ सोनित्यहैदूषणमांही ॥ ३१ ॥ जेसेंपरयोधरनीमां
कोई ॥ ताहेनांपरनेकोभयेहोई ॥ परीजोकछूचाहैउचे ॥
संगकरीहठिआवेनिंचे ॥ ३२ ॥ तातेतीनकोसंगनौकर
नो ॥ मनक्रमवचनसंगपरीहरनो ॥ जौजौप्रांणीछुटेक
र्म ॥ तौतौछूटपावेवीश्रांम ॥ ३३ ॥ ग्रहिमधर्मसबहीनके
एह ॥ मेटैसोकमोहसंदेह ॥ यानीमतमैभेदसुनायो ॥ पो

रे थोरे मे छहरायौ ॥ ३४ ॥ पहैले चर्मकद्दी सकल निवारे ॥ येसी
ज्ञांति जीवनी सारे ॥ जब नर विषय न उतम जांने ॥ तब ती
न में याससक्ति ह्री ठांने ॥ ३५ ॥ जाते इंद्रे उपजै कांम ॥ ताते तां
हां सकल को धांम ॥ ताहूं कु क्रोध उपजावें ॥ तब ययव वे कत्र
पही आवें ॥ ३६ ॥ सोयवव वे कहरे सब ज्ञांन ॥ ताते प्रांणी
मरंतक समांन ॥ ताते काज अकाज नां जांने ॥ निसदी
न वढ्ढ वी धी चीत्या ठांने ॥ ३७ ॥ सब पुरषारथ है वे हीन ॥
निसदीन रहे दुष अरु दीन ॥ ताते समम अे आंपन आंन
॥ मीष्यां जीवे वृष समांन ॥ ३८ ॥ जो ह्वावे लोहार के षाल ॥
स्वास लेत ए षोवे काल ॥ कुछि चारे अरु मेथुन करे ॥ या

मिकसुकरनरपरे ॥४०॥ कूटंबन्नारबहीनरमेरे ॥ नरक
अरुचोरासीमैपरे ॥ षरउटजौलदेअन्नंनी ॥ वीषैदुष
कहैसबन्नंनी ॥४१॥ एनरतननांहीविषेनांहीविषेनो
गईये ॥ माकरीवस्तुवीचारहीपईये ॥ अरुपुनिकहै
कर्मफलजेते ॥ स्वर्गादीकनांना विधिकेते ॥४२॥ तेतेक
हिकरीरुचिउपजाई ॥ मेटीनीषेधनीवीधीकराई ॥ जे
सेओषधकूटकपिवाई ॥ बालककुलाडूदेषाई ॥४३॥ ओ
षदकोफललाडूनांही ॥ ओषधंइतेरोगसबजांही ॥
स्वर्गहेतजोकर्मनीकरै ॥ पुनीस्वनीतत्वफलहिपरिह
रै ॥४४॥ तबअनर्थतजीअनर्थहिपावे ॥ मोमेद्वोति

जकर्मसमावे॥ अरुएजबतेजनमपावे॥ तबहीआपुबी
षयकमावे॥ ४५॥ पुत्रकलीत्रकूटंबरुधांनां॥ ईनकेहेत
चेहैस्त्रूषनानं॥ आपआपकूकरैअनर्थ॥ तीनकूमूर्ष
जांनेअर्थ॥ ४६॥ येसैयाजवमैनितकर्म॥ कहीनजाने
सूषकेमर्म॥ अरुतीनकूजोजरमतदेषे॥ सदानीरंतरदु
षकूलेषे॥ ४७॥ सोतीनकूकबहूंनांबहावे॥ अर्थअरु
कांमनकदिढावे॥ तातेमोतेंसबबाधीजांनें॥ जेसे
कर्मरुकांमबषांने॥ ४८॥ परीजेकछुस्मुतिमादिसुना
वे॥ अर्थधर्मरुकांमबतावे॥ तातेसकलकुडाउनका
रन॥ हितबीचारीकीनेउचारंन॥ ४९॥ येसेवेदतत्व

नहीं जांने ॥ मूर्ष पुष्पतवै न वषांने ॥ फलनहेत आरं

ते कर्म ॥ तिनके कदी न छूटै चर्म ॥ ५० ॥ कांमिरूपं ने

लो न अधीकारी ॥ त्रष्ना आकूल सदा विकारी ॥ फूल

ही मांहि फल करी मांने ॥ कांम नी लागी तत्व नहीं जांने

॥ ५१ ॥ मे तीनके नित हिर्दै मांहि ॥ परीते हू ते जांने ना

हि ॥ जाते ए ह सब जगत पसारा ॥ औरु समस्त जाके आधा

रा ॥ ५२ ॥ जाकि सत्या पाई सब व्रते ॥ चंबूक संग लोहा जैो

न रते ॥ जा की अज्ञा सब हि माने ॥ कोई मरजादा न ही मांने

॥ ५३ ॥ यै सै मे प्रगट सब ईस ॥ जे से सकल देह मां सी स ॥

परीते कांम कर्म तम अंध ॥ नां मोही देषै अरु ना ही अंध

॥५४॥ जैसैनैनरोगमयैहोवै॥ आगेहोतिवस्तनंजोवै॥
येअज्ञानअधकरैमिष्ट॥ देषैनहीनीकटमेईष्ट॥५५॥ तो
मवीनममतेनजाने॥ हनीजीवनिजगादिकठाने॥ तेक
रीतीनहींहनेषरलोक॥ जनमजनमपावेनवसोक॥५६॥
जवयाकेवहूंहिसादेषी॥ हनीहनीजीवकापेषी॥ तिनके
हेतंकहीयेहवानी॥ हंसाजगहीमांहीवषानी॥५७॥ पसु
वेधएकजहमान्नांषै॥ औरसमस्तदुरकरनांषै॥ जेप्रा
णीतामेठहरावे॥ तवपुनीवेदसकलमीटावे॥५८॥ या
निमतपसुहिंसान्नांषे॥ सोमुरषतत्वकरीराषे॥ तातेंव
हूवीधकर्मेनीकरे॥ वहूंकांसनाहिदैमांधरे॥५९॥ पसु

हूंसाकरीकरीबवहारा॥ जैजैपावेबहूप्रकारा॥ देवंपीतर
त्रुतंनकुजजे॥ उरतेसूषईछानहीतजे॥ ६०॥ मौसपन
तुलसुगादिकलोक॥ तीनकेउतमसुनीयौश्लोक॥ ती
नकीईछाहिदैधारै॥ द्रबषरचिकर्मबीस्तारै॥ ६१॥ विघ्न
हूहिबहूतकर्मनीमांही॥ सुर्गादीकहूंपावेनाही॥ जेकोई
सांएरपारहीजावे॥ धंनहेतयदकेधनहीलगावे॥ ६२॥ पि
छैपरेबीघ्नजेकोवई॥ तेरानोतेजावेसोई॥ तौजेबहूबी
धीकरमउपावे॥ तेपसदहूलोगतेजावै॥ ६३॥ सांतीकजेते
देवनीतजे॥ जछादीकराजसीजजे॥ तांमसीत्रूतप्रेत
बहूसेवे॥ तनमंनधंनतीनहूकूदेवै॥ ६४॥ ताहीतजग

बोहोतवीधीकीजै ॥ विद्यनीवहोतरस्तुनादीजै ॥ ताहीतैसु
गोदीमष्ठपईयै ॥ तांहांबोहोतवीधीजोगजोगईयै ॥ ९
६५ ॥ पुनीजवहोवेत्याकोअंत ॥ तवहूजेजवमेधनवंत
॥ येसीजांतिकांमनाकरै ॥ तीनकीनीमतक्रमंवीस्तरै ॥
६६ ॥ तीनकूमेरीबातनांजावे ॥ जगतीकांहांतेक्ष्दैआवे ॥
जदपिवेदकर्मनीउचारे ॥ धरमरुअर्थकांमवीस्तारे ॥ ६७ ॥
परीतथापीकूसबतावे ॥ क्रमक्रमदूजेसकलछोडवे
॥ परीप्रुतिकोआश्रयनहीजांने ॥ तेककूअेारओरवखांने ॥ ६८ ॥ सबब्रह्ममाहादुरबोध ॥ जाकेकोईलहेनो
सोध ॥ सुक्षमस्थूलरुपहैवाकै ॥ मोवीनाजेदलहेकोता

कै॥ ईर्ष॥ प्रगनसहमपराजेनांम॥ पसंतिकौमनमैंधाम
॥तीजोकंठमधिमासूल॥ चोथाजगटवीषरीस्थुल॥७०॥
भेदतीनकैकोईनांहीजांनै॥ तातैओरओरवषांनै॥
अंतरपारकोईनाहीपावै॥ जौसादेरयादनहीजावै॥ ज
॥मतिगंचीरअछैहैयाको॥ कोइभेदनांजांनेजा
कों॥ मैसवहीनमेअंतरजांमी॥ सक्तिअनंतसक
सकौस्वांमी॥७२॥ सर्वव्यापकआत्मस्वरुप॥ लीपतक
तहूंनांब्रह्मअनुप॥ सोईव्यापकसवहीनमांहीं॥ सव
दरूपहूजोकोईनाही॥७४॥ कवलनालमातंतुजेसे
॥सहूरूपसवमेंसे॥ सोईप्रगटैवहुविस्तार॥ म

नकरी क्रिदे दूयइती मुषद्वारा॥७४॥जौ मकरी तंतूनी वीस्ता
रै॥करी विस्तार बो हेरी संघारै॥वेदरूप तौ ममवी स्तारे॥ॐ
कार मुल आकारे॥७५॥ताते अछर बहू प्रकारा॥तिनते छं
द वार नां पारा॥चारचार अछर अधकाई॥छंद होत अैसी बि
धि जाई॥७६॥एक हूंते बहू हि अनेक॥वेदरौ सकल एक के
एक॥गाईत्री अछर चौवीस॥उष्निक छंद अष्ट अरवीस॥
॥७७॥जौ बतीस अनुष्टुप सो है॥वृहति नाम तीस षट को है
॥ऊषंक्ति नाम अछर चालीस॥त्यौंही त्रिष्टुप चौवालीस॥
७८॥जगती छंद अष्ट चालीस॥कहेत पार नहीं कोटी व
रीस॥या विधि प्रगट वेद वीस्तार॥जाको कहू वार नां पार

२६४

॥७९॥ कह्यौदूदैमैकाहूबतावै॥ सेकरीअंतकहाठहरावै
॥ ऐसोमतोनांजानेकोई॥ मोबीनाजावैबीधीकोनांहे
ई॥८०॥ जन्नरूपकहीमोकुराषै॥ सकलदेवमेमोकुनां
षै॥ मेरेहेतकर्मकरावै॥ मोतेउपजोसकलबतावै॥८१॥
अंतकालकेनांषैनास॥ नौनासमनैमोकूकहैनीत्यप्र
कास॥ नानारूपनेह्वयाजनावै॥ सौउपायौएकब्रह्म
करीसकलसूनावै॥ ८२॥ जेसेसापजेवरीमांही॥ युसंब
जगत्सबतावेनाही॥ मोकुनीत्यनीरंजननांषै॥ अंज
नसकलदूरकरीनांषै॥८३॥ तातैसूनीनीतीमोहीबता
वै॥ परीक्षातत्वनकोईपावै॥ सोउपायौजोममआ

धिन॥ द्वै निःकामहै यलै वीन॥८४॥ दोहा॥ यौसुनि
करिमुनितत्वकै॥ उधवलदै अनंद॥ मस्तकधरि पुनी च
रनसौ॥ जात भूयै हुंद॥८५॥ इतिश्री भागवते महापुरा
णे एकादशस्कंदे श्री भगवनउधवसंवादे भाषा
मैवेदस्यब्रह्मतत्वनिरूपणनामएकवींसोध्या
यः॥२१॥ ॥उधवउवाच॥ चौपै॥ हैदेवसतत्व
हैकेते॥ कह्यौ कृप्पाकरी मोसैतेते॥ जीनकौरची तसक
लसंसारा॥ जोरीसैनोनाबीस्तारा॥१॥ तुमते ऋषवी
सतीहकहै॥ तोमेड्डीढकरिमनमैग्रहै॥ परीबहूतरिषी
बहूंबिधिकहै॥ श्रुतीनतैसूनीत्यौग्रहै॥२॥ केईक

हैं तत्व छवीस ॥ कोई कहै तत्व पचीस ॥ कोई षट ओरु को
ई चारि ॥ कोई त्तां षै सपत द्वी चारी ॥ ३ ॥ कोई नव को करे
वी बेक ॥ कोई त्तां षै दस ओरु एक ॥ कोई तत्व बतावे षोडस
॥ ओरु सौ एक कहै तियोदस ॥ ४ ॥ कोई त्ता षै दस ओरु
सात ॥ येरी षमत समनी विष्यात ॥ कौन प्रीयो जन
लेले त्तां षै ॥ अपने अपने मतकी राषै ॥ ५ ॥ श्री प्पाक
री नीज बेन सुनायो ॥ सब मत सो मोह्नी बतायौ ॥ सु
नी उधव के बेन रसाल ॥ श्री पांसी धू बोले गोपाल ॥ ६ ॥
श्री भगवानो वाच ॥ उधव जो जो सब त्तां षै ॥ जितने जि
तने तत्व राषै ॥ तेते तुम सब जानो सत ॥ तत्व बिचारे सब

असत ॥७॥ मायादेषीकहै जौजेते ॥ माया मांही सत ये
तेते ॥ मोहे देषी जेती नकुदेषै ॥ ते समस्त मीथ्या करी लेषै
॥८॥ माया मांही ज्ञन्ति विचारै ॥ अपने अपने मत्तो उच
चारै ॥ ऐहयु ऐहयु ऐहयु नांही ॥ कहै सब मीली अपने मां
ही ॥९॥ ऐहयुही है जो मैं नाषै ॥ तेरी कहै सत नहीं राषै
॥ एवीधी मम माया नरमाऐ ॥ तिन नानावीधी पंथ
चलाए ॥१०॥ जे जे तत्व सकल माया कै ॥ जितने जग
मत तातां कै ॥ कर्म कर्म तत्व उपजत गए ॥ तेते ते दबद्धं
तवीधी जग ॥११॥ मम माया की सक्ती अनंत ॥ तिन
को पंथ नी कौ नहीं अंत ॥ जब समद मउर अंतरी आ

वे॥ तब एन्नेद सकल मीटी जावे॥ १२॥ जेसे ऐक व्रछ वि

स्तारा॥ ताकी सक्ति बहूंत प्रकारा॥ कछु साषा बहूते पंर

साषा॥ अरु तिन के बहू बिधि उपसाषा॥ १३॥ तिन

कु बहूत अनंती बिस्तारा॥ पांन फूल फल बीबी धि प्र

कारा॥ औरु ताकु हि बरने कोई॥ जो जो कै हे सत तै

होई॥ १४॥ पोरे हो हि कंद जो साषा॥ बहूंत है हि मिलिये प

रसाषा॥ उपसाषा मिलि बहू बिधि उपसाषा होवे॥ ते सब

पंथ साक्ति जोवे॥ १५॥ ए संसार ब्रछ बिस्तार॥ माया मुल

बहूत परकार॥ ततव सकल साखा परसाषा॥ अरु तीन के

बहूं बिधि उपसाषा॥ १६॥ ताते जो बरने सो सत्त॥ परीस

बमायासकलअसत॥ जौ दिजोजाकेमंनआई॥ तौ दितो

तीनबरनीसुनाई॥१७॥ मायाकरीबाधीसोआत्म॥

तातेछुटैसोपरमात्म॥ येद्वैअरुजडतेचौवीस॥ तिन

कूमिलीसकलछबीस॥१८॥ अरुजौबंधमूक्तहेदोई॥

तेजर्ममायासतनांकोई॥ तातेजिवब्रह्मद्वैनाहि॥ सुपनो

मजांनैमंनमांही॥१९॥ सत्वरजतमयेगूणहैजेते॥ ज

हसरुपमायाकेतेते॥ रजउतपतीस्वांतकप्रतिपाल

॥ तांमसरुपयसतहैकाल॥२०॥ राजसहूतेकमअधी

कार॥ तांमसतैअववेकअपार॥ स्वांतिकगूणतेउ

पजेग्यांना॥ जेगुणहैमत्याकेनांहांना॥२१॥ ईनतेपरे

१६७

आत्मामानै ॥ तातै अस्वरूपकरीजांनै ॥ पंचविसताही

तै कहै ॥ अरु सौ हिमुनीयो रोगहै ॥ २२ ॥ सोहे कालगु

णनी विस्तारे ॥ सत्वरजतावसो सक्तिपसारे ॥ तातक

लरूपदरीजांनौ ॥ रुसत्जावमहतत्वहीमांनै ॥ २३ ॥

तातै तत्व अधिकनहीग्रहीयैं ॥ पंचवीसछवीसकही

यैं ॥ प्रकृतिपुरषमहतत्वअहंकार ॥ तंनमात्रायेतेपं

चप्रकार ॥ २४ ॥ कर्णरुत्वचानेनरसघ्राण ॥ एपंचोईंद्रीय

ग्यांन ॥ पाउउपस्तचर्णकरबांनी ॥ पंचक्रमईंद्रीया जां

नी ॥ २५ ॥ मनदससहूईंद्रीयनकोराज ॥ जाकीसक्तीकरेस

बकाज ॥ क्षितिजलतेजपवंनयाकास ॥ पठाईसतिनगु

णपास ॥ २६ ॥ गातिउतसर्गेकर्मेअरुवचनं ॥ एपंचई-
द्रीयफलरचनां ॥ तातैअष्टाविसतत्व ॥ अधिकनत्ता-
बैष्णानिसत्व ॥ ३० ॥ अष्टीआदितीमायाएक ॥ पुरषस-
क्तितेत्तेऐअनेक ॥ तंनमात्रामहेतत्वअहंकार ॥ एहे
कारणसमप्रकार ॥ ३१ ॥ पंचतत्वअरुमंनईद्रीदस ॥
कारजरुपप्रक्तियेषोडस ॥ सतरजतमगुणतीनप्र-
कार ॥ तीनतेरचोसकलविस्तार ॥ ३२ ॥ कारजकारं
णप्रक्रतिएजांनौ ॥ पुरषनिमित्ररुसाषीमांनो ॥ ई-
छासक्तिपुरषतेआवे ॥ मतिस्मस्तसबसृष्टिउपावे
॥ ३३ ॥ सपतधातकौसबविस्तार ॥ आत्मईष्टीकेई-

है आधार॥ सकलतत्वसबहीमैयाए॥ तातेयेकनीस
पतबताए॥ ३१॥ पंचभूतआपउपाए॥ तीनकेबहू वि
धिदेहबनाऐ॥ आपप्रवेसकियोहरितिन्मै॥ चैतनदि
सतहै जिनजिन्मै॥ ३२॥ येसीविधिघटकौ विस्तार॥ आ
पमांहीबहूकरेवीचार॥ करीवीचारदेषैततसार॥ तातें
हैएकनवनीत्तार॥ ३३॥ पृथ्वीअपतेजत्रयतत्व॥ अरु
आत्मानिमीतसबसत्व॥ याविधिचारतत्ववीस्तार॥
उत्तनिचसबहीसंसार॥ ३४॥ पंचभूततनमात्रापंच
॥ पंचईद्रीयामीलेसबप्रपंच॥ मनआत्मामिलिदस
सात॥ तत्वसप्तदसजांनेतात॥ ३५॥ मनआतमाएक

करी जांने ॥ ते जन षोडस तत्व बषांनै ॥ पंचतत्त अरु
दस इंद्रियपंच ॥ अरु जीव मंन के प्रपंच ॥ ३६ ॥ ऐसी जुगं
ति पंथ चलावै ॥ तरहै के सब जगत बतावै ॥ ईंद्रीय
पंच पंच ई तत्त ॥ आतम मिलि सब जग अहं तत्त ॥
३७ ॥ ऐसी विधि ॥ कादस करै ॥ तो ही तो सूनी हि
दे अहे ॥ पंच तत्त मन बूधी अहंकार ॥ आतम मीली
नव कौ वीस्तार ॥ ३८ ॥ ऐसी विधि बहू मारग कहे ॥
जुक्ति विचारी हिदै मांय रहै ॥ प्रकृती पूरष लोक दै बिवे
क ॥ ईन कूं जांनी एक कहै एक ॥ ३९ ॥ ऐसे सन्नी तत्व के
जांन ॥ उधव पूछी प्रम मत्त जांन ॥ कहौ कीपा करी प्र

न्हयैसै ॥ चैतनब्रह्मजांनीएजैसे ॥ ४० ॥ उधवउवा
च ॥ हेप्रभुजीएहज्ञांनसमुझायौ ॥ मेरेमंनकेभ्रंमभंमी
टायौ ॥ चैतनज्ञांनरूपअबीनासी ॥ सुधानंदपंरमप्र
कासी ॥ ४१ ॥ यैसेआत्मतुमारौरूप ॥ पैरेगुणनितैप्रम
अनूप ॥ जदबीनासमेएप्रमयसुध ॥ दुषरूपपल
सुषनसुध ॥ ४२ ॥ यैसैप्रकृतीपुरषतेनारी ॥ तोहूंचाहैपर
सपरप्यारी ॥ प्रकृतीमांहीआत्मामिलिरहैौं ॥ औसआ
त्माप्रकृतिकरीगहेौ ॥ ४३ ॥ ईनमेभेदनांजानेौपरे ॥ ए
कमेकहैसबअनुसरे ॥ ईनमैप्रकृतिकांहांलोकही
यै ॥ कोनआत्मजोढ़ीदग्रहीयै ॥ ४४ ॥ करीकरुनाबा

नीद्वीस्तारुसै॥ वचनवांनीसंसैपरीहरुसै॥ तूममायावां
धोसंसार॥ तूमहीतेहोईउधार॥४५॥ तूम्हीमायाकीगति
जांनैा॥ कोप्याकरीजबतुमहीजांनैा॥ बांनीस्तनीत
किअपनेकी॥ तबबोलेश्रीकृष्णबबेकी॥४६॥ श्रीभ
गवानुवाच॥ हेउधवएहज्ञानअगाध॥ कोईकलहैम
मनीजसाध॥ सोएहज्ञांनसुनाउतोही॥ तुहैदासअनु
हृतमोही॥४७॥ उधवप्रकतीरचौसंसार॥ सुक्षमस्थू
लविबिधिप्रकार॥ उपजेबरतेहोईबीनास॥ तामेआ
त्मनीतप्रकास॥४८॥ उधवएहहैमेरीमाया॥ तीनस
तरजतमगूणउपजाय॥ तीनकोत्रबिधिसकलबी

स्तार॥जाकेकछूवारनांपार॥ ४९॥ त्रबिधिकहनकु
परीबहूभेद॥जिनतेजीवलहैनितषेद॥ अध्यात्मअ
धिदैवअधिभूत॥रविअधिदेवमलिअदभूत॥ ५०॥
द्रगअध्यात्मअधिदैवअधिभूत॥त्रैविधिकपसब
नयनअरुभूतं॥रविअधिदेवमलिअदभूत॥तिनम
त्तिपरसपरजबहि॥तिनकोकारजसिद्धैतबहि॥५१॥
तिनोंबिनाकछूनांहोई॥तिनोंमीसीबरतेसबको
ई॥तुचापरसपवनतौजांनो॥करणरुसहूदिसोएमां
नौ॥५२॥नासागंधअश्वनिसुत॥जिव्हारसरूबरुण
जलभूत॥चितचेतनाअंतरजामी॥बुधिबोधनाब्र

ह्मास्वांमि ॥ ५३ ॥ अहंकार अहंकारतारुद्र ॥ मनमानवे
देवताचंद्र ॥ या विधि त्रविधि प्रपंच पसारा ॥ सकल परे
आतमा नीजसारा ॥ ५४ ॥ ईतनी नै बिन जगस्प नां हो
ई ॥ ते आत्म बीन रहै ना कोई ॥ आदि सकल की आत्मए
क ॥ जाते चैतन है हां अनेक ॥ ५५ ॥ आत्म स्वै प्रकास अ
विनासी ॥ चैतनरूप सकल प्रकासी ॥ ए सब आत्म के
आधारा ॥ और आत्मा सकल के पारा ॥ ५६ ॥ बीन आ
त्मं कछु नां होई ॥ अरु आत्मा ना जानै कोई ॥ महत
त्व तै उपजौ अहंकार ॥ तिहूं गूणनि कौ त्रिविधि प्रका
र ॥ ५७ ॥ सो अज्ञान म्हलन करी मांनौ ॥ ताके कीए जग

त्यजेवजांनौ॥ सोआत्मआपगहीलीयौ॥ तवजयै
आपआपकुकीयौ॥ ५८॥ आत्मसदाएकहीरूप॥ अ
हंकारतैपरैअनुप॥ सोजबरूपआपनौजांनौ॥ तब
हीसकलउपाधितजांनौ॥ ५९॥ सोकछुहैनांहीउपाधि॥
परीआत्मलेकरीव्याधी॥ समजैसबहीआपनेरूप
॥ तबआत्मातजैतवकूंप॥ ६०॥ अरुतबरूरूपआप
नेमांने॥ जबममचरणहिदैमांआनै॥ जदपिमीथ्यां
सबसंसार॥ जोकछुदीसैबिबधिप्रकार॥ ६१॥ परीजौ
लौनहीमोकूंतजै॥ तौलगीनीजयज्ञाननहींतजै॥
जबमेरीसरणहीआवे॥ तबहीआत्मज्ञानपावे॥ ६२॥

॥ दोहा ॥ येसी श्री मुषवचन सुनी ॥ प्रकृति पुरसकै ज्ञांन ॥
उधव कीनी प्रश्न तब ॥ हरीजन प्रेम समुजांन ॥ ६३ ॥ चौपई
॥ उधव उवाच ॥ तुम करी रही तबुधि दीजीन की ॥ कही
ऐ देव कौन गती तिनकी ॥ सकल व्यापक आत्मा एक ॥
क्यौ करी पावे देह अनेक ॥ ६४ ॥ अरु सत असत जं कर्म
हैं जेते ॥ त्रिगुण रचित कही ए सब तेते ॥ त्रिगुण रचित
कहीए ॥ तीन कर्म तिन कर्म बंधावे ॥ क्यौ करी जोनी
अजोनी पावे ॥ ६५ ॥ अस मेरे कसे करी देवा ॥ याको
मोही बतावो सेवा ॥ एह तुम बीना नांको ई जौनै ॥ जद
पि विद्यावेद बषानै ॥ ६६ ॥ जो कछु पढै विद्या सो होई ॥

१७२

तातेतत्वनांजांनेकोई॥ याबिधिउधवपूछोज्ञानं॥ तब
हसीबोलेश्रीभगवान॥ ६१॥ श्रीभगवांनउवाच॥ उ
धवएमनभ्रंमविकारी॥ सबइंद्रीयनिमांहाअधीकारी
॥ इंद्रियनीह्वैमनदिसबकरे॥ सुषदीतबहूतउरमधी
स्तरै॥ ६२॥ सोतनतजीदूजेतनजावे॥ तांहांतांहांआत्मा
आवे॥ जिनजिनसुषस्नेआंहदेषे॥ तीनतीनकुउत्तम
करीलेषे॥ ६३॥ तिनकुंसोमननिसदीनधावे॥ एहसंग
हीनरएतांहांजावे॥ बहूतंतनपाईवीसोरयाकु॥ जनमम
एकहीएतदेहताकु॥ ६४॥ जातनमेबांधियजिमांनै॥ छो
डेपुरबतनजोआनै॥ जनममरणआत्माकुसोई॥ दुजो

जनममरणनहीकोई ॥७१॥ जेसेसपनमनोरथजावे ॥ एह
तंनछोडीश्रोरहीश्रावे ॥ तवएतनकीसंधीनरहे ॥ वा
हीतंनकुश्रापहीकहै ॥७२॥ जनममरणस्मृतीकूहो
ई ॥ यातमजनममरनहैसोई ॥ श्रोरकछूश्रातमनहीं
मरै ॥ श्ररुकवहुनहीश्रवतरै ॥७३॥ यातनमेंमंनकूप
ंचीमांना ॥ तातेतंनउपजतहैनांना ॥ तेसवश्रात्मकै
याधारा ॥ तंनमेंनवुधीचितश्रहंकारा ॥७४॥ तीनसं
गतियात्मकूष ॥ तनहीतजेवीनपलनहीसूष ॥ उधव
मकरदेहहैजेते ॥ सदासकलवीनसतहैतेते ॥७५॥
कालनदीपरवाहप्रचंड ॥ ताकरीपलकमरतनहीषंड

॥जेसेनदीनीरंतरबहै॥ परीदेषनकोतौंथीरहै॥७६॥
औरुआचेतनिनिरंतरजावे॥परीदिपादीकतीनमैरहा
वै॥ परुजेसेसर्वद्रुमनकेफल॥दीसैतोपरीथिरमां
हीपल॥७७॥तौदीसबदेहनीकुजांनै॥कालअसतनी
रंतरमांनै॥जदीपिअवस्थाजातिलेषे॥बालकुमारजु
वादिकदेषे॥७८॥परीतेहमूरषनदीजानै॥मोहवस
हीयोकरीमांनै॥जदीपिअवस्थाजातिलेषे॥बाल
कुमारजुवादिकदेषे॥एहआत्मसोसदायजनमा॥
देहसंगतेपावेजनमा॥७९॥अरुतौअमरनिरंतर
जांनै॥देहसंगमत्युसोमांनै॥जेसेअगनीदारुकेसं

ग॥ सदा लदेह उतपती अरु त्नंग॥ ८० ॥ जौ लगी तंन की

संगती रहे॥ तौ लगी आत्म अती दुष सहे॥ गर्भ प्रवे

सह धि अवतार॥ बाल अवस्था तथा कुमार॥ ८१॥ जो

बन मधी जस अरु मरण॥ नव अवस्या देह आचरण

॥ यात्म एक रूप सब दहन मै॥ कबहू लिपो नही तीन ती

नै से॥ ८२॥ ऐसे जांनी मुगत्य तबै होई॥ मेरी सरनागती

जो कोई॥ अपनो दादौ पीत्या बीचारै॥ तीन कौ मर्ण से

उरमां धारै॥ ८३॥ नाई जो अब मै अनुरक्त॥ त्यौ ही त्यो

है वै आसक्त॥ ते ते प्रगट काल बस न्नए॥ परवस

परे छोडी सब गए॥ ८४॥ मेरा यौ ही है गती ऐसी॥ ना

ई बापदादैकी जैसी ॥ अरु मेरे अब बालक जेसे ॥ हम
हूते पिताकु तेसे ॥ ८५ ॥ सकल अवस्था सौ मम गई ॥ एह
तो प्रगट ओर ह्री नई ॥ याही विधि जदैस बदेद ॥ अ
ब ए जे दे पुत्र धन गेह ॥ ८६ ॥ पुउर मां बहु तांति विचारे ॥
अपने बंधन सकल नीवारे ॥ देहादीक सब संगतीत
जे ॥ सदा नीरंतर मोकु तजे ॥ ८७ ॥ द्विज जन्म पाके ते अंत
॥ षेति षेत मांही वरतंत ॥ षेती करनहार सो न्यारा ॥ योतें
न नारा करे बीचारा ॥ ८८ ॥ कर्म बीज बीस्तारै नांही ॥ दग
ध करे जो हेतन मांही ॥ ताते आपही नारै जानै ॥ संग करे
सो सुष दुष माने ॥ ८९ ॥ ताते तनको संग नीवारे ॥ याविधि

आपआपकुतारे॥ जोतंनन्यारौआपनौजांनै॥ तंनसुष
हेतकर्मबहूठांनै॥ ६९॥ तिनतैनानादेहृनीपावे॥ तीमह
हीतजन्मपरजावे॥ स्वांतकतेसुरकैरषिहोई॥ राजसनरकै
हांनवसोई॥ ७१॥ तामसपस्वादिकुजन्त॥ याविधित्रिगू
णजगतयहजन्त॥ जदपिआत्मसदाअनीह॥ कबहूंक
छूनकरैसमीह॥ ७२॥ परीतनजनतेकरताहोई॥ संगदो
सवंधनहैसोई॥ जेसेनाचेगावेकोई॥ तिनकेढुजीदिष्टा
होई॥ ७३॥ त्यौत्यौआपहूंबेठेकरै॥ तांनतालरागादिउरधरै
रै॥ त्यौमायागुणकर्मनीठांनै॥ आत्मआपकरैआपकु
मानै॥ ७४॥ तीनहीकर्मनीबंधैआप॥ जोकछुकरेहोई

१७५

सब पाप ॥ तिनकुं जांनी तूं जेन ही ज्यौं त्यौं ॥ जनंम मरंण दुष
मी टैनां स्यौं त्यौं ॥ ९५ ॥ जल प्रवाह ही गढा हो कोई ॥ तब कुंष
देषे चलत सोई ॥ ऐसैं न्यारमत जो कोई देषै ॥ तब सब धरणी
न्यारमत लेषै ॥ ९६ ॥ तैसे एह आत्मा पीर जांनै ॥ और सकल
चंचल करी मांनै ॥ निःफल मन करी देषै जब ही ॥ निःफल
कंस रूप सवत ब ही ॥ ९७ ॥ जैसे सपेन मनोरथ मृषा ॥ एस
ब जग विषय सर षा ॥ परी जद पि जग सत नां कोई ॥ तौ
हू कदी न ब्रुती नां होई ॥ ९८ ॥ जैसे सुपन सत कछु ना ही
॥ पी ज्यौं त्यौं है नीद्रा मांही ॥ त्यौं लगी सकल मत जांने ॥
सुष दूष पावे ऊद मठांने ॥ ९९ ॥ तो अग्यांन नींद्र ब स जौ

लौ ॥ जनममरणमीटैनंतोलौ ॥ तातेउधवसबजगमेंजानै ॥ माहाअनंथरूपकरीमानै ॥ १०० ॥ विषयनकोउदमछुट कावै ॥ अरुजेदहेतेसकलमीटावै ॥ त्यौलगीआपदीसम झैनांही ॥ त्यौलगीहैनानात्वयेमांही ॥ १०१ ॥ अरुआप नहीसमझैतौलौ ॥ ममआधीनन होईजौलौ ॥ औरू सुमयाधीननिरंतररहै ॥ जगअपदासिसमसवसहै ॥ १०२ ॥ केईएककरेअपमांन ॥ केईगहिवांधैअज्ञांन ॥ केईमूतेथूकैतंनमै ॥ डारैधूलीजीवकेअंनमै ॥ १०३ ॥ केईएकडहैकैमूंछडीगावै ॥ एकनिंदेचोटचलावै ॥ ये सेंबहूंबहूंवीधिदूषउपजावै ॥ बहूंवीधीजयेकैवे

नसुनावै ॥ १०४ ॥ परीजेग्रपनेमाई बिचारै ॥ सौएकमन
मैनाही धारै ॥ बहुकष्टनीतेमनननहीडीगावैं ॥ सोजवंत
जीममचरननीत्र्प्रावे ॥ १०५ ॥ मेरोपंथषंडेकी धारा ॥ जो
नहीडुगेसोउतरेपारा ॥ हरीकेबेननीहूहकरजांनी
॥ उधवजगमकरीजयैमांनी ॥ ह्न ॥ उधवउवाच ॥ हेकृन
तुमएबेनसुनाए ॥ तेमेरकुरदूःकरजमाए ॥ जेत्र्प्रसाधबे
काजधकावै ॥ तातेसदेहेकोंनबिधिजावे ॥ १०७ ॥ मेरेहीदे
ज्ञांनठहरावौ ॥ सहमउपाईमोहीसमझावो ॥ जोसद्दन
उत्मकरीजांने ॥ ग्ररुतौत्र्प्रौरनीपासौबषांने ॥ १०८ ॥
परीतेत्र्प्राईपरेनहीसदै ॥ ग्रंतम्रक्तिकेबसदैरदै ॥ केव

लजे तुम चर्ण आधारा॥ तिनके कोई नही विकारा॥१०
॥ तिनते निःफल सीतल रूप॥ निति आनंद प्रमअ
नुप॥ जीनके कदे लिपे कछु नांहि॥ सदा वसै तुम चरण
नि मांहि॥११॥ और सकल प्रकृती आधीन॥ सदा विका
रनी आगे दीन॥ ताते नमहो करुणाकरो॥ ज्ञानादिक
सम ह्रिदै धरो॥१११॥ दोहा॥ ऐसी कीनी ग्रष्ण जब॥ उध
व प्रमसुजांन॥ त्राषी सहन उपाई तब॥ नवनंज
नभगवांन॥११२॥ इतिश्री भागवते महापुराणे एका
दसस्कंधे भगवत उधव संवादे भाषी ये ह्री बीसो
अध्यायः॥२२॥ चौपई॥ श्रीभगवानोवाच॥

उधवयेसौनाही कोई ॥ दूर्जनवचन छोत्तनही होई

॥ दूर्जनवचनबांनी सौसहै ॥ मनक्रमवचनछै

त्तनहीलहै ॥ १ ॥ जौयेसौसोसाधईकहावे ॥ युवी

नसाधपदईनहीपावे ॥ षेचीकसीसहनैगहीबांन

॥ क्ररुसेत्तेदत्तमेसंभान ॥ २ ॥ तोतीनतेदूषहोईनं

येंसौ ॥ दूष्टवचनबानतेजैसौ ॥ परीमेतोहोउपायै

सुनांउ ॥ सहनसीलताउरठहरांउ ॥ ३ ॥ मोसेंसूनै

एकअतिहास ॥ जातेहोईहिदेप्रकास ॥ त्रिकूकए

कज्ञांनमयेजोषी ॥ ताकोतोदैसूनांउसाषी ॥ ४ ॥ की

एकसाधबहूत्तपमांनां ॥ तिरसकारअनौ बिधि

नौंनं॥ तबतीनचौरूकगाथाकही॥ कूमतियपनीस
बहीरही॥ ५॥ सोअबसुनोसूचीतहोएमोसे॥ नीजजन
जांनीकहेतदेतोसै॥ मालवदेसतांहांघरजाकौ॥ षेतीब
नजजीवकातांकौ॥ ६॥ कोधवंतसौचौरूकांमी॥ विप्र
नीकेअपजसकौनामी॥ जाकेहोईद्रवअधिकाई॥ ५
ओरदेईनांआौषाई॥ ७॥ आपअनंतपिराउपजावे
॥ दारापुत्रषांननहीपावे॥ देवपीत्रअतीतनहीपोषे॥ ५
वेहूनचांनजीनहीसंतोषे॥ ८॥ सोकदरजजैयैसोहो
ई॥ तातेनिचोओरनांकोई॥ तातेसोकदर्जहीजनयो॥
सबजगमेजिनेअपजसलीयो॥ ९॥ ज्ञातीयतितबंधू

जनतिको ॥ ईमकुदेईवघुरवधंनको ॥ पुत्रादीककल-
पैदूषलहै ॥ ज्ञातीज्ञातदूरबचननीकहै ॥ १० ॥ पुत्रकं-
लीत्रअरुकन्यांजमाई ॥ जांहांलगैसबसगासगाई-
॥ तेसबद्रोहनीरंतरधरे ॥ ताकेअप्रीयैसबआचरे ॥ ११
॥ असोदेषीपापअतीताको ॥ जरुसमांनचित्तघर
जाकौ ॥ धर्मकांमदोनोकरीहीन ॥ दोहूलोककेसूषक
रैछीन ॥ १२ ॥ जिनहितपंचजज्ञननीतकरे ॥ सकलग्रस्थ
देउकोचरे ॥ तीनकैतेकीयोदेवताकोप ॥ तातेनक्रो-
वित्रधनलोप ॥ १३ ॥ कछुकद्रब्यज्ञातीहरलीयौ ॥ क-
छूकचौरनीहरलीयौ ॥ कछूकअगनीलागेतेजरग-

यौ ॥ कछूक धरनि मांही विसर्यौ ॥ १४ ॥ कछूक राजा वि
ग्रहते गयौ ॥ सुबहू ज्योती छीनस बनयौ ॥ जबता कौ
सब धंन हर्यौ यौ ॥ त्रिसकार सब ही न कीयौ ॥ १५ ॥
बहूत कष्ट करी धंन उपजायौ ॥ सौ कहू दयौ न आपु
न षायौ ॥ तातें उपनि चिंत्या बहूं चित ॥ निस दिन वं
सै छिदै बहू बीत ॥ १६ ॥ ह्वै वैंत मषेद बहू पावें ॥ आंसू
कं बहूत विधि आवें ॥ ऐसी बिधि उपजो वैराग
॥ तातें सकल दुषनी कुं त्याग ॥ १७ ॥ तब सो बीप्र व
चन उचार्यौ ॥ बहूत ग्यांति आप ही धीकार्यौ ॥ ए
हो वृथा मै कष्ट हि पायौ ॥ आप आप कू दूष उपजायौ

॥ १९ ॥ बहुतकष्टश्रमकरीउपजोद्रव ॥ सपनसमांनत्र
यैसोसब ॥ त्रांमेंषरचोनांमेषायो ॥ नामेएकत्रंर
थलगायो ॥ १९ ॥ सर्वकद्दरजनिकोहैजेतो ॥ एकद्र
अर्थनां आयोनेतो ॥ नोएहलोकनांपरलोक ॥ के
वलवेदद्दषन्नाएसौंक ॥ २० ॥ बहुतकष्टसहिईहांजुह्पा
वे ॥ पूनीअलोकनरकमांजावे ॥ परंमसहजसतीन
कुजमसुध ॥ अरुजेपंडीतज्ञानप्रबूध ॥ २१ ॥ सकल
गूननिकेगुनहैजेते ॥ लोन्नलेसतैनासेतेते ॥ जेसरु
पवंतअतीकोई ॥ कहूंअनलदहनजोहोई ॥ २२ ॥
सेतकूष्टकोछिटकायेक ॥ मेटेगूहरुपअनेक ॥ पुधो

रौद्रंहौवेलौंच॥ मेटैसकलरूपगूणसोच॥ २३॥ जवतेध
नकोसाधनकरे॥ त्रिधिहोतउदमविस्तरे॥ तवतेत्रा
ससौकचयेलहै॥ चींत्यांअग्नीनीरंतरदहै॥ २४॥ सि
धचयेअसुंरकृतन्नोग॥ नासलगैनहीसूषसंजोग॥
चोरीहंसामिथ्यांदत्त॥ कांमक्रोधविसमरणंचत॥
२५॥ वैररूगर्वसपरधाचेद॥ अंप्रतीतीचितांचयेषे
द॥ ऐपंदजवहोईयनर्थ॥ तवतीनहूतेहोयेपर्थ॥ २६
॥ तातेध्रमअनर्थकहावै॥ मलोचाहैसौदूरवहावै॥
अर्थनामसुनीचूलेलोक॥ बीनबीचारपावैदुषसो
क॥ २७॥ पुत्रकलीत्रवंधुभोरुचाई॥ मातपीत्यासहीत

सजनसहाई॥ हर बहेत सबकै रे बिरोध॥ आपयापमांहां
नै जोध॥ २८॥ हर बकाज अती क्रोध हाकरै॥ तिनकूं मारे
आपन मरै॥ धन हेत प्रीये प्राण छीटकावै॥ यापहीम्हद
नरकमै जावै॥ २९॥ जाकूं देव बहूत विधि धावै॥ परियान
र देहीनही पावे॥ सो नरतंन ताम हिजदेह॥ करुणामये दर
जीकूं येह॥ ३०॥ ताकूं पाई अरथ नहीं साधै॥ सबतजी हरी
कूं नही अराधै॥ माहायनर्थ अर्थकूं गहै॥ सो नवसी धू
आपनै बहै॥ ३१॥ तातै दूजे नहीमं तिमंद॥ परै दुषमांहां
अती अनंद॥ देवपी तररषी अूत सहाई॥ पूत्रकलित्र आ
पही तजाई॥ ३२॥ धन हीपाई जोई नहीनां पोषै॥ औरहा

कूं नहीं संतोषै ॥ युसबतजी नरक मंजावै ॥ तांहां म्रदना

ना दूषपावै ॥ ३३ ॥ सो धंनतंनमैंवर्थागमायौ ॥ नवदुष

तेनहीं आप बचायौ ॥ जाहीपाई बुधियसीकरे ॥ जीन

ते बहूरिजंनमैंमरे ॥ ३४ ॥ सौतननरबृथागमायौ ॥ छोडि

अर्थ अनरथ उपायौ ॥ वए बलयाबुयुसकरममग

यौ ॥ नीषमीषद्दधर्मअंगसबतयौ ॥ ३५ ॥ यबमैं अरथ

कोनवीधीसाधू ॥ दूसराधिहरीकुनोंअराधू ॥ ताईज

बअनर्थ सबजानै ॥ तेकौं आरजनीहांनै ॥ ३६ ॥ छोडै

अरथ अनर्थ उपावै ॥ कौसब आप आपदूषपावै ॥

परीकोई नहि स्वतंत्र ॥ सकलदेषीयेतहैंपरतंत्र ॥ ३७

॥ तेजाकीमायाकरीमोहे ॥ नटबाजीकेसमसबसोहे ॥
गाईसोप्रभुबडेबलीष ॥ ब्रह्माआदीसकलकेईष ॥ ३७ ॥
॥ जेधनअरुधनकेदाता ॥ जेकांममदअरुविख्याता ॥ रु
बहुतधरमकरमहेजेते ॥ मातपीत्यासुषदाईकेते ॥ ३९ ॥
॥ कहेकांहांतेदेतआचरे ॥ मृतियांस्तजेनहांपरिहरे
॥ कालरूपरात्रुहेजाकै ॥ कहौकांहांकौसुषहेताकै ॥ ४
४० ॥ परीजोदीनबंधूभगवांन ॥ करुनासागरप्रेमसुज
जांन ॥ तिनहूंमोकूकरुनाकरी ॥ तातेममउरयेसीधरी ॥
४१ ॥ भवसागरतेतारेजाकू ॥ देहनावबैरागताकू ॥ ताते
मोहीदीयोबैराग ॥ मेरेप्रगटेपुरनभाग ॥ ४२ ॥ अबजो

आई होई कछू मेरे ॥ ताकी तजन करू हरी केरे ॥ आतंन
के गुण सकल नीवारे ॥ मंन ते सकल कामना टारे ॥ ४३ ॥
सकल साध अनुमोदन करै ॥ तथा अस्तुति एक ही उचरै ॥
जद्यपि आउ थोरो है मेरो ॥ तो हू हरी को पद अती नेरो ॥ ४४ ॥
नृप षडंग जब ही हरी धायौ ॥ एक मूहूरत मैं प्रभु पायौ
॥ ताते अल्प समान कौउ नांही ॥ जन कू प्रगट होत पल
मांही ॥ ४५ ॥ मंन बच क्रम अब ताकौं तजू ॥ दुजी सक
ल कामना तजू ॥ ऐसौ नीश्चौ मन मै धारयौ ॥ निश्चक त
यौ सकल परी हरयौ ॥ ४६ ॥ सितल हूदै अस्रास बत्यागी
॥ निःस्थूल तयों बिषप जरू जागी ॥ अहंकार ममता क

हुनाही ॥ एकाएकीबीचेरंमांही ॥ ४७ ॥ ईंद्रीयप्राण ॥
बचनमनयहै ॥ अंतरबाहजसंगतीदहै ॥ यांपही
काहूकूनांलषावे ॥ निछादेतयहनमेजावे ॥ ४८ ॥
संसाकारनहीतनकोजावे ॥ जीरणटूकबंसतरतेनल
वे ॥ जीछकवधवीपकूजौवे ॥ तबबहुदुषघातकीहो
वे ॥ ४९ ॥ कोईताकोदंडछोडावे ॥ कोईपात्रपोसीने
जावे ॥ कोईकमंडललेहिकरते ॥ कोईनीकसनांदेइधर
ते ॥ ५० ॥ कोईधूरीनिषमांडारै ॥ कोईमूढकोधकरीमारै ॥
कोईपासनकूलेलागे ॥ उरधकरीकोईपागलागे ॥ ५१
॥ कोईकंथाकूपरीहरै ॥ कोईमारुमारुबांनीउचरे ॥ कोई

षोसीं लेई जपमाला ॥ कोई वस्त्र जां ही ले वाला ॥ ५२ ॥ को
ई अंनी अंनी करी देवे ॥ कोई षोसी षोसी पूनी लेवे ॥ कोई
त्रिष अन लेजा हि ॥ भोजंन करने पावे ना हि ॥ ५३ ॥ को
ई तंन मां थूके मूते ॥ कोई नंद्या करे बहूते ॥ कोइ कांन ला
गी पोकारे ॥ कोई सीस धूल डारे ॥ ५४ ॥ कोई मूंन छोडाई बो
लावे ॥ कोई बोलत मूंन गहावे ॥ कोई ता हि बांधि करी
राषे ॥ कोई जांनै नां पावे युं भाषे ॥ ५५ ॥ कोई करे बहूत य
पमांनां ॥ नंदे बहूत विधि मूढ यज्ञांनां ॥ एहु है चोर जांने
नही पावे ॥ दीन देषि तीस चोरी पावे ॥ ५६ ॥ याके छिंनत
ये है वित ॥ ताते एह है वा कुल चीत ॥ सकल कुटंब या

छिपरिह्रौ॥ निवनकाजन्नेषणधरौ॥ पछै देषौ एहकेसो
है मोटौ॥ माह्रा प्रबलयंतरको षोटौ॥ देषौ ह्म पचीह्म
रे केते॥ परियाके अंतरनां छेदे तेते॥ पछै॥ धीरजवंत
अडीगवतयैसौ॥ पवंनप्रचंडमेरुगीरीजेसौ॥ याके
ज्ञांनै नेह्रमकछू करयौ॥ वगधांनमंनगहीरहयौ॥ पछै॥
येकक रोधकरी बंधीसेडारे॥ काठमां छिदेउपरमारे
॥ह्रांसीह्रसतविनतीकरै॥ छिनसै विषवेननीउर
धरै॥ ६०॥ यैसी ज्ञांनिकै दुषेज्ञां षैं जैसै॥ देवयात्मीकं
पावै तेसै॥ सितउस्नवरषादिकहेक॥ जरारोकैगन्त्रा
दीकतेदेहेक॥ ६१॥ येसेबहूविधिपावेदुष॥ कधीनां

अावैं तं नकु सुष ॥ परी सोक च्छूमंन मैौ ना माने ॥ अपने
करे कर्म सव जांनै ॥ ६२ ॥ तव्ववान चांषी गाथा एक ॥ हृदै धा
रै भ्रम ववेक ॥ निछक कहै वचन अव जेई ॥ मेतो सैचांष
त हृते ई ॥ ६३ ॥ नीछुक उवाच ॥ सुष दुष लाई कसो कन
ऐते ॥ अहून हीदे हृन हीसुर नर जेते ॥ नां ग्रहै नहीं कर्म
नां काल ॥ एसमस्त हे मन के षांल ॥ ६४ ॥ जगत चक्र मेम
नहीं फिरावे ॥ जीव मा हा दुष मनते पावे ॥ मन हीं करे बी
षयन कु जोग ॥ ताते हो ई कर्म संजोग ॥ ६५ ॥ होवे सत
रज तम विस्तार ॥ ताते जोनी वीवेवी धी प्रकार ॥ ता
ते दुष नीरंतर लहै ॥ देह जोग ते निसदीन दहै ॥ ६६ ॥ ताते

दुषदाईकमंनएक॥ मेसकहैएप्रमबबेक॥ आपन्त्र्या
त्मासदाअनिद्॥ परीसोमंनकरिकरेसमोद्॥ ६७॥ मे
नबांधीयेअबीद्यामाद्दि॥ तातेबंधनज्ञांनेनाद्दि॥ वि
षसमंनविषीयाकूपावे॥ ताकेसंगजिवदुषपावे॥
६८॥ एहहैजिवब्रह्मकोअंग॥ याकेसोईम्रितमंनके
संग॥ मनकरीकयेतेब्रह्मस्रूपरासि॥ सदाएकरस
प्रमप्रकासी॥ ६९॥ तातेबंधनमंनहीकरे॥ संगआ
त्माजामैमरै॥ मंनकौसंगनीवारेजोई॥ ताकूजनम
मर्णनहीकोई॥ ७०॥ जबमंनरहीतजीवयोंहोई॥ तबजी
वसीवभेदनाकोई॥ तातेजांनीअपनोमनगाहै॥ ता

हीकं छूक नैन हीं रहै ॥ ७१ ॥ अरु जो मंन बस कीन्हे नांही
॥ ते श्रम सकल वृथा ही जांही ॥ सो ब्रह्मादीक देव बहूं दं
नां ॥ एकादसी यादी व्रत नांनां ॥ ७२ ॥ पपने पपने धरमं
नी करे ॥ सम दम जम नियम नि विस्तरे ॥ विद्या वेद पढै
उचरै ॥ और सकल धर्म बिस्तरै ॥ ७३ ॥ परी जो बस नहीं
मंन एक ॥ ते मिथ्यं आचारंन अनेक ॥ मन बस काज करै
बसते ते ॥ विधि आचरण वेद मां जेते ॥ ७४ ॥ मन नीग्र
ह सो उतम ज्ञांन ॥ मंन नीग्रह बिन सकल अज्ञांन ॥ ता
ते जे मंन नीग्रह करे ॥ सो बिधि का है कु बीस्तरै ॥ ७५ ॥
ताकू बिधि निषेध कछू नांही ॥ सब बाधी है मंन निग्र

हमांही ॥ अरु जो बस नांही मन एक ॥ ते धिग धिग तेने ह्वि
धायनेक ॥ ७६ ॥ सबही के फल मन बस करनो ॥ मन ब
स काज सकल आचरणं ॥ मन कुं बस करे जो कोई ॥ ई
ही पर पुण्य पाप ही बस होई ॥ ७७ ॥ मन बस वा नई ही
बस नांही ॥ काहा करी जतन बहुत मरी जांही ॥ मन बस
ते सकल बस होई ॥ तीन जोवन करे नीत सोई ॥ ७८ ॥ स
सकल बलन ते मन बलवंत ॥ मारी करे सब हन के अं
त ॥ मन कुं कोई जीत नां सकै ॥ बहुत उपाय करी करी थ
कै ॥ ७९ ॥ ऐसे मन कुं जीते कोई ॥ सब हन मांही पर बल र
है सोई ॥ सो दूर जंनरी पुब सन नहीं करे ॥ बाहेर जु धारी कवि

स्तेरे ॥८७॥ वेरीमीत्रवोहोतवीधीमांने ॥ अनहीतअरुही
ततिनतैजांने ॥ तेअतीमूढस्वपिनहीहोवे ॥ मनजीतवी
नजुगजुगरोवे ॥८८[?]॥ दुषरूपजग मिथ्यांतनके ॥ आपमांनी
करीबांधोमनके ॥ तववहुंकीएदेहसवंधि ॥ तीनमेमुर्ष
ममतावंधी ॥८९॥ एहमेएहस्मस्तेहेमेरे ॥ मित्रशत्रुठांने
वहुंतेरे ॥ तातेमूढमाहादुषपावै ॥ उपजिउपजिफुनीम
रिमरिजावै ॥९०॥ तातेदुषमनकेकारंन ॥ यात्माकुत्तव
जत्तमेडारंन ॥ अरुजेसुषदूषदाताऐते ॥ मोकुदुषदेत
हेजेते ॥९१॥ तेसबसुषदुषमोकूनांही ॥ देहसबऐकआ
पनमांही ॥ सुषदूषदेहहिपावे ॥ आत्मकेकछुनीकट

नौआवे ॥ ८५ ॥ अरुजदपितेनकेसंजोग ॥ कौजीव
हीसुषदूषजोग ॥ तोहमेहिदुषदेवेकाकुं ॥ रूपसकल
ममदेषैजाकुं ॥ ८६ ॥ आपआपुकेकौदुषदीजे ॥ आ
पनोपरहीतआपकौकीजे ॥ यातेंनमेहीदूषपाउ ॥ अस
तिनहूमेकौउपजाउ ॥ ८७ ॥ दंतनीछलीजीचकाटीजे
॥ तोफेरीकाहातीनहींदुषदीजे ॥ दंतनिअरुजिनदूषदेई
॥ सोतोसकलआपकरीलेई ॥ ८८ ॥ ईद्रीयअधिपतिदे
वताजेते ॥ जोदूषदांनीहेहिसबतेते ॥ तोआपकोपकौ
कीजे ॥ परउपाधीकौसीरकरीलीजे ॥ ८९ ॥ करदिजेमु
षमांहिअस्त्रसौ ॥ सौमूषकाटेकरहिदस्त्रसौं ॥ तोपावक

अरुबोसमसबजांनै ॥ रागदोषन्नावेस्योठानै ॥ ए॰ ॥ युसब॥
ईद्रियनकैदेवा ॥ करेआपुमेदोषरुसेवा ॥ तातेसबजांने
सोकरैं ॥ ज्ञांनीअपनेमननदिधरे ॥ ए१ ॥ अरुजोसूषदू
षदाताआप ॥ दूजोकोनाहिकछूपाप ॥ स्यौएहसबअप
नोसुभाव ॥ कोनकुयांनीएहन्नुभाव ॥ ए२ ॥ अरुआ
तममेसूषदूषनांही ॥ उपजेज्ञांनसकलमीटिजाही ॥ आ
पनुलीसूषदूषकरीलीन्है ॥ सबमिटीजांहीआपकु
चीन्है ॥ ए३ ॥ तातेदोसकोनकोधरीयें ॥ जोअपनोमन
बसनहीकरीयें ॥ अरुजेयहेंसुषदुषकेदाता ॥ लोकवेद
कहीएविषाता ॥ ए४ ॥ तोआपनेक्योकोधहिकाजै ॥

परकौदुषआपकैंग्रा लीजै ॥ ग्रहैयाकासमाही हैजेते ॥
ह्वादशासीवसैसवतेते ॥ ९५ ॥ रागदोषअपनेमैक
रे ॥ तिनकूंसषदूषनित हिपरे ॥ तातेरासजन्मजेया
वे ॥ तिनकीसंगतिसषदूषपावे ॥ ९६ ॥ तातेसदाया
सयजन्मा ॥ वारवारदेहनीकुजन्मा ॥ तातेसषदूष
तनहिपावै ॥ निकटआत्माकुनहिआवे ॥ ९७ ॥ जदी
पीसंगतिदूषपरे ॥ आपक्रोधतेकासूंकरे ॥ कर्मद्वार
तेयहहिजाने ॥ रागदोषजावेतौ गंने ॥ ९८ ॥ अरुदूष
सुंनहूंहिजेकर्म ॥ तातेसकलयापमांहिभ्रम ॥ एहज
ढदेहकर्मतामांहि ॥ आत्मनिकटदेहहिनांहि ॥ ९९ ॥

आत्मचैतनज्ञानसरूप॥ परेसकलतेपरमअनुप॥ तातेकौ
घकैनसैकरै॥ काहाकोदोसह्रिदेमेधरै॥ १००॥ अरुजेदूषका
लतेकहीये॥ तौआपनमेकदीनलहीये॥ तौनहीकालतें
हूंदूषपावे॥ तौआत्माकैनिकटनांआवे॥ १०१॥ कालआ
त्मब्रह्मसरूप॥ देहवलहीनसकलअनुप॥ तातेकाल
हूंतेदूषनांही॥ कालन्नयांनकेदेहनीमांही॥ १०२॥ जौलै
अग्नीअग्नीमांडारै॥ सोएहअग्नीहीजारै॥ अरुजेपाला
केकनलिजै॥ लेवहूंतेपालामांदीजै॥ १०३॥ तातेपालाकु
नमनांहि॥ जदपिरहेसासतामांहि॥ सुहिएकआत्माका
ल॥ सुषदूषदेहनकेषाल॥ १०४॥ यातसबतेसराअतीत

॥ ईस्वरहीतत्रअनिहअचित ॥ अरुआत्मापरैंतेपरे ॥ हद
जोहांलौतेसबउरे ॥ १०५ ॥ कोईआत्माकुनांहीजांने ॥ ख
षदूषकोनकोनकुहांने ॥ सुषअरुदुषजांहांलौजेते ॥ ए
एकप्रकृतीकेसबतेते ॥ १०६ ॥ सौप्रकृतिएहआपजारु
प ॥ चेतनआपत्मब्रह्मसरूप ॥ केवलमांनीलीयौसंसा
र ॥ सुषदूषसंतनमंनसकलअसार ॥ १०७ ॥ मोहनीसातेना
गेतेतै ॥ निरचेतजयेततछीनतेतै ॥ तातेअबमेजयेनंहीआं
नु ॥ आपहीपौसकलतेजांनु ॥ १०८ ॥ हरीचरणनकिसेवा
करै ॥ कैसिविधिभवसागरतरे ॥ जेईजेआएहरीसरेंगी
॥ तेहीतिनपाएहरीचर्णौ ॥ १०९ ॥ तातेमेहरीचर्णनिमनु

॥ मर्षके सब वचन और सब तत्तु ॥ उधव यौ द्विज न्याये विरक्त ॥
तेमैं न कहुं मां नहीं अनुरक्त ॥ १० ॥ वहुत असाधि वहुत दि-
गावे ॥ परिसो कछू नामैं न लावे ॥ एतं षेद स्यय हुसी लोक
॥ करी वीचार मैद हैं जु अवसोक ॥ ११ ॥ तातै उधव सुषदूष
दाईक ॥ आत्मा के को ए तेन लाईक ॥ सुषदूष दाता ना-
ह्न कोई ॥ जो तां कहूं है तन कछु होई ॥ १२ ॥ सुषदूष भ्रमते
जाने सकल ॥ आत्मा एक पजन्मा पकल ॥ जमै छुटै
दुनौ कौ नांहि ॥ मेरौ रूप मलि धामौ माहि ॥ १३ ॥ जब सुष
दूषमी थांक रिजांने ॥ मान अपमान ही दै नौहीयांने ॥ धि
रज धरी मम चरण नी ब्रजे ॥ देहादीक कीया सातजे ॥ १४

॥ तबसुषेंजबसागरतर्यावे॥ मेरोनीजानंदपदपावे॥
॥ तातेउधवमनबचकर्म॥ सकलहैतकुजांनेजमर्म॥
११५॥ सबतेमंनकुनिग्रहकरै॥ निःप्रलकरेममचरण
नीधरै॥ व्यारीकहीयतहैजोग॥ जाकरीपावेममसंजो
ग॥ ११६॥ अरुजेयागाथाकुधारे॥ सुनेसुनावेसाचविचा
रे॥ तीनकुहीतनीकटनहीआवे॥ अंतकालममचरण
नीपावे॥ ११७॥ तातेयाकुसदाबिचारे॥ मेरोबलअंतर
गतधारे॥ मोबिनऔरकछूकोउनांही॥ निसदिनयुबी
चारोमनमांही॥ ११८॥ दोहा॥ एउधवतोसोकह्यौ॥ मन
संजमदृढज्ञांन॥ अबजंघतहुंसोकहुं॥ सुनतमीटे

जोग्रैंसोन ॥ ११४ ॥ इतिश्री भागवते महापुराणे ऐकाद
सस्कंधे भगवत उधव संवादे भाषायै भीछुक कथन
नाम त्रीवीसमो अध्यायः ॥ २३ ॥ ॥ चौपै ॥ श्री भग
वानुवाच ॥ उधव तोसे सांख्य ही कहूं ॥ है तत्त्व मर्म भ्रम वि
नदहूं ॥ जाही सुनत छूटै द्वैत ॥ देषे एक ब्रह्म यद्वैत ॥ १ ॥
प्रथम ही मायापूरव जे भए ॥ ते एह सांख्य प्रगट कराग
ए ॥ मूरुष सांख्य जो नत द्वि होई ॥ सांख्य बीना नही छूटै कोई ॥ २ ॥ सोई सांख्य कहूं मै तोस्य ॥ निःश्चल मन होई सुनी
यो मोस्य ॥ उधव प्रथम हूं तो मे एक ॥ मो बीन कछु नांहू
तो अनेक ॥ ३ ॥ तब मे प्रकृती आपते करी ॥ जट चैतन

न्है बीधी बीस्तरी॥ तिनदेौनुतेउपजैापुत्र॥ माहातत्त्व
सेौकहीतेसूत्र॥ ४॥ एंकप्रक्रतीकेत्रीगुणकान्है॥ लद्ध
ण त्रीन्हतिकू न्हकुदिन्हे॥ सत्वहंते त्रिविधिअहंकार॥
जरमावंनकू षेडेवीकार॥ ५॥ पंचभूतजे प्रथवीयादी॥ अरुपंचैसूछमसहादि॥ तीमसयहंकारतेएते॥
रंजसतेईद्रीयसबतेते॥ ६॥ सात्विकतेमनयरुसबदेव॥ जीनकेपाईन्हएबहूंन्हेव॥ तबसबहीनमेप्रेरीमीलाए॥ तिनसबहीमीलीईरउपाए॥ ७॥ ईडसबीसमांहेंधीरकरैा॥ तामेमेनिजयंसदिधरैा॥ आदीपूरषसोमेरोरूप॥ त्रिगुणनियतातांनसरूप॥ ८॥ तासैानान्हीते

उपजैप्रम॥ जामैसकलजो वंनकोसद्म॥ पद्म ह्नै तें
तवब्रह्मा भयौ॥ ब्रह्मेमेसैजगतुमयौ॥९॥ राजसअ
धिपति भए बीरंची॥ तातेप्रगटसकलप्रपंची॥ लोक
पाललोकनीसौकरै॥ तिनोलोकत्रीबीधीबीस्तरै॥१०
॥ म्रुगलोकदेवनीकुदीयौ॥ अंतरईछतनीग्रहेकीयौ
॥ भुमिलोकमैमानवराषै॥ पसूरादिककेनिचेनांषै॥
११॥ महरलोकजनतपसीलोक॥ चारौमेंसिधिनके
ओक॥ जेत्रिगुणकर्मनिकुकरै॥ तेतीनलोकनीमांप
रे॥१२॥ तपअरुजोगतथासंन्यास॥ ईनतेंनितिचारो
मांबास॥ जक्ति ह्नैतेजावैबैकुंठ॥ जोसबहीनकस्यस

ताकैकुं ॥ १३ ॥ प्रबलेकालरूपहैमेरो ॥ सकलजगत्सन्त
ह्णतेदकेरो ॥ सत्तलोकहूंमेजेजावे ॥ कालतांहांहूते
पावे ॥ १४ ॥ कबहूंजाईकष्टकरीउवे ॥ कबहूकालदाहा
वेनीवे ॥ येसाबीधीसबचरमतेरहै ॥ जन्ममरैबोहोत
दुषसहै ॥ १५ ॥ उत्तमधमनिचैजेते ॥ छोटेबडेथुलकुस
कैत ॥ जौकछुजांहांलगैत्र्याकार ॥ तेसब प्रकृतिपुरष
विस्तार ॥ १६ ॥ प्रकृतिपुरषबिनात्र्योरनाकोई ॥ ईद्रीय
मनगोचरहैजोई ॥ प्रथमहिनीराकारएक ॥ नातेएत्र्या
कारयनेक ॥ १७ ॥ अरुपुनीमेहीरेहहैत्र्यंत ॥ नातेएत्र्य
रूमेबरतंत ॥ जाकीयादीयंतहैजोई ॥ ताकेमधबसों

मै सोई ॥ १८ ॥ जौं मां टितें बहू घट त्तये ॥ अंत फूटि माटि म
लि गये ॥ मांटी यादी मांटी यंत ॥ तौ मां हि तौ मध बरतंत
॥ १९ ॥ जौ कंचन के बहू या त्तर्ण ॥ याद अरु यंत एक सो
वर्ण ॥ तो मधहू अवर कछु तांहां नांही ॥ नांम रूप मीथ्यां
ह्वौ जांही ॥ २० ॥ सौ तब देषौ सब बौहोरा ॥ तब मेरे ही है स
ब वीस्तारा ॥ याद अरु वंत मध मे एक ॥ मध्यां नांम अरु रूप अ
नेक ॥ २१ ॥ माया ते महै तत्व अहंकार ॥ तीन ते होई सक
ल बीस्तार ॥ बोहू रुन्नाम सकल कौ होई ॥ मदें दादि करहे
नां कोई ॥ २२ ॥ प्रकृति मुल अरु पुरषया धार ॥ येसे काल
सकल करतार ॥ मेरी सक्ति सब एह जांनै ॥ मो ते दुतीया

कहीमतमांनैं ॥ २३ ॥ याबीधीचलोजाईबीस्तार ॥ नदी
प्रवाहतुलसंसार ॥ प्रमात्माकीईछाजौलौ ॥ बरतेस
कलनिरंततौलौ ॥ २४ ॥ बोहोरूप्रवेससकलकौहोई ॥ सू
छमस्थूलहेनहिकोई ॥ माहाबलीपूसक्तीमनका
ल ॥ ताकोंसकलजगतएहष्याल ॥ २५ ॥ कालविनासें
संबब्रह्मंड ॥ कबहूंकछूनराषैषंड ॥ अनाब्रष्टीहोवेस
नबर्ष ॥ तातेदेहमींकुप्याकर्षे ॥ २६ ॥ छोटेबडेदेहहेजेते
॥ लिनपसनमेहोवेतेते ॥ अमृतुमीमेंहोवेलिन ॥ तुमी
गंधमलिहोवैछीन ॥ २७ ॥ गंधलीनहोवैजलमांहि ॥ जल
सोसुछमरसमांहि ॥ रसतबतेजमांहीमांहीमीलीजा

सि॥ तेजरूपमांही जाही समाही॥ २८॥ रूपपवंनमांहीम
लीरहै॥ पवंनतत्व सपरसगुणग्रहै॥ सपरसलीनहो
ईतत्वगगनं॥ गगनसबदमेहै मगनं॥ २९॥ सबदमलितो
मसअहंकार॥ सोसबदअरुईद्रीयदसप्रकार॥ तेसब
मीलीराजसयहंकारही॥ मलीकरीसकलहोवेसहार
ही॥ ३०॥ देवअरुपनसत्वीकयहंकार॥ मलिकरीसक
लहोहिसहार॥ अहंकारमहतत्वहि मिलै॥ प्रकृतीन
त्वमहतत्वहीमिलै॥ ३१॥ प्रकृतिकालमेहोवेलीन॥ का
लपुरषमलीहोवेलीन॥ पुरषमीलैपुरषोत्तममांही॥
पुरषोत्तमकहूजावैनाही॥ ३२॥ जेराजेहरहीतत्वएक

२६५

॥ नितांनं दहीं बीकें क॥ चै तननीरमलज्ञांनसरूप॥
पुर्णपत्तयप्रमक्नअनुप॥३३॥ तातेऊधवमीथ्या
हीत॥ यादिक्षतमधहूं एकयहीत॥ ज्ञलबुंदबुंदास
मसबयाकार॥ उत्तमधमबविधिप्रकार॥३४॥
येसोसदाबीचारेजोई॥ ताकेकोनज्ञांतिज्ञर्मदो॥
ई रविउदेतबरहेतमकेसें॥ नदीमधदावानलते
सें॥३५॥ एमेंज्ञांघोसांकूप्रकार॥ सकलहीउतपती
सहार॥ याकेज्ञांनननसंसेरहे॥ अहेकारद्रदगंथेहार॥
दहे॥३६॥ छीडीरुपअरुपसमाधे॥ तातेबोहोरी॥
नांदुषकूपावे॥ तातेयाकुसदाबीचारो॥ सोकुज्ञा॥

नीआपकुलारे॥२३॥दोहा॥ उधवएतोसुककहौ सां
कहोनवीचार॥अवगुणवृतिनकुंकहु॥ जिन्ह जि
न्हप्रकार॥२४॥इतिश्रीभागवतेमहापुराणेएकाद
शस्कंधेश्रीभगवतउधवसंवादेभाषायेसांख्यनि
रुपणोनामचोवीसमोअध्यायः॥२४॥
श्रीभगवानुवाच॥चौपै॥उधवअबतोंषुगुणवृति
जिनकुंजोगुणलहैनीवृती॥जोगुणतेजोलहैकुण
होई॥ तिन्हतिन्हतोंषुसोसोई॥१॥समदमपद्धीमाव
वेकसूधर्म॥लज्जामांनानीनकरेविकर्म॥सतदआन
दीजुलेसुधी॥उत्तममारगमेंथिरबुधि॥२॥जसबअ

रूसोन्ताधिरनवंत ॥ परउपगारसदाबरतंत ॥ बुधिआ
स्तिक नितिनिहसंग ॥ संतोषी आरदांनि अन्तेग ॥ अ
॥ कोमल बिनयदिनवत्राई ॥ सीतलइदैसकलस
षदाई ॥ यैसि जांति बोहेत संपति ॥ सांतिक गुण कि
जां ऐवृत्ति ॥ ४ ॥ आत्मईनसबदिनते नारा ॥ चैतनक
रव्रतावनहारा ॥ जोगसाक्री हिद बहुकांम ॥ धन
अभीलाइजसअतीरंम ॥ ५ ॥ त्रष्णा हासगर्वबल
वंत रिषुमत्रादिकजेदअनंत ॥ करिकांमनानाजे
बहुरेव ॥ प्रमारथकोलहेनांजेव ॥ ६ ॥ बहुंयारन
ति मेंउतसाह ॥ सदाकठोरसदायतिचाह ॥ बहु

तह तिराजसकी येसी ॥ एतू मसैं जा बिमैं तैसी ॥ ७ ॥
हैसा क्रोध लोभ अधिको है ॥ औ हृता हु दीन र्ड देव
जू हुई ॥ श्रम अरु कलेह सोक रु मोह ॥ निद्रा आलस
जयैपरद्रोह ॥ ८ ॥ निसदीन चिंता उदमहीन ॥ इदै आ
सा साहस हीन ॥ येसे बहु विधि तांमस की वृति ॥ जिन
जैकु धिनां लहै निवृति ॥ ९ ॥ उपजै ममता अरु अहंकार ॥
ताते करे विविधि वीहार ॥ ते सब मीलि ता मैं गुनन की
वृति ॥ जिन ते बाढै बहुत प्रवृति ॥ १० ॥ धर्म अरु अरथ का
म अनुरक्त ॥ सधो लोचन तथा आसक्त ॥ धर्म वृती पराइणा
जेते ॥ बो हो तजा ना बिस्तारे तेते ॥ ११ ॥ बरतें अपने अपने

१२५५

धर्म॥ प्रथेग्रहत्रुरूग्रहेस्तषग्रहकर्म॥ एसबमिलियुननं
किवृति॥ जिनतेबहुविधिहोईप्रवृति॥ १२॥ समदस्या
दिजुगतिनरजोई॥ सोतीकलछुणकहीयेसोई॥ राजस
कांमादिकअधिकार॥ तांमसतांहांक्रौधादिकविकार॥
१३॥ जबसधर्मसैमोकुन्नजै॥ दूजीसकलकांमनालजै॥ ना
मांपुर्षन्नावेसौहोई॥ सांतिकप्रक्रितिकहावेसोई॥ १४॥ जं
बकांमनाद्रिदैधरीरेवे॥ अपनेक्रमनीमाकुसेवे॥ एह
स्तावरान्जसकोकहीये॥ म्हगतिहेतकबहूनांग्रहीये॥
॥ १५॥ जबहींसाहिदैमैंत्रांमैं॥ निजकर्मतिममसेवाठं
ने॥ सोबदेंतांमसवृतिकहावै॥ तातेममस्वकहीनोपा

वै ॥ १६ ॥ सत्तरजतम तिन्नोगुणजहे ॥ जीवन्हिकेसव्वबंधनते
हे ॥ तेगूणमेरी आज्ञाकरे ॥ ताते मोन्हीनजैतेतोरे ॥ १७ ॥ चीतहू
तेउपजेतेसकल ॥ ईनकूतजे आत्मा अकल ॥ ईनकूछोडी
रहेमोमांहि ॥ बोहूस्यौउपजे बिनसैनांहि ॥ १८ ॥ करीसाध
नरजतमपरिहरे ॥ सांतिकगूणन्ह थिहीकरे ॥ स्वांतीकसर
जुजैप्रकास ॥ अतिसीतलजोचंदवीगास ॥ १९ ॥ सबक
लांणमूलसूषकारी ॥ निष्कलकलीसकीलदूषहारी ॥
ताते धर्मज्ञानसूषलहे ॥ चीत्मासौकमोहन्नयेदहे ॥ २० ॥
जबसांतकतामसनहीरहे ॥ राजसयाईबसैरागहे ॥ राज
सयाईबसैसम्पदैरुपसंगबल ॥ ताते मंनक्रमन्नयेषेद ॥

२१ ॥ तबसतत्रोारुरजछूटैदोई ॥ केवलएकतमोगुणहोई
॥ तबबीबेकनासकज्ञानारण ॥ उदीमहरताजदताकरण
॥ २२ ॥ तातेसोकमोहकोवासा ॥ निंद्रायालसनिसदीनु
दीयासा ॥ जबछुटैईद्रिनकिवृति ॥ हिदैनदिईहांउतपति
॥ २३ ॥ चितप्रसंसकलनीःसंग ॥ सोसांतैकममयहीयैअं
ग ॥ जबतंनधंनईद्रीयमंनबूधि ॥ धीरनहीहैदैलदैनहीं
स्रधी ॥ २४ ॥ ठांनेकर्मविविधिविस्तार ॥ सोजांनोराजसअ
धीकार ॥ जबवीकारबहूविधिमंनयदै ॥ यासाबंधनीरं
तररहै ॥ २५ ॥ सोकविषादचेतनाहीन ॥ सोतांमसउदीमब
लहीन ॥ जबउपजैसात्वीककोभाव ॥ तबसंज्ञावहोवेदे

बसत्नाव॥२६॥राजसतेअसुरनकिह्वति॥न्हतगुणनिकि-
मउतपति॥सांतिकतेजागरणहोई॥राजसतेमावेस्वपनो-
सोई॥२७॥तामसह्वतैस्वषोपतिसदे॥ब्रह्मतुरीयानिरंतरर
हे॥सांतिकउर्ध्वलोकनिजावे॥राजसनरादिकतनपावे॥
२८॥तामसमितेथावरआदि॥याविधिन्नमैंजीवअनादि
॥सांतिकवर्धमानजेहोई॥तामेमरणलहेजेकोई॥२९॥
सोदेवलोकहीजावे॥राजसमेमरेनरतनपावे॥तामस-
मेरेनरकनिलहै॥तिनोगूणतजिमोमेरदे॥३०॥मेरेहेतन
कर्मजोकरे॥तामेदुजोफलनहीधरे॥सोवहेसांतिकक
मेकहावे॥तातेजीवमाहास्वषपावे॥३१॥फलन्निमतम

मकर्मनी ठांने ॥ ताकुराजेसक्रमवषांने ॥ हेसाहेतकेमम
क्रम ॥ सो तांमसदेखडेग्यधूम ॥ ३२ ॥ नेदरहीतसों स्वांवि
कज्ञांन ॥ देहनेदसोराजसज्ञांन ॥ बालकमूकतूलिजे
होई ॥ तांमसज्ञानकहीजेसोई ॥ ३३ ॥ आत्मादेहरहीत
जोऐक ॥ सोहेमेरोज्ञांनववेक ॥ है विरक्तवसैएकांत ॥
स्वांतिकवासकहेसोसंत ॥ ३४ ॥ ग्रहमेकहीएराजसबा
स ॥ तांमसरुपक्रमएवास ॥ थावरचलममसूंरतिजा
हां ॥ नरग्रामवासकहीजे तांहां ॥ ३५ ॥ सांतिगकरताजो
निहसंगि ॥ सोराजसफलकरमप्रसंगि ॥ विधिकरि
रहितताम सीकर्ते ॥ यासालगी कर्मनि विस्तर्ते ॥ ३६ ॥

आपहीमिटिरहैममसरण॥ ताकुसबनिरगूण॥ आचर
ण॥ सोजननीरगुणकरताकहीयै॥ ताकेसंगप्रमपद
पहीयै॥३७॥ जैनिःकर्मआत्माजांनै॥ सकलतजनकी
सरधाहानै॥ सकलत्यागिनिःचलहोई॥ सांतिकसरधा
कहीयैसोई॥३८॥ राजससरधाहोनेकर्म॥ तांमससरधा
करेविकर्म॥ निरगूणसरधामेरीजगति॥ जातेमिटेसक
लयासक्ति॥३९॥ पंथपवीत्रविनात्रमआवै॥ जामे
आपनोधरमनांजावै॥ जातेउपजेनहीविकार॥ सोकही
यैसांतिकआहार॥४०॥ षाटामिटातिक्षणषारा॥ दुषदा
ईकराजसयाहारा॥ जोयसुधहिंसातेआवै॥ सोयबतां

मसत्र्प्राहारकहावे ॥ ४१ ॥ ममजनमेरोलेईउ विष ॥ सो निर
गूणत्र्प्रोजनयातिईष्ठु ॥ इंद्रियसूषत्रह्मादिकदहै ॥ न जित्र्प्रा
रंत्रनीथारह्योरहै ॥ ४२ ॥ त्र्प्रात्मातेउपजेसूषजोई ॥ सो तिक
सुषकहितूहैसोई ॥ ईद्रियसूषराजसनहागहाऐ ॥ निद्रा
आलसतामसकह्यौयै ॥ ४३ ॥ मेरीप्रेमत्र्प्रनंतिसूषसोई ॥ नि
र्गूणसूषकहितूहैजोई ॥ इवदेसफलकालत्र्प्रारुज्ञांन ॥ क
र्तीकर्मत्र्प्रवस्थादांन ॥ ४४ ॥ त्र्प्रधानिष्टात्र्प्ररुत्र्प्राकांर ॥
निर्गुणनिर्मतसबवीस्तार ॥ जो कछु कहेसूनेत्र्प्रोरुदेषै
मंनरुबूधीजांदांलेषै ॥ ४५ ॥ सोसबप्रक्रिपूरषवीस्तार
त्रीगूणनिर्मतसकलपसारा ॥ ईनतेजीवलहेसंसार ॥ त्रि

गुणग्रकमममणवारंवार ॥४६॥ जोईनतीनौगुणनिनीवारे ॥ चौ
तयपनोसोमोमेधारै ॥ सोमेरो निरगुणपदपावे ॥ बहुरुऐभ
वसागरनहीआवे ॥४७॥ तातेणयेसीनरदेही ॥ जाकरीमिटै
सकलसंदेही ॥ हेवेप्रगटज्ञांनविज्ञांन ॥ पावेमोहीमिटेस
वअंान ॥४८॥ तातेपंडितसकलनीवारे ॥ मोकुसेई आपकु
तारे ॥ याबिनसकलअपंडितजानौ ॥ जेतेआत्मघातीमा
नो ॥४९॥ सकलहुतेहोवेनिदसंग ॥ सावधानपलपरेनां
तंग ॥ ईद्रियगुणप्राणदेहमनजितै ॥ ममचरचादिनरेनबि
हातै ॥५०॥ सकलसौतिककोसंगतिकरे ॥ राजसअोहुतां
मसपरहरे ॥ देहादिकतेनीसप्रेहहोई ॥ आगेईछाकरेना

कोई ॥ ५१ ॥ मो मे धेरनी म्रुलबुधि ॥ तब पावे अंतरगत सुधि ॥ या विधि संतिक उ छिटकावै ॥ ताते लींग सरीरमीटावै ॥ ५२ ॥ लिंग भ्रिरमीटे जवतजे ॥ निरमलरूप आपनो जे ॥ येसो है मो हि कैजांनै ॥ बाहर भितर है तनां मांनै ॥ ५३ ॥ मो मे थिति मो हि मे रहे ॥ बोहूरु काल अग्री न दहे ॥ रहे निरंतर मेरे संग ॥ ताते कदि नां होवे भंग ॥ ५४ ॥ दोहा ॥ उधव ए हते मे कहि ॥ तिनुग्णकी हति ॥ अब और ग्यान हि कहूं ॥ जाते होवे निवृति ॥ ५५ ॥ इति श्री भागवते माहापुराणे एकादशस्कंधे श्रीभगवत उधव संवादे भाषाय गूणवृति निरूपणं नाम पंचविसोयध्याय: ॥ २५ ॥ ॥ चौपै ॥ १

॥श्रीभगवानुवाच॥ एहनरतनहेयेसो॥ जोसकलमुष्टीमे
नाहिजेसो॥ यातेनकरीमनज्ञानहिपावे॥ जातेभवतजीमो
मेआवे॥ १॥ तातेयेसोतनकुपाई॥ मोमीलनेकुकरेउपाई॥
अंतरयात्मामांहिमोहेवीचारे॥ ओरसकलवासनाटारे॥
२॥ ममभगतनकेलछनजांने॥ तेतेआपआपमेठांने॥ अ
नयासेतवमोकुपावें॥ कालव्यालवोहूरुनहीषावे॥ ३॥ मा
याग्रूनजवमीथ्यांजांने॥ मेरोज्ञानपाईसबत्यांने॥ कुहीर
हेदेहनीमांही॥ तहूफेरीलीपैकहूनांहि॥ ४॥ परिजदपिहे
वैयेसोउ॥ करेयसाधसंकेसंगनहिकोउ॥ सिस्नु
उदरपराईनजेते॥ मनक्रमबचनत्यागीयेतेते॥ ५॥ करेय

सा ध्यएकके संगा॥ तोहूं ह्यांनधांनकरेत्रंगा॥ त्रसंतसंग
नरजबदीकरे॥ ताकेसंगअंधनरकमेपरे॥ ई॥ जेसेअं
धाअंधकिसंग॥ कूपपरेहोवेसूषत्रंग॥ याकिगाथात्रो
सुएक॥ जातेउपजेप्रेमबबेक॥ ७॥ जबउतरबंसीवीरहेल
नरह्यौ॥ सोकमोहसागरमेवह्यौ॥ तबपूररवात्रांषीजो
ईं॥ तासूगाथयात्रांषूसोई॥ ८॥ रभ्नापूररवाचक्रहृति॥ ता
कीयांलजांहूं रहौ धरति॥ आपहूतेउतरीउरबंसी॥ सो
नर्पकेमलिमनमांवसी॥ ९॥ बौहूंरै आपमृगतजबत्र
ई॥ तजीतबनपैउरबंसीगई॥ नर्पतिविस्लापकरेवहुरे
वे॥ परीसोनृपकित्रोरतांजोवे॥ १०॥ रजानंग्यदेहसुधि

नाहि॥ बानि विकलदीनतामांहि॥ लज्यारहितमतमंदजै
से॥ चलेउरबंसीपीछैतसै॥ ११॥ अहोमीयातुमबादीहो
वो॥ मेरीओरकीप्याकरीजोवो॥ मोकुमारकादेजावो॥
क्रिपांकरीमेरेग्रहआवौ॥ १२॥ मलिउरबंसीसंगसषपा
यौ॥ सोतोसकलदूषदोएआयौ॥ त्रिपतनजयोभोगव
नजोग॥ पाईउरबंसीकोसंजोग॥ १३॥ नाउरबंसीज्ञानयाउ
कराषौ॥ नातेजलौमांनीकरीहरषौ॥ तनमयेनयुहिदेक
कूनहीआंने॥ नीसदीनमासबरषनहीजांने॥ १४॥ तब
तेनृपकेपूरनजाग॥ जातेप्रगट्योप्रेमबैराग॥ तबनृपबच
नबपानेजेई॥ तोसैमैजांपतहूतेई॥ १५॥ पुरुषाउवाच॥

महो एक देषो मम मोह॥ पाप हो किए या पनो द्रोह॥ १२५
ह्यौ कर देव की माया॥ जीन मेरे सब या युग माया॥ २६
त्रि मो कू डेहे कायौ बहु तेरो॥ सर बस आयु हरी लीयो मे
रो॥ मो दिन राति नां जांनी जाते॥ अमृत करी मांन्यौ बि
षपाते॥ २७ वर्ष समोह गयौ मम बिति॥ सकल विकार
नि सीन्हो जीता॥ देषो मो कु केसो डेहे कायौ॥ अस्त्री के क
र आपवे कायौ॥ २८ जे मे राज चक्र वरति॥ जीती समस्त
करी बस धरती॥ सकल त्रूप मम चरानी सेवे॥ तं न मं न
धन सब मो कु देवे॥ २९ सो मे बेकां नो यस्त्री हाथा॥ जो
बानर बाजी गर साथा॥ जो जो अस्त्री मो हे नचायो॥ सो सो

मेन्हरषस्त्रषपायौ ॥ २० ॥ तोपुरराजसहीततजीमोही ॥ त्रप
समानकरीचलीविछोई ॥ नग्रन्नयौमेपिछैधायौ ॥ जौउ
नमंतआपवीसरायौ ॥ २१ ॥ कौनन्नंतिनाकोबलहोई ॥ ते
जआलापरहौनहीकोई ॥ जोहोवेयस्तरीआधिन ॥ जेसष
रीसंगषरदीन ॥ २२ ॥ विद्यामौनतपसात्याग ॥ वनमेबस
वोहीठवैराग ॥ एसमस्तकिन्हैकछूनाहि ॥ जौलगिस्त्रीयाव
सीमंनमाहि ॥ २३ ॥ एउरवंसीजबतेपाई ॥ कांमयग्नीबह्र
तन्नंतिगमाई ॥ त्रिएअग्नीनांसीतलन्नाई ॥ यधिकयधि
कबाधतिनितगई ॥ २४ ॥ जेसेअग्नीअजलतहोई ॥ मामेई
धनडारेसोई ॥ सोतोअधिकअधिकप्रजले ॥ पलकहूंनां

ह्रिसीतलतताकरे ॥ २५ ॥ मेंअपनोंजांनोंयघैं ॥ आपअ
पमेकीयौयनथै ॥ मेरंषयापहीपंडीतमांनौ ॥ परसेंमूत
मुषअमीतजांनौ ॥ २६ ॥ जोमेईससकलजुकेरो ॥ सो
होएरहैजीयाकोचीनहसौघेरो ॥ मेमरषलाकुधिका
र ॥ जीननांकीयोकछूहांनवीचार ॥ २७ ॥ असतरीकर
जांकोचीतदस्यौ ॥ ग्यांनविचारसकलपरीहस्यौ ॥ ता
कुहरीजीनकोनछोडावे ॥ दुजोआपनछुटनपावे ॥ २८ ॥
॥ तातेमेहरीचरणनीगह्यौ ॥ सकलतोगीहरीकोदोईरह्यौ
॥ जदपिदेवेंमोहीबुझायो ॥ त्रीयाप्रतिदुषकहिसमुझा
यो ॥ २९ ॥ तोहूंमेमुरषनहीजांनौ ॥ कांमअंधमूरषक

री मां नै॥ ताते ताको नही अपराध॥ एहु मेरो मन बडो ॥य
साध॥ २९॥ जो मै अमन के मे देषौ॥ दुष दिमां दिसूष करी ले
षौ॥ गून मे साप जांनी दुष पावे॥ अग्नी पतंग परयो मरि जा
वे॥ ३१॥ तो ती न को अपराध ना को ई॥ आप दुष करी लेव सो
ई॥ ताते ई न का ऐ दे सूभाव॥ मे मंन मे कयौ ध रौ य भाव॥ ३२
जो मे आप अग्नी मे परयो॥ तौ उर दोष कौन को धरयो॥ देह
मलीन महा दुरगंध॥ सो करी जांनी विमल सुष सुगंध
॥ ३३॥ सो अपनी अवी द्या करी॥ निजा नंद आत्मा बिसरी
॥ एतें न तो बो हो तन नी को कहीये॥ ता मे मंमता कैौ गदीर
हीये॥ ३४॥ मात पी तो ही अपनो कहे॥ अस्तरी एक मेक

मलीरहै॥ केएहतनकह्यौतहैराजाकौ॥ केपावकजछ
राहैजाकौ॥ ३५ कोन्हकौकेस्वानसीगाल॥ केअपंनो
मीत्रकेकाल॥ एइतंनधौंकहीयैकिनकिनकौ॥ जगट
दीतहैतिनतिनकौ॥ ३६ महाअसुधदेहयेसौ॥ प्रग
टनरकषानीहैजेसौ॥ तांहांकौमंनकोधेमतिमंद॥
अस्तरीनांमकालकौफंद॥ ३७ तूचाम्रधिरअरुमांस
अंत॥ मजामेदरोमनषदंत॥ विष्टामूतरेटकमीहाड॥
अस्तरीप्रगटनरककीषाड॥ ३८ तातेअसुचीओरतासंग
गी॥ तनकेनांहूजेप्रसंगी॥ तीनकेदरसछुतितमंनहोई
देषीबीनाविकारनांकोई॥ ३९ तातेतीनंकोदरसननां

करीये ॥ आपू आपू नही नरकपरीये ॥ जीण दई इंद्री अर्थ
नीवारे ॥ मंनक्रमबचनदोइ संगतिटारे ॥ ४१ ॥ तब एमंन
मदेह जेथीरहोई ॥ कदीबीकानारनांपरसैकोई ॥ तातेजेप्र
स्त्रीनकुंतजै ॥ अस्तरीतीनकौंबुधतजै ॥ ४२ ॥ दर्सपर्सअ
रुश्रवननीवास ॥ सबत्यांतिमनतेमांनेत्रास ॥ ईंद्रीयन
कुंविसबासनांकरे ॥ ज्ञांनवंतनीतहीपरहरे ॥ ४३ ॥ माहापु
रषजेजीवेनमुक्ती ॥ तीनहकुसबसंगपरजुगती ॥ तोजेज
गतेछूट्यौवहे ॥ तेहमनसेकौसंगतीगहे ॥ ४४ ॥ तातेमेस
बसंगनीवारू ॥ श्रीपतिचरणकवलउरधारू ॥ दीनबंधू
करुणामेस्वांमी ॥ क्रिपाकरीएहअंतरजांमी ॥ ४५ ॥ श्री

भगवानउवाच॥ या विधि बचन कहे नृपराज॥ तजिउ
र बसी लोकसूषराज॥ ग्यान लह्यौ सब संसै हारयौ॥ मन
नी: स्थल करी मो मे धार्यौ॥४५॥ तातें भव एह परवारथ
॥ नर तेन पायो सब ही स्वारथ॥ जब सतसंग की संगति त
जै॥ संतसंग गही मो कुं ज जै॥४६॥ संत वतावे हित उपदे
सं॥ जीन ते संसै यर हे नी लेस॥ मन की सब यास की नीवा
रे॥ संत मो हा भव सागर तारे॥४७॥ निस प्रेह निरालंब संत
मदरसे॥ संग्रह रहत द्वंद नही परसै॥ अहंकार ममता नही
आंने॥ मोहे नजे दुजो नही जांने॥४८॥ जदपि ते उपदेस
नां देव॥ तो मो हि न वहे ते सेवे॥ तां हां कथा मेरी नीरंतर है

वे॥ सोई अघसंदेहनी षोवे॥ ४९॥ मेरी कथा श्रवण जे करे॥ ते
सब पापनी ते नीस्तरे॥ अनेक देह अंतरगति धावे॥ प्रती
आदर से प्रीती बढावे॥ ५०॥ ते संदेह जे ही लहे मेरी भक्ति॥ सं
~~देहे जेही लहे मेरी भक्ति~~ संदेह जे हि होवे सकल विरक्ति॥ मेरी
भक्ति लहे नर जब ही॥ परव कांम नयो सो जब ही॥ ५१॥ ज्ञा
कुं कछू नां करणो रह्यो॥ ज्ञांनानंदरूप मम लह्यो॥ सीत नीसा
कहुं होवे कोई॥ तां हां अग्नी प्रजाले सोई॥ ५२॥ तम नुषारस्त
ऐसे देहे जे हि जावे॥ तो साधु सब दूष हि मिटावे॥ वडे अपार
सागर संसार॥ जामे बुडे जीव अपार॥ ५३॥ तीन कु नाव क
ही एह॥ संत रूप प्रगट मम देह॥ जो प्रांण नीराषे आहा

२०५

र॥ मेरीसरणदुषसहार॥ ५४॥ जोपरलोकधर्मधनजानैं॥
तोभवतारकसाधुमांनै॥ जीनकेहृदेप्रगटममचरणं॥
॥तिनबिनुयाभवऔरनांसरणं॥ ५५॥ ज्यौबाहेरहैसूर
जएक॥ यौंउरनेनउधारेअनेक॥ संतहेमातपीताहेतं
कारी॥ संतहैदीनबंधुदुषहारी॥ ५६॥ तातेसंतसंगतना
संकरणे॥ औरउपायेनहींहृदेधरणे॥ तेजनअनया
सेभवतेरे॥ अनयासमोकुअनुसरे॥ ५७॥ नवपुररंवाये
साकस्यो॥ सौउरवंसीलोकपरहस्यो॥ सबतजीनयोंअ
सारांम॥ बीचरैंतुमेंहैंनीःकांम॥ ५८॥ तातेअसंतसंग
परहरीयै॥ साधुसंगनीरंतरकरीयै॥ साधुजंनसषदीन

वतारे ॥ सबही मैंममचरणचीतधारे ॥ ५९ ॥ दोहा ॥ ऐसोसा-
धुयसाधुको ॥ मुनीदरजीकोसंग ॥ तबउधवजनपुछीयो ॥
कर्मजोगप्रसंग ॥ ६० ॥ इतिश्रीभागवतमहापुराणेए-
कादसस्कंधेश्रीभागवतउधवसंवादेएयलगीता-
परवनेषटवींसोअध्यायः ॥ २६ ॥ ॥ चौपै ॥ उधव
उवाच ॥ प्रेदेप्रभुक्रपाकरोनूमयेसी ॥ जोषेक्रीयाजोग
वीधीजेसी ॥ याकेकरतहोयसंतसंग ॥ पावेज्ञानतप्रहहे
एअंग ॥ १ ॥ यहजेतुमप्रत्माकीपूजा ॥ यातेप्रीयकहीयेन
हीदूजा ॥ याकुकहेवासऔरूनारद ॥ गुरुब्रह्मसपताअ-
रूपर्मविसारद ॥ २ ॥ औरसकलमूनीसरएते ॥ परमप्रीय

।क्षेत्नाषेजेते ॥ सकलयाद विधिसोतुमकहो ॥ सोदृढकरि
विधिहरहैगहो ॥ ३ ॥ तिनच्छगवादिकसुततिसुनायो ॥
सोच्छवहुतेच्छवांनीपायौ ॥ जेतेसकलवृणयाश्रम ॥ श्र
स्तरीकंनजसवकौधंम ॥ ४ ॥ यावीनच्छोरधर्मदेजेते ॥
माहीकाजकहेहैंतेते ॥ यावीनाच्छोरधर्मदेजेकरे ॥ सो
तीनहेकरीबंधनपरे ॥ ५ ॥ ऐहीहेसव धर्मनीको धर्म ॥ या
हीहूंनेकटेसबकर्म ॥ तातेप्रजाविधिवीस्तारो ॥ त्रप्पां
करेजीवनीस्तारो ॥ ६ ॥ तुमदयालसवनहेतकारी ॥ सुम
रतसकलदुषच्छघहारी ॥ सुनीएप्रउपकारीवेन ॥ बो
लेहृषीकमलदलनेन ॥ ७ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ ॥

उधवयाकौ अंतनांपार ॥ ममपूजा विधिवहु विस्तार ॥ प
रीतोकुसंछेपसुनाउ ॥ नामेतत्वसकंकुलाउ ॥ ८ ॥ पूजाविधि
हेतिनपरकार ॥ वेदिकतंत्रीकमिस्रितसार ॥ वेदमंत्रअरु
वेदीकअंग ॥ सोकहीयैवेदीकप्रसंग ॥ ९ ॥ युहीतंत्राकमि
स्रितजांने ॥ न्यावेतासूपूजासमस्तविधिठाने ॥ विप्रछत्री
वेस्यत्रिवर्णं ॥ इनकुयाव्वीधीपुजाकरणं ॥ १० ॥ सोसमस्त
वीधीतुमहीसुनाउ ॥ जीवनिकुकल्याणउपाउ ॥ प्रतमान्
मीअग्नीजलवाई ॥ द्विजअरुअपनअर्केरुगाई ॥ ११ ॥ अ
रुसवहिनसेमोकुजांने ॥ जथाजोगसवपूजाठांने ॥ गृर
अरुसोमिन्नेदनराषे ॥ मान्षवृधिदूरकरीनाषै ॥ १२ ॥ सु

२०७

धहोइ जलमाटीसंग ॥ स्नानादिकसकलईअंग ॥ जेजेप्रग-
टबेदअरुतंत्र ॥ तेतेसंकलपटेममंत्र ॥ १३ ॥ संध्यापास-
नादिजेकर्म ॥ प्रगटतीदूवर्णनकौधर्म ॥ तिनतिनमोकुसे-
नीतनजे ॥ होईनषेदसकलसोतजे ॥ १४ ॥ जाकरीममस्मर-
णहोई ॥ काटेसबकर्मनिकौसोई ॥ सोईसोकहीयेममधर्म ॥
ममस्मरणबिनबंधनकर्म ॥ १५ ॥ अबजोंमूरतीमा-
कौभेद ॥ सेवतजीनहिमिटेजवषेद ॥ एकसलाकीकही-
मैमुरती ॥ एककाठकीतेममसुरती ॥ १६ ॥ एकलेपचंदन-
कीकरीये ॥ एकचीत्रपुस्तकलषिधरीये ॥ प्रत्माएकसो-
वर्णसवारे ॥ एकमनोमेमनमेधारे ॥ १७ ॥ एकमृतिकाकीले-

कीन्ही ॥ एकरतंनमली किकर लिन्ही ॥ एमम भत्मायष्ट प्रका
र ॥ जामेममम मंदिर निजसार ॥ १८ ॥ तिनमे द्वोवे निःछलजे
ती ॥ सयनादीक करावे तेती ॥ सास्त्रीग्रोमयादिदै जेती ॥ मे
रे नंनजांनौ निजतेती ॥ १९ ॥ अरुसबनिकु पुजाकाल ॥
किवाजांने नितगोपाल ॥ लेपिलषिमरजंनकरे ॥ अरुनि
स्नांनहिविस्तरे ॥ २० ॥ उत्मसामग्रीसुसेवे ॥ तंनमंनधंन
सबमोकुदेवे ॥ जोनिःकामनिःकपटहोई ॥ करैतावमो
कुसेवेसोई ॥ २१ ॥ उत्मवस्तुमनकरीलावे ॥ प्रेमसहीतमो
कुचढावे ॥ उत्मविधिअष्टानकरावे ॥ वस्त्रआभ्नरणादि
कपहरावे ॥ २२ ॥ अग्नीघ्रतादिकहोमहीकरै ॥ धरणीरवि

स्तुतिविस्तरे॥ जलकौ पूजे ग्नलफुलफल॥ जांनेमो हि
मकलकोमूल २३ ज्ञक्तिसहीतजोयपैतोए॥ तांहूंते
मूषमोहीहोए॥ तोजो धूपदीपनीवेदे मोकुबहोत नो
तिनीवेदे॥ २४ ताकी महीमा काहा बषानै॥ जोदेतोमेही
पेजाने॥ जानेमेनीतमतग्राधीन॥ तोषनमांनेप
तिवीहीन॥ २५ श्रवन्नां पूजाबाधी तोसस॥ सावधां
नहोईसनीयोमोस॥ होईपवीत्रकरेस्नान॥ मनमेंरा
षेमेरो धान॥ २६ पूजासाजप्रथमसबलेई॥ फोरीउहीवेकु
रेहेनेनांदेई॥ बोउतरकेपूरवमूष॥ निःश्चलमनमाके
वलसनमूष॥ २७ दर्भनीसैनीजक्तासनकरे॥ श्रंग्नी

केन्हासहि बिस्तरे ॥ न्यासकरे मममुरति अंग ॥ तबहं न्हे
स्नांन प्रसंग ॥ २८ ॥ उत्मकलस तोए सुन्नरे ॥ फुनि जल हि
के पात्र हि धरे ॥ जलमें बहु सुगंध मीलावे ॥ तासें मो हि स
स्नांन करावे ॥ २९ ॥ अरघ पाद्य अरु वीच्यरकरे ॥ तिन पात्र ता
के जल न्हरे ॥ गंध पुष्पादी तीनमें बहु धरे ॥ गायत्री अन्ति
मंत्र न करे ॥ ३० ॥ नवकरे यपन्नो तंन स्रध ॥ कहूं हुरनो हैं
ई यस्रध ॥ हृदे मां हि मम ओपही धावे ॥ ईंकार ज्योहु ते आवे ॥
३१ ॥ जे सेय्य हे मे दीपप्रकास ॥ सुधावत नमां हि उजास ॥
पुजों प्रेम स्रतंन मये होई ॥ पुनि मूरति में थपें सोई ॥ ३२
सांग उपांग करे तन एजा ॥ कोइ न्हाव नां उपजे दुजा ॥ दे

२०५

वेअर्घपाद्यान्चवन ॥ रचेअष्टदलपंकजन्नवन ॥ ३३

॥ तापरथापेधर्मादि ॥ सकलसक्तिरविससीअंगनादि

॥ संषरुचक्रगदाअस्त्र ॥ धनुषरुबांनमूसलहलसस्त्र

॥ ३४ ॥ एआठरुआठदिसैयांनै ॥ मणिमालालतातउरजां

नै ॥ नंदसुनंदमाहावलचंड ॥ कूमदेछणबालकुमदप्र

चंड ॥ ३५ ॥ यष्टदिसापारषसमग्र ॥ ठाटैगरुडजोडकरअग्र

॥ विस्वकसेनव्यासगूरदेव ॥ गणपतदूर्गाअरुसंबदेव

॥ ३६ ॥ करजोरेद्वारीसनमूषठाढौ ॥ हूर्षीतवदनप्रेमअति

बाढौ ॥ सबदिनकौपूजेअप्रघादी ॥ त्रिनयनसूतावंद

नाआदी ॥ ३७ ॥ वदनअरुकण्ठउसिर ॥ हूमकूमाअर्ग

सुगंधीतनीर ॥ प्रथमहिकहूं मधूपरकचखावे ॥ निरमलजलआ
चमनकरावे ॥ ३८ ॥ पुनिसुगंधजलदेवेस्नांन ॥ अरुबचन
मनक्रमनदीआंन ॥ पुंडरीकलौचनवनयन्नावन ॥ आ
दिपुरषसबकेउपजावन ॥ ३९ ॥ जएजंएब्रह्मसकलयाधा
र ॥ नमोनमस्तेबारनापार ॥ येसेतंत्रमंत्रउचारे ॥ सहस्त्रसिर्षा
स्रुतिविस्तारे ॥ ४० ॥ बस्त्रजनेऊअरुआभ्रनं ॥ अंगअंगतील
कादिकर्नं ॥ उत्तममालाबहुतसुगंध ॥ प्रेमसहितमोस्रमन
बंध ॥ ४१ ॥ बालत्नोगलेआचमनकरवावे ॥ कूसमसुगंधरू ।
धूपबनावे ॥ बहूतजोतिप्यारतिउतारे ॥ नांनाविधिनैवेदस ।
वारे ॥ ४२ ॥ षीरषांडघृतदूलापसी ॥ लाडूएवासहारसी ॥ ।

विंजनकरेरुवहूतेरे॥ वित्तौगलगावेवहूंहितमेरे॥४३॥ १
नितदांतूनिउबटनमेल॥ न्हवावैपंचामृतमेल॥ अलंका
रह्रसनयादरस॥ गितन्हतवजत्रसूपरस॥४४॥ वहूत१
न्तोंतितैवेदसंवारे॥ नीतनंहितोपरवनटारे॥ वहूरकरे१
पावकमेंपूजा॥ मोवीनताहीनोंजानेदुज्जा॥४५॥ अग्नकुंड
मेंअग्नीहिधरे॥ समधिघ्रतादीकहोमहिकरे॥ होमकरेयपदि
दिमंममंत्र॥ जीनकुहवेदअरुतंत्र॥४६॥ करिहोमहिआचम
नकरावे॥ ताकुमेरेरूपहिधावे॥ तप्तसोवर्णतूलछुविअंग॥ १
अरुचतूरभुजयाउधसंग॥४७॥ पीतवसनकुंडलमणीमा
ला॥ स्रिसमकटस्रविसाला॥ नग्रला॥ अरुलछुनआ

री ॥ बहुविधि धावे रूप त्रनारी ॥ ४९ ॥ इनने दादि पार्षद जे ते
॥ बलि विधान से पूजे तेते ॥ जपे मूल मंत्र बहु बार ॥ जा वि
धि बंधे प्रेम यधी कार ॥ ४९ ॥ पिछे ना परसाद लिवे ॥ लेकरी
स बजत किन कुदेवे ॥ यज्ञा पाई आप जब पावे ॥ प्रीत सहीत
जे ते जी बज्नावे ॥ ५० ॥ इन यर्पे स्रग धंत बोल ॥ उत्तम मन ला उ
त्तम फूल ॥ मेरे गुण उचे स्वर गावे ॥ नाम नी जावे प्रेम बढावे ॥
५१ ॥ मेरे गुण अरु कर्म सरा हे ॥ पूर्ण प्रेम सिंधु यवगा हे ॥ क
था नीत्य मम सुनेसु ना वे ॥ मो बीनां कहून पलत हरावे ॥
५२ ॥ चर्ण पलोटे सयन करावे ॥ मुष ते मूल नाम न दि जावे ॥
॥ आकृत्य ओरु संसक्रे त्य बोह ॥ जेई जेई यस्तु ति केजे ह ॥ ५३ ॥

॥ तिनतिनसौममअस्तुतिकिरे॥ बारंबारममचर्णनी।
परे॥ पीछेधारीजौ रिकरदोई॥ करैदिनदुई छिनतिसाई॥
५४॥ देअक्तत्रवसागरतेतारो॥ कालमृत्युत्रवसोकनि
वारो॥ तुमबीनमेरेओरनकोई॥ पहुचैचर्णनीकिसोई॥ ५५
॥ छिदेजोतिजोतिमेधारो॥ मूरतिकुसिजाविस्तारो॥ पुन्याका
रजांहांलोदेषे॥ तस्मस्तममम्मूरतिलेषे॥ ५६॥ करेजथावि
धिसवमेपूजा॥ मोकुछोडीनांजांनेदुजा॥ याविधिकी।
याजोगमंनमेलावे॥ सोनरत्नक्रिमूक्तफलपावे॥ ५७॥ मो
कुउत्मग्रदसंवारे॥ तामेममप्रत्मापधरावे॥ मोहीतकरे।
बागफुलवाई॥ जातेमोहोत्सुवकीयधकाई॥ ५८॥ ममदीतस

दावृत्तादीकदेवे॥ वोहोतन्नंतमम न्नगतनीसेवे॥ मम।
पूजाप्रवीहृकेहेत॥ देईगांवपुरहाटग्रह्रषेत॥ ५९॥ सो
मम समईस्वरतापावे॥ तीहूलोककोईसकहावे॥ जोमम
भक्तापापनकरे॥ सोसब्बरूपतिह्वोईअवतरे॥ ६०॥ जोमेरे
मंदीरसबरावे॥ तिहूलोककीप्रभुतापावे॥ पूजादीकनि
ब्रह्मकोलोक॥ जांहांनहीनानाभवसोक॥ ६१॥ तिनहीं
कीयोलहेवैकुंठ॥ कालादीकसबहूतेयकुंठ॥ जोएसेव
कहोएनिःकांम॥ सोतोममभक्तिलहेसुषधाम॥ ६२॥
नीःकांमीन्नावेतोसेवे॥ जोतंनमंनमोकुसबदेवे॥ सो
पावेनीजमेरोग्यांन॥ लहेमोहीछुटेसबयांन॥ ६३॥ कीनी

सरनअरुवीप्रनीकेरी ॥ अरुजोहोतीकरीकछुमेरी ॥ ६३ ॥
औरंकीवाआप ॥ ताकोहरुकसौसबपाप ॥ ६४ ॥ सोहो
वेक्रमिविष्णुमांही ॥ वर्षकोटीहूनिकसेनाही ॥ कर्मप्रेर
कतथासहाई ॥ अनमोदिकजीनरुचीउपाई ॥ ६५ ॥ सब
हीनकोफलहोईसमांनां ॥ जादेउत्मत्तावेयांनां ॥ ताते
समहीतकर्मनीकर्मेरे ॥ सोवहतनिलेजवसागरतरे ॥
६६ ॥ दोहा ॥ यावीधिपूजाकौकरै ॥ ताकुउपजेज्ञान ॥
जातेमेरापदलहे ॥ ताकोकरेवषांन ॥ ६७ ॥ इतिश्रीजाग
वतेमाहापुराणेएकादशस्कंधेश्रीभगवतउधव
संवादेभाषामाहापुराषपुजाविधिवर्ननामसप्त

विंसोय अध्याय ॥२७५ ॥ चौपै ॥ श्री जगन्नाथ नु कोम्या ॥

उधवतासेत्तांषूज्ञांन ॥ जाते मोहे लहे तजी अंान ॥ उतेम
मधंम कर्म सत्ताव ॥ जे सब जग मे मां नांत्ताव ॥ १ ॥ ती मती
नका नेह्या नहीं करे ॥ असु नहीं कछू पस्तूति वीस्तरे ॥ प्रकति
पुरष नीर मत सब जानै ॥ एक जान सब ने देहीं जानै ॥ २ ॥
ब्रह्मायादी कीट प्रजंत ॥ एक रूप देषे मम संत ॥ जे सब ब्रह्म बा
धिक मे सत्ताव ॥ तिन कूं जानै नावय जाव ॥ ३ ॥ तो सो होई
अर्थ ते त्रष ॥ माया मोह चिंतया क्रष ॥ मी थां मां हि चित कौ
धरे ॥ ता ते मूर्ष जां मे मेरे ॥ ४ ॥ लीन होई ईद्रीय जब देह ॥ स
प नंतर हे सब आत्मा एह ॥ जां हां मन लगो तां हां तां हां जा

वे॥ बहुत जोंति के सुष दुष पावे ॥ ५ ॥ पुनीसषोपति मेह्
वे लीन ॥ मरणे कहीये आहं मम हीन ॥ पुरुषोपतित्र
रु देषत सुपनो ॥ जन्म मर्णबहु सुष दुष उपनो ॥ ६ ॥ जौ
लगि सोवे तौ लगि पावे ॥ जागत दिक छु वे न रहावे ॥ तो
एह सुष दुष पापरु पुंन ॥ जन्म मर्ण सब जांने सुंन ॥ ७ ॥
जो पिए इह सब द्वैत असत ॥ मो बीन और कछु नहीं सत ॥
देषन सुनन कहन में यावे ॥ मन रु बुधि जांहां लो जावे
॥ ८ ॥ ते सम सत जो कछु वेनांही ॥ तो सत्य सुजनक है कोइ मा
ही ॥ जदपि माथ्यां है संसार ॥ तो हू दुष को वार नं पार ॥ ९ ॥
जौ लगी देह बुधि नहीं छूटे ॥ तौ लगी जव नंय पलन नहीं

दुई॥ जैसे यपनी धुनई की कांई॥ अरु प्रतिबिंब सिंघ की नाई
॥१०॥ जौ सीप रूप जेवरी मांसाप॥ औ रु मृग त्रसना माही याप॥
जो नांही परी है सो जाने॥ तीन ते स्रूष दूष बहु विधि मांने॥
११॥ जौ लगी मिथ्या जांने नांही॥ तौ लगी सकल यतनर्ष नं
जां ही॥ ब्रह्म रूप एह सब संसार॥ जां हां लगे कछू है याकार
॥१२॥ ब्रह्म रूप ब्रह्म ही उपजावे॥ ब्रह्म ब्रह्म याधार रहा
वे॥ ब्रह्म करे ब्रह्म प्रती पाल॥ ब्रह्म ब्रह्म रूप ब्रह्म कौ का
ल॥१३॥ जैसे जल बूंद बूंद जल माहि॥ जल कुं छौडी दीत
कछू नाहि॥ तौ दि ब्रह्म रूप ब्रह्म सब एक॥ देष ब्रह्म रूप
पुंजी वयनेक॥१४॥ ये रिएह जांनो सब नीर मूल॥ जौ मृग

वारी गगंन्नमे फुले ॥ त्रिगुणर चित एह सब जगत जांनो ।
॥ तगून ई माया के मांनो ॥ १५ ॥ जो या विधि सब मीथ्या
ने ॥ ब्रह्म भाव मांहू देमे यांने ॥ परी जद पि सो जग मेर है ॥
तोर वि जो गूण दोष मांगहे ॥ १६ ॥ या जग मे सत्य सत्य नां
देषे ॥ मीथ्या जांने भ्रम करी लेषे ॥ जो प्रत रू घटादी क देषे
॥ उपजत वीन सत मीथ्या लेषे ॥ १७ ॥ धरणी यादी काल त्र
य सत ॥ नांम रूप ते सकल असत ॥ तो ही ब्रह्म सत ति हूं
काल ॥ नांम रूप मीथ्या जंजाल ॥ १८ ॥ अरु तौ करी है षे अ
नुमांन ॥ जाई ए जद तन मन प्रांन ॥ सक्षी कोन की चेत
नी रहे ॥ यप ने यप ने यर्थ नी गहे ॥ १९ ॥ निराकार ते चेत

नीहोई॥ सबयाकारजांहांलगसोई॥ तातेसबमीथ्या धाका
र॥ चैतनब्रह्मसकलयाधार॥ २०॥ अरस्रुतिकुपरिनांमबि
चार॥ नेतिनतिकरीसदापोकारे॥ अरुनौदेषेयह्सबमांही
॥ नांमरूपकछुहोहेनांही॥ २१॥ अंतनांरईहैहूतैनांयादी॥
यात्मानी: स्थलब्रह्मयनादी॥ येसैबहूबीधिकोबीस्तार
॥ मीथ्यांजांनेब्रणयाकार॥ २२॥ मंनबचकर्महोवेनी: संग
॥ ब्रह्मबीचारहीकरेयसंग॥ येसेबचनकहेभगवांन॥ तब
बउधवपुछोहीहज्ञांन॥ २३॥ उधवउवाच॥ हेप्रभुएहयात
माथवीनासी॥ चैतनरूपस्वैप्रकासी॥ निरगूननिराकारनि
तसूध॥ सदाअनाहतीसदाप्रबूध॥ २४॥ ईहांसदारहतयं

-२१५

नंद ॥ सकलप्रकासीलीपेनांहंद ॥ अरुऐदेहसक्तिकरी
हीन ॥ जडयसरूधैहैईजावेलीन ॥ २५ ॥ नातेतीनकौसग
नीहोई ॥ माहाबसेषपरसपरहोई ॥ कछुईछानहीयात्मा
माहि ॥ अरुतंनसेकछुहोवेनाहि ॥ २६ ॥ आत्माकुबंधन
बहीकोई ॥ अरुयात्मायावर्णनहोई ॥ एहसंसारलहेसो
कोन ॥ यात्मासूधसदासूषनौन ॥ २७ ॥ येहकरीकोप्पामे
हीसमझावो ॥ मेरोभर्मसंदेहमीटावो ॥ येसोउधवप्रछो
ग्यांन ॥ तबबोलेत्रवपतीभगवांन ॥ २८ ॥ श्रीभगवांन
उवाच ॥ यात्मकुनाहिसंसार ॥ अरुतीनकुनाहिजेयाका
र ॥ तिनहेनोतेजोयववेक ॥ ताहीकुभवदुषअनेक ॥ २९ ॥

इंद्रियदेहप्रांणमंनवच ॥ ईनसैजोयात्मासंबंध ॥ तातेया
त्रासेसंसार ॥ मांहादुषनांनाप्रकार ॥ ३० ॥ जौलगीइनसै
संबंध ॥ तौलगीयात्माजांनौबंध ॥ सौयह्तांनकरसौस
बजांनौ ॥ नाहीकछुसकलकरीमांनौ ॥ ३१ ॥ जदपिमी
थ्यादेसंसार ॥ परीतोहूंकहूंवारनंपार ॥ सहाजीवदुषही
मांरहे ॥ वारवारतंनछोडेग्रहे ॥ ३२ ॥ जौस्रपनोकछुदेये
नांही ॥ परीसबसाचोस्रपनामांही ॥ जौजौस्रपदुषमनमे
थावे ॥ सोसोसकलस्रूपनेमांपावे ॥ ३३ ॥ देनाहिपरीदेसो
जांने ॥ नांहांनांविधिकेस्रपदुषमांने ॥ आगतहेसोकछु
नेनाहि ॥ सबबोहोरन्नयाहेजाहि ॥ ३४ ॥ हर्षसोकन्नय

२१६

मोहअरुलोभ॥ इछाक्रोधयसोत्रासीत॥ जन्मरुमर्ण
बिकारजांहांलौ॥ अहंकारकेसकलतांहांलौ॥ ३५॥ या
त्मासदाएकरसरहे॥ अहंकारसंगतीदुषसहे॥ ईद्रीयदेह
बूधीमनप्रांन॥ स्त्रत्रअरुमाहातत्वयचीमांन॥ ३६॥ ईन
सेमलिकरयात्माएक॥ मायाकेरुषग्रहेयनेक॥ तिन
तिमकेहेतक्रमनीकरे॥ कर्मनीकेबसजन्मेमरे॥ ३७॥
लिंगवधौदेहनीमांजावे॥ तीनकेसंगमाहादुषपावे॥
बुधिप्रांणबचनमनसमीर॥ माहातत्वईद्रीयकर्मस
रीर॥ ३८॥ म्रुषरुदुषममताअहंकार॥ तीनकुनांनाबी
धीसंसार॥ सोनीमूलसकलईजाने॥ जोजैवीसापते

मा नै ॥ ४९ ॥ ज्ञान षड्ग गनि जि मोहा उपजावै ॥ गुरु सेवा
सौ सांन धरावै ॥ ता ते का टै हो ई नासंग ॥ विषै रस वदे ष
तम मत्संग ॥ ४० ॥ गुरु के वचन हृदै मै धारे ॥ आदि अंत लो
श्रुति विचारे ॥ जनम मरन देषे प्रीतछु ॥ तजिय ज्ञांन हो
वे दछु ॥ ४१ ॥ साधव धर्म मां हि थीर होई ॥ या त्म देह वीचारे सो
ई ॥ जो या जग की आदी अरु अंत ॥ सोई मध वीचारे संत ॥
४२ ॥ यादि अरु अंत मधी में एक ॥ नांम रूप त्तमें रूप यनेक ॥
है म एक जो यादि रु अंत ॥ मधकी एयाम्त एयनंत ॥ ४३ ॥ सो
क छू है म छौ डिन हि अंत ॥ जो वीचार करी देषे ज्ञांन ॥ मिथ्यां
सकल नाम याकार ॥ है म काल त्रय करे विचार ॥ ४४ ॥ ते जग

आदिमध्यअरुयंत ॥ मो ह्रियरूप विचारे सब संत ॥ याद्य
यंतमे एकरूप ॥ सोई मध्य मिथ्या सब रूप ॥ ४५ ॥ जाग्रत स्व
पन सुषोपती अवस्था ॥ याद्य अरु अंत मध्य मा स्वस्था
॥ ईनको नास नयो जौ रहे ॥ सकल छोडी ताकौ बुधी गहे
॥ ४६ ॥ ईंद्रीय अरु ईंद्रीयन के देव ॥ ईंद्रीय विषयनी के व्रह्म
देव ॥ ते सब जो ईएक बीना नाही ॥ सत्य ब्रह्म सो खोजे मां
ही ॥ ४७ ॥ जो हि प्रकास तसकल प्रकासे ॥ जाकी संनिसत
सो भासे ॥ मूष के मूष कर्न के कर्न ॥ कर के कर चर्न के चर्न ॥
४८ ॥ नासा नासनेन के नेन ॥ जिह्वा जिन्ह बेन के बेन ॥ या
विधि सकल प्रकासक एक ॥ ता बिन मीथ्या सके अनेक

॥४९॥ ऐसें नांम रूप विस्तार॥ जिन सौ पुर्ण सब संसार॥ ते सब
या दिष्ट ते कछु नां दि॥ अरु न दीर दिदे अंतर्हूं मांदि॥ ५०॥ ताते
अखंडूं मीथां मांने॥ कार्ण ब्रह्म निरंतर जांने॥ नाम धर्यो॥
सो सकल विकार॥ तिहूं काल में मा टिसार॥ ५१॥ एहु जो कछु
सो ~~अपरमम~~॥ या दिसम स्तहु तो कछु नां दी॥ यव यत्न आप तु
है मो मांही॥ या ते ब्रह्म सम सम रूप॥ सकल प्रकास आपय
रूप॥ ५२॥ ए हवचीत्र तामे या त्रासे॥ ताकी सक्ति सक्ति प्रका
से॥ त्यां ते सकल ब्रह्म ईसे षे॥ तजी करी रूप यरूप ही पेषे॥
५४॥ ईन ते पें रूप निज जांनौ॥ अरूप सरूप ममही मांन
नौ॥ हीत छोडी नीः प्रलै हैं रहे॥ जांनी ब्रह्म ते ब्रह्म दिल देय

॥५५॥ येसोजोनीतकरेवीचार॥ मीथ्यांजानेसबयाकार
॥गुरसेवाकरीज्ञांनबुधावे॥ चैतनमोहीअषंडीतधा
वे॥५६॥ एहजौतंनसोयात्मनाहि॥ तंनघटरूपविचारैमा
हि॥ अरुईद्रीयतेदिपसमांन॥ ईनहीप्रकासकआत्मअ
ग्यांन॥५७॥ अरुत्यौदेवपवनमंनबूधी॥ यात्मकानही
जांनेसूधी॥ क्षितिजलतेजपवनयाकास॥ अहंकारगुण
चीतप्रकास॥५८॥ सम्यप्रक्रीतीनमात्रापंच॥ ईनहीकौ
सबहीतप्रपंच॥ तेजडयात्मएकुनहीजांने॥ यात्मसक्तिई
हांसबठांने॥५९॥ सकलप्रकासकयात्मएक॥ तेजडजां
नीनांसकेअनेक॥ याविधिजेममरूपबीचारे॥ सकल

उपाधिउरकौटोरे ॥ ६० ॥ सौबनरहेईद्रीयनायंत्ते ॥ क्रीवापुर-
विषयनीआरंचे ॥ तोहूंताकौ नहीगुणदोष ॥ जीवतहीजी
नीपाऔमोष ॥ ६१ ॥ जेसेघंनरवीपाडोयाये ॥ तोतीनसो-
कछूनांहीरहेछाये ॥ अरुजोमेघदुरीह्वोगयौ ॥ तोकछूरवी
नांप्रकासीतत्तयौ ॥ ६२ ॥ रविह्वैपरेवरषेघंनवंधंद ॥ जोतेर-
लिप्तलोकमतीमंद ॥ जेसेप्रगटपवेनघंनतोई ॥ धूंमधूलि
अरुदांमनीहोई ॥ ६३ ॥ रीतुकोगुणसीतलउस्नादी ॥ उपज-
तबिनस्तारहेयनादि ॥ पीनहीलिप्तहोईआकास ॥ त्यौया
त्मप्रंमप्रकास ॥ ६४ ॥ प्रीतोहूंसंगतिनहीकरे ॥ मायागुण-
निदुरपरहरे ॥ जोलोकरेनांमेरीइढत्तक्ति ॥ छूटेनांहिरजत-

२१६

मयाशक्ति ॥ ६५ ॥ हैहै जेदनचुलंजौल्यौ ॥ ममजनसंगक
रेनहीतौल्यै ॥ जेसेरोगहोईतंनमांही ॥ दृढकरीमूलउ
पास्यौनांही ॥ ६६ ॥ सोतजीउषदअपंथहिकरे ॥ सोरोगव
हूरिविस्तरे ॥ तोयहंकाररोगअवमूल ॥ सोज्यौलगीतजैन
षैनिरमूल ॥ ६७ ॥ त्यौलगीसंगतिअपंथहीकरे ॥ तोवोहू
रूजगमेअवतरे ॥ बंधुकुटंबसीसबहूतेरे ॥ याएसकल
स्सरनिकेप्रेरे ॥ ६८ ॥ तेतेयेतराईबहूकरे ॥ जोगीकुकर्मनी
बीस्तरे ॥ सोतीनतेपावेअवतरे ॥ बहूरूकरेअक्रिविस्तरे ॥
६९ ॥ कर्मपंथमेअरूलेनांही ॥ मेप्रेरेकताकेउरमांहि ॥ या
बीधिपावेज्ञांनविज्ञांन ॥ देषेमोहेमेटावेयांने ॥ ७० ॥ तब

ताकोतनकर्मनिकरे॥ लेनदेनजोजनविस्तरे॥ पुरवंसस्त
कारकरावे॥ विधिलषेंनांमीथांजांवे ७१ ओमूनीमग
नब्रह्मसरूपमांही॥ तातेकर्तजांनेनांही॥ जोवेवेदेअपारु
हादेहोई॥ आवेजाईकहूजोसोई॥ ७२ अनषाईजलपिवे
सोई॥ जोवोदेहरदेहकोहोई॥ सोसोकछूनांजांनेजोगी॥ नि
श्चलरहेब्रह्मरसभोगी॥ ७३ जोकवहूदेषेसंसार॥ ईंद्रीयगोच
रविविधप्रकार॥ तेतेकछुसतनहीजांनै॥ स्वप्नवस्तुजैजा
गेमांनै॥ ७४ प्रथमयात्माहुतोअवंध॥ आपहीनयेप्र
क्रिसोवंध॥ वहोरुमोसेविद्यापावे॥ तवदुपजांनीप्रक्रिछु
टकावे॥ ७५ तववहूरोंताकुनहीग्रहे॥ मोहीजांनीमांही

मांरहे ॥ प्रथमहीजबमोकुनहीजांने ॥ तबमायास्वरूप उ
त्पनमांने ॥ ७६ ॥ बौहौतौममसर्ण दिखावे ॥ ममप्रसादअ
ज्ञान मिटावे ॥ तबमायाकुदुषजांने ॥ प्रमानंदरूपमोही
मांने ॥ ७७ ॥ तातेआपहीगहीउपाधी ॥ ताकुतजीजांनी
करीव्याधी ॥ सदानीरंतरमोमेरहे ॥ बहूरूजबसागरनही
बहे ॥ ७८ ॥ जौरविअंससकलईयक ॥ परीरविबिंबजांल
षेपरतक ॥ रविसंजौगबहूरीजबहोई ॥ तबसमस्तदेषे
सोसोई ॥ ७९ ॥ रविबीनुअंधकारयतिहोवे ॥ तातेको
ईनेननांजोवे ॥ रविसंजोगप्रकासदिषावे ॥ तबसब
देषतंमहीमीटावे ॥ ८० ॥ प्रीतेनेनत्रिकालअलेप ॥ अं

धकारसौंत्नयैनांलेप ॥ तेत्यौकेत्यौतमहूंमांही ॥ औरविवि
नुकछूदेषनांही ॥ ८१ ॥ रविसौतेंमउपाधिपरीहूरे ॥ पाईप्रक
सप्रकासहीकेरे ॥ त्यौंएहयात्मामेरोरूप ॥ स्वैप्रकासकपरे
म्ररूप ॥ ८२ ॥ जन्ममरनमरजादारहीत ॥ काहूकरीकव
हूनहींगहीत ॥ दुजेरहतम्रापुहीएक ॥ ताहीकरीवेदेह
यनेक ॥ ८३ ॥ मांहूहृत्नावसकलम्रनुत्नाव ॥ जामेकहींनां
कर्मस्त्नाव ॥ नित्यानंदसदाम्रतीसुध ॥ सदानीरंदहीस
दाप्रबुध ॥ ८४ ॥ जाकरीईंद्रीयतनमनप्रांनां ॥ चेतनिहोंऽ
वतेविधिनांनां ॥ जांहीत्यौमनम्ररुवचननांजावे ॥ औ
रकोनबीधीताकुपावे ॥ ८५ ॥ परिजबमोतेरहतौंनम्रौ

॥तब ताको सब व्वल मीट गऔ॥ अंधकार या यौ य ग्यां
न॥ ताते दुरन्त यौ मम ग्यांन॥ ८६॥ अब व कूछ मम सनं
ही आवे॥ तब सो ग्यांन प्रकास ही पावे॥ ताते छोडे स
कल उपाधी॥ जो मो बीना करी लीन व्याधी॥ ८७॥ ताकु
आप बहू परसे नांही॥ परी मो बीना तजे नां जांही॥ मो
कु पाई सकल परी हरे॥ मेरे चरननी कु अनुसरे॥ ८८॥
रवी प्रकास मीटे तम जैसे॥ मम प्रकास है तम मैं ऐसे॥
सो प्रीमे कु नही विसरावे॥ मो ही से वे मो मांही समावे॥
८९॥ मो मे कहू नां माया लावे॥ अरु सौ माया मे न ही आ
वे॥ ताते नीस्पृही माया मेरे है॥ मो मी ष्री परमानंद लहे

॥५०॥ उधवई तनो हिय ज्ञान ॥ जौ केवल मे मंगा ने नांन
॥ जैसन वीना कछु सुमोनांही ॥ जैसे सांप जेवरी मांही
॥५१॥ है तदेह अहमी थां मांने ॥ चैतनी एक ब्रह्म थीर जं
ने ॥ अरु एकै हु पंच कु नवी स्तार ॥ उपजे बिनसे बारंबार
॥५२॥ जा कु मी थां वेद वषांने ॥ अरु त्यौ हि गुरु साधु मां
ने ॥ अरु अन जावते त्यौ देषे ॥ जागे स्वप्न जगत त्यौ लेषे ॥
॥५३॥ ऐसें जगत सत जे मांने ॥ पोद्द पतवां नी वेद वषांने
॥ अंतन स्मृति के वचन विचारे ॥ उर कहै ते ई उर धारे ॥५४॥ २२२
॥ ताते कर्म कांम बहु कहे ॥ ते मूर्ष या ज्ञावमे वहे ॥ कर्म विधी
तीन्ह कि वृधि ॥ ताते कदि नां पावे सुधी ॥५५॥ ताते तिन

कुलगैनांज्ञांन॥ मूरषयापहीजांनेजांन॥ तातैबिसईजी
वस्मंस्त॥ तीनहीचर्माईकरेतेत्रस्त॥ ऐई॥ तातेउधव
एहहिज्ञांन॥ कुंडजांनीकेछोडेत्रांन॥ मेरोन्नजनमी
रंतरकरे॥ जापकासहीतहीप्रीहरे॥ ऐं३॥ श्रोरुउधवजो
जोगकहावे॥ अष्टअंगकौवेदबतावे॥ सर्वधर्मकौराः
जामांने॥ नवमांचनएहसाधनजांने॥ ऐई॥ नबयाके
तनअबलबीकार॥ करिनंसकेन्नकिअधिकार॥ तातेः
बहुबीधविधिबीसतरे॥ ममबीस्वासपाईपरीहरे॥ ऐऐ॥
प्रथमहीजोगधारणाकरे॥ सितउसरोगनिपरीहरे॥ जेः
सेकरीतपपापनिवारे॥ मंत्रनिग्रहैबाधादिकटारे॥ १०॥

भोजन क्षुधा अरु गद सों रोग ॥ यौ तन जतन एक है जोग ॥ कामादिक मांनसीक वीकार ॥ जाते सु मर्ण जोग याधार ॥ १०१ ॥ मम जन कनकी सेवा करे ॥ ता करी इंद्रादी कनी परी ॥ हरे या विधि विधन समस्त निवारे ॥ मेरो जन इहै मे विस्तारे ॥ १०२ ॥ अरु ऐक सूदन के राजा ॥ साधक मे देह के काजा ॥ जो एह देह मीटाई चहीये ॥ देह मेटे मेरो स्वपल हीये ॥ १०३ ॥ मेरो अंस आत्म एह ॥ या को दुषदाता सो देह ॥ ताते देह ही राषी चहे ॥ ते आप ही या अव मेर हे ॥ १०४ ॥ तन के रोग जरादिक टारे ॥ स्वासा जीती करी मृत नीवारे ॥ अनी मृत हौ कलपंत ॥ बहुरौ पावे देह अनंत ॥ १०५ ॥ मृत जीती ब्रह्मरत होई

॥ब्रह्मस्थानमृत्यूनहीकोई॥ जोगीसदाब्रह्मरबैतरहे॥ ताकु
कालमृतनहीरहे॥१०६॥ देहजतंनक्रोरुयासातजे॥ जो
गजूगतकरीयात्मन्तजे॥ एकब्रह्महिरेमंराषे॥ ब्रह्मबा
नादूजोसबनाषे॥१०७॥ जेहजोगीदेहयत्नीमांनी॥ तीन
कुदूषउधवएहजांनी॥ स्नरपिजन्मविपूलकूलसोई॥
करीदृढजोगब्रह्मसोहोई॥१०८॥ मोबीनक्रपाकरेभ्रम
मूढ॥ मेरोजनजोगसोगूढ॥ तातेमेरहूंसंतनीमांही॥
॥तेतोमोतेनारेनांहि॥१०९॥ प्रथमहिजेजोगहिकरे॥
विघ्ननिवारेजोगबीस्तरे॥ ताकोतनजोनीः स्वलहोई॥ ते
हूंआदरकरेनकोई॥११०॥ साधेजोगसमाधिसमेत॥ अहि

ममसलीबढावेहेत॥ जोगमांहिछांडेअहंकार॥ तातेनहो
होवेसंसार॥ १११॥ जोगजोगतकरीमोकुनजे॥ ममयाधी
नहोवेयापातजे॥ ममप्रसादतेमोकुपावे॥ बोडुरयौनव
दुषमैनहीआवे॥ ११२॥ अहंनावतजीजोगहीकरे॥ सोजं
नभवसागरहीतरे॥ जोगहिपेरब्रह्मदेयेसो॥ समिकह्म
नजांनीयेतेसो॥ ११३॥ जौगजोगीमंनजोरेजासं॥ या
त्मग्यांनप्रकासेतासं॥ एहसाधनहेमनकुनीकौ॥ आगे
जीवब्रह्मदेयाकौ॥ ११४॥ जोहोवेमेरोयाधीन॥ यापहीमां
नेसबबलहीन॥ मेयाधीनहोउजांजनके॥ जोयाधिन
देहअभिमंनके॥ ११५॥ केवलजोममसरनजौंहीआवे॥ ता

हीकी सब ईछा जावे ॥ ताते विघ्न नां आवे कोई ॥ विघ्न तां हां
ईं छुं जां हां होई ॥ १६ ॥ मम आधीन रहे अनंत दीन ॥ सब
देवनि के हे वे वंदीन ॥ ताते उधव एह हि करनो ॥ मेरो ज
जन हिरदे मे धरनो ॥ १७ ॥ जग ओरु आप ब्रह्म मये जा
नें ॥ ह्वीत त्तावक कबहुं नां आने ॥ ब्रह्म ही तावते ब्रह्म हि
पावे ॥ जन्म जन्म के दुष बीसरावे ॥ १८ ॥ दोहा ॥ येसे स्त्री
श्री कृष्ण से ॥ अति हित कर ज्ञान ॥ पहौ स्वर्ग मउ पाई त
ब ॥ उधव परम सुजांन ॥ १९ ॥ इति श्री भागवते माहापु
राणे एकादस स्कंधे श्री भगवत उधव संवादे भाषायं
परमार्थ विसेष एन नाम अष्टवीसो अध्याय: ॥ २८ ॥ ॥

॥ चौपई ॥ ऊधवउवाच ॥ हे प्रभु एह तुम ज्ञांन बषानौं ॥ सो
तो मैं अतीदुःकर जांनो ॥ बसन होई इंद्रीय मन जीनकौं ॥ के
से काज होई तिनकौं ॥ १ ॥ जे प्रंमहंस दृढ चीत ॥ तीन कि अ
स दृष्टि कीनीत ॥ औरजे एह ज्ञांन बिचारे ॥ पेंचि षेचिया मन
कु धारे ॥ २ ॥ तिनकौ मन बस होई नां जौ जै ॥ माहां कलेस
लहे ते तौ त्यौ ॥ तीन कौ मंन बस होई नां कोई ॥ भ्रम करी ज
न्म गवावे यौंही ॥ ३ ॥ न्हव परमानंद समंद्र ॥ ताको न्हे हनजां
ने कूद्र ॥ करे जोग जाज्ञयादि कर्म ॥ तिनते कदी नां मिटे चन
र्म ॥ ४ ॥ ताते गर्व बंधे जौ कोरे ॥ जाते जुग जुग जन्मैं मरे ॥ केव
ल तन क्रितु मारे जे ते ॥ परमानंद लहे सब तेते ॥ ५ ॥ जब हि तेतु

मचरण निआवे ॥ तबही ते पूर्णस्वरूप पावे ॥ माया नीक-
ट नां आवे तिन के ॥ तुमारे चरण लइ है मन जान के ॥ ६ ॥ मा ते स-
है जे जगत मीटावे ॥ तुम चरणन मे से है जे समावे ॥ तुम ब्रह्मा-
दी सकल नायक ॥ सबहुन के अनूंता के दायक ॥ ७ ॥ तीन
चर्ण ग्रहे हैं के दीन ॥ तुम ताके होवो याधीन ॥ अरु एह कारह
यचाचर स्वामि ॥ तुम सब के प्रभु अंतरजांमि ॥ ८ ॥ तिन
कु सब तजी सेवें जोई ॥ करे आप वस तुम कौ सोई ॥ सीस
मूगट धारी है जे ते ॥ तुम पद मूगट निवारे तेते ॥ ९ ॥ रांम
रूप तुम जए मोरारी ॥ तिन की ने आदरय धकारी ॥ बांद
र सकल सषा तुम करे ॥ सबही न के सब हीं तयाच्वे ॥ १० ॥

॥ताते तुमकूं कलहि बीचारे॥ सो कैसे पलतुं मत्तजन नीवारे॥
॥तुम हिनषसिषदेह सवारी॥ चैतन सक्ति तुम महा अधारी॥
११॥ सदा रहे तुमारी या धारा॥ तुमनी प्रतिपालन हारा॥
तापरजीवतुम्ही नही जांने॥ कर्तार ताक्रोर ही मांने॥
१२॥ तें हूं तुमक्रोगून नही आंनो॥ बहु बीधी जांहा तांह
रिझा ठांनो॥ पुनि जब हित मचरण हिआवे॥ तब तम ते
चारु फलपावे॥ १३॥ परी तथा पिसो अज्ञांन॥ तुमकूं सेवे
लेथं जेअज्ञांन॥ चारपदार्थ से वके ताके॥ तुमारी नक्रिडि
राजें जाके॥ १४॥ एक जांहां नही तुमत्तजनो॥ नरक जांनी
सोई सोतजनो॥ ताते जो होवे सरवज्ञा॥ तमारे उपकार नी॥

कृतघ्न ॥ १५ ॥ अरु विधि समया उरबल पावे ॥ बहु विधि भ्रा
तृ प्रकार बनावे ॥ तो कृतघ्न हिय तुरत नहीं होई ॥ ब्रह्मादिकों
होलो जोई ॥ १६ ॥ जेतम बाहर सतगुरु रूप ॥ जीतर चैतन्न स
क्तियनूप ॥ यों जीवन्नी के पापन्नी वारो ॥ आपहीं देत्त्व वसं
कुष्टारो ॥ १७ ॥ तातें त्वां षों न्न जनानंद ॥ सहे जेमलोतूम छू
टे न्नवफंद ॥ ऐसन्नी उधवके प्रायेवेन ॥ बोले लक्ष्म कृपा कैये
न ॥ १८ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ धंन धंन उधव ममन्नक्त ॥ सब
जीवनके हेत यनुरक्त ॥ तो सुकढु या पन्नो धर्म ॥ तातें मिटे से
है जे सब कर्म ॥ १९ ॥ करी तै सूषयागे सूष पावे ॥ छो उे न्नवन्न यें
मो मेन्न आवे ॥ उधव न्नमकरे नर जेते ॥ मेरे हेत करे सब तेते ॥ २०

॥कर्मनीमेन्त्रांषेममनांम॥ मेरोकरिराषैधनधांम॥ मेंकुत्र
रपेमनकीप्रकृति॥ ताकेसबत्र्प्राचर्णनीद्रुति॥ २१॥ मेरीप्राति
रहितप्रीहूरे॥ संतसंगतनीनहीकरे॥ जिनदेसनीसेरीन्तन॥ ति
नकीवसहोईयनुरक्त॥ २२॥ सूरपसूरनरनीमेजेते॥ मेरेन्त
कन्ताहेकेते॥ तिनतिनकेयाचर्णनीजांने॥ त्यौहीत्यौया
पद्भुठांने॥ २३॥ मेरोजगमोहोछाकरे॥ सर्वनीमेमेलापवी
स्तरे॥ मेरीजांहांजातराहोई॥ नीहांतीहांचलीजावेसोई॥ २४
॥गितन्रतीबांजित्रकरावे॥ छत्रचवरयादिकन्त्रधीकावे॥
त्र्प्रतिउदारताकरीसवहांने॥ ममद्दीतलगेन्नलोसोमांने।
॥२५॥ सवन्त्रतनिमेमोकुदेषे॥ त्र्प्रंतरबाहेरएकलेषे॥ त्र्प्रा

पदी च्छादी जग मे मे मांने ॥ ज्यौ याकास अनावृत जांने ॥
२६ ॥ युसवे जांने मम जांव ॥ ता गे सब प्रवृतिस्त्तांव ॥
सब दिन कु नमसकार ही करे ॥ ज्ञांन दृष्टी जे द्दि पर हरे ॥
२७ ॥ एक बी प्रवेदय धकारी ॥ एक अति जु माहा विकारी
एक विप्र निके धन हारिता ॥ एक ही धन कें बिस्तारता ॥
२८ ॥ एक तेज हीन बहु देषे ॥ तेजवंत बहु एक पेषे ॥ ए
क कुरुर सकल दुषदाई ॥ एक सांतिक सकल सदाई ॥ २९
॥ इत्यादीक नांना बीधि देषे ॥ परी जो जेद कहु न ही लेषे ॥
मे रीद्र षि सब मे आंने ॥ मम जन पंडीत ताही बषांने
॥ ३० ॥ या बिधि सब मे मो कु जांने ॥ देहू जे दं कहु वे नां ही

ऋांने॥ थोरेकालमांहिताजनके॥ सकलविकारमीटेविांमं
नके॥३१॥ सपरघातिरसकारअहंकार॥ सकलमीटेकछु
लगेनांबार॥ तातेंदेहदुष्टनहीधरे॥ लोककुटंबलाजपरह
रे॥३२॥ हंसीकरेसकलईलोक॥ परीसौ ऋांनैनहीदूषनसो
क॥ तिनकीकछुमननेनहीऋांने॥ सबजीवनमेमोकु
जांने॥३३॥ षरषचरचंडालनिकंत॥ जोहांलौमेरीम्रष्टिअ
नंतं॥ नमसकारतिनकुकरे॥ दंडसमांनधरनीमांपरे॥३४
॥ जांहांलगीथावरजंगममांही॥ मेरोन्नावहोईथीरनाही
॥ तौलगीमनबचकायैसमेत॥ युसबमेछालेमसहेत॥३५
॥ याबिधिकर्तेरहेनरजोई॥ ताकुसकलब्रह्ममयैहोई॥ मि

देयविशुंवी ह्यायादे ॥ ताते बंधन सकल मीटावे ॥ ३६ ॥
उधं व सकल मो ते दे जेते ॥ वेद विधि मे जां षे तेते ॥ तीन
मेऐ हे मतो मम सार ॥ ताते भेग मीटे संसार ॥ ३७ ॥ मन
बच क्रम जांहां लो जेते ॥ मम रूप हि जाने सब तेते ॥ उधं
वए सो धर्म है मेरो ॥ काहा मनाव कहु तेह केरो ॥ ३८ ॥ आ
त्म रूप प्रगट जो होई ॥ क्यो हि वहुरि मटे नही सोई ॥ जां
हां लगें गूण निर्मित वस्तु ॥ तांहां लगे सब है वे अस्तु ॥ ३९
॥ मे नीरगूण सब गूण प्रकासि ॥ ताते मम धर्मय विना
सी ॥ मेरो नास कदि नां कौ हा ॥ मेरो धर्म ये रेउ तोहा ॥ ४०
॥ अरु उधव या कहा कहिजे ॥ मेरो धर्म कंदी नहीं छीजे

अरु उधव जौ लोका कथो हार ॥ एज मनान्मम विविध प्र
प्रकार ॥ ४१ ॥ जीवन नेकेवल होई अनरम ॥ भवनितिकौ स
व मिथ्रारथ ॥ नर्कनी मांहीं उपने नहार ॥ कामक्रोध है षादिवि
कार ॥ ४२ ॥ जोजो ते उत्तमो मेकरे ॥ तोहूं मोही लेहे नवतरे ॥ मे
से कुं तमरं न नैयेकस्यौ ॥ मेरो धर्म नहीं आचर्यौ ॥ ४३ ॥ प
रीसो नेयहि करी मेंा मांहीं ॥ यम पद पद्दे चौ न्नवमे नाहीं
॥ अरु गैा पकाकी यौ विन्नचार ॥ उलंधे वेदतजी न्नरथा
र ॥ ४४ ॥ परी व्रन्नचार मो मेकस्यौ ॥ तो हू ती न्नवजल परह
स्यौ ॥ अरु जो द्वेषकी यौ सीसपाल ॥ जाते जीवनी ग्रासेका
ल ॥ ४५ ॥ भीसो उमो मे करि दोष ॥ नवजल तरी करि ब्रह्मो चो

मोष॥ मे विषरूप विकार जेते॥ मो मेयाये अमृत ते ते ते॥
४६॥ ताते ऐह विवेक चतुराई॥ एह बुधि दुजी नही काई॥ जो
जुहैसो साच ही लिजे॥ पुरन काज यापनौ कीजे॥ ४७॥ ए
जु ही छीन भंगुर देह॥ सकल विकार नी गेह॥ ताकरी पाई
ये हरी अवीनासी॥ निरविकार सरन सुषरासी॥ ४८॥ एह स
ब ब्रह्म ज्ञान कु सार॥ जाते मीटे सहज संसार॥ मे संछेप
मे सब कहो॥ याते सार कहे वे नां रहो॥ ४९॥ एह नर तंन
अरु एह मम ज्ञांन॥ देवनी कु दुलभ जांन॥ जद पि जीव लहैन
र देह॥ तो ह ज्ञांन नां पावे ऐह॥ ५०॥ ताते जांष्यौ नीज ज्ञांन
दैवनी जाते मोह लहे तजी अंन॥ उधव प्रश्न करी तुम जे

ति ॥ उतरसहीतकहीमेतेति ॥ ५१ ॥ तेसबतत्ववेदवैा ॥ जोमे
मेरेप्रेमरूपकरीमानै ॥ एहतुमारौमेरोस्वाद ॥ अधात्मपर
मात्मावाद ॥ ५२ ॥ ताकुसैममसर्मीद्विआवे ॥ ममप्रसाद
आमांनमिसावे ॥ नाहीदेमेधारे ॥ पावेमोदेयापकुतारे ॥ जोएह
मेरोपुरणज्ञांन ॥ मेरेभक्तनदेवेदांन ॥ ५३ ॥ सोकहीयतहैमेरो
दाता ॥ जोहांतांहांहोवेबिषाता ॥ जोजेदेईसहैसोसोई ॥ लोक
वेदंज्ञांषतदेदोई ॥ ५४ ॥ तातेदांनदईजोमेरो ॥ मेयाधीनहैा
उतीनकेरो ॥ मोहीदेईसोमोकुपावे ॥ तीनकुलेमोमांहीसमा
वे ॥ ५५ ॥ जोनरआकुनीतपदे ॥ ताजनसैमोसहीतबदे ॥ सो
जनमेरोअतीजीयेहोई ॥ ताकेसमदुजोनहीकोई ॥ ५६ ॥ जो

ऐस सुनै नितकरी आदर ॥ और सकलकों करेयनादर ॥ सोकर्मे
नी सौ लिप्त न होई ॥ मेरी भक्ती लहे दृढ सोई ॥ ५७ ॥ मे एह ज्ञांन
प्रेम उचारयौ ॥ उधव तुम कछु हिद धारयौ ॥ सौ कमौ हं तक्न
यै निवृति ॥ निःश्रूलत्त यौ हि है याह ति ॥ ५८ ॥ उधव एह जो मे
रे ज्ञांन ॥ सो मति जांने मो ते अंन ॥ ताते दंत्त सही तहे सोई ॥ अ
रु नास ति कउ हकु वा होई ॥ ५९ ॥ प्रिति न जांने न ही मम भक्ती
॥ दुरवांनी नीत बषय नियासक्ती ॥ तीनकु ज्ञांन हिरे मे एह
॥ ज्ञो कालर ज्ञोमी पर मेह ॥ ६० ॥ ईन दोषनी करी है ई बी ह्री
न ॥ मेरी भक्ति प्रति दिढ दीन ॥ अस्त्री सुद्र अ ऐसो होई ॥ तासे
हमसे अंतर नाई ॥ ६१ ॥ ऐसे न सौ एह ज्ञान नही कही यै ॥ ता

तीनसहतप्रमपदलहै ॥ जोएहमेरोजानेज्ञान ॥ ताहीजा
निचेरहौनोध्यान ॥ ६३ ॥ जोकोईपीवेपीउष ॥ ताकुंरहेनां
दुजीत्तुष ॥ जोनकर्मजोगयषांग ॥ सबसफलएमेरोअंग
॥ ६४ ॥ अर्थधर्ममोक्षअरुकाम ॥ ईनसबहीनकुमोमेधाम
॥ तातेमोमेआवेजोई ॥ ईनसबहीनकुपावेसोई ॥ ६५ ॥ परि
मेरोजंनेकछुनंलेवे ॥ सकलतांगीकरीमोकुसेवे ॥ तातेसा
धसमाधनजेते ॥ ममजंनदेषेमोसेतेते ॥ ६६ ॥ सबतजीम
मचरणनीसेवे ॥ यापनीदेदेकछुनांलेवे ॥ ताकेसमदुजो
प्रीयेनाही ॥ सोनीत्यमोमेमेतामाही ॥ ६७ ॥ तबसूनीहरि
केऊसेवेन ॥ उधवयांसूबाकुलबेनेन ॥ यागोपाहेअंजु

ली बांधे ॥ प्रेम मगन तें नमं न इढ साधे ॥ ६७ ॥ बेन हूतें बो
ल्यौ नहीं जावे ॥ कंठ हूतें गदगद सुर आवे ॥ तातें उधव
चुप करी रहे ॥ बहुर वेर कछु बेन न कहे ॥ ६८ ॥ बहुर चीत
थंभी करी धीरज ॥ पूरन प्रेम जनऐ अब कीरज ॥ नीःसु
ल क्रम आप की त्यार थमांन्यौ ॥ सब संदेह हूदे तें भांन्यौ ॥
६९ ॥ हरि के चर्न नि मां ध्यो धार्यौ ॥ उधव जन कि बचन उ
चार्यौ ॥ जीन तें हरी सेवा दी प्रेम ॥ जीन कु कही मैं सुनीये
छेम ॥ ७० ॥ उधव उवाच ॥ नाथ जन्म जनम अरूयवी नासी
॥ प्रमानंद प्रेम प्रकासी ॥ तिन के सूनी धां निज बयावे
॥ तब ही सब अघ ज्ञान मीटावे ॥ ७१ ॥ सूनी ध्यांन पावक कौ

जावे ॥ सदे जहां तब लयसी तग मावे ॥ अरु ताप तुम पे
मदयाल ॥ मो निज जन प्रभु तये की पाल ॥ ७२ ॥ ऐहृ वि
ज्ञांन दीप मो हीदीन ॥ जा ते सकल सूत्र सूत्र बीन ॥ तू
मारे चरण सरण नव जांहीं ॥ दूजी ठोर कहूं सुष नाहीं ॥ ७३
॥ जे कोई तुम कृत कु जाने ॥ और ता पर नव को दुष मांने
॥ सो तुम चर्ण सर्ण नहीं पावे ॥ तो दुजें कां हों ते सुष पावे
॥ ७४ ॥ प्रभुजी तुम अती करुणा करी ॥ मम माया फांसी
परहरी ॥ सकल जादव नी मेऐ सेहृ ॥ अरु जुवति सुत बि
तअ्र हृदेहृ ॥ ७५ ॥ ऐसब मेरे मंनते टारे ॥ यपने चरणक
मल उर धारे ॥ तुमकी स्तारी अपनी माया ॥ जिनए हूस

कह्र जगत न्नमीया ॥ ७६ ॥ सोतुम ज्ञांन षडग से छेदी ॥ छै
की पाल निज भितयनी बेदी ॥ नमौ नमस्ते ज्ञांन प्रकासी
॥ जोगेस्वर ईस्वर यवीनासी ॥ ७७ ॥ दीजे मोहि एक वर देवा
॥ निःकेवल हृदे निरंतर सेवा ॥ तुम्ह ही छोडी दुजो न दीजो
तु ॥ मी सेवक हुं सेवा लीजु ॥ ७८ ॥ मोही प्रसाद दीजीये एह
॥ तुम से नीःकेवल रहे सनेह ॥ करी वीनति उधव तन्न ॥
बोल हर जी होए प्रसन्न ॥ ७९ ॥ श्री भगवानुवाच ॥
तप्या प्रस्न करउधव मम जन्न ॥ मम चर्णनीःकेवल प्रसन्न
॥ अब तुम उधव येसी करो ॥ लोक नी कुसीछा बीसरो
॥ ८० ॥ बदरी षंड आश्रम हे मेरो ॥ अति पुनीत दरसन ते ह

केरो ॥ तोहीतीरथमसवरननीकोजल ॥ इसप्रसङ्गअस्नान
हरेमल ॥ ८१ ॥ नोमयलकनहीसोगंगा ॥ निरमलकरेप्रस
तसबअंगा ॥ तांहंजाईतूंमवासौकरो ॥ फलन्नछंनतेज
बंनकलधरो ॥ ८२ ॥ हंदसीतलउह्मांदीकसहै ॥ विनयार
दीकसुन्नलछुनगहै ॥ ईह्नीयनीकेयर्थेनीपरीहरै ॥ एहवी
ह्नांनकांनउरधरै ॥ ८३ ॥ मोतेसाध्योह्नांनतूमसोई ॥ बेहीए
कांतबीचारजोई ॥ बचंनचीतसबमोमेधारो ॥ मेरोधर्मस
दाबीस्तारो ॥ ८४ ॥ तबनीनैंगूणकूपरीहरहै ॥ ममनीगून
पदकुअनुसरहै ॥ एहउधवप्रतगामेरी ॥ फराउतपतिनां
हैहेतेरी ॥ ८५ ॥ याविधकृस्नबचनउचारे ॥ जेउधवप्रेमरस

ग धारे ॥ चरणनी परी श्री प्रद्युम्ननादीनी ॥ तबचलबेकी ईछा

कीनी ॥ ८६ ॥ जदपिहुं दहूदेनही आवे ॥ तोहूहू जित जेनां

जांवे ॥ कंसकंअतिओदारबुधि ॥ ननमयन्नयोनतं

नसुधि ॥ ८७ ॥ कृष्णवियोगसहीनहीपरे ॥ बारबारचली

फीरीपगधरे ॥ तबअंतरजांमी गोपाल ॥ जनकुंजांनीप्रे

मबेहाल ॥ ८८ ॥ नीकटबोलाई मिलेदेअंगा ॥ ज्ञांनरूपकि

नैसरबंगा ॥ तबअपनी पावरी दीन्ही ॥ तेउधवजंनमांथे

लीन्ही ॥ ८९ ॥ तेहूंमधहिकृष्णपधारे ॥ जादवलेप्रन्नासमिधा

रे ॥ तबहांतांहांउधवचलीआऐ ॥ कृष्णऐकांतहिबेठेपाए ॥ ९० ॥

॥ पूनीमीन्नपधारेतांहां ॥ कृष्णदेवबेठेहैजांहां ॥ दहूकियेहरी

कूं पनोंम ॥ दरसन पाऐ अति अनिरांम ॥ ५१ ॥ छाडे ज्यो जो रीक
र दोई ॥ प्रेम मग्न कछु कहे नां सोई ॥ तब तीन कूं हरि न्हां षै न्हां
न ॥ जेसे अंधकार कुं ज्यांन ॥ ५२ ॥ प्रेम तत्व जोग सो न्हां षें ॥
आपनो जो गौ पम तो सौ दाष्यौ ॥ प्रेम सी धांत सार कौ सार
॥ जाते ओर न ब्रह्म विचार ॥ ५३ ॥ मे तो कु दीन्ह या देस ॥ वी दु
र ही कह्यो ए हु उपदेस ॥ या ज्ञां दीनी उधव जंन कुं ॥ यपनी स
क्ती की ए थीर मंन कु ॥ ५४ ॥ जब उधव बो हेरी बरन नी परे ॥ ह
री हरदे नि:श्चल करी धरे ॥ स्तनी उधव जन पो हो चे तां हां ॥ ब
रनारं यन परगट है जां हां ॥ ५५ ॥ तां हां जाई कीन्हे आश्रम ऐंनी ॥ जे
जे दूरी न्हां षे ते कर्णी ॥ बलकल अंबर फल आहार ॥ प्रेम मन

ग्यानी त्यब्रह्म वीचार ॥ ९९६ ॥ तबत्रीगुण बिस्तार मिटायो ॥ उ
धवकुं ग्यानी रंजन पायो ॥ एह हरी उधवके संवाद ॥ हरीजी
कौ है प्रेम प्रसाद ॥ ९९७ ॥ ताकुं कीपां करे सो पावे ॥ तजी त्र
वसी धुब्रह्म मे जावे ॥ जब ते याकुं जांषे मने ॥ प्रेम सहीं
तहमे रहै ॥ ९९८ ॥ तब ते पावे प्रमानंद ॥ भ्रम बीनामीटे
दुषद्वंद ॥ एह स्वयेमेव यापहरी कह्यो ॥ जामे कछु संसे नार
ह्यो ॥ ९९९ ॥ यामे येसे रूप प्रस्ताव ॥ मीटे जगत उपजे हरी
भाव ॥ जिनि हरि प्रगट अंमृत है करे ॥ जगतिन पाई सकल
दुषहरे ॥ १००० ॥ एक जलधी अंमृत उपाए ॥ नीज धन देवनीकुं
पाए ॥ राजरोग ब्याधि कदुषहरे ॥ बल उपजाई बीगत त्रये

हरे ॥ १०१ ॥ अरुदुजेएहअहीतएक ॥ वेदसिंधूतेअल्लक्षीवेक ॥
सोअपनेजनकुपायो ॥ जनममर्णभवभयमीटायो ॥ १०२
येसीआदीपुरषअविनासी ॥ सुमरतेजीन्हीमीटेभवफां
सी ॥ कृस्ननांमलीनोअवतारा ॥ तिनकुवंदनवारंमबारा ॥
१०३ ॥ दोहा ॥ येसेस्त्रीसुषदेवसौ ॥ प्रेमतत्वउपदेस ॥ कृस्न
कथांकेप्रेमते ॥ कीनीप्रस्ननरेस ॥ १०४ ॥ इतिश्रीभागवते
माहापुराणेएकादसस्कंधेश्रीभगवतउधवसंवादेभा
षायांउधवभगतिनिरुपणनामत्रीगणतिसौध्याय:
॥ २९ ॥ ॥ चौपै ॥ राजाउवाच ॥ हेप्रभुहरीकीकथासुना
वौ ॥ कर्णपूटनियेहअमृतपावौ ॥ हरीउपदेसउधवहीदी

२३५

न्है॥ पीछैयापकाहाहिन्है॥१ जादवकुलकुप्रगटेग्रा
प॥ हरजीकाहमकसौनवयाप॥ ईस्वरकुबाधानहीकोः
ई॥ ओरुहूजम्रापनांमीथाहोई॥२ सबकेतंनमंनमोद
नदेह॥ प्रमानंदसुधाकोग्रेह॥ जोनरहरीदरसनपावे॥
तिनसेनेननांषेचेजावे॥३ अरुजेहरीकेरूपहीगावे॥
वर्णसहीतमांनहीपावे॥ अरुजेसुनीकरीहृदेधारे॥ ते
पलकनहीछोडेप्यारे॥४ सांर्थमांअर्जुनरथमांही॥ वे
देदरसलहेजांहांजाही॥ तिनतिनहरीकीसरीनापाई॥ स
र्वभ्रमततकालगमाई॥५॥ ओसोतंनहरीसागौंकेसे॥
कोईहरेनागमणीजेसै॥ येसेवचनकहेनरदेव॥ उतर

दीन्हो स्री सुकदेव ॥ ६ ॥ श्री सुक उवाच ॥ द्वारावति उहौ उतप
पात ॥ तिनकु देषी कही हरी बात ॥ उग्रसेन आदि सब लोक
॥ सन्तास धर्मो दुषनी सोक ॥ ७ ॥ तिनसे कृष्ण बचन उचारे ॥
हरी को मतौ न लषै बीचारे ॥ निज माया से मौहित करे ॥ ८
ग्यान बबेक सबनी के हरे ॥ ९ ॥ श्री भगवानुवाच ॥
हे जादव हम सनो मम बाता ॥ द्वारावती बहुत उतपाता ॥ यै
उतपात मृत्यु निसांन ॥ तातें तजीयै एह स्थांन ॥ १० ॥ जुव
ति बाल वृध सब जेते ॥ संषो द्वार पठाए तेते ॥ और सक
ल प्रभास हीजैयै ॥ तांहां पी स्वमस्रास्नु तिना हीयै ॥ ११ ॥
॥ करी सषांन तनन नीर मल करीयै ॥ सूध ह्वै दै तिर.यह तत

धूरीयै ॥ जेजे बहुत पीतर अरु देव ॥ तिनकी करीयै पू
जा सेव ॥ ११ ॥ अरु विप्रनी की पूजा बहु कीजे ॥ करी सन
मांन दांन बहु दिजे ॥ गाई न्नु मिस्रनै बखादी ॥ हये
हाथी रथ अनग्र हादी ॥ १२ ॥ यासीरवाद ह्वी जन केली
जे ॥ ताते विघ्र सकल ह्वी ह्वी जै ॥ देव अरु गाई विप्र की ॥
पूजा ॥ पापहरन बिधि धर्म दुजा ॥ १३ ॥ येमा सनीह
नी कीबांनी ॥ सब जादौ ने चली करी मांनी ॥ नावनी
बेठसी धुउतरे ॥ चदी करी रथनी सबे पयनु करे ॥ १४
॥ जो हरी ती नकु आज्ञा दीन्ही ॥ त्यो त्यो सब निसबै बि
धि किन्ही ॥ करी अस्नांन धर्म बहु ठांनै ॥ मध अस्ना

सयापबहूंमांनै ॥ ७५ ॥ तबक्तीयैसनीमहीरापांन ॥ जातेः
न्हलगएसबज्ञांन ॥ तबमेमंतसकलईन्हथै ॥ हरीमायावी
वैकह्लीयै ॥ ७६ ॥ तिनमेकलहन्तयौउतपंन ॥ सबमेप्रेरः
कहरीप्रछंन ॥ सबतिनकीतांसनामोआरी ॥ सांतीकबीर
तगीराउचारी ॥ ७७ ॥ क्री तबंब्रह्माकुकरीअपमांन ॥ सांतीक
छोडेबांणीबांण ॥ नाईन्हुत्रीएतेनधारी ॥ बंह्रमेकहीयेय
भीकारी ॥ ७८ ॥ सोयेसोयेसीकौकरे ॥ सोवतबालनीकै
ईसीरहरे ॥ एअदुमनबचनसतकास्यौ ॥ कितब्रह्माकुत्र
तिघ्रकास्यौ ॥ ७९ ॥ कतब्रह्मातबकीन्हौक्रोध ॥ बांणीबांः
एप्रकासोजुध ॥ अरुकोरहुत्रिकौयेसी ॥ क्यांधिकतेकि

२३७

कै जेसी ॥२०॥ सुरिम्भवानराई ध्यात्तयौ ॥ जाकी बाहूंजूंगल
कटीगयौ ॥ ताकेवधते किन्है येसी ॥ बाधकसाईकरेनजे
सी ॥२१॥ तबसंतिकउठी बोलेबांनी ॥ सनौसनौहोसारंग
पानी ॥ ईनकोजसक्रसरुक्षपजसऋायो ॥ तातेएसोमतेभ्जौं
उपायो ॥२२॥ एकईवचनषट्गतीनकादौं ॥ कौतबब्रह्मा
केमस्तकबाढौं ॥ जदपिबहूमीलीसबनेनीबासौ ॥ तोहू
संतिककौधनंटासौ ॥२३॥ तातेसकललच्छएतबकौधू ॥ सं
तिकसैठंनौजौंधू ॥ तबतेसकललच्छएतेऋौर ॥ जूधरचौसा
येरतटघैर ॥२४॥ कैकधनुषच्यालसेलरे ॥ कैकषर्गग्रदैसंधरे
॥ कईप्रसागदाकुठारे ॥ कईलेसेलदृष्टिप्रहारे ॥२५॥ कईगुर

जगो फगी कई ॥ करहिं हादीक निरुरे ते तई ॥ हरषीत सबे करे
संग्राम ॥ चोदे देषे क्रिस्न श्रोरु राम ॥ २६ ॥ हये सौ हय हाथी सौ हा
थी ॥ रथ सैं रथ सारथि सें सारथि ॥ षर सें षर उट उटन सें ॥ महा
षर महा षर वेल वेलनी सें ॥ २७ ॥ षच्चर से षच्चर मीली लरे ॥
नर सैं नर मलि जूध हा करे ॥ माहा मंत कुल षैन ये सें ॥ जू
ध करे वंन मैं गज जे सें ॥ २८ ॥ सांम प्रदुमण हा नो जूध ॥ ते अ
कुरर नो जय अती क्रोध ॥ तां हा संग्राम जीत अरुस्न इ ॥ क
रे जूध वीर नी के न्हई ॥ २९ ॥ गद सें नाम कृस्न के भ्राता ॥ नाम
सुवीर सूत्र बिषाता ॥ नो सांतिक से मली अनुरुध ॥ सराथ
सैमीन करे मली जूध ॥ ३० ॥ उलूक नि सह सहजन सा जित

त्नांनयादिदेजो धन्नपरमीत ॥ आपआपमेजुधद्दीहांने
हरिकरेमोहितकछुनांजांने ॥ ३१ ॥ ब्रह्मब्रसदासारहिवं
स ॥ सव्वतअंधकेजोजबसंत ॥ अबूदसूरसेनमधमा
पूर देसबिरसजनकूतीरुकूर ॥ ३२ ॥ आपआपद्दीमीलं
जुध हिंगने ॥ सबनीपरसपरसोद्दिदेत्तानै ॥ पूत्रपितात्ना
ईअरुत्नाई मांमारुत्नानेजलराई ॥ ३३ ॥ काकात्नतीजा
नातिनांना ॥ मित्रमित्रमलिजुधहिंगना ॥ सहृदंसहृद
त्नातनसेंत्नाति ॥ सबमलिजएप्रसपरघाति ॥ ३४ ॥ नब
सरजएसबहनके ॥ छीनतूटेंतघाधनकतिनतिनके ॥ आ
उधसकलछिदंमाबजएै ॥ नबतानकरओरकालएै

॥२५॥ जंगमूसलचुर्णजेते । वज्रसमांनसिंधुतट्तेते । तेते
सकलकरनीकरलीन्हे ॥ हरीसौजूधकोघहीकीन्हे ॥ २६ ॥
रामकृस्नबहूजांतनीवारे ॥ परितमूर्षकछूनांबीचारे ॥ सं
मकूलकुरीधूकरजांने ॥ जूधबूधीअंतरगतीआंने ॥ २७ ॥
तबयापद्रीआपकीयोतीनकोप ॥ करयौचहेसबदीनको
लोप ॥ तबएकोकरतीनहीलीए ॥ घोरेमांहेप्रबलसबकीए
॥ २८ ॥ विप्रश्रापपाछा जितकरे ॥ हरीमायाविचारसबद
रे ॥ पावककोधप्रगटतबत्तेए ॥ बांसबिधंनकुलजरीबरी
गेए ॥ २९ ॥ तबकुलनष्टसकलहरीदेषो ॥ जूकोजारउतास्यौ
लेषो ॥ ताकारनलीन्होअवतारा ॥ सोपरद्रस्योधरणीको ॥

२३९

त्तारा ॥ ४९ ॥ तब्बसमुद्र तटमेवाली चंद्र ॥ कान्हैकुहलधा-
न्त्रतिन्तद्र ॥ आइ हिल्लसमा हिलेराषै ॥ मांनवदेह दुर
करी नांषै ॥ ४१ ॥ रांमपराई नलषै हरीजबहि ॥ लघूथल
बैठे हरी तबही ॥ नीरमलरूप चतुरन्नजधारी ॥ दसौ दसा
कौ तीमरनीवारी ॥ ४२ ॥ जो बिधूम पावक प्रकास ॥ यै
से प्रगट त्तयौ उजास ॥ पीत बसंन है तघंनसांम ॥ तस
सौ ब्रुत सोत्ता ग्रत्नीरांम ॥ ४३ ॥ सधहास सहंत मूष-
पद्म ॥ कवलनयनयेन सोत्ताके सद्म ॥ करन निकुंड-
लमकराकार ॥ सुंदरगूंज मोतीनके हार ॥ ४४ ॥ रूपच-
तुर्ज लष्मी गोपाल ॥ रुचिर निलसीर केसवी साल ॥ ३

रन्नर्गलताकंठबननमाल ॥ सीरमूगटअरुनैनबीसाल ॥ ९
४५ ॥ केठसर्तेकदिस्तबीराजै ॥ छुद्रघटिकान्नुपुरराजे ॥ बद्
आन्नूसएन्नसितअंग ॥ देषतमौहेअमीतुअनंग ॥ ९
४६ ॥ आउधमुरतिवंतसमस्त ॥ सुमीरतजिनदिहोईन
वपस्त ॥ उनतेचरनकवलआसक्त ॥ जीनकेउरधावेनि
समनक ॥ ४७ ॥ दृढएजंघनिचौकरौ ॥ बांमचर्णतिनउपरध
रै ॥ यौपदमआसनकीयोजौगीस ॥ नासाअंगदृष्टिस
मसिस ॥ ४८ ॥ यैसीरीतकरीसूषदाई ॥ संतनीकुऐहरीतदे
षाई ॥ यौनीःश्वलह्वैबेठकीत्रा ॥ सुमरतमिटेजीनजनवत्र
त्रा ॥ ४९ ॥ अतीलघूमूसलषडगजेरह्यौ ॥ जलमेडारौम

२४०

छीरहै॥ सौवहमछजालमेयायौ॥ ताकौउदरतैसैपायौ
॥५०॥ जराव्याधिजलकासौकिन्है॥ तेकरीसरकेग्यौगेदि
न्हे॥ सोएह्व्याधहृंतोवंनमांही॥ हरिकोपदतीनजांनैनां
ही॥५१॥ हरीकेचर्णदृष्टजबपस्यौ॥ मृगमूषजांनिघाति
तीमकस्यौ॥ सोईवांनलगायौचर्णं॥ विप्रवचननहामी
थ्यांकर्णं॥५२॥ सौवहवधिकनीकटचलीआयौ॥ रूपचतु
र्भुजदरसनपायौ॥ चर्णलगौतवदेष्यौवांन॥ जरांत्रयौ
तवमृतगसमान॥५३॥ चर्णनीपरौबोल्यौजोरीत॥ कं
पतअंगगललगौंजौसीत॥ हेप्रभुमेकीन्हौअपराध॥ तुमह्री
नजांनैमूर्षव्याध॥५४॥ एहमेकीनौसकलयद्गंन॥ वांन

चलायौमृगकूंजांन ॥ यायपराधतूमहीहरयौ ॥ जेतूमनाम
लीएतेतारयौ ॥ ५५ ॥ तूमसमरणसबपापवीनासे ॥ मिटेअ-
ज्ञांनज्ञांनप्रकासे ॥ ब्रह्माआदीकरेयपराध ॥ तीनकुमेकी
न्हौअपराध ॥ ५६ ॥ तातेप्रभुजीबीलंबनांकरयौ ॥ मोपा
पीकेप्रांणनीहरयौ ॥ जातेबहूरुकरैनांयेसे ॥ येदयपराध
करयौमेजेसे ॥ ५७ ॥ जीनकीमायांकोविस्तारा ॥ ब्रह्मा-
दीसीवसंनकादिकूमारा ॥ ओरसूरतेत्रिसहैजेते ॥ कसौदि
जांनीसेनहीतेते ॥ ५८ ॥ मोहीतसकलतूमारीमाया ॥ तातें-
किनहीपारनांपाया ॥ तिनकुपापजोनीहमजेते ॥ कोन-
त्नांतिकरिजांनेतेते ॥ ५९ ॥ तातेअबतूमजीनबीचारयौ-

॥सो.पापीकुबेगमास्यौ॥ येसीदीनवधिककीवांनी॥ सुनी
नी: कपटसारंगपांनी॥ ६१॥ तबप्रभूआपवचनउचारे
॥ तातेसकलजीवआपहारे॥ उनकीएहेजूगजूगपाप॥
सोसबमेटेश्रीहरीआप॥ ६२॥ श्रीभगवानुवाच॥ उ॰उ
ठजराजैमतिमांने॥ यापनौकस्यौपापजीनमांने॥ एदस्म
स्तदेलीलामेरी॥ यामेकाहासकोहेतेरी॥ ६२॥ मेरी क्रिपां
जातस्वरग॥ जांहांसषमाहानहीउपसरग॥ येसेवचनकहे
हरीजबही॥ धस्यौबेमांनस्वर्गतेंतबही॥ ६३॥ तिनकरीप्र
क्रमारूभनांम॥ करकेबधीकगयौसुरधांम॥ चढीबेमांन
सुरलोकहीगयौ॥ जयेजयेसबदृजांहांतांहात्तयौ॥ ६४॥ त

बरषलीयेसाँरथीदेषे॥ परिहरिजीकुकबहुनांपेषे॥ तूल
सीगंधपवनजलपायो॥ ताकेषोजहमपेआयो॥ ९५॥ पी
पलमूलकीयौहैयाम्र॥ घनामांनुससीस्रहताम्र॥ आ
उधआगेम्रतवंत॥ यौनीजपतीदेषेभगवंत॥ ९६॥ तब
दारुकधीरजनहीकस्यौ॥ रथतजीवीवलचर्णनीपस्यौ॥ उप
ग्योहृदैनेनजलछायौ॥ प्रेममग्नमूषबेननांयायौ॥ ९७॥
तबकरीधीरजयांसुनीवारे॥ करुणासहीतबचनउचारे
॥ हेप्रभमेतूमचर्णनीदेषे॥ तबतेपलककलपकरीलेषे
॥ ९८॥ तबतेनषद्रुष्टिनयै॥ सबदुषएकवारअनुनयै॥
नृलिदसानांकडुसूषपायौ॥ जैसेअमनजोउडगंनप

तिन्हिसमांही छापायौ ॥ ६९ ॥ तुम बीनमेंजौ तंन संनम्रो
न ॥ जेसेनेयनअंध बिनज्ञांन ॥ येसेबचनकहे तहेसुत
॥ देषौंएकचरीतअदभुत ॥ ७० ॥ गगंनहुतेउतरयपा
यौ ॥ हयेसहीतवैंनेओरुगरुडसौहुयौ ॥ मुरतिमयहरीया
उधजेते ॥ रथमेजायेबेहेसबतेते ॥ ७१ ॥ एकचरित्रदारुक
जबदेषों ॥ बीस्मंतनयोअचंभ्भातेषो ॥ तबहरीसुतनहीबेनसु
नायौ ॥ कहीसनमांनसबदुषबीसरायौ ॥ ७२ ॥ श्रीभगवा
नवाच ॥ सुतहाकीकुतंमजायो ॥ समाचारसबजईसुनायो
॥ सबकेमर्णरांमनिरजांन ॥ अरुमेहीअबकर्तपयांन ॥ ७३
॥ द्वारावतिरहेजीनकोई ॥ तंनकोधारीजांहांलोजोई ॥ एहन

रस्लोकतजूमेजेबही सिंधूद्वारकांबोरेतबही ७४ येहंमेरे
मातपीत्यादीकजेई लोकयपनेलोगनेलोगनतेतेई द्वा
रीपजईयो अर्जुनसंग रहेद्वारकांहोहेसंग ७५ तीन
एहसंदेसस्नायो ओरुतूमधर्ममहीतलायो ममभा
यारचनाएहजांनौ नांमरुपसबमीथ्यामांनौ ७६ छीन
संगरुसबनांनारुप निहच्चलजांनोमोहेअरुप जीहां
तीहांव्यापकमोहेजांनो नांमरुपसबमायाकरीमांनो
७७ मेरेचरणनीरंतरजजो दुजीसकलबासनातजो ये
सेहोईयावोमोमांही जातेफेरदुषपावेनांही ७८ एस्तु
नीसुतउधवसैज्ञांन छोज्योसोकमोहजयेज्ञांन नमस्का

रकरी बारंबार ॥ अद्भुतसदे बीबधीप्रकार ७९ ॥ हरीबी
योग ते अतीदुषपायो ॥ ज्ञांनबीकाम चितर्हैरयो ॥ हरी
के चर्न कमल उधारे ॥ तबदारुक द्वारकांप धारे ॥ ८० ॥ दो
हा ॥ एह नृपमे तोस्त कह्यौ ॥ जदुकुलकोसंहार ॥ अवनां
घो हरी कौ गवंन ॥ अरु हरी जंनउधार ॥ ८१ ॥ ईतिश्री भाग
वते महापुराणे एकादसस्कंधे श्री शुकदेवपरीक्षत संवादे न
षायबलदेव न्हवाण नामत्रासमोअध्याय ॥ ३० ॥ ॥ चौ
पई ॥ श्री शुकउवाच ॥ तब ब्रह्मासनकादीकलीऐ ॥ संग
दीकनितमासंगकिऐ ॥ सहीतनवांनासंकरदेव ॥ ईद्रादीक
सुर अरु उपदेव ॥ १ ॥ अरु वीद्याधर किंनरगंधर्व ॥ पीतर

महौरागाचारणसर्व ॥ गरुडलौकपंछीओरुसीध ॥ हरीकेद
रकामनांचीध ॥ २ ॥ सबमीलीहरीकेदरसनकुआऐ ॥ स
बहीनहरीकेदरसनपाऐ ॥ हरीकेजनमकर्मगुनगावे ॥ सब
मीलिजोजाऐसबदरसनावे ॥ ३ ॥ सकलबेमाननिछाहै
गगनं ॥ बर्षपुष्पप्रेमकरिमगनं ॥ बारबारकेरीप्रनाम ॥
मुषतेभांषोहरीकौनांम ॥ ४ ॥ ब्रह्मादिकसबरूद्रबीन्द्र
ति ॥ इन्द्रतेउनकुउतपती ॥ तेस्मस्तदेषेभगवान ॥ नैय
नमुदितबेहेनधांन ॥ ५ ॥ बुद्धरुआपऐककरीधायौ ॥ र
हैतनाबसबदुरीबहायौ ॥ नीजतनलोकनीकेअनीरां
म ॥ धानधार्णमंगलधांम ॥ ६ ॥ ताकुअगिधारणाधरि ॥ र

अरि उपाय सम सौ करि ॥ तब हरि जि वैकुंठ सिधारे ॥ आबाधि
सब के कारज सारे ॥ ७ ॥ तब दुंदभी बाजे सुरलोक ॥ उपजै हरष
मीटे सब सोक ॥ तब सब देव मली जयजय कीयो ॥ तब ह
री पयांनौ दीयो ॥ ८ ॥ सांति अरु किरति धिरज ध्रम ॥ सो त्ताग अ
रु जौ उत्तम क्रम ॥ ते सब गये संग जगदीस ॥ जाते हरी सबहन
के है ईस ॥ ९ ॥ ताते जो हां कथा हरीजी की ॥ पूर्ण धांन धारणा
किनी की ॥ ता हां सम मस्तर है ते इते ॥ सनादीक बीधि सब जेई ते
॥ १० ॥ ब्रह्मा यादी सकल सुर जेते ॥ हरी की गति न जांने तेते ॥
हरी वैकुंठ पयांनौ करयौ ॥ सो की बहु जांनो ना परयौ ॥ ११ ॥ क
ह्यो हरी तीन देषौ ॥ बडै अचंबा सबही न लेषौ ॥ ऐसे मेघ

होहीयाकास॥ ओरहूंमनी प्रगटै घनबास॥ १२॥ क्यौंकर प्रगट
गुप्तह्वैजावे॥ ताकोषोजेनकोईपावे॥ तोहरीकीयौपयांनो॥
जबही॥ काहूतिन्हहीनदेषौतबही॥ १३॥ जैसेप्रगटहूतेतब
देषै॥ गुप्तभयोकिनहूनहीपेषै॥ देहपएहअबेजानाही॥
सक्तीअनंतसदाहरीमांही॥ १४॥ जदुकुलमेहरीकोअवता
र॥ अरुकेरीवरतेनानावोहार॥ सौसमस्तमायाकरीजाने॥
हरीकीसक्तिहैतसबमाने॥ १५॥ हरीजिसदाएकरसरहे
कर्मनकरेजन्मनहिग्रहे॥ ओरकर्मकरतसबजांने॥ जन्म॥
लियौहरीजीकुमांने॥ १६॥ एसबदेहनिकेववहार॥ दूर॥
जिहनसबहीनकेपार॥ जेसेनटबाजीवीस्तारे॥ बोहूरु॥

आपदि सकल निवारे ॥ १७ ॥ बाजीगर सब दिन ते न्यारा ॥ जैसें
दरजी के कर्म अवतारा ॥ जिन रचौदही ओ गुण एसारं ॥ नाना
ज्योति प्रगट आकारं ॥ १८ ॥ आप प्रवेस कीयौ तिन तिन मे
॥ सब व्रुताई बिन सिद्धी नेमे ॥ अंत आपको आपु दिर दें
॥ तौ ही ईन अवतार नीय रदे ॥ १९ ॥ गूरको मतू श्व जिन औ
नैं ॥ क स्पमतू के गरन्त हि न्तां नैं ॥ ब्रह्म सदस्वै ते तुम दिब
चायौ ॥ बिधि कदि स्वर्ग सदेह पठायो ॥ २० ॥ ते जो अंपनीर
क्रा करते ॥ तौ तन कु का हे कु पर दरते ॥ सब जग कि उत पती
प्रतिपाल ॥ नास करे जिन कु बल काल ॥ २१ ॥ असे सकल
सक्रिमय देव ॥ ब्रह्मा या दि करे जे नी सेव ॥ हर वे कु धरणी को

न्यार ॥ धस्यौह्नतो मांनवन्त्र्याकार ॥ २२ ॥ तासेन्यै कौन्यारउतासै
॥ पीछै वैाउदुरकरडास्यैा ॥ जौकंटौन्यागौपगमांहि ॥ सोकंटे
वीननिकसेनांहि ॥ २३ ॥ कांटेकाढौंकांढ्यौजबही ॥ उह्रउ
डारीदियैाछिनीतबही ॥ तौहरीमृतूकदेहक्यौराषै ॥ निजानं
दपदसोक्यौनाषै ॥ २४ ॥ अरुएकअतिहियज्ञांन ॥ तिनकु
प्रगटदेषायौज्ञांन ॥ जोगसीधीकरिराषैदेह ॥ परषारुथ
करीमानेएह ॥ २५ ॥ सकलविकारनीकोन्यागार ॥ ताकुरा
षीनजेस्तूषसार ॥ तातेतीनकौमोहमिटावै ॥ देहतब्रह्म
जेकुलषवतावै ॥ २६ ॥ येसेतंनकुकीन्यैान्यनोदर ॥ जातेको
ईकरेनांयादर ॥ देहनिरंजनसुधसरूप ॥ ब्रह्मदेहसोत

त्वयन्नप ॥ २७ ॥ कालकर्मगुणताकूनांहि ॥ अकलदेद सक
लकेमांहिं ॥ तातेंह्र जिवैकुं उपधारे ॥ वाजिजैदेहदिनी
वारे ॥ २८ ॥ ब्रह्मारुद्रइंद्रादिकजेते ॥ देषीपयांनौहरिकौते
ते ॥ विस्मैंत्तएकृष्णगुनगावे ॥ यपनेयपनेलोकनीजावे
॥ २९ ॥ जोएहचरीत्रपढेउठीप्रात ॥ कृष्णदेवकीनीरमल
जात ॥ सोइहत्तक्तिक्ती स्मकिपावे ॥ जातेकृष्णलोकमे
जावे ॥ ३० ॥ हरीधारुकद्वारकांपहायौ ॥ सौवसुदेवनृप
पैंआयौ ॥ कृष्णवीजोगवीकलयतीचीत ॥ जेसेकृपन
गएतेवित ॥ ३१ ॥ तिनदोबौकेचरणनीपरे ॥ तवसारथी
बचनउचरे ॥ यौसुप्रवादचलौनेननितै ॥ अतिव्याकू

लपटपट खेन निहै ॥ ३२ ॥ सब जदू कुलको नास सुनायो ॥
अरु बलकौ निरजांन जनायो ॥ युसनी सोक तन सब
न्हे ॥ करी बिलाप अन्न सही गए ॥ ३३ ॥ जाहं जाए हर
जी म्हा देषे ॥ तब वै कुंठ गए करी लेषे ॥ तब देवकि रो
हनि बसुदेव ॥ उग्रसेन राजा नरदेव ॥ ३४ ॥ हरि बीयोग
ते उपजै सोक ॥ ताते चाहत जौ नर लोक ॥ राम कृष्नकौ ये
सो बियोग ॥ जाते मीटे देह संजोग ॥ ३५ ॥ बाल जुवति स
बले बल देह ॥ अग्नी प्रवेस कीयो अती नेह ॥ बसुदेव हि
लेषो उसन नारी ॥ कियो सह गवन चिंत्या सवारी ॥ ३६ ॥ प्र
दूमनी आदी जा हिलै जेते ॥ तिन कि त्रियन लिओ सब

तेते ॥ सबहनकेअतिहल बियोग ॥ तातेकयौपग्नीप्र
वेग ॥ ३७ ॥ हरीकी बधूजांहांलौजेति ॥ कामनीयादीसक
लमीलतेति ॥ हरीकौरूपहूदेमैधस्यौ ॥ यग्नी प्रवेससबन
मीलीकीस्यौ ॥ ३८ ॥ अर्जुनप्रेमसषाहरजीकौ ॥ ऊछबीं
योगभइहरकजीकौ ॥ तातेअर्जुनपंमदुषपायौ ॥ ऊ
छज्ञांनहूदेमांयायौ ॥ ३९ ॥ गीतामांहीकह्यौहरीज्ञांन
॥ मीयादेहसतत्तगयांन ॥ ऐसोबहूबीधीज्ञांनंबीचा
र्यौ ॥ ऊछबीयेगसोकसबटास्यौ ॥ ४० ॥ आपआपमे
मारेजेते ॥ यपनेबंधइज्ञातिप्रीयतेते ॥ तिनकुपिंडादी
कहंना ॥ मृतककीयाजेतिबिधनाना ॥ ४१ ॥ सोईसोई

र्कं नसबकरी॥ कृष्णप्रीतितेनदीपरही॥ तबद्वारकांसुभबी
नुन्नाई॥ सादर बोरिपलकमैलई॥ ४२॥ केवलहरजीके ग्रद
तेते॥ बाहैररहे सकलतेतेते॥ नितबीहारहे हरजीकौ॥ सु
मरतसुनतउधारकजीकौ॥ ४३॥ मंगलसकलमंगलनी
केरे॥ त्रीजोवंनसुषहोवे नीतचेरे॥ पस्त्रीबालवृधसब
जेते॥ मरतमरतउचरेतेते॥ ४४॥ जेअर्जुनद लिखेपायै
॥ समाचारसबपांडवनीसुनायो॥ तुमारे सकलपीताम
हजेते॥ कृष्णप्रयांनसुनीकरीतेते॥ ४५॥ तुमहीवंसधरारा
जाकीयौ॥ मथुरांतीलकब्रीजकौदीयो॥ तेसबतजउतराद
सगऐ॥ कृष्णहीसेईकृष्णमयभऐ॥ ४६॥ जोएहरीजीकोप

वतार॥ जामेकमअरुगुणवीस्तार॥ तीनकुकहे सुनेनर
कोई॥ सबपापनीतछूटेसोई॥४७॥ याविधिहरजीकेय
वतार॥ बालपनातेकमयपार॥ लोकवेदमेप्रगटजेते
॥गावेसुनेविचारेतेते॥४८॥ नवतेलहेप्रेमअनंगेद
॥मीलेकृष्णछूटेतेदूषद्वंद॥ फेरदुषकोईनीकटनांआ
वे॥ अघसरबलिसकलमीटावे॥४९॥ दोहा॥ एहदर
रीकौयवतारमे॥ तुमसेकहीोसुनाई॥ याकुकहेसुने
सुमरेनर॥ नारंयनपेंजाई॥५०॥ चौपै॥ ब्रह्मनारदनी
जनस्वांमी॥ सकललोककेअंतरजांमी॥ नक्तिहेत
धरेयवतार॥ नांनांभांतिकरेउधार॥५१॥ तिनमेकृष्ण

सयन्नगवांन॥ ज्ञांनसक्तिकुप्योप्रधांन॥ जिनकेगूननी
कह्यौरुषदेव॥ सनततसौष्ट्रीषतनरदेव॥ ५२॥ जीन
कोनावलीयेजवनाही॥ लेकरीराषेनिजपदमांही॥ ये
सेहमसंतनिकौवीत॥ नमस्कारतीनप्रकृनीत॥
५३॥ तेअवसंतदाससेनांम॥ देहधरीजीवनीकेकांम
॥ कप्योनीधांनजक्तकरवावे॥ यपनीसक्तिह्रदेमांलावे
॥ ५४॥ येसीबीधजवदूषमीटावौ॥ अपनेप्रंमपदपो
हौचावौ॥ ऊरुपतिनज्ञांनसुनावौ॥ उधवजंननीजप
दपोहोचावौ॥ ५५॥ सोलेकह्यौसंस्कृतव्यास॥ तातेहोए
नांअर्थप्रकास॥ सोपंडीतजांनेपेसोई॥ दुजोकदिनो

२४७

जांनेकोई ॥ ५६ ॥ तातेतीनयबकरुणाकिनी ॥ मोसिव
ककुन्त्रज्ञादीनी ॥ सकललोकनीमंनधारी ॥ ममउर
न्राषाबीसारी ॥ ५७ ॥ जेकोईबांचेसूनेसूनावे ॥ धांन
करीउचेसूरगावे ॥ तेतेलहेज्ञांनवैराग ॥ प्रेमनक्तहरी
कोअनुराग ॥ ५८ ॥ प्रेमप्रवाहमंगननीतरहे ॥ नवदा
बाअग्नीकदीनांदहे ॥ येसेहैकरीब्रह्मसमावे ॥ लहे
अनंदजगतननहीआवे ॥ ५९ ॥ कबहूकरेकांमनाको
ई ॥ अंतलहेसकलसुषसोई ॥ तेतेहोईसिधसर्वकांम
॥ अरुजेहोईबउन्रागीनी:कांम ॥ ६० ॥ तिनसबदन
कूजांषेएह जगतिमुगतिकेप्रेद ॥ तातेयासोंकीजे

प्रीति ॥ ऐसे सकल संतन की रीति ॥ ६३ ॥ संवत सौलह सै बा
नवा ॥ जेठ सुकल षष्टि कुजदिवा ॥ संतदास गुरु आग्या
दीनी ॥ चतुरदास एह भाषा किनी ॥ ६२ ॥ जो कोई सुने गु
ने हीत लावे ॥ सो वैकुंठ प्रेमपद पावे ॥ ६३ ॥ दोहा ॥ प्रेम ज्ञा
न प्रगट करौ ॥ मम घट ह्वै जीन देव ॥ ते मेरे उर नित बसे ॥
संतदास गुरदेव ॥ ६४ ॥ इति श्रीभागवते महापुराणे
एकादसस्कंधे श्रीशुकपरीक्षितसंवादे कृष्ण वैकुंठ पयै
नो नाम एकतीसो अध्याय: ॥ ३१ ॥ चौपै २३६४ दोहा
५५ ॥ संवत १८४४ वर्षे आषाढमासे कृष्णपक्षे ॥ तीथौ ५ गुरु
वासरे सुदामापुर मध्ये ॥ जोसी हरजी मिदं पुस्तक लिखंते ॥